

• श्रीशंकर •

श्रीनिघंटुशिरामणिः ।



द्वितीयः पार्श्वः (भागः)



मूल्यं सार्धं (१॥) रूपक

श्रीशंकर.

आर्यभट्टपुस्तकावलिः । संख्यांकः २९.

श्रीनिघंटुशिरोमणिः ।

द्वितीयः पार्श्वः (भागः)

पदे-कुलावतंस-दाजीज्योतिषी-सूनुना

शंकरशास्त्रिणा चिकित्सकेन

संपादितः, मुद्रितश्च ।

(सर्वेऽधिकाराः स्वाधीना एव)

शके १८२१-सन १८९९.

मूल्यं (१॥) सार्धं रूपकः ।

स्थानम्—मुंबई, नवानागपाडा, आर्यभट्टकार्यालय.

‘वाङ्मे’ ग्रामे ‘मोदवृत्त’ यत्रालये
तथा च
मुम्पापुरांम् ‘धीणोवर्षन-मुद्रालये’ मुद्रापिताम् ।

શ્રી ૦ ડા ૦ ભાલચંદ્ર રૂપ્ણ માટવડેકર, ઇલ્ડ ઇમ્, જે પી



“વિપાદ ધૈર્યમથાન્યુદયે ક્ષમા । સદસિ વાનપટ્ટતા યુધિ વિજય ॥
યશસિ ચાભિશ્ચિન્ન્યેસન ધુતો । પ્રકૃતિસિદ્ધિમિદ હિ મહાત્મનામ્ ॥”

अर्पणपत्रिका.



भो सुसम्मान्य (ऑनरेबल) डा० भालचंद्र
कृष्ण भाटवडेकर। एल्. एम्., जे. पी.,
इत्यादि सत्पदवीधर, मुम्बापुरी-
भूषणभूत !



‘भवदीया’

आयुर्वेदविषयेषु सद्गन्तःकरणपूर्वकाः प्रयत्नाः
नृपति-जनपदानान्दुर्लभकार्यकर्तृत्व-
विषयेषु तत्परतया तत्परता, मा-
मिर्कीया सुविद्यता, इत्याद्य-
नेकगुणगणेषु लुब्धं भूत्वा,
तथा च
प्रेमसन्दर्शकमिदम्पुस्तकं यत्किञ्चि-
द्दर्शकं ज्ञात्वा, सादरविन-
येनाहं समर्पयामि.



निघंटुशिरोमणेः प्रथमभागस्यानुक्रानिका.

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | | |
|-------------------|--------|------------------|-----|-----|
| गुडूच्यादिवर्गः | | २८ क्षीरमोरटा | ... | ... |
| १ गुडूची | १ | २९ इदीवरा | ... | १२ |
| २ फदगुडूची | २ | ३० वस्तात्री | ... | १२ |
| ३ मूवा | २ | ३१ सोमवर्ला | ... | १३ |
| ४ पटोल | २ | ३२ प्रातिसोमा | ... | १३ |
| ५ काकोली | ३ | ३३ वत्सादनी | ... | १३ |
| ६ क्षीरकाशोली | ३ | ३४ गोपालकृपदी | ... | १४ |
| ७ अरण्यमुद्र | ३ | ३५ काकनासा | ... | १४ |
| ८ जीवती | ४ | ३६ काकादनी | ... | १४ |
| ९ बृहज्जीवती | ४ | ३७ रक्तगुजा | ... | १४ |
| १० हेमजीवती | ५ | ३८ श्वेतगुजा | ... | १५ |
| ११ लिंगिनी | ५ | ३९ वृद्धदारु | ... | १५ |
| १२ कौशातकी | ६ | ४० ताम्रवटा | ... | १६ |
| १३ स्वयमुक्ता | ६ | ४१ काडीर | ... | १६ |
| १४ षट्पुटी | ६ | ४२ जंतुका | ... | १६ |
| १५ अमरवली | ६ | ४३ आम्लपर्णी | ... | १७ |
| १६ देवदाली | ७ | ४४ शरापुष्पा | ... | १७ |
| १७ वध्याककोंटकी | ७ | ४५ आवर्तरी | ... | १८ |
| १८ तिक्ततुडी | ८ | ४६ वर्णस्त्रोटा | ... | १८ |
| १९ आम्बुपर्णी | ८ | ४७ कट्टी | ... | १८ |
| २० इद्रवारुणी | ८ | ४८ अमृतश्रवा | ... | १८ |
| २१ महेंद्रवारुणी | ९ | ४९ पुत्रदाना | ... | १८ |
| २२ शरिणी | ९ | ५० पल्यदी | ... | १९ |
| २३ ईश्वरी | १० | २ शतान्हादिवर्गः | | |
| २४ ज्योतिष्मती | १० | १ शताघ्ना | ... | १९ |
| २५ तेजोवती | १० | २ मिश्रेया | ... | १९ |
| २६ श्वेतगिरिवर्णा | ११ | ३ दालिपर्णी | ... | २० |
| २७ महानीला | ११ | ४ समष्टीला | ... | २१ |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|----------------------------|--------|----------------|--------|
| ३८ चागेरी, क्षुद्राम्लिका. | ६२ | ७ आद्रक | ६९ |
| ३९ रक्तपादी | ६२ | ८ मरिच | ७० |
| ४० वैपरीत्या लज्जालु | ६३ | ९ श्वेतमरिच | ७० |
| ४१ हसपादी | ६३ | १० धान्यक | ७० |
| ४२ अभयग्यारिका | ६३ | ११ यवानी | ७१ |
| ४३ श्वेतापुनर्गवा | ६४ | १२ चव्य | ७१ |
| ४४ रक्ता पुनर्नवा | ६४ | १३ चित्रक | ७१ |
| ४५ नीला पुनर्नवा | ६५ | १४ रक्षाचित्रक | ७२ |
| ४६ श्वेता वसु | ६५ | १५ विडग | ७२ |
| ४७ रक्ता वसु | ६५ | १६ वचा | ७२ |
| ४८ सर्पिणी | ६५ | १७ श्वेतवचा | ७३ |
| ४९ धृधिका | ६५ | १८ कुलंजन | ७३ |
| ५० मत्स्याक्षी | ६५ | १९ जीरक | ७३ |
| ५१ गुडाला | ६५ | २० श्वेतजीरक | ७४ |
| ५२ भूपाटली | ६५ | २१ कृष्णजीरक | ७४ |
| ५३ पाण्डुली | ६६ | २२ उपकुम्बिका | ७४ |
| ५४ केना | ६६ | २३ अरण्यजीरक | ७४ |
| ५५ ब्रह्मदंडो | ६६ | २४ मेथिका | ७५ |
| ५६ ब्रह्मती | ६६ | २५ हिमपनी | ७५ |
| ५७ द्रोणपुष्पी | ६६ | २६ हिगु | ७५ |
| ५८ महाद्रोणा | ६७ | २७ नाडीहिगु | ७६ |
| ५९ झेंडुक... | ६७ | २८ अभिजार | ७६ |
| ६० गोरक्षदुग्धी | ६७ | २९ रास्ता | ७६ |
| ४ पिप्पल्यादिवर्गः | | ३० स्पृष्टैला | ७६ |
| १ पिप्पली | ६७ | ३१ एला | ७७ |
| २ गजपिप्पली | ६७ | ३२ सेंधव | ७८ |
| ३ सैहली पिप्पली.... | ६८ | ३३ सौवर्धल | ७८ |
| ४ वनपिप्पली | ६८ | ३४ वाचलवण | ७८ |
| ५ पिप्पलीमूठ | ६८ | ३५ विडलवण | ७९ |
| ६ शर्डी | ६९ | ३६ सामर | ७९ |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|-----------------|--------|----------------|--------|
| ३७ समुद्रलवण | ७९ | ६७ वधलोचना | ९१ |
| ३८ द्रोणेश | ७९ | ६८ मजिष्ठा | ९२ |
| ३९ शीतार | ८० | ६९ हरिद्रा | ९२ |
| ४० रोगक | ८० | ७० दारुहरिद्रा | ९३ |
| ४१ अजमोदा | ८० | ७१ लाक्षा | ९३ |
| ४२ रेणुका | ८१ | ७२ अलकक | ९४ |
| ४३ घोल | ८१ | ७३ लोध्र | ९४ |
| ४४ कर्नूर | ८१ | ७४ श्वेतलोघ्र | ९४ |
| ४५ पाठा | ८२ | ७५ घातकी | ९५ |
| ४६ वृक्षाम्ल | ८२ | ७६ समुद्रफल | ९५ |
| ४७ आम्लवेतस | ८३ | ७७ नावपा | ९५ |
| ४८ कटुका | ८३ | ७८ विष | ९५ |
| ४९ अतिविषा | ८४ | ७९ यत्सनाम | ९५ |
| ५० भद्रमुस्ता | ८४ | ८० श्याम्लनिशा | ९६ |
| ५१ नागरमुस्ता | ८४ | ८१ गधपना | ९६ |
| ५२ यष्टीमधु | ८५ | ८२ समुद्रफेन | ९६ |
| ५३ मधुवर्णि | ८५ | ८३ अपेन | ९७ |
| ५४ मार्गो | ८५ | ८४ टक्कण | ९७ |
| ५५ पुष्करमूल | ८६ | ८५ श्वेतटम्रण | ९७ |
| ५६ दूर्गा | ८६ | ८६ साखरुड | ९७ |
| ५७ लघुदती | ८७ | ८७ हितावगे | ९७ |
| ५८ वृहदतिक्का | ८७ | ८८ हस्तिमद | ९८ |
| ५९ जेपाल | ८८ | ८९ स्वाजिहार | ९८ |
| ६० त्रिवृत् | ८८ | ९० लवणधार | ९८ |
| ६१ रक्तत्रिवृत् | ८८ | ९१ वज्रधार | ९८ |
| ६२ रवच | ८९ | ९२ यवधार | ९८ |
| ६३ तमालपत्र | ८९ | ९३ सरोधार | ९९ |
| ६४ नागतेज | ९० | ९४ मायाफल | ९९ |
| ६५ तपक्षीर | ९० | | |
| ६६ तालसिपत्र | ९१ | | |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|--------------------|--------|---------------------|--------|
| ६ मूलकादिबर्गः | | ३० फौडालु ... | १०६ |
| १ मूलक ... | ९९ | ३१ पानीयालु ... | १०६ |
| २ चाणाक्यमूलक... | १०० | ३२ नीलालु ... | १०६ |
| ३ गृजन ... | १०० | ३३ मादिपीकंद ... | १०६ |
| ४ पिंडमूलक ... | १०० | ३४ हस्तिकंद ... | १०७ |
| ५ गार्जर ... | १०० | ३५ कौलकंद ... | १०७ |
| ६ शिशु ... | १०१ | ३६ वाराही ... | १०७ |
| ७ शोभांजन..... | १०१ | ३७ विष्णुकंद ... | १०७ |
| ८ श्वेतशिशु ... | १०१ | ३८ धरणीकंद ... | १०७ |
| ९ रक्तशिशु ... | १०२ | ३९ नाकुली ... | १०८ |
| १० वंश ... | १०२ | ४० गंधनाकुली ... | १०८ |
| ११ रथवंश ... | १०२ | ४१ मालाकंद ... | १०८ |
| १२ वंशांकुर ... | १०३ | ४२ विदारीकंद ... | १०८ |
| १३ वंशप्रंधि ... | १०३ | ४३ क्षीरविदारी ... | १०९ |
| १४ वेत्र ... | १०३ | ४४ शात्मलीकंद... | १०९ |
| १५ भाकंदी ... | १०३ | ४५ चंडालकंद ... | १०९ |
| १६ शोली ... | १०३ | ४६ तैलकंद ... | १०९ |
| १७ हृंगटक ... | १०३ | ४७ त्रिपर्णीकंद ... | ११० |
| १८ भृगाव्हा ... | १०४ | ४८ लक्ष्मणाकंद ... | ११० |
| १९ पेज ... | १०४ | ४९ हस्तजोडिका... | ११० |
| २० रसोन ... | १०४ | ५० मुसलीकंद ... | ११० |
| २१ महाकंद ... | १०४ | ५१ गुच्छकंद ... | ११० |
| २२ पलांडु ... | १०४ | ५२ वास्तुक ... | ११० |
| २३ राजपलांडु ... | १०५ | ५३ चुन ... | १११ |
| २४ सूरण ... | १०५ | ५४ चित्रिका ... | १११ |
| २५ अरघ्यसूरण ... | १०५ | ५५ श्वेतचित्री ... | १११ |
| २६ मुपालु ... | १०६ | ५६ शुनकचित्री ... | १११ |
| २७ पिंडालु ... | १०६ | ५७ शिशुपन्नशाक ... | १११ |
| २८ रक्तपिंडालु ... | १०६ | ५८ पालक्य ... | ११२ |
| २९ कासालु ... | १०६ | ५९ राजगिरा ... | ११२ |

| नाम | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ |
|-------------------------|--------|----------------------|-------|
| ६० उपोदकी ... | ११२ | ८८ खड्गशिवी ... | ११७ |
| ६१ क्षुद्रोपोदकी . | ११२ | ८९ कारवल्ली ... | ११७ |
| ६२ चनजोपोदकी | ११२ | ९० कर्कोटकी ... | ११८ |
| ६३ मूलपोती ... | ११२ | ९१ स्वादुतुडिका... | ११८ |
| ६४ कुणजर ... | ११२ | ९२ निष्पावी ... | ११९ |
| ६५ कौसुभशाक ... | ११३ | ९३ नखनिष्पाविका | ११९ |
| ६६ शतपुष्पदल ... | ११३ | ९४ वार्ताकी .. | ११९ |
| ६६ तदुलीयपत्र ... | ११३ | ९५ डगरी ... | १२० |
| ६७ राजिकापत्र ... | ११३ | ९६ पद्मज्जा ... | १२० |
| ६८ रापपत्र ... | ११३ | ९७ बर्कडी ... | १२० |
| ६९ चायेरीशाक ... | ११३ | ९८ नपुसी ... | १२० |
| ७० घोली ... | ११३ | ९९ एर्वाध ... | १२१ |
| ७१ आरामघोलिका | ११३ | १०० बालुकी ... | १२१ |
| ७२ क्षुद्रघोलिका ... | ११४ | १०१ चिमिटा ... | १२१ |
| ७३ जीवशाक ... | ११४ | १०२ मृगाक्षी ... | १२१ |
| ७४ गौरसुवर्णशाक | ११४ | १०२ चीनाकर्कटिका | १२२ |
| ७५ वर्षाभूशाक ... | ११४ | १०४ शशाङ्गुली ... | १२२ |
| ७६ वसुपत्रशाक ... | ११४ | १०५ कदुहूची ... | १२२ |
| ७७ फजिका, जोवनी, पद्मा, | | १०६ क्षुद्रकारलीकद | १२२ |
| तर्कारी, चचुक ... | ११४ | ६ शास्त्रमह्यादिर्वग | |
| ७८ फल्गादिशाक... | ११४ | १ शास्त्रमह्या ... | १२३ |
| ७९ कृष्णाडी ... | ११४ | २ मोचरस ... | १२३ |
| ८० गोरक्षतुषी ... | ११५ | ३ रक्षारोहितक ... | १२३ |
| ८१ दुग्धतुषी ... | ११५ | ४ भेतरोहितक ... | १२४ |
| ८२ भूतुषी ... | ११५ | ५ एकवीर ... | १२४ |
| ८३ कलिंग ... | ११५ | ६ पारिभद्र ... | १२४ |
| ८४ भाराकोशातकी | ११६ | ७ रादिर ... | १२४ |
| ८५ हस्तिकोशातकी | ११६ | ८ श्वेतपादिर ... | १२५ |
| ८६ स्वादुपटोली ... | ११६ | ९ रक्षपादिर ... | १२५ |
| ८७ दधिपुष्पी ... | ११७ | १० विद्रपादिर ... | १२५ |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|-------------------|--------|--------------------|--------|
| ११ आरि ... | १२५ | ३७ चावनाशर ... | १३१ |
| १२ खदिरसार ... | १२५ | ३८ शर ... | १३१ |
| १३ शमी ... | १२६ | ३९ स्थूलशर ... | १३२ |
| १४ लघुशमी ... | १२६ | ४० मुञ्जतृण ... | १३२ |
| १५ घञ्जुल ... | १२६ | ४१ काश ... | १३२ |
| १६ जालघञ्जुलक ... | १२६ | ४२ मिश्री ... | १३२ |
| १७ धरिमेद ... | १२७ | ४३ मितदर्भ ... | १३३ |
| १८ पखौड ... | १२७ | ४४ हरिदर्भ ... | १३३ |
| १९ इंगदी ... | १२७ | ४५ बल्वजा ... | १३३ |
| २० करीर ... | १२७ | ४६ कतृण ... | १३३ |
| २१ स्नुही ... | १२८ | ४७ दीर्घरोहिणक ... | १३४ |
| २२ त्रिधार ... | १२८ | ४८ नल ... | १३४ |
| २३ कंयारी ... | १२८ | ४९ महानल ... | १३४ |
| २४ श्वेतएरंड ... | १२९ | ५० नीलदूर्वा ... | १३४ |
| २५ रक्तएरंड ... | १२९ | ५१ श्वेतदूर्वा ... | १३५ |
| २६ स्थूलरंड ... | १२९ | ५२ बालीदूर्वा ... | १३५ |
| २७ घोडी ... | १३० | ५३ गंडदूर्वा ... | १३५ |
| २८ लताकरंज ... | १३० | ५४ कुंद ... | १३५ |
| २९ कारी ... | १३० | ५५ मूतृण ... | १३६ |
| ३० मदन ... | १३० | ५६ सुगंधमूतृण ... | १३६ |
| ३१ महापिंडीतक ... | १३० | ५७ ऊखल ... | १३६ |
| ३२ बेततर ... | १३१ | ५८ दधुदर्भा ... | १३६ |
| ३३ तरटी ... | १३१ | ५९ गोमूत्रिका ... | १३६ |
| ३४ ध्रुपदी ... | १३१ | ६० शिल्पिका ... | १३६ |
| ३५ निपुंजिषा ... | १३१ | ६१ निःश्रेणिका ... | १३६ |
| ३६ अपर्यंद ... | १३१ | | |

सम्पूर्णोऽत्र प्रथमो भागः ।

निघंटुशिरोमणेर्द्वितीयभागानु क्रमाणिका.

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|-------------------|--------|---------------|--------|
| ६२ गर्भोदिका | १ | ९ श्योनाक | ६ |
| ६३ मञ्जर | १ | १० भृतसार | २ |
| ६४ पत्राडप | १ | ११ मेपशुनी | ७ |
| ६५ वशपत्री | १ | १२ कास्मरी | ७ |
| ६६ मर्यानक | १ | १३ अरुमत्तक | ८ |
| ६७ पत्रिवाह | १ | १४ कर्णिकार | ८ |
| ६८ लवणतृण | १ | १५ आरुग्वध | ९ |
| ६९ पण्यध | २ | १६ वृद्धिकाली | ९ |
| ७० दीर्घकाड | २ | १७ कुटज | ९ |
| ७१ लघुगुड | २ | १८ कृष्णकुटज | १० |
| ७२ वृत्तगुड | २ | १९ इद्रयव | १० |
| ७३ गुडकद | २ | २० शिरीष | १० |
| ७४ चाणिका | २ | २१ करज | ११ |
| ७५ गुडासिनी | २ | २२ घृतकरज | ११ |
| ७६ झली | २ | २३ महाकरज | ११ |
| ७७ परिपेष्ट | २ | २४ पृथिकरज | १२ |
| ७८ हिज्जल | २ | २५ गुच्छरुज | १२ |
| ७९ दौवाल | २ | २६ रीठाकरज | १२ |
| ७ प्रभद्रादिवर्गः | | २७ अंकोल | १२ |
| १ प्रभद्र | ४ | २८ नीलवृक्ष | १३ |
| २ महानिब | ४ | २९ सर्ज | १३ |
| ३ किङ्क | ४ | ३० अश्वकर्ण | १३ |
| ४ भुनिब | ५ | ३१ ताल | १४ |
| ५ नैपाल | ५ | ३२ धाताल | १४ |
| ६ कट्फल | ५ | ३३ दिताल | १४ |
| ७ अभिमंथ | ६ | ३४ माह | १५ |
| ८ क्षुद्राभिमंथ | ६ | ३५ तुल | १५ |

| नाम. | पृष्ठ | नाम. | पृष्ठ |
|-----------------------|-------|-----------------------|-------|
| ८७ कुमुद ... | ४६ | २० पिंडखजूर ... | ५५ |
| ८८ नीलोत्पल ... | ४७ | २१ राजखजूर ... | ५६ |
| ८९ उत्पलिनी ... | ४७ | २२ चारु ... | ५६ |
| ९० कुमुद्वती ... | ४७ | २३ मल्लतक ... | ५६ |
| ९१ रक्तकुमुद ... | ४७ | २४ क्षीरी ... | ५७ |
| ९२ जात्युत्पल ... | ४७ | २५ दाडिम ... | ५८ |
| ९३ फरहार ... | ४७ | २६ तिंदुक, ... | ५८ |
| ९४ कमलिनीत्रयगुणा ... | ४८ | २७ काकतिंदुक ... | ५८ |
| ९५ पुष्पद्रव ... | ४८ | २८ अक्षौट ... | ५९ |
| ९६ जात्यादिमोद ... | ४८ | २९ लघुपीलु ... | ५९ |
| ९ आम्नादिवर्गः | | ३० बृहत्पाल ... | ६० |
| १ आम्ना ... | ४८ | ३१ पारेवत ... | ६० |
| २ कोशाम्न ... | ४९ | ३२ महापारेवत ... | ६० |
| ३ राजाम्न ... | ५० | ३३ मधुक ... | ६० |
| ४ महाराजाम्न ... | ५० | ३४ जलमधुक ... | ६१ |
| ५ बद्धरसाम्न ... | ५० | ३५ भय ... | ६१ |
| ६ जघ्न ... | ५० | ३६ आरुक ... | ६१ |
| ७ महाजघ्न ... | ५० | ३७ द्राक्षा ... | ६२ |
| ८ पावजघ्न ... | ५१ | ३८ गोस्तनी ... | ६२ |
| ९ भूमिजघ्न ... | ५१ | ३९ वाक्लीद्राक्षा ... | ६२ |
| १० पनरा ... | ५१ | ४० कर्मार ... | ६३ |
| ११ कदली ... | ५२ | ४१ परंपक ... | ६३ |
| १२ काप्रकदली ... | ५३ | ४२ अश्वत्थ ... | ६३ |
| १३ गिरिकदला ... | ५३ | ४३ वट ... | ६४ |
| १४ सुवर्णकदली ... | ५३ | ४४ नदीवट ... | ६४ |
| १५ नारिकेल ... | ५३ | ४५ अश्वत्थी ... | ६४ |
| १६ मधुनालिकेर ... | ५४ | ४६ प्रक्ष ... | ६४ |
| १७ राजूरी ... | ५५ | ४७ ह्रस्वप्रक्ष ... | ६५ |
| १८ मधुराजूरिका ... | ५५ | ४८ उर्ध्वर ... | ६५ |
| १९ भुसजूरिका ... | ५५ | ४९ नयदुर्गरिका ... | ६६ |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|----------------------|--------|-----------------------|--------|
| कृष्णोदुपरिणा । ... | ६६ | १० चंदनादेवर्गः । ... | |
| ५० यदरी ... | ६६ | १ चंदन ... | ८३ |
| ५१ राजवदर ... | ६७ | २ शबरचंदन ... | ८४ |
| ५२ भूवदरी ... | ६७ | ३ रतचंदन ... | ८४ |
| ५३ लघुवदर ... | ६७ | ४ पत्रांग ... | ८४ |
| ५४ बीजपूर ... | ६७ | ५ रक्तचंदन ... | ८४ |
| ५५ वनवीरपूर ... | ६९ | ६ बयैरक ... | ८५ |
| ५६ मधुकर्चरी ... | ६९ | ७ हरिचंदन ... | ८५ |
| ५७ आमलकी ... | ६९ | ८ देवदारु ... | ८५ |
| ५८ काष्ठपात्री ... | ७० | ९ काष्ठदारु ... | ८६ |
| ५९ चिंचा ... | ७० | १० चीजा ... | ८६ |
| ६० आम्नातक ... | ७१ | ११ सप्तपत्र ... | ८६ |
| ६१ नारग ... | ७१ | १२ छरल ... | ८७ |
| ६२ निचूक ... | ७२ | १३ कुरुम ... | ८७ |
| ६३ जवार ... | ७२ | १४ मृणमुष्टम ... | ८८ |
| ६४ मधुजपौर ... | ७२ | १५ प्रियंगु ... | ८८ |
| ६५ कपिल ... | ७३ | १६ वस्तूरी ... | ८८ |
| ६६ तुमर ... | ७३ | १७ गोरोचन ... | ८९ |
| ६७ रुद्राक्ष ... | ७४ | १८ कर्पूर ... | ९० |
| ६८ बिल्व ... | ७५ | १९ पोतास ... | ९१ |
| ६९ छाकी ... | ७५ | २० नीलकर्पूर ... | ९१ |
| ७० कतरु ... | ७५ | २१ जवादि ... | ९१ |
| ७१ कर्कट ... | ७६ | २२ नदीवृक्ष ... | ९२ |
| ७२ श्लेष्मातक ... | ७६ | २३ जातिपत्री ... | ९३ |
| ७३ रघुश्लेष्मातक ... | ७६ | २४ जातीफल ... | ९३ |
| ७४ मुष्क ... | ७७ | २५ ककोल ... | ९३ |
| ७५ परमर्द ... | ७७ | २६ लवंग ... | ९३ |
| ७६ तेज पल ... | ७७ | २७ अमर ... | ९४ |
| ७७ विवटक ... | ७८ | २८ स्वादु ... | ९४ |
| ७८ हरीतकी ... | ७८ | २९ टुष्णागद ... | ९४ |
| ७९ विमातर ... | ७९ | ३० फाट्यागद ... | ९४ |
| ८० पृग ... | ८० | | |
| ८१ नागवर्ग ... | ८१ | | |
| ८२ चूर्ण ... | ८२ | | |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|------------------|--------|-------------------|--------|
| ३१ दाहागर | ९४ | ११ अनुकौदधिवर्गः | |
| ३२ मगल्यागर | ९५ | १ श्वेतवृत्ताक | १०६ |
| ३३ मासी | ९५ | २ किंकिरात | १०६ |
| ३४ गधमासी | ९५ | ३ चपल | १०६ |
| ३५ आकाशमासी | ९५ | ४ प्राचिनामलक | १०६ |
| ३६ तुदक | ९५ | ५ साराम्ल | १०६ |
| ३७ गुग्गुलु | ९६ | ६ आर्तगल | १०७ |
| ३८ कणगुग्गुलु | ९७ | ७ तुद | १०७ |
| ३९ भूमिजगुग्गुलु | ९७ | ८ गागेदक | १०७ |
| ४० राल | ९७ | ९ नदीभलातक | १०७ |
| ४१ कुदरु | ९७ | १० वाताम | १०८ |
| ४२ कुष्ठ | ९८ | ११ मुकूलक | १०८ |
| ४३ सारिवा | ९८ | १२ निकोचक | १०८ |
| ४४ कृष्णसारिवा | ९८ | १३ खवली | १०८ |
| ४५ नख | ९९ | १४ कालशाक | १०८ |
| ४६ व्याघ्रनख | ९९ | १५ चतुष्पत्री | १०९ |
| ४७ स्पृक्षा | १०० | १६ दुग्धिका | १०९ |
| ४८ स्थौणैय | १०० | १७ उत्तानका | १०९ |
| ४९ मुरा | १०१ | १८ शिरीषिका | १०९ |
| ५० शैलिय | १०१ | १९ त्रहसोमा | १०९ |
| ५१ कोरक | १०२ | २० चोहार | ११० |
| ५२ प्रथिपर्ण | १०२ | २१ लतावस्तूरिका | ११० |
| ५३ पद्मक | १०३ | २२ अस्थिशृङ्खलिका | ११० |
| ५४ प्रपौडरीक | १०३ | २३ मृगदत्ती | ११० |
| ५५ लामजक | १०३ | २४ कजुका | ११० |
| ५६ मांसरोहिणी | १०४ | २५ भूमिच्छत्र | ११० |
| ५७ रोहिणा | १०४ | २६ मानकद | १११ |
| ५८ ध्रुवेष्ट | १०४ | २७ राजकदवक | १११ |
| ५९ उशीर | १०५ | २८ जिगिणी | १११ |
| ६० नलिका | १०५ | २९ लोवाण | १११ |
| | | ३० भूमदली | १११ |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम | पृष्ठ. |
|--------------------|--------|------------------------|--------|
| ३१ वनजागधनिशा... | १११ | ६१ सेव | ११५ |
| ३२ मिष्टनिव | १११ | ६२ अमृतफल | ११५ |
| ३३ हन्वती | ११२ | ६३ आलूक | ११५ |
| ३४ खुरसाना | ११२ | ६४ कपित्थपत्री | ११५ |
| ३५ तोयमजरी | ११२ | ६५ विडिश्च | ११५ |
| ३६ आकलक | ११२ | ६६ मरुद्भव | ११५ |
| ३७ तमालपत्र | ११२ | ६७ छिकनी | ११५ |
| ३८ समुद्रशोष | ११२ | ६८ चंद्रशूर | ११६ |
| ३९ शखेसरी | ११२ | ६९ खसखसकलोद्भूतपल्कल | ११६ |
| ४० रक्तरगा | ११३ | ७० चणकाम्ल | ११६ |
| ४१ सर्पदंष्ट्रा | ११३ | ७१ गंधकोकिला, गंधमालती | ११६ |
| ४२ रक्तपुष्प | ११३ | ७२ सुदर्शना | ११६ |
| ४३ अजीर | ११३ | ७३ मखाव | ११६ |
| ४४ कुङ्कुम | ११३ | ७४ मुकुदिनीबीज | ११६ |
| ४५ फाफणाकतक | ११३ | ७५ यसद | ११६ |
| ४६ विशल्या | ११३ | ७६ स्थूलप्रथी | ११६ |
| ४७ वनमेथिका | ११३ | ७७ द्वीपातरवचा | ११७ |
| ४८ फोग | ११३ | ७८ कलबी | ११७ |
| ४९ गोलिका | ११३ | ७९ शुक्नासा | ११७ |
| ५० चिरपोटा | ११४ | ८० तमायु | ११७ |
| ५१ तिलपर्णी | ११४ | १२ सुवर्णादिवर्ग. | |
| ५२ सुसद | ११४ | १ सुवर्ण | ११८ |
| ५३ वृश्चिकाली | ११४ | २ रौप्य | ११८ |
| ५४ शखालु | ११४ | ३ ताम्र | ११९ |
| ५५ कटुदरी | ११४ | ४ त्रपु | १२० |
| ५६ तारसत्व | ११४ | ५ सीसक | १२० |
| ५७ सस्यक | ११४ | ६ पित्तल | १२१ |
| ५८ चुवक | ११४ | ७ राजरीति | १२१ |
| ५९ काच | ११४ | ८ कांस्य | १२१ |
| ६० मर्दसिंचितिकाफल | ११५ | ९ बदलोद | १२२ |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|------------------|--------|------------------|--------|
| १० कांतलोह | १२२ | ४४ मुक्ताशुक्ति | १३४ |
| ११ लोहकिट | १२३ | ४५ जलशुक्ति | १३५ |
| १२ मुंड... | १२३ | ४६ खाटिका | १३५ |
| १३ तीक्ष्ण | १२३ | ४७ दुग्धपापाण | १३५ |
| १४ मनःशिला | १२४ | ४८ कर्पूरमाणि | १३५ |
| १५ सिद्ध | १२४ | ४९ विमला | १३६ |
| १६ भूनाग | १२५ | ५० सिकता | १३६ |
| १७ हिंगुल | १२५ | ५१ कंकुट | १३६ |
| १८ गैरिक | १२६ | ५२ आलुपापाण | १३६ |
| १९ सुवर्णगैरिक | १२६ | ५३ माणिक्य | १३७ |
| २० सौराष्ट्री | १२६ | ५४ मौक्तिक | १३७ |
| २१ हरिताल | १२६ | ५५ प्रवाल | १३७ |
| २२ शिलाजातु | १२७ | ५६ गारुमत | १३८ |
| २३ मेषक | १२७ | ५७ पुष्पराग | १३८ |
| २४ सिक्थक | १२८ | ५८ हीरक | १३८ |
| २५ कासास | १२८ | ५९ नील... | १३८ |
| २६ पुष्पासीस | १२९ | ६० गोमेद... | १३९ |
| २७ सुवर्णमाक्षिक | १२९ | ६१ वैडूर्य... | १३९ |
| २८ तारमाक्षिक | १२९ | ६२ स्फटिक | १३९ |
| २९ कुलत्थिका | १३० | ६३ सूर्यकांत | १३९ |
| ३० सोवीर | १३० | ६४ वैकांत | १३९ |
| ३१ पुष्पाजन | १३० | ६५ चंद्रकांत | १३९ |
| ३२ रसांजन | १३१ | ६६ राजावर्त | १४० |
| ३३ सोतोंजन | १३१ | ६७ पेरोज | १४० |
| ३४ कंपिलक | १३१ | १२ पानीयवर्गः | |
| ३५ तुल्य | १३१ | १ पानीय | १४० |
| ३६ सर्परीतुल्य | १३१ | २ आकाशोदक | १४० |
| ३७ पारद | १३२ | ३ सद्योवृष्टयं | १४० |
| ३८ अभ्रक | १३२ | ४ समुद्र | १४१ |
| ३९ स्फाटिकी | १३३ | ५ नदी | १४१ |
| ४० क्षुद्रशख | १३३ | ६ समस्तनदीनामानि | १४१ |
| ४१ शख | १३४ | ७ भागीरथी | १४१ |
| ४२ कृमिशंख | १३४ | ८ यमुना | १४१ |
| ४३ कपट | १३४ | | |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|------------------------|--------|---------------------|--------|
| ९ नर्मदा | १४२ | ४३ शृतशीतजल | १४५ |
| १० सरस्वती | १४२ | ४४ तप्तादिजल | १४५ |
| ११ नद्यभागा | १४२ | ४५ बेलजल | १४५ |
| १२ मधुमती | १४२ | ४६ जलपानलक्षण | १४५ |
| १३ शतद्रुवादि | १४२ | ४७ जलभेदाः | १४५ |
| १४ शोणजल | १४२ | ४८ इक्षु | १४६ |
| १५ वेप्रघती | १४२ | ४९ गुड | १४७ |
| १६ पयोष्णी | १४२ | ५० जीर्णगुड | १४७ |
| १७ वितस्ता | १४२ | ५१ मीनाडी | १४८ |
| १८ मही | १४२ | ५२ यावनाली | १४८ |
| १९ शरयू | १४२ | ५३ माध्वीसिता | १४८ |
| २० गोदावरी | १४२ | ५४ तवराजंशर्करा | १४८ |
| २१ कृष्णा | १४३ | ५५ पुष्पोद्भवशर्करा | १४८ |
| २२ घटप्रभा | १४३ | ५६ मधु | १४८ |
| २३ भीमरथी | १४३ | ५७ मय | १५० |
| २४ तुंगभद्रा | १४३ | १३ क्षीरादिवर्गः | |
| २५ कावेरी | १४३ | १ क्षीर | १५१ |
| २७ कालभेदाग्रदीजलगुणाः | १४३ | २ दधि | १५१ |
| २६ नदीविशेषगुणाः | १४३ | ३ संतानिका | १५१ |
| २८ अनूपदेशजल | १४३ | ४ सवनीत | १५१ |
| २९ जागलसलिल | १४३ | ५ शृत | १५१ |
| ३० साधारणजल | १४४ | ६ मृक्षण | १५१ |
| ३१ विशेषजलं | १४४ | ७ तक्र | १५१ |
| ३२ न्हदवारि | १४४ | ८ गोमूत्र | १५१ |
| ३३ अन्नवणजल | १४४ | ९ गोमय | १५१ |
| ३४ तडागसलिल | १४४ | १० काजिक | १५२ |
| ३५ वापीजल | १४४ | ११ लुक | १५२ |
| ३६ कूपोदक | १४४ | १२ सौवीरक | १५२ |
| ३७ औद्धिदजल | १४४ | १३ ताडलायु | १५२ |
| ३८ केदारसलिल | १४४ | १४ मेदुग्ध | १५२ |
| ३९ हसोदक | १४४ | १५ महिषीक्षीर | १५२ |
| ४० प्राणपीतोदकगुणाः | १४४ | अजापय | १५२ |
| ४१ दूषितजल | १४४ | आविकपय | १५२ |
| ४२ शीताद्युपरिवर्जन. | १४४ | हस्तिनीपय | १५२ |

| नाम. | पृष्ठ. | नाम. | पृष्ठ. |
|-------------------|--------|-------------------|--------|
| गर्वभीषय ... | १५२ | मकुष्ट ... | १६५ |
| उट्टीपय ... | १५२ | ममूर ... | १६५ |
| मानुषीपय ... | १५३ | वस्त्राय ... | १६५ |
| सामान्यक्षीर ... | १५३ | लका ... | १६५ |
| गोमहीप्यादिदधि. | १५४ | आढकी ... | १६५ |
| मस्तु ... | १५५ | फुलित्य ... | १६५ |
| तक्र ... | १५५ | सव ... | १६६ |
| नवनीत ... | १५६ | मधुरश्वेतनिष्पाव. | १६६ |
| धृत ... | १५७ | कटुनिष्पाव ... | १६६ |
| काजी ... | १५८ | नदीनिष्पाव ... | १६६ |
| गोधूमयवतुपात्रु.. | १५८ | तिल ... | १६६ |
| तडुलोरधजल ... | १५८ | पिण्याक ... | १६६ |
| शिवरस ... | १५८ | अतसी ... | १६७ |
| गोमूत्र ... | १५८ | आसुरी ... | १६७ |
| महिष्यादिमूत्र... | १५८ | राजसर्पप ... | १६७ |
| तैल ... | १५९ | गौरसर्पप ... | १६७ |
| १४ धान्यवर्ग. | | इयामाक ... | १६७ |
| सामान्यशालि... | १६० | कोद्रव ... | १६७ |
| राजशालि ... | १६० | धरक ... | १६८ |
| षष्टिक ... | १६१ | भ्रियगु ... | १६८ |
| कृष्णशालि ... | १६१ | नीवार ... | १६८ |
| रक्तशालि ... | १६१ | शंघी ... | १६८ |
| निःशूकशालि ... | १६१ | कुरीधान्य ... | १६८ |
| स्थूलशालि ... | १६१ | लजा ... | १६८ |
| सूक्ष्मशालि ... | १६२ | आकुल ... | १६८ |
| सुगन्धशालि ... | १६२ | दुग्धषीजा ... | १६८ |
| तिरियशालि ... | १६२ | तप्तखणक ... | १६८ |
| थावनाल ... | १६२ | गोधूमचूर्ण ... | १६९ |
| गोधूम ... | १६३ | नवादिधान्यगुणाः | १६९ |
| यव ... | १६३ | सजक ... | १६९ |
| वेणुयव ... | १६३ | मांसवर्गः | |
| मुद्ग ... | १६३ | सिंहादिवर्ग ... | १६९ |
| वममुद्ग ... | १६४ | मनुष्यवर्ग ... | १८३ |
| माप ... | १६४ | गदादिवर्ग ... | १९० |
| षण ... | १६४ | मिश्रवर्ग ... | १९३ |

धौसंकर.

श्रीनिघंटुशिरोमणिः ।

द्वितीयः पार्श्वः (भागः) ।

६ शाल्पल्यादिवर्गः ।

(प्रथमपार्श्वोद्गमे)

६२ गर्मोटिका । म० गोडा लोणा गवत, जरडी । गर्मोटिका
सुनीला च जरडी च जलाश्रया । गुणाः । जरडी मधुरा शीता सारिणा
दाहहारिणी ॥ ८१ ॥ रक्तदोषहरा रुच्या पशूनां दुग्धदा ' नृप ' ।
६३ मज्जर । म० पवना गवत । गु० मज्जरतृण । मज्जरः पवनः प्रोक्तः
सुतृणः स्निग्धपत्रकः । गुणाः । मृदुयंथिश्च मधुरो धेनुदुग्धकरो ' नृप ' ॥ ८२ ॥
६४ पत्राढ्य । म० शंडे गवत । गु० पत्राढ्य । तृणाढ्य पर्व-
ततृणं पत्राढ्यं च मृगप्रिय । गुणाः । बलपुष्टिकरं रुच्यं पशूनां सर्वदा
हितं ॥ ८३ ॥ ६५ वंशपत्री । म० वंशपत्री गवत । गु० वंशपत्री
तृण । वंशपत्री वंशदला जीरिका जीर्णपत्रिका । गुणाः । वंशपत्री
सुमधुरा शिशिरा पित्तनाशिनी ॥ ८४ ॥ रक्तदोषहरा रुच्या पशूनां
दुग्धदा ' नृप ' । ६६ मंथानक । म० मारवेल, मुरे गवत । गु०
मंथानक । मथानकस्तु हरितो दृढमूलस्तृणाधिपः ॥ ८५ ॥ गुणाः ।
स्निग्धो धेनुप्रियां दोग्धा मधुरो बहुवीर्यकः । ६७ पल्लिवाह । म०
पोकळी गवत, तावडे पातीचे । गु० पल्लिवाह । पल्लिवाहो दीर्घतृणः
सुपत्रस्ताम्रवर्णकः ॥ ८६ ॥ गुणाः । अदृढः शाकपत्रादि पशूनामवल-
पदः । ६८ लवणतृण । म० लोणागवत । गु० लवणतृण । लवण-

तृणं लोणतृणं तृणाम्लं षट्पृणकमम्लकांडं च । गुणाः । षट्पृणकं क्षारा-
म्लं कषायस्तन्यमश्ववृद्धिकरं ॥ ८७ ॥ ६९ पण्यंध । म० पण्यं गवत ।
गु० पण्यंध । पण्यंधः कंठ्णीपत्रः पण्यंधा पणधा 'नृपे' ॥ ८८ ॥ गुणाः ।
'पण्यंधा समवीर्या स्यात्तिका क्षारा च सारिणी । तत्कालशस्त्रधातस्य
व्रणसरोपणी परा ॥ ८९ ॥ दीर्घा मध्या तथा ऋस्वा पण्यंधा त्रिविधा
स्मृता । ७० दीर्घकांड । म० तिधारी लम्हा—लम्हाळें । गु० तृण-
विशेष । गुंडस्तुकांडगुंडस्यादीर्घकांडास्त्रिकोणकः ॥ ९० ॥ छत्रगुच्छाऽसिप-
त्रश्च नीलपत्रस्त्रिधारकः । ७१ लघुगुंड । म० लघु लम्हाळें । गु०
तृणविशेष । ७२ वृत्तगुंड । म० वाटाळें लम्हाळें । गु० तृणविशेष ।
वृत्तगुंडोऽपरोवृत्तो दीर्घनालो जलाश्रयः ॥ ९१ ॥ तत्र स्थूलो लघुश्चा-
न्यस्त्रिधाऽयं 'राजनामके' । गुणाः । गुंडास्तु मधुराः शीताः कफपित्ता-
तिसारहाः ॥ ९२ ॥ दाहरक्तहरास्तेषां मध्यं स्थूलतरोऽधिकः । ७३ गुड-
कंद । म० कचरा, कचरे । गु० कचरो । गुडकंदः कसेरुः स्यात्सु-
द्रमुस्ता कसेरुका ॥ ९३ ॥ सूकरेष्टः सुगंधिकः सुकंदो गंधकंदलः ।
प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु भिषग्विद्याविशारदैः ॥ ९४ ॥ राजकसेरुकश्चैव
इयामकंदो 'मदे' तथा । गुणाः । कसेरुकः कषायोऽल्पमधुरोऽतिख-
रस्तथा ॥ ९५ ॥ दाहहा श्रमहा शीतो रक्तपित्तघ्नको 'नृपे' । हिमो-
ल्लश्च मधुरः संग्राही शुक्रलस्तथा ॥ ९६ ॥ कफकृत्वातकृच्चैव प्रोक्तो
'केयनिघटके' नेत्ररोगहरः प्रोक्तो वैद्ये 'मविप्रकाशके' ॥ ९७ ॥
७४ चणिका । म० वर्णया गवत, चणई । गु० चणई । चणिका दुग्धदा
गोत्या सुनीला क्षेत्रजा हिमा । गुणाः । वृथ्या बल्याऽतिमधुरा बीजेः
पशुहिता तृणः ॥ ९८ ॥ ७५ गुंडासिनी । म० पाणकणीस । गु०
पान्यघाडाडी । गुंडासिनी तु गुंडा च गुंडाला गुच्छमूलका । चिपिता
तृणपत्री च जलवासा सुविष्टरा ॥ ९९ ॥ पृथुला तु तथा प्रोक्ता 'राजना-
मनिघटके' । गुणाः । गुंडासिनी कटुः स्वादे पित्तदाहश्रमा-
पहा ॥ १०० ॥ तिकोष्णा श्वयधुग्नी च व्रणग्नी 'राजनामके' ।

७६ शूली । म० सुळें गवत । गु० शूली । शूली तु शूलपत्री स्यादशाखा
धूम्रमूलिका ॥ १ ॥ जलाश्रया मृदुलता पिच्छला महिषीप्रिया ।
गुणाः । शूली तु पिच्छला चोष्णा गुरुगौल्या बलप्रदा ॥ २ ॥
पित्तदाहहरा रुच्या दुग्धवृद्धिप्रदा ' नृपे ' ॥ ७७ ॥ परि-
पेष्ट । म० क्षुद्रमोथ, केवटीमोथ, जलमृस्ता । गु० केवटीमोथ । परि-
पेष्ट प्लवं वन्यं गोपुटं स्यात्कुटजटं ॥ ३ ॥ सितपुष्पं दामपुरं गोमर्दं
जीर्णबुध्नकं । प्रोक्तं ' राजनिघंटे ' तु वैद्याविद्याविचक्षणैः ॥ ४ ॥ वितु-
जकं शुकाह्वं च कैवर्तीमृस्तकं पुट । वानेयं गोपुरं चैव ' भावनामनिघ-
टके ' ॥ ५ ॥ तथा दाशपुरं चैव ' कोशे ' तु परिपेलवं । गुणाः ।
परिपेष्टं कटूष्णं च कफमारुतनाशिनं ॥ ६ ॥ मणदाहामशूलघ्न रक्तदाह-
हरं ' नृपे ' । कफपित्तासहं चैव तथा विसर्पह ' क्ये ' ॥ ७ ॥ सुगं-
धिकं च प्रस्वेदमलकं हविनाशनं । कफवातहरं मेध्यं कांतिदं ' धन्व-
नामके ' ॥ ८ ॥ ' द्रव्ये ' दाहहरं प्रोक्तं ' मंदत्वर्शोविनाशनं । कफ-
पित्तहरं प्रोक्तं वैद्यैर्गणनिघंटिके ' ॥ ९ ॥ ७८ हिज्जल । म० परळ । गु०
जलजांबवो । हिज्जुलोऽथ नदीकांतो जलजो दीघंपत्रकः । नदीजां
निचुलो रक्तकार्मुकः कथितो ' नृपे ' ॥ १० ॥ ततो नदीकार्मु-
कश्च निम्नगो रक्तमंजरी । तोयजातस्तु संप्रोक्तो ' केयदेवनिघंटके ' ॥ ११ ॥
तोयजः कविमिश्रैव प्रोक्तो ' गणनिघंटके ' । गुणाः । हिज्जुलः कटु-
रुष्णश्च पवित्रो भूतनाशनः ॥ १२ ॥ वातघ्नो ग्रहदोषघ्नो ' राजनामनि-
घटके ' । कटुतिक्तः कषायश्च मेदः कृमिचलासहा ॥ १३ ॥ शोफोदर-
हर चैव ' केयदेवनिघंटके ' ॥ ७९ ॥ शैवाल । म० शेवाळें । गु० शेवाळ,
लील । शैवालं जलनीली स्याच्छैवल जलजं ' नृपे ' ॥ १४ ॥ गुणाः ।
शैवालं शीतलं सिग्धं व्रणसंतापह ' नृपे ' । ' भावे ' तु तुवरं
तिक्तं मधुरं दाहतृट्हरं ॥ १५ ॥ पित्तरक्तज्वरघ्नं च प्रोक्तं वैद्यैर्न संशयः ।

७ प्रभद्रादिवर्गः

१ प्रभद्र । म० कडू निंब । गु० लिंबडो । प्रभद्रः पिचुमंदश्च
 निंबस्तु पारिभद्रकः ॥ १६ ॥ तथा काकफलश्चैव कॅरिष्टांऽरिष्ट एव च ।
 धगनः सर्वतोभद्रः शीतश्च पीतसारकः ॥ १७ ॥ वरतिकोऽरिष्टफलो
 ज्येष्ठामलक एव च । छर्दनो हिंशुनिर्घातो पवनेष्टस्तथैव च ॥ १८ ॥
 नेताऽग्निधगनश्चैव 'नृपे' विशीर्णपर्णकः । सुतिक्तो नियमनो 'धन्व-
 तरिनिघंटके' ॥ १९ ॥ शुकप्रियः सुभद्रश्च कृमिघ्नः 'केयवेवके' । सुतिक्तो
 'मदने' चैव पिचुमर्दस्तु 'भावके' ॥ २० ॥ पवनेष्टस्तथा प्रोक्तो
 भिषग्विद्याविशारदैः । गुणाः । निंबः शीतस्तु तिक्तश्च कफघ्नण्वला-
 सहा ॥ २१ ॥ कृमिशोफविपन्नश्च पित्तहृदाहहा 'नृपे' । कुष्ठकृ-
 मिच्छर्विहरः प्रोक्तो 'धन्वनिघंटके' ॥ २२ ॥ अपक्वशोफपचनः पक्वघ्नवि-
 शोधनः । पाके कटुर्वातलश्च ग्राही हृद्यस्तु मेहहा ॥ २३ ॥ त्वरकासारुचि-
 हरस्तृषा हल्लामरकहा । तत्फलं तु रसे पाके मेदनं तूष्णमे व हि ॥ २४ ॥
 कुष्ठगुल्मार्शकृमिहृन्मेहहृ 'केयवेवके' । नेत्र्यं 'भावप्रकाशे' तु प्रोक्तं वैद्यैर्न-
 संशयः ॥ २५ ॥ २ महानिंब । म० बकाणनिंब । गु० बकान । महा-
 निंबो महान्द्रकः कार्मुकः केशमुष्टिकः । काकांडो रम्यकः क्षीरो महा-
 तिक्ता हिमद्रुमः ॥ २६ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु 'धन्वे' च विषमुष्टिकः ।
 निंबवरा निंबरको द्रकः प्रोक्तस्तथा ध्रुवं ॥ २७ ॥ निंबरः 'केयवेवे' तु
 गिरिको मालकस्तथा । बृहन्नितो 'गणे' प्रोक्तस्तथा च
 शकशालकः ॥ २८ ॥ गुणाः । महानिंबस्तु शिशिरः कषायः कटुति-
 क्तकः । असदाहबलासघ्नो विषमञ्जरहा 'नृपे' ॥ २९ ॥ शीतपित्तकफ-
 घ्नश्च विपृचीकृष्टहा 'धनं' । रक्तो ग्राही रक्तपित्तविषकुमिहरः 'कये' ॥ ३० ॥
 रक्तहृत्लासच्छर्दिघ्ना स्तेष्पापित्तहरो 'मंद' । कफपित्तप्रमेहघ्नो गुल्मार्शः-
 ग्रामनाशनः ॥ ३१ ॥ मूलकानां विषयश्च प्रोक्तो 'भावप्रकाशके' ।
 ३ कैडर्य । म० गदाकृत्, कवड्यानिंब । गु० अरडूमो । कैडर्योऽन्यां

महानिबो रामणो रमणस्तथा ॥ ३२ ॥ गिरिनिबो महारिष्टः शुक्लशालोलकाब्धयः । 'नृपे' प्रोक्तस्तथा 'धन्वे' च्छर्दिघ्नः पिचुमन्दकः ॥ ३३ ॥ पार्वतो हिंगुनिर्यासः मियशालो वरत्त्वचः । गुणाः । कैडर्यः कटुकस्तिकः कपायः शीतलो लघुः ॥ ३४ ॥ संतापशोषकुष्ठासकृमिभूतविषापहः । ४ भूर्निब । म० पाले किराईत । गु० पानकरियातु । भूर्निबो नार्यतिकः स्यात्किरातः रामसेनकः ॥ ३५ ॥ कैराततिको हैमः कांडतिकः किरातकः । प्रोक्तो 'राजनिघंटे' तु मिषग्विद्याविशारदैः ॥ ३६ ॥ गुणाः । भूर्निबो वातलस्तिकः कफपित्तज्वरापहः । व्रणसंरोपणः पथ्यः कुष्ठकटूतिशोफनुत् ॥ ३७ ॥ ५ नैपाल । म० किराईत, कांडेचिराईत । गु० करियातु । नैपालनिबो नैपालतृणनिबो ज्वरांतकः । नाडीतिकोऽर्धस्तिकश्च निद्रारिः सन्निपातहा ॥ ३८ ॥ 'नृपे' प्रोक्तो तथा 'धन्वे' महातिकश्च तिककः । गुणाः । नैपालनिबः शीतोष्णः कफपित्तास्रशोफहा ॥ ३९ ॥ लघुतिको योगवाही तृष्णाज्वरहरो 'नृपे' । कासघ्नश्च तथा प्रोक्तो 'धन्वंतरिनिघटके' ॥ ४० ॥ लक्षो रसे तु तिकः स्यात्सरो मेहहरो ध्रुव । श्वासकासारुचिहरो दाहशोषविनाशनः ॥ ४१ ॥ कृमिहा 'केयदेवे' च 'द्रव्यरत्ने' त्रिवोपहा । ६ कट्फल । म० कुंभी, तावडा कुंगा, कायफळ । गु० कायफळ । कट्फलः कृष्णगर्भश्च सोमवल्कः प्रचेतसी ॥ ४२ ॥ मद्रावती महाकुंभी कैडर्यो रामसेनकः । कुमुदा चोग्रगधश्च भद्रा रंजनकस्तथा ॥ ४३ ॥ कुंभी च लघुकाश्मर्यः श्रीपर्णी 'राजनामके' । महावल्कः कुंतिका च कुभा च सांमपादपः ॥ ४४ ॥ त्रुटी चैव महाकुंभी रोहिणी 'केयदेवके' । तथा कुमुदिका चैव प्रोक्ता 'भावप्रकाशके' ॥ ४५ ॥ गुणाः । कट्फलः कटुरुष्णश्च कासश्वासज्वरापहः । उग्रदाहहरो रुच्यो मुखरोगहरो 'नृपे' ॥ ४६ ॥ अशोयश्पापहा चैव 'केयदेवनिघंटके' । दाहपित्तज्वरकृमिवानिदोषहरो ध्रुवम् ॥ ४७ ॥ रक्तातिसारजित्प्रोक्तो वैद्यै 'गणनिघंटके' । कफवातहरी चैव गुल्ममेहामिमांशजित् ॥ ४८ ॥ पादुरोगामग्रहणीहृल्लासघ्नो 'धन' तथा । ज्वरकंठामयकृकटुघ्नश्च तथा

मही । तथा मधुरसा, चैव 'भावे' तु पीतरोहिणी ॥ ८४ ॥
 गुणाः । काश्मरी कटुका तिक्ता गुरूष्णा कफशोफनुत् । त्रिदोषविषदाहार्ति-
 ज्वरतृष्णास्रदोषजित् ॥ ८५ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु भिषग्विद्यावि-
 शारदेः । तत्फलं तु हिमं सिग्धं गुरु हृद्यं च बृंहणं ॥ ८६ ॥ शुक्लं
 चैव केयं च मेघ्यं मूत्रविबन्धहृत् । दाहवाततृषाघ्नं च रक्तपित्तहरं
 ध्रुवं ॥ ८७ ॥ क्षतक्षयहरं प्रोक्तं वैद्यैः 'केयनिघटके' । रक्तपित्तज्वरघ्नं
 च पुष्पं वृष्यं च बेल्यकं ॥ ८८ ॥ कफपित्तहरं प्रोक्तं 'धन्वन्तरिनिघटके' ।
 मधुरा चैव वीर्योष्णा ह्यामशूलविनाशिनी ॥ ८९ ॥ तत्पुष्पं मधुरं शीतं
 संग्राहि वातलं ध्रुवं । पाके कषायमधुरं पित्तासृद्भाशनं तथा ॥ ९० ॥
 कफपित्तहरं 'केये' त्वशोघ्नं 'भावनामके' । १३ अश्मंतक । म० आपटा ।
 गु० आशोदरो । अश्मंतकश्चंद्रकुश्व कुदालस्ताम्रपत्रकः ॥ ९१ ॥ अश्मा-
 तकश्चंद्रशुक्ली शिलान्तश्चांबुदः स्मृतः । पाषाणान्तक इत्युक्तो 'राजनाम-
 निघटके' ॥ ९२ ॥ चंद्रकः कुशली चैव तथा यमलपत्रकः । श्लक्ष्ण-
 त्वङ्गमालकापत्रो 'धन्वन्तरिनिघटके' ॥ ९३ ॥ पाषहरोऽश्मयोनिश्च
 'केयंद्वनिघटके' । युग्मपत्रो 'द्रव्यरत्ने' 'मदने' पाषाणशनः ॥ ९४ ॥
 भिषग्विद्याप्रवीणस्तु संप्रोक्तो यमलच्छदः । गुणाः । अश्मंतकस्तु मधुरः
 कषायः शीतलो ध्रुवं ॥ ९५ ॥ पित्तप्रमेहदाहघ्नो मृदुविषमज्वरापहः ।
 विषछर्दिमूतनिघ्नः प्रोक्तो 'राजनिघटके' ॥ ९६ ॥ तत्पुष्पं तु भवेद्भूक्षं
 रक्तपित्तविनाशनं । प्रदरक्षयकासघ्नं प्रोक्तं 'भावप्रकाशके' ॥ ९७ ॥
 कफपित्तहरं प्रोक्तं 'धन्वन्तरिनिघटके' । अग्नौ ग्राही वातकफगंडमाला-
 सनाशनः ॥ ९८ ॥ गलगंडादिरोघघ्नः तत्फलं वैद्यनायकः । आध्मान-
 कारकं प्रोक्तं 'केयदेवनिघटके' ॥ ९९ ॥ शस्त्रज्वरहरं प्रोक्तं 'द्रव्य-
 रत्ने' भिषग्वरैः । वातातिसारनिघ्नं च प्रोक्तं 'गणनिघटके' ॥ १०० ॥
 १४ कर्णिकार । म० लघु बाहवा । गु० लहानो गरुमाळा । कर्णि-
 कारो राजतरुः प्रमहः कृतमालकः । परिव्याधो व्याधिरिपुः सुफलः
 पंक्तिबीजकः ॥ १ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु तथा 'धन्वनिघटके' ।

आरोग्यशिखी शम्बाको व्याधिघातो व्यथांतकः ॥ २ ॥ ' केये ' रैवतः
 फल्पद्रुः स्वर्णद्रुश्चोपघातकः । गुणाः । कर्णिकारो रसे तिक्तः कटूष्णः
 कफशूलहृत् ॥ ३ ॥ उदरकृमिमेहघ्नो व्रणगुल्महरो ' नृपे ' । १५ आर-
 ग्वध । म० धोर बाहवा । गु० मोटो गरमाळो । आरग्वधोऽन्यो
 मंधानो रोचनश्चतुरंगुलः ॥ ४ ॥ ओरवतो दीर्घफलो व्याधिघातो
 नृपद्रुमः । हेमपुष्पो राजतरुः कंडूघ्नश्च ज्वरान्तकः ॥ ५ ॥ अरुजः
 स्वर्णपुष्पश्च स्वर्णद्रुः कुष्ठसूदनः । कर्णाभरणकः प्रोक्तो महाराजद्रुमः
 स्मृतः ॥ ६ ॥ कर्णिकारो महादिः स्याद्योक्तो ' राजनिघंटके ' ।
 व्याधिघ्नश्चैव कर्णी च ' धन्वंतरिनिघंटके ' ॥ ७ ॥ ' द्रव्यं '
 ' केये ' व्याधिजिघ्न नराधिप्युपघातकः । ' मदे ' ' भादे ' तथाऽरोगनः
 स्वर्णागः स्वर्णभूषणः ॥ ८ ॥ ' कोशे ' सुवर्णकश्चैव ' मणे ' च त्वधरे-
 चनः । गुणाः । आरग्वधोऽतिमधुरः शीतः शूलपहारकः ॥ ९ ॥ ज्वर-
 कंडूकुष्ठमेहकफविट्महा ' नृपे ' । रसे तिक्तो गुरूष्णश्च कृच्छ्रगुल्मत्रि-
 दोषजित् ॥ १० ॥ उदरकृमिहृत्प्रोक्तो ' धन्वंतरिनिघंटके ' । तत्पुष्पं
 शिशिरं स्वादु कषायं ग्राहि वातलं ॥ ११ ॥ पाके कटु कुष्ठहरं कफपित्त-
 विनाशनं । मज्जागुणः स्वादुः पाके हामिकृस्निग्ध एव च ॥ १२ ॥ हिम-
 स्तिक्तो मधुश्चैव मृदुरेचनकारकः । व्रणोदावर्तहृद्रोगवातपित्तहरः ' केये '
 ॥ १३ ॥ त्रिदोषघ्नी तु मज्जा च रक्तपित्तहरा ' मदे ' । १६ वृश्चि-
 काली । म० लघु मेढशिखी । गु० नहानी मेढशिखी । वृश्चिकाली
 विषाणी च विषघ्नी नेत्ररोगहा ॥ १४ ॥ उष्ट्रिकाऽप्यालिपर्णी च दक्षि-
 णावर्तकी तथा । कालिकाऽप्यागमावर्ता देवलांगुलिका तथा ॥ १५ ॥
 करमी भूरिदुग्धा च कर्कशा चामरा च सा । स्वर्णपुष्पा युग्मफला तथा
 क्षीरविषाणिका ॥ १६ ॥ तथा मामुरपुष्पा च ' राजनामनिघंटके ' ।
 वृश्चिपर्त्री कालनेमी प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ १७ ॥ गुणाः । वृश्चि-
 काली कटुस्तिक्ता सोष्णा हृद्रक्त्रशुद्धिकृत् । रक्तपित्तहरा बन्धा विबन्धा-
 रोचकापहा ॥ १८ ॥ १७ कुटज । म० कुडा । गु० कडो । कुटजः

‘ राजके ’ ॥ ५३ ॥ हस्तिनी उदकीर्णश्च तथैव हस्तिवारुणी । रोहि-
 कप्रियसंज्ञश्च तथा च करभंडिका ॥ ५४ ॥ ‘ धन्वंतरिनिघंटे ’ तु संप्रो-
 क्ता करभंजिका । ‘ मावे ’ च मर्कटी चैव केये तु मातृनंदनः ॥ ५५ ॥
 करंजकस्तथा प्रोक्तो ‘ गणनामनिघंटके ’ । गुणाः । महाकरंजस्तिकोष्णः
 कटुको विषनाशनः ॥ ५६ ॥ कंडूविवर्चिकाकुष्ठत्वग्दोषघ्णहा ‘ नृपे ’ ।
 मेहकुष्ठच्छर्दिक्कुमिनाशकः ‘ केयदेवके ’ ॥ ५७ ॥ २४ पूतिकरंज ।
 म० घाणेरा करंज । गु० दुर्गंध करंज । प्रकीर्यो रजनीपुष्पः सुमनाः
 पूतिकर्णकः । पूतिकरंजः कैडर्यः कलिमालश्च ‘ राजके ’ ॥ ५८ ॥
 २५ गुच्छकरंज । म० गोंडे करंज । गु० गुच्छकरंज । गुच्छ-
 करंजो गुच्छी च सानंदो गुच्छपुच्छकः । सिग्धदलो
 मातृनंदी नंदी च दंतधावनः ॥ ५९ ॥ गुणाः । करंजः कटुतिक्तोष्णो
 विषवातार्तिनाशनः । कंडूविवर्चिकाकुष्ठस्पर्शत्वग्दोषहा ‘ नृपे ’ ॥ ६० ॥
 २६ रीठाकरंज । म० रीठा । गु० अरिठा । अथ रीठा-
 करंजश्च गुच्छलो गुच्छपुष्पकः । रीठा गुच्छफलोऽरिष्ठो मंगल्यः कुंभ-
 बीजकः ॥ ६१ ॥ प्रकीर्यः सोमवल्कश्च फेनिलो ‘ राजनामके ’ । कुंभ-
 बीजो गर्भपाती रक्तबीजस्तथैव च ॥ ६२ ॥ रक्षाबीजः ‘ केयदेवे ’
 ‘ मदने ’ चार्धसाधनः । तथा ‘ भावप्रकाशे ’ तु मांगल्यः कृष्णवर्णकः
 ॥ ६३ ॥ गुणाः । रीठाकरंजस्तिकोष्णः कटुसिग्धश्च वातजित् । फफुः
 कुष्ठकंडूतिविषविस्फोटहा ‘ नृपे ’ ॥ ६४ ॥ पाके कटुर्लेखनश्च लघुर्दोष-
 त्रयापहः । गर्भपाती ग्रहहरः प्रोक्तः ‘ केयनिघंटके ’ ॥ ६५ ॥ २७
 अंकोल । म० , गु० अंकोल । अंकोलः कोटरो रेची गूढपत्रो निको-
 चकः । गुमलेहः पीतमारो मदनो गूढमल्लिका ॥ ६६ ॥ पीतस्ताम्रफलो
 ज्ञेयो दीर्घकीलो गुणाढ्यकः । कोलको लंबकर्णश्च गंधपुष्पश्च रोचनः
 ॥ ६७ ॥ विज्ञानतैलगर्भश्च ‘ राजनामनिघंटके ’ । ‘ धन्वंतरिनिघंटे ’
 तु अंकाटस्तु निकोचनः ॥ ६८ ॥ मृषिता भूसृता चैव हुंडिका ‘ केय-
 देवके ’ । कोटश्चेतिरकीलश्च ‘ गणनामनिघंटके ’ ॥ ६९ ॥ गुणाः ।

अंकोलः कटुकः स्निग्धो विषलतादिदोषनुत् । कफानिलहरः
सूतः शुद्धिकृद्रेचनो ' नृपे ' ॥ ७० ॥ शूलशोफघ्नश्च कृमिवैसर्पहा
ध्रुवं । कफपित्तामानिघ्नश्च तत्फलं शीतश्चेष्मलं ॥ ७१ ॥ मधुरं तु रसे
पाके स्निग्धं वृष्यं च बृहणं । रक्तपित्तानिलहरः पित्तदाहहरस्तथा ॥ ७२ ॥
क्षतक्षयविनाशश्च प्रोक्तः ' केयनिघंटके ' । स्निग्धस्तिकोष्णकश्चैव वांति-
कृच्च सरस्तथा ॥ ७३ ॥ श्वानाखगृहजंतूनां विषघ्नो भूतनाशनः । कटि-
शूलहरः प्रोक्तो ' धन्वंतरिनिघंटके ' ॥ ७४ ॥ मार्जारविषनिघ्नश्च ' द्रव्य-
रत्ने ' प्रकीर्तितः । अतिसारहरश्चैव सर्पाणां विषनाशनः ॥ ७५ ॥
पित्तकृद्भिषजां श्रेष्ठैः प्रोक्तो ' गणनिघंटके ' । २८ नीलवृक्ष । म० ,
गु० नीलवृक्ष । नीलस्तु नीलवृक्षश्च वातारिः शोफनाशनः ॥ ७६ ॥
नरनामा नखालुश्च नखवृक्षो नखमिषः । गुणाः । नीलवृक्षस्तु
कटुकः कषायोष्णो लघुस्तथा ॥ ७७ ॥ वातामयप्रशमनो नानाश्वयधुहा
' नृपे ' । २९ सर्ज । म० थोर राळेचा वृक्ष । गु० राळनुं मोटुं शाड ।
सर्जः सर्जरसः शालः कालकटो रजोद्भवः ॥ ७८ ॥ बल्लीवृक्षश्चीरपर्णो
रालः काश्यपोऽजकर्णकः । वस्तकर्णः कषायी च ललनो गंधवृक्षकः ॥ ७९ ॥
वंशश्च शालनिर्घासो दिव्यसारः सुरेष्टकः । शूरोमिवल्लभश्चैव यक्षधूपः
सुसिद्धकः ॥ ८० ॥ ' नृपे ' प्रोक्तो तथा ' धन्वे ' सस्यसंवरकः स्मृतः ।
स्वेदघ्नश्च लतावृक्षः कुदेहो ' द्रव्यनामके ' ॥ ८१ ॥ देव-
धूपस्तथा ' भावे ' रसनिर्घासको ' गणे ' । कल्याणी श्रीतरुः कांतः
कांतिवृक्षस्तथा स्मृतः ॥ ८२ ॥ मद्यपोनिः स्वेदहरो कुशरीरस्तथैव च ।
सालस्तु ' कोशे ' संप्रोक्तो ' केये ' तु रंजनद्रुमः ॥ ८३ ॥ गुणाः ।
सर्जस्तु कटुतिक्तोष्णो हिमः स्निग्धोऽतिसाराजित् । पित्तास्रकुष्ठकंडूघ्नो
वातविस्फोटहा ' नृपे ' ॥ ८४ ॥ वण्यो रूक्षः कफघ्नश्च ' धन्वंतरि-
निघंटके ' । नेत्ररुक्कृमिहृत्पित्तमणहत् ' द्रव्यनामके ' ॥ ८५ ॥ ' मदे '
स्वेदहरः प्रोक्तः पुरातनचिकित्सकैः । पांडुश्रुतिगदघ्नश्च मेहघ्नो ' भाव-
तामके ' ॥ ८६ ॥ ३० अश्वकर्ण । म० लघु राळेचा वृक्ष । गु०

राळनुं नहानुं झाड । जरणद्रुमोऽश्वकर्णो दीर्घपर्णश्च कौशिकः । तार्क्ष्य-
 प्रसवकश्चैव सस्यसंवरणस्तदा ॥ ८७ ॥ कुशिकतरुस्तु धन्या ' राजना-
 मानिघटके ' । दीर्घवृक्षोऽरण्यः ' केये ' ' धन्वे ' तु चिरपत्रकः ॥ ८८ ॥
 गुणाः । अश्वकर्णः कटुस्तिक्तो स्निग्धः पित्तास्रनाशनः । ज्वरविस्फोट-
 कंडूघ्नः शिरोर्तिनाशनो ' नृपे ' ॥ ८९ ॥ मेहकुष्ठव्रणकफहरः प्रोक्तो
 ' गणे ' तथा । ३१ ताल । म० खरताल, ताडवृक्ष । आंध्रदेशांत
 प्रसिद्ध । गु० ताड । तालस्तालद्रुमः पत्री दीर्घस्कंधो ध्वजद्रुमः ॥ ९० ॥
 तृणराजो मधुरसो मदाढ्यो दीर्घपादपः । चिरायुस्तरु राजश्च गज-
 मक्षो दृढच्छदः ॥ ९१ ॥ दीर्घपत्रो गुच्छपत्रोऽप्यासवद्रश्च ' राजके ' ।
 तथा बुरारुहः प्रांशु ' धन्वे ' चैव द्रुमेश्वरः ॥ ९२ ॥ ' भाव ' महोन्नतश्चैव
 तथा ' गणनिघंटके ' । ध्वजवृक्षो मद्ययोनिध्वजः खलः शठस्तथा ॥ ९३ ॥
 दीर्घदंडो महावृक्षः श्रीबीजः ' केयदेवके ' । गुणाः । तालः सरः शीत-
 पित्तदाहश्रमकफघ्नकः ॥ ९४ ॥ पित्तघ्नो मधुरश्चैव शोषनुन्मदकृ ' नृपे ' ।
 तत्फलं तु सरं बल्यं विष्टंभिर्बृंहणं ' तथा ' ॥ ९५ ॥ ' केये ' च तर्पणं वृष्यं
 कफमांसहरं ध्रुवं । पित्तदाहक्षयघ्नं च वातपित्तास्रनाशनं ॥ ९६ ॥ बीजं शुक्रकारं
 हैमं तात पित्तहरं ध्रुवं । श्लेष्मलो वातपित्तघ्नः स्नेहस्तु मधुरः सरः ॥ ९७ ॥
 ' मद ' प्रोक्तः फलं ' धन्वे ' गुरु स्वादु च पित्तहृत् । बीजं तस्त्वाद्वा पाके च
 तन्मूलं रक्तपित्तहृत् ॥ ९८ ॥ श्लेष्मकृत्वलकृच्चैव शुक्रकृद्बृंहणं तथा ।
 वातपित्तघ्नहरं तथैव कुमिनाशनं ॥ ९९ ॥ तद्बीजं मूत्रकृत् ' केये '
 ' मदने ' मदकृद्रसः । तदस्थिगुणः संप्रोक्तो पित्तकृदातहृत्तथा ॥ १०० ॥
 ३२ श्रीताल । म० श्रीताड, मलवार देशांत प्रसिद्ध; याच्या पानांवर ग्रंथ
 लिहितात । गु० श्रीताड । श्रीतालो मृदुतालश्च लक्ष्मीतालो मृदुच्छदः । विशा-
 लपत्रो लेखार्हो मपीलेख्यदलस्तथा ॥ १ ॥ शिरालपत्रकश्चैव याम्योद्भूतस्तु
 ' राजके ' । लेख्यपत्रस्तथा प्रोक्तो ' धन्वंतरिनिघंटके ' ॥ २ ॥ गुणाः ।
 श्रीतालो मधुरोऽत्यन्तमीषश्चैव कपायकः । पित्तजित्कफकारी च ईष-
 द्धातकरो ' नृपे ' ॥ ३ ॥ ३३ हिताल । म० थोर ताड, काटे ताड ।

शु० कांटावालो ताड । हो दक्षिणेत प्रसिद्ध । हिंतालः स्थूलतालश्च
 वल्कपत्रो बृहदलः । गर्भसावी नीलतालो भीषणो बहुकंटकः ॥ ४ ॥
 स्थिरपत्रो द्विधालेख्यः शिरापत्रः स्थिरांग्रिकः । अम्लसारो बृहत्तालो
 'राजनामनिघंटके' ॥ ५ ॥ गुणाः । हिंतालो मधुराम्लश्च कफकृत्पित्त-
 दाहनुत् । श्रमवृण्णापहारी च शिशिरोवातह 'नृपे' ॥ ६ ॥ ३४ माड ।
 म० माड, भेल्लिमाड, कोंकणांत प्रसिद्ध । शु० माड । माडो माडद्रुप्रो
 दीर्घो ध्वजवृक्षो वितानकः । मद्यद्रुप्रो मोहकारी मदद्रु रज्जु 'राजके'
 ॥ ७ ॥ गुणाः । माडस्तु शिशिरो रुच्यः कपायः पित्तदाहकृत् । वृण्णा-
 पहो मरुत्कारी श्रमहृच्छ्लेष्मकृ 'नृपे' ॥ ८ ॥ ३५ तूला । म० पारसा
 पिपळ । कौ० भेंडीचं झाड । शु० पारस पीपळो । तूलं तूवं ब्रह्मकाष्ठं
 ब्राह्मणेष्टं च पूषकं । ब्रह्मदारु सुपुष्पं च सुरूपं नीलवृंतकं ॥ ९ ॥
 क्रमुकं विमकाष्ठं च मृदुगारं तु 'राजके' । 'धन्वे' तु नूदं संभोक्तं ब्रह्मपुं
 ब्रह्मचारिण ॥ १० ॥ कपिचूतः कपिवासस्तथैव क्षीरपावपः । कपीतन-
 स्तथा 'केपे' पारीशो 'भावनामके' ॥ ११ ॥ गर्वभांडः कंदरालः
 कर्मंडलुः सुपार्श्वकः । बली तु फलिका चैव बानीरो 'गणनामके' ॥ १२ ॥
 गुणाः । मधुराम्लं नृपे तूलं वातपित्तहरं सरं । दाहप्रशमनं वृष्यं कपायं
 कफनाशनं ॥ १३ ॥ 'धन्वे' चैव फलं स्वादु बलवर्णामिवृद्धिकृत् ।
 पुर्जरं तु मवेत्स्निग्धं कृमिकृच्छुककृत्तथा ॥ १४ ॥ कफकृ 'क्षेपदेवे' च
 'द्रव्यं' वंगविनाशनः ॥ ३६ ॥ तमाल । म० तमालवृक्ष । शु० तमाल ।
 तमालो नीलतालः स्यात्कालस्कंधस्तमालकः ॥ १५ ॥ नीलध्वजश्च तापिच्छः
 कालतालो महाचलः । 'नृपे' प्रोक्तो 'मदे' चैव लोकस्त्रंघोऽसि-
 तद्रुमः ॥ १६ ॥ गुणाः । तमालो मधुरो बल्यो वृष्यश्च शिशिरो गुलः ।
 कफपित्तवृषादाहश्रमप्रांतिहरा 'नृपे' ॥ १७ ॥ विस्कोटशाफहृप्रोक्तः
 'क्षेपदेवनिघंटके' । ३७ । कदंब । म० कळंब । शु० कदंब, कलम ।
 कदंबो वृत्तपुष्पश्च सुरभिर्ललनाप्रियः ॥ १८ ॥ कादंबर्षः सिंधुपुष्पो
 मदादयः कर्णपूरकः । 'नृपे' प्रोक्तस्तथा 'केपे' कुत्सितांगः कदंबकः ॥ १९ ॥

गोत्रविटपी ' केये ' ' द्रव्ये ' तथैव च । सुतेजनो धनुर्वृक्षो ' भाव-
 नामनिघंटके ' ॥५३॥ गुणाः । धन्वनः कटुकोष्णश्च कपायः कफना-
 शनः । दाहशोषकरो ग्राही कंठामयहरो ' नृपे ' ॥५४॥ कफपीनस-
 कासघ्नो रक्तदोषहरो ' द्रवे ' । पित्तानिलहरश्चैव स्वादुरूक्षश्च ' केय-
 के ' ॥ ५५ ॥ तत्फलं तु हिमं स्वादु कपायं कफवातहृत् । कफपित्ता-
 शंहञ्चैव ' मदे ' ' भावे ' तथा स्मृतः ॥ ५६ ॥ बृंहणो बलकृच्चैव संधि-
 कृद्वर्णरोषणः । ४६ भूर्जपत्रः । म०, गु० भोजपत्र । भुजो बल्कद्रुमो
 भूर्जः सुचर्मा भूर्जपत्रकः ॥ ५७ ॥ चित्रत्वग्भिदुपत्रश्च रक्षापत्रो विचित्रकः ।
 भूतघ्नो मृदुपत्रश्च शैलेंद्रस्थस्तु ' राजके ' ॥ ५८ ॥ सुचर्मको बहुपटो
 मृदुत्वक्च स्थिरच्छदः । बहुवल्कश्चीरपत्रो भूतहा लेख्यपत्रकः ॥ ५९ ॥
 ' केये ' प्रोक्तो युगपत्रः कूर्चभाक् ' द्रव्यरत्नके ' । बहुचर्मी ' मदे '
 ' भावे ' चर्मी बहुलवल्कलः ॥ ६० ॥ चित्रपत्रश्छत्रपत्रो बहुत्वक्च
 मृदुच्छदः । प्रोक्तो ' गणनिघंटे ' तु ग्रहघ्नो धूपयोगिकः ॥६१॥ गुणाः ।
 भूर्जः कटुकपायोष्णो भूतरक्षाकरः परः । त्रिदोषशमनः पथ्यो दुष्टकौ-
 ष्ठिल्यहा ' नृपे ' ॥ ६२ ॥ पित्तरक्तबलासघ्नो मेदः कर्णरुजापहः ।
 विषघ्नणहरः प्रोक्तः ' केयदेवनिघंटके ' ॥ ६३ ॥ ४७ तिनिश । म०
 तिवस । गु० मिणोहरमो । तिनिशः स्पंदनश्चक्री रथांगः शकटो रथः ।
 रधिका भस्मगर्भश्च नेमी जलधरो ' नृपे ' ॥ ६४ ॥ सुगर्भको ह्यश्म-
 गर्भश्चक्रसंवरणः ' केये ' । रथद्रुर्वज्रलो ' भावे ' सर्वसारस्तु ' द्रव्यके '
 ॥ ६५ ॥ अतिमृत्तो बंजुलश्च ' कोशे ' तु चित्रकृत्तथा । गुणाः ।
 तिनिशस्तु कशापोष्णः कफरक्तातिसारजित् ॥ ६६ ॥ ग्राहको दाहज-
 ननो वातामयहरो ' नृपे ' । स्लेष्मपित्तासहा प्रोक्तो ' द्रव्यनामनिघं-
 टके ' ॥ ६७ ॥ चित्रकृष्टमणकमिषांडुदाहप्रमेहहा । बलासपित्तमेदोघ्नः
 ' केयदेवनिघंटके ' ॥ ६८ ॥ ४८ अर्जुन । म० अर्जुनसादडा । गु०
 धोळो साजड । अर्जुनः शंबरः पार्थश्रित्रयोधी धनंजयः । वीरांतकः
 किरीटी च गांडीवी शिवमल्लकः ॥६९॥ सव्यसाची नदीसर्जः कर्णारिः

कुरुवीरकः । कौन्तेय इन्द्रसूनुश्च वीरद्रुः कृष्णसारथिः ॥ ७० ॥ पृथाजः
 फाल्गुनो धन्वी ककुभो ' राजनामके ' । ' धन्वे ' तु पाण्डवश्चैव तथा
 ' केयनिघटके ' ॥ ७१ ॥ धूर्तस्तु भूरुहश्चैव मधुगधप्रसूनकः । मधुगधः
 पुष्पफलो ' गणे ' ' द्रव्ये ' शठद्रुमः ॥ ७२ ॥ इन्द्रधूर्ध्वीरवृक्षश्च वीरश्च
 धवलो ' मवे ' । ततो वीरतरुश्चैव प्रोक्त ' स्वमरकोशके ' ॥ ७३ ॥
 गुणाः । अर्जुनस्तु कपायोष्णः कफघ्नो व्रणनाशनः । पित्त-
 श्रमतृपार्तिघ्नो मारुतामयहा ' नृपे ' ॥ ७४ ॥ ' धन्वे '
 पथ्यः क्षते भग्ने रक्तस्तंभनकृद्भवेत् । अस्थिभग्नेस्थिसंहारे हितश्चाढ्या-
 निलापहः ॥ ७५ ॥ वातघ्नो ' द्रव्यरत्ने ' तु पाण्डुरांगहरो ' गणे ' ।
 क्षीतः पित्तकफघ्नश्च व्रणमेहहरो ध्रुवं ॥ ७६ ॥ स्वरभग रक्तदोष क्षत-
 क्षयरुज तथा । हंतीति ' केयदेवे ' च ' मदे ' रक्तविपापहः ॥ ७७ ॥
 ४९ हरिद्रुः । म० हळदिवो वृक्ष । गु० हलदरवो । हरिद्रुः पीतदारुः
 स्यात्पीतकाष्ठश्च पीतकः । कर्द्वकः सुपुष्पश्च सुराहः पीतकद्रुमः ॥ ७८ ॥
 प्रोक्तो ' राजनिघटे ' तु तथा ' केयनिघटके ' । श्रीमान् कर्द्वकपुष्पश्च
 पीतकाष्ठो हरिद्रुः ॥ ७९ ॥ गौरद्रुर्धातवर्णश्च ' द्रव्ये ' गौरद्रुमो
 वरः । गुणाः । हरिद्रुः शीतलस्तिको मंगल्यः पित्तवातिजित् ॥ ८० ॥
 अंगफांतिकरो बल्यो नानात्वग्दोषहा ' नृपे ' । पाके कटुश्च वीर्योष्णः
 किंचित्कफविनाशनः ॥ ८१ ॥ ' केयदेवनिघटे ' तु हितश्च व्रणरो-
 पणे । ५० दग्धरुहा । म० रामेठा । दग्धा दग्धरुहा प्रोक्ता दग्धिका
 च स्थलेरुहा ॥ ८२ ॥ रोमशा कर्कशदला भस्मरोहा सुदग्धिका ।
 गुणाः । दग्धा कटुः कपायोष्णा कफवातनिकृत्नी ॥ ८३ ॥ पित्तप्रको-
 पनी सा च ' नृपे ' चैवाग्निदीपनी । ५१ शाखोट । म० सागनाहोडा,
 हेदी, हेदू । गु० साहोडा । शाखोटो भूतवृक्षश्च पीतोजक्षीरनाशनः
 ॥ ८४ ॥ पूकावासो गवाक्षी च कौशिक्यो भूर्जपत्रकः । ' नृपे ' प्रोक्तो
 ' मदे ' चैव भूतावासः खरच्छदः ॥ ८५ ॥ ' द्रव्ये ' पीतफलश्चैव
 छागीक्षीरविनाशनः । गुणाः । शाखोटश्चैव तिक्तोष्णः पित्तशृङ्गातहा

कफत्राधीर्यनिघ्नश्च कर्णशूलहरस्तथा । योनिदोषहरः प्रोक्तो वैद्य-
 ' गणनिघंटके ॥ १९ ॥ ' केये ' तु मधुरस्तिक्तः कषायो रूक्ष एव च ।
 ' भेदी च पित्तलो दीप्यः कफवातविनाशनः ॥ २० ॥ कफवातास्रहा चैव
 मूत्राघाताऽऽमरीहरः । हृद्गदग्नस्तथा प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ॥ २१ ॥
 ६० पुत्रजीव । म०, गु० पुत्रजीव । पुत्रजीवः पवित्रश्च गर्भदः सुतजीवकः ।
 कुटुम्बीवोऽपत्यजीवः सिद्धिदोऽपत्यजीवकः ॥ २२ ॥ ' नृपे ' प्रोक्त-
 स्तथा ' केये ' यष्टिपुष्पोऽर्थसाधकः । ' भावे ' गर्भकरश्चैव प्रोक्तो वैद्य-
 विशारदैः ॥ २३ ॥ गुणाः । पुत्रजीवो हिमो वृष्यः श्लेष्मदो गर्भजीवदः ।
 चक्षुष्यः पित्तशमनो दाहतृष्णाहरो ' नृपे ' ॥ २४ ॥ श्लेष्मवातहरः
 प्रोक्तो वैद्यैर्भदनपालके । सृष्टमूत्रमलाग्घ्नो ' भावे ' गुरुकटुः पटुः ॥ २५ ॥
 ६१ महापिंडीतरु । म० पेंडू । गु० कौडिओ । महापिंडीतरुः प्रोक्तः
 श्वेतपिंडीतकस्तथा । करहाठः सुरश्चैव शस्त्रकोशतरु ' नृपे ' ॥ २६ ॥
 पिंडारस्तीक्ष्णकीलश्च ' मदने ' तु कुरंगकः । महापिंडीतकश्चैव कुरंटकः
 प्रकीर्तितः ॥ २७ ॥ चर्मकारतरुश्चैव प्रोक्तो ' गणनिघंटके ' । गुणाः ।
 पिंडीतरुः कषायोष्णस्त्रिदोषशमनो ' नृपे ' ॥ २८ ॥ चर्मरोगापह-
 श्चैव विशेषाद्रक्तदोषजित् । स्वादुर्भदनपाले ' तु शीतः शोफहरस्तथ
 ॥ २९ ॥ कफपित्तहरः प्रोक्तः प्राचीनभिषजांबरेः ६२ कारस्कर ।
 म० कुचला । गु० क्षेत्र कोचला । कारस्करस्तु किंपाको विपतिदुर्विप-
 द्नमः ॥ ३० ॥ गरद्वयो रम्यफलः कृपाकः कालकूटकः । ' राजनाम-
 निघटे ' तु कुलकः परिकीर्तितः ॥ ३१ ॥ गुणाः । कारस्करः कटू-
 ष्णश्च तिक्तः कुष्ठो नाशनः । वातामयास्रकंडूतिकफामाशोयिणापहः
 ॥ ३२ ॥ ६३ कटुभी । म० काळी किणही । गु० काळा वापुंगा ।
 कटुभी नाभिका शौंडी पाटली किणिही तथा । मधुरेणुः क्षुद्रश्यामा
 फेड्यः श्यामला ' नृपे ' ॥ ३३ ॥ कटुमरा स्वादुपुष्पी नीलपुष्पी गवादनी । प्रोक्ता
 ' केयनिघटे ' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ३४ ॥ ६४ श्वेताकटुभी । म० पांढरी
 किणही । गु० धोळा वापुंगा । सितादिकटुभी श्वेता किणिही गिरिकर्णिका ।

शिरीषपत्रा कालिंदी शतपादी विषमिका ॥ ३५ ॥ महाश्वेता महा-
 शौंडी महादिकटभी ' नृपे ' । श्वेतस्पदा श्वेतपुष्पा श्वेता पाटलिपि-
 ङिका ॥ ३६ ॥ क्षुद्रश्वेता श्वेतधामा चोरशुटी कटमरा । बहुरेणुः
 शतपदी शौंडिका तृणशौंडिका ॥ ३७ ॥ विषम्री लोहिनी चैव सुनाभा
 व्यापराजिता । ' केयदेवनिघटे ' तु समोक्ता दधिपुष्पिका ॥ ३८ ॥
 गुणाः । कटभी तु कटूष्णा च श्वेता तु गुणवत्तथा । शूलमुल्मविषाध्मा-
 नवातार्जिर्णकफमिका ॥ ३९ ॥ ' नृपे ' ' द्रव्ये ' शुक्रला च तथा
 ' केयनिघटके ' । दोषत्रयघ्नघ्नग्रथिनाशनी शीर्षिरोगहृत् ॥ ४० ॥
 ६५ भूताकुश । म० भूतकेशी । गु० भूतकेशी । क्षवकः क्षुरकस्तीक्ष्णः क्रूरो
 भूताकुशः क्षवः । राजोद्वेजनसृजश्च भूतद्रावी तु ' राजके ' ॥ ४१ ॥
 क्षुद्धो र्नो राजवृक्षः क्षवक ' त्केयदेवके ' । गुणाः । भूताकुशस्तीक्ष्णगन्धः
 कपायोष्णः कटुस्तथा ॥ ४२ ॥ भूतग्रहादिदोषघ्नः कफवातहरो ' नृपे ' ।
 अमिकृ ' त्केयदेवे ' तु कुष्ठकृमिहरस्तथा ॥ ४३ ॥ वग्ववातचित्रकुष्ठघ्नः
 कफघ्नो ' द्रव्यरत्नके ' । ६६ देवसर्पप । म० देवशिरस । गु० देवशिरस ।
 देवसर्पपकश्चाक्षो बदरो रक्तमूलकः ॥ ४४ ॥ सुरसर्पपकश्चैद्रस्तथा सूक्ष्म-
 दल स्मृतः । सर्पपा निर्जवादिः स्वात्कुरराग्रिस्तु ' राजके ' ॥ ४५ ॥
 ' केयदेवनिघटे ' तु तथा त्रिदशसर्पपः । गुणाः । देवसर्पपनामा तु कटूष्णः
 कफजतृहा ॥ ४६ ॥ दुखरोगहरो रुच्यः प्राक्तो ' राजनिघटके ' ।
 शिरोविरेचनकरः कफपित्ताग्निनापहः ॥ ४७ ॥ कृमिहा ' केयदेवे ' च
 मोक्तो वेद्यविचक्षणैः । ६७ लकुच । म० क्षुद्रफणस ' ओटीचें झाड,
 आजण । गु० लकुच, ओटफळ । लकुचो लिकुचः शालः कपायी
 दृढवत्कलः ॥ ४८ ॥ दृढः कार्श्यश्च शूरश्च स्थूलरुग्धस्तु ' राजके ' ।
 तथैव क्षुद्रपनसो ' द्रव्ये ' तु ग्रथिमत्फल ॥ ४९ ॥ पीतनाशो ग्रथिफलः
 पनसः क्षुद्रसारित । ' केयदेवनिघटे ' तु मोक्तो वेद्यविशारदः ॥ ५० ॥
 गुणाः । लकुचः स्वरसे तिक्तः कपायोष्णो लघुस्तथा । कटदोषहरो
 ग्राही मलसमहकृन्नुपे ॥ ५१ ॥ ' मदे ' तु गुरु विष्टयी स्वादुम्ल रक्त-

पिचकृत् । श्लेष्मकारि समीरघ्नं तथा शुक्राग्निनाशनं ॥ ५२ ॥ हृद्रोग-
कृमिहृत्योक्त 'केयदेव निघटके' । 'भावे' सुपक्क मधुरमम्ल चानिलपित्त-
हृत् ॥ ५३ ॥ रुच्यं वृष्य तथा पक्क गुरुरक्तत्रिदोषकृत् । नेत्रयोरहितं प्रोक्त वैद्य-
विद्याविशारदैः ॥ ५४ ॥ ६८ विकंकत । म० गुलघांटी, वेहकळ । गु०
विकळो । विकंकतो व्याघ्रपादो ग्रथिलः स्वादुकण्टक । कटपादो बहुफलो
गोपघांटा सुयद्रुमः ॥ ५५ ॥ मृदुफलो दतकः षो यज्ञियो ब्रह्मपादपः ।
पिंडरोहिणकः पीतः किंकिणी ' राजनामके ' ॥ ५६ ॥ गोपघंटः काक-
पादो ' धन्वतरिनिघटके ' । सुरद्रुमो देववृक्षस्तथैव यज्ञपादपः ॥ ५७ ॥
पृथुबीजः पिंडरोहः ' केयदेवनिघटके ' । ' द्रव्ये ' तु कटकश्चैव ' भावे '
च व्याघ्रपात्तथा ॥ ५८ ॥ कंटकी यज्ञवृक्षश्च ' मदे ' देवतरुस्तथा ।
सुवावृक्षः सुवतरुस्तथैव वरसज्ञकः ॥ ५९ ॥ गुणाः । विकंकतोऽम्लो
मधुरः पाकेऽतिमधुरो लघुः । दीपनः कामलासन्न. पाचनः पित्तहृत्
' नृपे ' ॥ ६० ॥ शीतस्तिक्तः कफघ्नश्च ' धन्वे ' तु शोफनाशनः । ' द्रव्ये '
तु दाहहा चैव मलघ्नो ' गणनामके ' ॥ ६१ ॥ इति प्रमद्रादिवर्गः ॥

८ करवीरादिवर्गः ।

१ श्वेतकरवीर । म० पांढरी कण्हेर । गु० धोळी कणेर । कर-
वीरो महावीरो हयमारोऽश्वमारकः । हयघ्नः प्रतिहासश्च शतकुंदोऽश्व-
रोधकः ॥ ६२ ॥ हयारिर्वीरकः कुव. शकुवः श्वेतपुष्पकः । अश्वांत-
कस्तथाऽश्वघ्नो नखराहोऽश्वनाशकः ॥ ६३ ॥ स्थूलादिकुम्भ. प्रोक्तो
दिव्यपुष्पो हरिप्रियः । गौरीपुष्पः सिद्धपुष्पो ' राजनामनिघटके ' ॥ ६४ ॥
' धन्वे ' चाश्वमोहकश्च धोतघ्नो ' गणनामके ' । तथैव शतमासश्च
' कोशे ' प्रोक्तो भिषग्वरैः ॥ ६५ ॥ गुणाः । करवीरः कटुस्तीक्ष्णः
कुष्ठकंडूतिनाशनः । व्रणार्तिविषविस्फोटशननोऽश्वमृत्तिप्रदः ॥ ६६ ॥
२ रक्तकरवीर । म० तावडी कण्हेर । गु० राती कणेर । रक्तकर-
वीरश्चैव रक्तप्रसव एव च । गणेशकुसुमश्चैव चडीकुसुम एव च ॥ ६७ ॥

क्रूरस्तु मूतद्रावी च रविपियस्तु 'राजके' । चंडातको रक्त-
 पुष्पश्चङको लमुडस्तथा ॥ ६८ ॥ प्रचंडो गुल्मको 'धन्वे' चंडातो 'भाव-
 नामके' । चंडालकश्च चंडालो मूतहारी 'गणे' स्मृतः ॥ ६९ ॥ गुणाः ।
 रक्तस्तु करवीरः स्यात्कटुस्तीक्ष्णो विशोधकः । त्वग्दोषव्रणकण्डूतिविष-
 कुष्ठहरो 'नृपे' ॥ ७० ॥ ३ पीतकरवीर । म० पिंळी कण्हेर । गु०
 पीळी कणेर । पीतकरवीरकश्चैव पीतप्रसव एव च । सुगंधिकुसुमश्चैव
 प्रोक्तो 'राजनिघंटके' ॥ ७१ ॥ ४ कृष्णकरवीर । म० काळी कण्हेर ।
 गु० काळी कणेर । कृष्णकरवीरकश्चैव तथा कृष्णप्रसूनकः । कृष्णस्तु
 कृष्णकुसुमो गुणैस्तुल्यश्चतुर्विधः ॥ ७२ ॥ 'धन्वतरी' तु वीर्योष्णश्चक्षुष्यो
 ज्वरहा स्मृतः । भक्षणविषवत्प्रोक्तं वैद्यै 'मदनपालके' ॥ ७३ ॥
 ५ श्वेतधतूर । म० पाठरा धोतरा । गु० धोळो धतुरो । धतूरः कितवो
 धूर्त उन्मत्तः कनकाह्वयः । शठो मातुलकः श्यामो मदनः शिवशे-
 खरः ॥ ७४ ॥ खजूमः काहलापुष्पः खलः कंटफलस्तथा । मोहनः
 कलभो मत्तः शैवश्च 'नृपनामके' ॥ ७५ ॥ कनको देवता चैव कलिश्च
 हरवल्लभः । मदकारस्तथा 'धन्वे' 'मदे' तूरी तु मातुलः ॥ ७६ ॥
 तरलश्च तथा 'भावे' धुस्तुरो देविता स्मृतः । महामोहीति
 विख्याता "पुले मातुलपुत्रकः" ॥ ७७ ॥ गुणाः । धतूरो व्रणहारी
 च कटूष्णो भ्रमकांतिदः । त्वग्दोषखर्जुकण्डूतिज्वरहारी तु 'राजके' ॥ ७८ ॥
 भमिवांतिकरश्चैव मदकृद्द्रव्यनामके । वातकृत् विषकुष्ठादियूका-
 लिखाविनाशकः ॥ ७९ ॥ कफनाशकरश्चैव 'भावनामनिघंटके' ।
 ६ कृष्णधतूर । म० काळा धोत्रा । गु० काळो धतुरो । कृष्णधतूरकः
 सिद्धः कनकः सचिवः शिवः ॥ ८० ॥ कृष्णपुष्पो विषारातिः क्रूरो
 धूर्तश्च 'राजके' । ७ राजधतूर । म० राजधोत्रा । गु० राजधतूरो ।
 राजधतूरकश्चैव राजधूर्तो महाशठः ॥ ८१ ॥ निरसनपुष्पको भ्रानो
 राजस्वर्णस्तु 'राजके' । सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्च सन्ति धतूराः ।
 सागान्पुष्पोपेतास्तेषु गुणादयस्तु कृष्णकुसुमः स्यात् ॥ ८२ ॥ ८ कोवि-

दार । म० कोरल, कोंकणांत प्रसिद्ध । गु० चंपाकाटी । कोविदारः
 काचनारः फुदालः कनकारकः ॥ ८३ ॥ कातपुष्पश्च करकः कानारो
 यमलच्छदः । पीतपुष्पः सुवर्णारो गिरिजः काचनारकः ॥ ८४ ॥ पुष्प-
 पत्रो महापुष्पो ' राजनामनिघटके ' । ' धन्वे ' कुली चमरिको महायम-
 लपत्रकः ॥ ८५ ॥ कुडली ' केयरेवे ' तु कुडलोदालको मतः । स्वल्प-
 केसरसङ्गश्च तथैव स्वल्पकेसरी ॥ ८६ ॥ तथा च शोणफलिनी प्रोक्तो
 वैद्यविशारदैः । गुणाः । कोविदारः कपायः स्वात्सयाही वणरोपणः ॥ ८७ ॥
 दीपनः कफनाशघ्नो मूत्रकृच्छ्रहरो ' नृपे ' । मङ्गालागुद्वज्रशशमतः
 कफपित्तहा ॥ ८८ ॥ ' धन्वे ' च कुम्भिकृष्टघ्नो ' केये ' पुष्प हिम गुरु ।
 रक्तपित्तप्रदग्घ्न क्षतकाशनिवारण ॥ ८९ ॥ श्वासघ्न गुदरोगघ्न प्राक्त-
 • ' द्रव्यनिघटके ' । ९ अर्कः । म० लाल रुई । गु० रातो आकडो । अर्कः
 क्षीरदलः पुष्पी प्रतापः क्षीरफाडकः ॥ ९० ॥ विशीग भास्करः क्षीरी खर्जूरः
 शिषपुष्पकः । जमलः क्षीरपर्णी स्वात्सविता च विकारणः ॥ ९१ ॥ सूर्याक्षश्च
 सदापुष्पो रविरास्फोटकस्तथा । तूलफलः शूकफलो ' राजनामनिघ-
 टके ' ॥ ९२ ॥ क्षतक्षीरी तथा प्रोक्तो ' गणनामनिघटके ' । गुणाः । अर्कस्तु
 कटारुणश्च वातजिदीपनीयकः ॥ ९३ ॥ शोफघ्नहरः कडुकृष्टमिहरो
 ' नृपे ' । सरः प्लीहोदरघ्नश्च प्रोक्तो ' धन्वतरी ' भुव ॥ ९४ ॥ विष्णुलमार्शप-
 कृष्टः शोफादरहरो ' मदे ' । श्लेष्मोदरविनिघ्न च तत्पुष्प वृष्यमेव च
 ॥ ९५ ॥ दीपन पाचन चैव अरोचकहर तथा । प्रसेकश्वासकासघ्न-
 माखुदोषहर भुव ॥ ९६ ॥ रक्तपित्तहरो ' भावे ' विरेचककरः स्मृतः ।
 १० श्वेतार्कः । म० पादरी रुई । गु० धोळो आकडो । शुक्लार्कस्तपनः
 श्वेतः प्रतापश्च सितार्ककः ॥ ९७ ॥ सुपुष्पः शरुरादि स्वादत्यर्को
 वृत्तमाष्ठिका । गुणाः । श्वेतार्कः कटुतिकोष्णो मलशोधनकारकः ॥ ९८ ॥
 मूत्रकृच्छ्रासशोकातिवणदोषहरो ' नृपे ' । ११ राजार्कः । म० लाल
 मादार । गु० राता मदार । राजार्को वसुकोलर्को मदारो गणरूपकः
 ॥ ९९ ॥ काष्ठीलश्च सदापुष्पो ' राजनामनिघटके ' । ' धन्वे ' त्वत्यर्कस-

निर्घटशिरोमणिः ।

सञ्च एकाशीलः प्रतापनः ॥ २८०० ॥ गुणाः । राजको 'कटुविषयः'
 कफमेदोविषादहः । वातकुष्ठवृणान्हन्ति शोफकंडूविसर्पनरुः ॥ ११ ॥ 'तृप्ते'
 'द्रव्ये' प्रीहगुल्मोदराध्मानहरस्तथा । १२ श्वेतमंदार । म० मंदार
 मंदार । गु० धोळो मंदार । श्वेतमंदारकश्चैव पृथ्वीकुरवस्तथा ॥ २ ॥
 दीर्घपुष्पः सितालको दीर्घात्वर्कस्तु 'राजके' । गुणाः । श्वेतमंदारको
 ऽत्युष्णस्तिक्तो मलविशोधनः ॥ ३ ॥ मूत्रकृच्छ्रवृणान्हन्ति कृमीनत्य-
 न्तदारुणान् । १३ सुरपुञ्जाग । म० सुरंगी, मोडी उंडी । गु० सोरंगी ।
 नमेरुः सुरपुञ्जागः सुरेष्टः सुरपर्णिका ॥ ४ ॥ सुरतुंगो 'राजनान्नि'
 पुञ्जागगुणसंयुतः । १४ रक्तपलाश । म० तांबडा पळस । गु० रातो
 खाखरो । पलाशः किंशुकः पर्णो वातरोधोऽथ पाक्षिकः ॥ ५ ॥ त्रिपर्णो
 वक्रपुष्पश्च पूतद्रव्यैर्बलवृक्षकः । ब्रह्मोपनेता काष्ठद्रु 'नृपनामनिघटके' ॥ ६ ॥
 क्षारश्रेष्ठो रक्तपुष्पो बीजलोहः समिद्धरः । त्रिवृत्तश्च तथा 'धन्वे' 'द्रव्ये'
 'कर्मी' प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥ ब्रह्मपादपसंज्ञस्तु 'मदे' च समिद्धुत्तमः ।
 घांजिवश्च वातहरः प्रोक्तो 'भावप्रकाशके' । ८ गुणाः । पलाशस्तु
 कषायोष्णः कृमिदोषविनाशनः । तद्बीजं कंडुषामाविदद्रुत्वादोषनाशकृत्
 ॥ ९ ॥ तस्य पुष्पं च सोष्णं च कंडूकुष्ठार्तिनाशनम् । रक्तः पी : सितो
 नीलः कुसुमैस्तु विभज्यते ॥ १० ॥ किंशुकैर्मृगसाम्येऽपि
 सितो विष्णुनदो 'तृप्ते' । सरः संधानकृद्गुणं पुष्पं ग्राहि च शीतलं ॥ ११ ॥
 वातलं 'केयदेवे' तु कृच्छ्रं 'द्रव्यरत्नके' । वातरक्तहरं प्रोक्तं वैद्यै-
 'भावप्रकाशके' ॥ १२ ॥ क्षारश्रेष्ठश्च सग्राही दीपनः प्रीहगुल्महा ।
 वातश्लेष्माशोग्रहणीनाशनो 'धन्वनामके' ॥ १३ ॥ तत्फलं तु तृट्वा-
 ह्रं कफपित्तासकृष्टहृत् । मेहोदरहरं 'केये' कृमिशूलहरं तथा ॥ १४ ॥
 भग्नसंयानकृच्चैव प्रोक्तं 'मदनपालके' । १५ पुञ्जाग । म० उंडी ।
 गु० पुञ्जाग । पुञ्जागः पुरुषस्तुंगः पुञ्जामा पाटलः पुमान् ॥ १५ ॥
 रक्तपुष्पो रक्तेणुररुणो 'राजनानामके' । कामुकः पट्पददलस्तथैव पट्-
 पदमिगः ॥ १६ ॥ 'द्रव्ये' प्रोक्तो 'मदे' चैव केसरः पट्पदालयः ।

ताम्रपल्लवः ॥ ५० ॥ पिंडपुष्पो गंधपुष्पो मंजरी ' द्रव्यरत्नके ' । वीत-
 शोको ' गणे ' चैव सप्रोक्तो वेद्यनायकः ॥ ५१ ॥ गुणाः ॥ अशोकः
 शिशिरो हृद्यः पिच्छदाहभ्रमापहः । गुल्मशूलोदग्धाग्धाननाशनः कृमिहा
 ' नृपे ' ॥ ५२ ॥ तृपापचीशोपहा च विपरक्तहरो ' भव ' ।
 २१ चंपक । म० सोनचाफा । गु० पीळो चणो, रायचणो । चपकः स्वर्णपु-
 ष्पश्च चापेयः शीतलच्छदः ॥ ५३ ॥ सुमगो भृगमोही च शीतलो
 भ्रगरातिधिः । सुरभिर्द्विपुष्पश्च स्थिरगधोऽतिगधकः ॥ ५४ ॥ स्थिर-
 पुष्पो हेमपुष्पः पीतपुष्पस्तथाऽपरः । हेगाढः सुकुमारस्तु वनदीपस्तु
 ' राजके ' ॥ ५५ ॥ ' धन्वतरिनिघटे ' तु काचनः षट्पदातिधिः ।
 तथा ' मदनपाले ' तु चलो रम्यः प्रकीर्तितः ॥ ५६ ॥ तत्कलिका
 गंधफली सप्रोक्ता गंधमोदिनी । बहुगधा तथा ख्याता ' राजनामनिघ-
 टके ' ॥ ५७ ॥ गुणाः । चपकः कटुकस्तिक्तः शिशिरो दाहनाशनः ।
 कुष्ठरुद्धूषणहरो गुणाढ्यो ' राजनामि च ॥ ५८ ॥ वातपित्तहरो ' धन्वे '
 ' मदे ' पित्तकृकासहा । ' मावे ' तु कफनातमः पित्तघ्नः परिकीर्तितः
 ॥ ५९ ॥ २२ नागचंपक । म० नागचाफा । गु० नागचणो ।
 क्षुद्रचपकसज्ञस्तु नागचपक एव च । फणिनचक्रस्तु सप्रोक्तो नागाह-
 ष्यपको मतः ॥ ६० ॥ वनचपकसज्ञस्तु ' राजनामनिघटके ' । गुणाः ।
 वनचपकः कटूष्णो वातकफध्वग्नो वर्ण्यः ॥ ६१ ॥ चक्षुष्मे व्रणरापी
 वह्निस्तम करोति योगगुणात् । चंपकविशेषगुणाः । चपकमसवमिष्टसु-
 गंध भुसुरामरगहीपतिबोध्य ॥ ६२ ॥ वातपित्तशमन च सुगधि स्वर्णवर्ण-
 मपि षट्पदधाति । २३ वकुल । म० बकुळ । कौ० ओषळ । गु०
 बोलसरी । वकुलः सीधुगंधश्च स्त्रीमुखधुंदाहदः ॥ ६३ ॥ सुरभिर्म-
 धुपुष्पश्च भ्रगरानंद एव च । केसरः स्थिरकसुमो दन्वी शारदिकस्तथा
 ॥ ६४ ॥ करकः सीधुसज्ञश्च गूढपुष्पो विशारदः । मयामोदश्च मदन-
 श्रिरपुष्पस्तु ' राजके ' ॥ ६५ ॥ मधुगधो मद्यगधः सिंहः सिंहकेस-
 रकः शीपिको ' धन्वकोशे ' तु गवाढ्यो ' गणनामके ' ॥ ६६ ॥

शारदिका शारदश्च दोहली सीधुपुष्पकः । गुणाः । नकुल शीतलो
हृद्यो विपदोपविनाशन ॥ ६७ ॥ मधुरश्च कषायश्च मदाढ्यो हर्षदो
‘ नृपे ’ । तथा च—नकुलकृसुम च रुच्य क्षीराढ्य सुरभि शीतल
मधुर ॥ ६८ ॥ स्निग्धकषाय कथित मलसग्राहक चैव । ‘ धन्वे ’
सुगन्धिक पुष्प सुषक कथित पुनः ॥ ६९ ॥ स्थिरीकर च दताना
विशद तत्फल गुरु । वातल कफपित्तघ्न ‘ मदने ’ तु प्रकीर्तित ॥ ७० ॥
२४ केतकी । म० श्वेत केवडा । गु० केवडो । केतकी तीक्ष्णपुष्पा
च विकला धूलिपुष्पिका । मेन्या षट्दला चैव शिवद्विष्टा
नृपप्रिया ॥ ७१ ॥ क्रकचा दीर्घपत्रा च स्थिरगन्धा तु
पासुला । गन्धपुष्पेदुर्लुलिका दलपुष्पा तु ‘ राजके ’ ॥ ७२ ॥ ‘ धन्वे ’
तु सूचिकापुष्पो जबूकः क्रकचच्छदः । ‘ भावे ’ तु केतकः प्रोक्तो
‘ द्रव्ये ’ सूचिकपुष्पिका ॥ ७३ ॥ २५ सुवर्णकेतकी । म० सोनके-
वडा, केतकी । गु० सोनकेवडो । स्वर्णादिकेतकी त्वन्या ज्ञेया सा हेम-
केतकी । कनक प्रसवा पुष्पी हिमा छिन्नरुहा तथा ॥ ७४ ॥ विटरुहा
स्वर्णपुष्पी कामखड्गदला ‘ नृपे ’ । ‘ धन्वतरौ ’ तु सप्तोक्ता लघुपुष्पा
सुगन्धिनी ॥ ७५ ॥ गुणाः । केतकीकृसुम वर्ण्य केशदौर्गन्ध्यनाशन ।
हेमाभ मदनोन्मादवर्धन सौख्यकारि च ॥ ७६ ॥ तस्य स्तनोऽतिशि-
शिरः कटुः पित्तकफापहः । रसायनकरो बन्धो देहदाढ्यकरो ‘ नृपे ’
॥ ७७ ॥ श्लेष्महा विषहा प्रोक्ता केसरो मिथ्यकडुहा । फल तु स्वादु
मेहघ्न कफघातहर ‘ द्रवे ’ ॥ ७८ ॥ २६ सिद्धरी । म० शंदरी ।
गु० सिद्धरी । सिद्धरी वीगपुष्पी च तृणपुष्पी करच्छदः । सिद्धपुष्पी
शोणादिपुष्पी तु ‘ राजनामके ’ ॥ ७९ ॥ ‘ मदने ’ रक्तबीजा स्वाद्र-
क्तपुष्पा सुकोमला । ‘ द्रव्यरत्नाकरे ’ चैव सप्तोक्ता रक्तपुष्पिका ॥ ८० ॥
गुणाः । सिद्धरी कटुका तिक्ता कषाया श्लेष्मघातजित् । शिरोतिशमनी
भूतनाशा चर्डीप्रिया ‘ नृपे ’ ॥ ८१ ॥ ‘ मदे ’ तु रक्तपित्तघ्नी तृष्णा-
घातिहरा हिमा । २७ जाती । म० जाई । गु० जाई, साइली, लवारो ।

वैद्यनाथकैः ॥ १३ ॥ गुणाः । नवमल्लिकाऽतिशैत्या सुरभिः सर्वरोगहृत् ।
 “ नृपे ” ‘ धन्वे ’ वातपित्तनेत्ररोगहरस्तथा ॥ १४ ॥ वीर्ये चोष्णा रसे
 ऐतिका मुखरोगहरा ‘ मदे ’ । लघुर्देहपत्रयन्त्री च कर्णरोगहरा
 भुवं ॥ १५ ॥ ३६ अतिमुक्तः । म० रायनवाळी । गु० रायनेवरी । अति-
 मुक्तः पुंड्रकश्च कामकांता तदुत्तरं । मदनी भ्रमरानदा ‘ राजनामनिघ-
 ङ्के ’ ॥ १६ ॥ तथा ‘ गणनिघटे ’ तु वयःकांतः पराश्रयः । कार्मुको
 मंडनश्चैव माधवी भ्रमरोत्सवः ॥ १७ ॥ अविमुक्तः सुवसतो ‘ धन्व-
 तरिनिघंके ’ । गुणाः । अतिमुक्तः कपायः स्वाच्छिशिरः भ्रमनाशनः ॥ १८ ॥
 पित्तदाहज्वरांश्चादहिक्काच्छर्दिहरो ‘ नृपे ’ । ३७ यूथिका । म०
 पाँदरी जुई । गु० धोळी जुई । यूथिका गणिकांऽनघा मागधी बाल-
 पुष्पिका ॥ १९ ॥ मोदनी बहुमया च भृगानंदा तु ‘ राजके ’ । गुणो-
 ज्ज्वला पुष्पगंधा कर्णिका चारुयूथिका ॥ २० ॥ ‘ धन्वे ’ प्रोक्ता तथा
 ‘ धन्वे ’ लता यूथी प्रकीर्तिता । शिखंडी पादुरा कुडी ‘ गणे ’ प्रोक्ता
 मिषमनैः ॥ २१ ॥ ३८ हेमयूथिका । म० पिंक्ली जुई, सोनजुई ।
 गु० पीळी जुई । सुवर्णयूथिका चैव सुगंधा हेमयूथिका । युवतीष्टा
 न्यक्तगंधा शिखंडी नागपुष्पिका ॥ २२ ॥ हरिणी पीतयूथी च पीतिका
 कनकप्रभा । मनोहरा च गधादद्या पुष्पगंधा ‘ नृपे ’ ‘ धन्वे ’ ॥ २३ ॥
 गणिका चारुमोदा च ‘ धन्वे ’ तु स्वर्णयूथिका । प्रत्यग्रगंधा युवती यूथिका
 ‘ गणनामके ’ ॥ २४ ॥ गुणाः । यूथिकायुगुल स्वादु शिशिर शर्करा-
 तिनृत । पित्तदाहतृषाहारी नानात्वदोषनाशनं ॥ २५ ॥ सितपीतनील-
 मेचकनाम्यः कुसुमंन यूथिकाः कथिताः । तिकाहिमपित्तकफामयज्व-
 रघ्नो ब्रणादिदोषहराः ॥ २६ ॥ सर्वासा यूथिकानां तु रसवीर्यादिसा-
 म्यता । सुलभा तु सुगन्धाद्या स्वर्णयूथी तु ‘ राजके ’ ॥ २७ ॥ ‘ धन्वे ’
 तु शंखधवला शंखयूथीति कथ्यते । वातास्रमुखदोषघ्नी ‘ द्रव्यरत्नाकरे ’
 स्मृता ॥ २८ ॥ मूर्धाशिरोमवातघ्नी प्रोक्ता ‘ मदनपालके ’ । कफवात-
 लमित्युक्तं दतारोगविषाह ॥ २९ ॥ रक्तव्रणहर प्रोक्त वैद्यैः ‘ भाव-

प्रकाशके । ३९ कुञ्जक । म० कुञ्ज, कोकणांत प्रसिद्ध । गु० कुंजहा ।
 कुञ्जको भद्रतरणी वृत्तपुष्पोऽतिकसरः ॥ ३० ॥ महासहः कंटकाढ्यः
 सर्वोऽलिकुलसंकुलः । गुणाः । कुञ्जकः सुरभिः शीतो रक्तपित्तकफा-
 पहः ॥ ३१ ॥ पुष्पं तु शीतलं वण्यं दाहघ्नं रक्तपित्तजित् । ' नृपे '
 ' धन्वे ' कपायस्तु स्वादुश्चैव रसायनः ॥ ३२ ॥ त्रिदोषशमनो
 वृष्यस्तथा संग्रहणः परः । ४० मुचुकुंद । म०, गु० मुचुकुंद । बहु-
 पत्रो मुचुकुंदो सुदलो हारिवल्लभः ॥ ३३ ॥ रक्तप्रसवश्चार्थाहो लक्ष्म-
 णकः सुपुष्पकः । मनोरमो महामोहो महामोदश्च ' द्रव्यके ' ॥ ३४ ॥
 ' मदन ' तु क्षत्रवृक्षश्चिवुकः प्रतिविष्णुकः । तथा ' भावप्रकाशे ' तु
 चित्रकः परिकीर्तितः ॥ ३५ ॥ गुणाः ॥ मुचुकुंदः कटुतिक्तः कफकास-
 विनाशनश्च कंठकरः । त्वग्दोषशोफशमनो वणयामाविनाशनश्चैव ॥ ३६ ॥
 ' नृपे ' ' भावे ' शिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः । ४१ करुणी ।
 म० करवीरणी, कोकणांत प्रसिद्ध । गु० करवीरणी । करुणी ग्रीष्म-
 पुष्पी स्याद्रक्तपुष्पी च वारुणी ॥ ३७ ॥ राजमिषा राजपुष्पी सूक्ष्मा च
 जलचारिणी । गुणाः । करुणी कटुतिक्तोष्णा कफमारुतनाशिनी ॥ ३८ ॥
 आग्मानविषविच्छेदिजन्मूर्ध्वातहारिणी । ४२ माधवी । म०, गु०
 माधवी । माधवी चंद्रदली च सुगंधा अमरोत्सवा ॥ ३९ ॥ भृंगमिषा
 भद्रलता भूमिमंडपभूषणी । प्रोक्ता ' राजनिघण्टके ' तु तथा ' मदन-
 'पालके ' ॥ ४० ॥ मंडपश्चैव कामी च पुष्पेद्रो शिटगंधिका । गुणाः ।
 माधवी कटुका तिक्ता कपावा मदगंधिका ॥ ४१ ॥ पित्तकासघ्ना-
 न्हन्ति दाहशोफहरा ' नृपे ' । ४३ गणिकारी । म०, गु० गणरी,
 कोकणांत प्रसिद्ध । गणिकारी कांचनिका कांचनपुष्पी वसंतद्वती
 च ॥ ४२ ॥ गंधकुसुमातिमोदा वासंती मदमादिनी चैव । प्रोक्ता ' राजनिघंटे '
 तु तथा ' मदनपालके ' ॥ ४३ ॥ गणेरुः कर्णिकारः कर्णी च गणि-
 कारिका । गणेरुका पीतपुष्पा कर्णिका ' द्रव्यरत्नके ' ॥ ४४ ॥ तथा
 ' गणनिघंटे ' तु प्रोक्ता वनकपुष्पिका । गुणाः । गणिकारी सुरभि-

गु० मोटो शेषती गुलाब । महती राजतरणी अम्लानो वर्ण्यपुष्पकः ।
 सुपुष्पः सुवर्णपुष्पो महासहामिलातकः ॥ ७७ ॥ ' नृपे ' तु देवतरणी
 बृहत्पुष्पा तु ' धन्वके ' । महाकुमारी संप्रोक्ता ' भावनामनिघंटके '
 ॥ ७८ ॥ गुणाः । ' नृपे ' तु राजतरणी कषाया कफकारिणी । चक्षु-
 ष्या सर्वदा हृद्या सुरभिः सुरवल्लभा ॥ ७९ ॥ ५३ रक्ताम्लान । म०
 रक्तकोरांडा, अबोली । गु० रातो कांडा अशेलीयो । रक्ताम्लानो रक्त-
 सहस्रापरिम्लानकस्तथा । रक्ताम्लानतकश्चैव रक्तप्रसव एव च ॥ ८० ॥
 मधूत्सवः कुरवको रामालिंगनकामुकः । रागप्रसवकश्चैव सुमगः प्रस-
 वस्तथा ॥ ८१ ॥ तथैव अमरानंदो ' राजनामनिघंटके ' । महासहा तु
 कुरवो रक्ताम्लानतक एव च ॥ ८२ ॥ अम्लानो रक्तपुष्पः स्याच्छोण-
 सिंटी । तथैव च । रक्तसिंटी कंदकिनी पर्णाद्वयः शोणसिंटिका ॥ ८३ ॥
 वर्णपुष्पस्तथा प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदः । गुणाः । रक्ताम्लानः कटूष्णः
 स्याद्वातशोकज्वरघ्नकः ॥ ८४ ॥ शूलाध्मानहरो वर्ण्यः श्वासकासहरो
 ' नृपे ' ५४ पीताम्लान । म० पिंळा कोरांडा । गु० पीळो कांडा
 अशेलीयो । पीतस्तु किंकिरातस्यात्पीताम्लानः कुरटकः ॥ ८५ ॥
 कनकः पीतकुरवः सुपीतकुसुमस्तथा । सुपीतश्चैव संप्रोक्तो ' राजनाम-
 निघंटके ' ॥ ८६ ॥ सहाचरः सहचरः पुरः सहचरी मता । कुरटकः
 कुरटः स्यात्प्रोक्तो वैद्यविशारदः ॥ ८७ ॥ गुणाः । किंकिरातः कषायो-
 ष्णस्तिकश्च कफवातजित् । दीपनः शोककडूतिरक्तत्वग्दोषहा ' नृपे '
 ॥ ८८ ॥ ५५ नीलाम्लान । म० निळा कोरांडा, बाणपुष्पी । गु०
 नीळो कांडा अशेलीयो । नीलपुष्पा तु सादासी नीलाम्लानस्तु छादनः ।
 बला आर्तगला चैव नीलपुष्पस्तु ' राजके ' ॥ ८९ ॥ बाणा बाणी
 बाणपुष्पो बाणो नीलकुरटकः । स्यान्नीलकुसुमा नीलासिंटी नीलप्रसू-
 नका ॥ ९० ॥ स्यात्कंटार्तगला प्रोक्ता राजसैरेयकस्तथा । तथा त्वोदन-
 पाकी स्यात्संप्रोक्तः केशरंजनः ॥ ९१ ॥ गुणाः । आर्तगला कटुस्ति-
 क्ता कफमारुतशूलनुत् । कंडूकुष्ठव्रणान्हन्ति शोफत्वग्दोषहा ' नृपे ' ॥ ९२ ॥

[अत्र कंटार्तगला वन्या नीलसिंटी (रान निळा कोरांटा) इति ज्ञेया ।
तथा च शोणी कुरवकनाग्री, कंटकिनी, शोणसिटिका (रान अवाली,
रान रक्तकोरांटा) इति ज्ञेया] ५६ कंटकुरंट । म० पिबळा रानको-
रांटा । गु० जंगली पीळो कांटा अशेलीया । कंटकुरंटकः कंटसिटी
वन्या सहाचरी । गुणाः । सिटिकाः कटुकास्तिक्ता दंतशूलामयापहाः ॥ ९३ ॥
कफघातहराश्चैव शोफकासहरास्तथा । स्वदोषनाशकारिण्यः प्रोक्ता 'राज-
निघंटके' ॥ ९४ ॥ 'केये' तु मधुरः स्निग्धस्तिक्तोष्णः केशरंजनः । कुष्ठकंडूवि-
पन्नश्च संप्रोक्तो वैद्यनायकैः ॥ ९५ ॥ हिमस्तिकस्तृपानिघ्नो दाहहा केशव-
र्धनः । बल्पो वृष्यस्त्रिदोषघ्नो 'धन्वंतरिनिघंटके' ॥ ९६ ॥ वातास्रफफहा
प्रोक्तो 'द्रव्यरत्नाकरे' तथा । ५७ उष्ट्रकांडी । म० उताटी । गु०
उताटी । उष्ट्रकांडी रक्तपुष्पी ज्ञेया करभकाडिका ॥ ९७ ॥ रक्ता
लोहितपुष्पी च वर्णपुष्पी तु 'राजके' । गुणाः । उष्ट्रकांडी तु तिक्तोष्णा
रुच्या हृद्रोगहारिणी ॥ ९८ ॥ तद्दीजं मधूरं शीतं वृष्यं संतर्पणं 'नृपे' ।
५८ पिंडीतगर । म० पिंडीतगर । कौ० अनंत । गु० पिंडीतगर ।
तगरं कुटिलं वक्रं विनम्रं कुंचितं नरतं ॥ ९९ ॥ शठं च नष्टपास्त्यं च
दहहस्तं च बर्हणं । पिंडीतगरकं चैव पार्थिवं राजहर्षणं ॥ १०० ॥
कालानुसारकं क्षत्रं दीनं जिह्वं तु 'राजके' । कालानुसारमनृजं 'धन्वे'
तु नहुष नृपं ॥ १ ॥ बर्हिणं 'केयदेवे' तु 'मदे' कटु महोरगं ।
कालानुसारिणी चक्रं संप्रोक्तं 'गणनामके' ॥ २ ॥ गुणाः । तगरं
शीतलं तिक्तं दृष्टिदोषविनाशनं । भूतोन्मादहरं पथ्यं विषयं 'राजना-
मके' ॥ ३ ॥ स्निग्धं दोषत्रयघ्नं स्याच्छिरोरोगहरस्तथा । अपस्मारहरं
प्रोक्तं 'धन्वंतरिनिघंटके' ॥ ४ ॥ ५९ दमनक । म० दवणा । गु०
डमरो । दमनो दमनकः स्याद्दन्तो गंधोत्कटोमुनिः । पुडितिको ब्रह्मजरा
जटिलः पांडुरागकः ॥ ५ ॥ पुत्रः पवित्रको दही विनीतो देवशेखरः । तथा
तपस्विपुत्रः स्यात्प्रोक्तस्तपसपुत्रकः ॥ ६ ॥ कुलपुत्रश्च संप्रोक्तो
'राजनामनिघंटके' । 'धन्वंतरिनिघटे' स्यात्पत्नी अपिपुत्रकः ॥ ७ ॥

गु० मोटो शैवती गुलाब । महती राजतरणी अम्लानो वर्ण्यपुष्पकः ।
 सुपुष्पः सुवर्णपुष्पो महासहामिलातकः ॥ ७७ ॥ ' नृपे ' तु देवतरणी
 बृहत्पुष्पा तु ' धन्वके ' । महाकुमारी संप्रोक्ता ' मावनामनिघंटके '
 ॥ ७८ ॥ गुणाः । ' नृपे ' तु राजतरणी कषायः कफकारिणी । चक्षु-
 ष्या सर्वदा हृद्या सुरभिः सुरवल्लभा ॥ ७९ ॥ ५३ रक्ताम्लान । म०
 रक्तकोराटा, अशेली । गु० रातो कांटा अशेलीयो । रक्ताम्लानो रक्त-
 सहश्वापरिम्लानकस्तथा । रक्तमलांतकश्चैव रक्तप्रसव एव च ॥ ८० ॥
 मधूत्सवः कुरबको रामालिगनकामुकः । रागप्रसवकश्चैव सुभगः प्रस-
 वस्तथा ॥ ८१ ॥ तथैव अमरानंदो ' राजनामनिघंटके ' । महासहा तु
 कुरबो रक्ताम्लातक एव च ॥ ८२ ॥ अम्लानो रक्तपुष्पः स्याच्छोण-
 क्षिटी तथैव च । रक्तक्षिटी कटफिनी पण्डित्यः शोणक्षिटिका ॥ ८३ ॥
 वर्णपुष्पस्तथा प्रोक्तो वैद्यनिवाविशारदैः । गुणाः । रक्ताम्लानः कटूष्णः
 स्याद्वातशोकज्वरघ्नकः ॥ ८४ ॥ शूलाध्मानहरो वर्ण्यः श्वासकासहरो
 ' नृपे ' ५४ पीताम्लान । म० पिंवळा कोरांटा । गु० पीळो कांटा
 अशेलीयो । पीतस्तु किंकिरातस्यापीताम्लानः कुरटकः ॥ ८५ ॥
 कनकः पीतकुरबः सुपीतकृसुमस्तथा । सुपीतश्चैव संप्रोक्तो ' राजनाम-
 निघंटके ' ॥ ८६ ॥ सहाचरः सहचरः पुरः सहचरी मता । कुरंदकः
 कुरंदः स्यात्प्रोक्तो वैद्यविशारदैः ॥ ८७ ॥ गुणाः । किंकिरातः कषायो-
 ष्णस्तिकश्च कफवातजित् । दीपनः शोककटूतिरक्तत्वदोषहा ' नृपे '
 ॥ ८८ ॥ ५५ नीलाम्लान । म० निळा कोराटा, बाणपुष्पी । गु०
 नीळो कांटा अशेलीयो । नीलपुष्पा तु सादासी नीलाम्लानस्तु छादनः ।
 बला आर्तगला चैव नीलपुष्पस्तु ' राजके ' ॥ ८९ ॥ बाणा बाणी
 बाणपुष्पो बाणो नीलकुरंदकः । स्यान्नीलकृसुमा नीलक्षिटी नीलप्रसू-
 नका ॥ ९० ॥ स्यात्कटार्तगला प्रोक्ता राजसैरेयकस्तथा । तथा त्वोदन-
 पाकी स्यात्संप्रोक्तः केशरंजनः ॥ ९१ ॥ गुणाः । आर्तगला कटूस्ति-
 क्तः रुफगारुतशूलनुत् । कटुकठघ्णान्हन्ति शोकत्वदोषहा ' नृपे ' ॥ ९२ ॥

[अत्र कंटारतंगला वन्या नीलशिटी (रान निळा कोरांटा) इति ३०-
तथा च शोणी कुरवकनाग्री, कटाकिनी, शोणसिटिका (रान वन-
रान रक्तकोरांटा) इति ज्ञेया] ५६ कंटकुरंट । म० पिबळा गन्ध-
रांटा । गु० जंगली पीळो कांटा अशेलीया । कंटकुरंटकः कंट-
वन्या सहाचरी । गुणाः । सिटिकाः रुट्टकास्तिक्ता दंतशूलामषापहाः ॥ १३१
कफवातहराश्चैव शोककासहरास्तथा । त्वग्दोषनाशकारिण्यः प्रोक्ता 'राज-
निघंटके' ॥ १४॥ 'केये' तु मधुरः स्निग्धस्तिक्तोष्णः केशरंजनः । कृदकृद-
पद्मश्च संप्राक्तो वैद्यनायकैः ॥ १५॥ हिमस्तिक्तस्तृणानिमो दाहदा केश-
धनः । बल्यो वृष्यस्त्रिदोषघ्नो 'धन्वतरिनिघंटके' ॥ १६॥ वातासकारदा
प्रोक्तो 'द्रव्यरत्नाकरे' तथा । ५७ उट्टकांडी । म० उताडी । गु०
उताडी । उक्तकांडी रक्तपुष्पी ज्ञेया करभकाडिका ॥ १७॥ रक्ता
लोहितपुष्पी च वर्णपुष्पी तु 'राजके' । गुणाः । उट्टकांडी तु तिक्तोष्णः
रुच्या हृद्रोगहारिणी ॥ १८॥ तद्दीजं मधुरं शीतं वृष्यं संतर्पणं 'नृपे' ।
५८ पिंडीतगर । म० पिंडीतगर । कौ० अनंत । गु० पिंडीतगर ।
तगरं कुटिलं वक्रं विनम्रं कुंचितं नतं ॥ १९॥ शठं च नहुपाख्यं च
वृद्धहस्तं च बर्हणं । पिंडीतगरकं चैव पार्थिवं राजहर्षण ॥ २००॥
कालानुसारकं क्षत्रं दीनं जिह्वं तु 'राजके' । कालानुसार्यमनृजु 'धन्वे'
तु नहुप नृपं ॥ १॥ बर्हिण 'केयेदेवे' तु 'मदे' कटु महोरसं ।
कालानुसारिणी चक्रं संप्रोक्तं 'गणनामके' ॥ २॥ गुणाः । तगर
शीतलं तिक्तं दृष्टिदोषविनाशनं । भूतोन्मादहरं पथ्यं विषघ्नं 'राजना-
मके' ॥ ३॥ स्निग्ध दोषत्रयघ्नं स्वाच्छिरोरोगहरस्तथा । अपस्मारहरं
प्रोक्तं 'धन्वतरिनिघंटके' ॥ ४॥ ५९ दमनक । म० दवणा । गु०
दमरो । दमनो दमनकः स्याद्दान्तो गंधोत्कटोमुनिः । पुंडरीको बल्लजटा
जटिलः पाडुरागकः ॥ ५॥ पुत्रः पवित्रको दृढी विनीतो देवशेखरः । तथा
तपस्विपुत्रः स्यात्प्रोक्तस्तपसपुत्रकः ॥ ६॥ कुलपुत्रश्च संप्रोक्तो
'राजनामनिघंटके' । 'धन्वतरिनिघटे' स्यात्तपस्वी ऋषिपुत्रकः ॥ ७॥

गु० मोटो शैवती गुलाब । महती राजतरणी अम्लानो 'वर्णपुष्पकः' ।
 सुपुष्पः सुवर्णपुष्पो महासहामिलातकः ॥ ७७ ॥ 'नृपे' तु देवतरणी
 बृहत्पुष्पो तु 'धन्वके' । महाकुमारी संप्रोक्ता 'भावनामनिघंटके'
 ॥ ७८ ॥ गुणाः । 'नृपे' तु राजतरणी कपाया कफकारिणी । चक्षु-
 ष्या सर्वदा हृद्या सुरभिः सुरवल्लभा ॥ ७९ ॥ ५३ रक्ताम्लान । म०
 रक्तकोरांडा, अशेली । गु० रातो कांडा अशेलीयो । रक्ताम्लानो रक्त-
 सहस्रपेरिम्लानकस्तथा । रक्ताम्लानतकश्चैव रक्तप्रसव एव च ॥ ८० ॥
 मधुस्रवः कुरबको रामालिंगनकामुकः । रागप्रसवकश्चैव सुमगः प्रस-
 वस्तथा ॥ ८१ ॥ तथैव अमरानंदो 'राजनामनिघंटके' । महासहा तु
 कुरबो रक्ताम्लानतक एव च ॥ ८२ ॥ अम्लानो रक्तपुष्पः स्याच्छोण-
 क्षिटी तथैव च । रक्तक्षिटी कंटकिनी पण्डित्यः शोणक्षिटिका ॥ ८३ ॥
 वर्णपुष्पस्तथा प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः । गुणाः । रक्ताम्लानः कटूष्णः
 स्याद्वातशोकज्वरघ्नकः ॥ ८४ ॥ शूलाघ्नानहरो वर्णः श्वासकासहरो
 'नृपे' ५४ पीताम्लान । म० पिंढा कोरांडा । गु० पीळो कांडा
 अशेलीयो । पीतस्तु किंकिरातस्यापीताम्लानः कुरबकः ॥ ८५ ॥
 कनकः पीतकुरबः सुपीतकुसुमस्तथा । सुपीतश्चैव संप्रोक्तो 'राजनाम-
 निघंटके' ॥ ८६ ॥ सहाचरः सहचरः पुरः सहचरी मता । कुरंदकः
 कुरंदः स्यात्प्रोक्तो वैद्यविशारदैः ॥ ८७ ॥ गुणाः । किंकिरातः कपायो-
 ण्णस्तिकश्च कफवातजित् । दीपनः शोककंडूतिरक्तत्वग्दोषहा 'नृपे'
 ॥ ८८ ॥ ५५ नीलाम्लान । म० निळा कोरांडा, बाणपुष्पी । गु०
 नीळो कांडा अशेलीयो । नीलपुष्पा तु सादासी नीलाम्लानस्तु छादनः ।
 बला चार्तगला चैव नीलपुष्पस्तु 'राजके' ॥ ८९ ॥ बाणा बाणी
 बाणपुष्पो बाणो नीलकुरंदकः । स्यान्नीलकुसुमा नीलक्षिटी नीलप्रस-
 नका ॥ ९० ॥ स्यात्कंटार्तगला प्रोक्ता राजसरेयकस्तथा । तथा त्वोदन-
 पाकी स्यान्तंप्रोक्तः केशरंजनः ॥ ९१ ॥ गुणाः । आर्तगला कटुस्ति-
 क्ता कफमारुतशूलनुत् । कंडूकुष्ठप्रणान्दन्ति शोकत्वग्दोषहा 'नृपे' ॥ ९२ ॥

[अत्र कंठार्तगला वन्या नीलशिटी (रान निळा कोरांटा) इति ज्ञेया ।
 तथा च शोणी कूरबकनाझी, कंठकिनी, शोणक्षिटिका (रान अनाली,
 रान रक्तकोरांटा) इति ज्ञेया] ५६ कंटकुरंट । म० पिंवळा रानको-
 रांटा । गु० जंगली पीळो कांटा अशेलीया । कंटकुरंटकः कंटक्षिटी
 वन्या सहाचरी । गुणाः । क्षिटिकाः कटुकास्तिक्ता दंतशूलामपापहाः ॥ १३ ॥
 कफवातहराश्च शोफकासहरास्तथा । त्वग्दोषनाशकारिण्यः प्रोक्ता 'राज-
 निघंटके' ॥ १४ ॥ 'केये' तु मधुरः स्निग्धस्तिक्तोष्णः केशरंजनः । कृष्णकंदूवि-
 पन्नश्च संप्रोक्तो वैद्यनायकैः ॥ १५ ॥ हिमस्तिकस्तृपानिघ्नो दाहहा केशव-
 र्धनः । बल्यो वृष्यसिद्धोपघ्नो 'धन्वतरिनिघंटके' ॥ १६ ॥ वातास्रकफहा
 प्रोक्तो 'द्रव्यरत्नाकरे' तथा । ५७ उट्टकांडी । म० उताटी । गु०
 उताटी । उट्टकांडी रक्तपुष्पी ज्ञेया करभकांडिका ॥ १७ ॥ रक्ता
 लोहितपुष्पी च वर्णपुष्पी तु 'राजके' । गुणाः । उट्टकांडी तु तिक्तोष्णा
 रुष्या हृद्रोगहारिणी ॥ १८ ॥ तद्बीजं मधुरं शीतं वृष्यं संतर्पणं 'नृपे' ।
 ५८ पिंडीतगर । म० पिंडीतगर । कौ० अनंत । गु० पिंडीतगर ।
 तगरं कुटिलं वक्रं विनम्रं कुंचितं नतं ॥ १९ ॥ शठं च नहृयाख्यं च
 दृढहस्तं च बर्हणं । पिंडीतगरकं चैव पार्थिवं राजहर्षणं ॥ २० ॥
 कालानुसारकं क्षत्रं दीनं जिह्वं तु 'राजके' । कालानुसार्यममृजु 'धन्वे'
 तु नहुषं नृपं ॥ १ ॥ बर्हिणं 'केयेदेवे' तु 'मदे' कटु महोरगं ।
 कालानुसारिणी चक्रं संप्रोक्तं 'गणनामके' ॥ २ ॥ गुणाः । तगरं
 शीतलं तिक्तं दृष्टिदोषविनाशनं । भूतोन्मादहरं पथ्यं विपन्नं 'राजना-
 मके' ॥ ३ ॥ स्निग्धं दोषत्रयघ्नं स्याच्छिरोरोगहरस्तथा । अपस्मारहरं
 प्रोक्तं 'धन्वतरिनिघंटके' ॥ ४ ॥ ५९ दमनक । म० दयणा । गु०
 दमरो । दमनो दमनकः स्याद्धान्तो गंधोत्कटोमुनिः । पुंडरीको ब्रह्मजटा
 जटिलः पांडुरागकः ॥ ५ ॥ पुत्रः पवित्रको दडी विनीतो देवशेखरः । तथा
 तपस्विपुत्रः स्यात्प्रोक्तस्तपसपुत्रकः ॥ ६ ॥ कुलपुत्रश्च संप्रोक्तो
 'राजनामनिघंटके' । 'धन्वतरिनिघटे' स्याच्चपस्वी ऋषिपुत्रकः ॥ ७ ॥

ब्रह्मजरी तथा ' केये ' देवो मुनिसुतो ' गणे ' । दामना मुनिपुत्रः
 स्वात्सुगधः पुष्पचामरः ॥ ८ ॥ तपोधनस्तथा प्रोक्तो भिषग्विद्यावि-
 शारदैः । गुणाः । दमनः शीतलस्त्रिकः कषायः कटुकस्तथा ॥ ९ ॥
 त्रिदोषद्वद्वकुष्ठमः स्फोटघ्नो ' राजनामके ' । भूतदोषहरो हृद्यः प्रोक्तो
 ' धन्वनिघटके ' ॥ १० ॥ ' केये ' तु पिटिकाकटुग्रहपीडानिवारण ।
 अर्शःश्वित्रापहः प्रोक्तो वैद्यै ' र्भदनपालक ' ॥ ११ ॥ ६० वन्यदमनक ।
 म० रानदवणा । गु० वनडमरो । ततश्च वन्यदमनो दमनो वनपूर्वकः ।
 गुणाः । अरण्यदमनः प्रोक्तो वार्यस्तमनकारकः ॥ १२ ॥ बलदश्वा-
 मवोषघ्नो ' राजनामनिघटके ' । ६१ तुलसी । म० तुलस । गु०
 तुलसी । तुलसी सुभगा तीव्रा पावनी विष्णुवल्लभा ॥ १३ ॥ सुरज्या सुरसा
 शेषा कापस्था सुरदुदुमी । सुरभी बहुपत्री स्वात्मजरी सा हरिमिषा । १४
 अपेतराक्षसी श्यामा गौरी त्रिदशमजरी । तृती पृतपत्री स्या ' द्राजनाम-
 निघटके ' ॥ १५ ॥ देवदुडुभिका ग्राम्या ' धन्वे ' तु बहुमजरी । सुलभा
 विष्णुपत्री स्यान्माला श्रेष्ठा चामाधवी ॥ १६ ॥ पापघ्नी पत्रपुष्पा स्या-
 न्मालाश्रेष्ठतमा तथा । अमृता देष्णवी वृद्धा सुगन्धा गन्धहारिणी ॥ १७ ॥
 पर्णासिः सुवहा पुष्पा कुठेरकः कठिंजरः । सुरवल्ली तथा श्रीः स्वात्स-
 प्रोक्ता प्रेतराक्षसी ॥ १८ ॥ स्यात्कृष्णवल्लभा प्रोक्ता तथा सुरभिजरी ।
 ६२ कृष्णतुलसी । म० फाळी तुलस । गु० फाळी तुलसी । स्यात्कृ-
 ष्णतुलसी कृष्णा कृष्णपर्णी करालकः ॥ १९ ॥ ६२ श्वेततुलसी । म०
 पादरी तुलस । गु० धोळी तुलसी । ततः श्वेततुलसी स्याच्छ्रुता लक्ष्मीः
 सिताक्षया । गुणाः । तुलसी कटुतिक्तोष्णा वातघ्नी श्लेष्मदातजित् ॥ २० ॥
 जन्तुमूतकृमिघ्नी स्याद्रुचिकृ ' द्राजनामके ' । तुलसी चाऽसिता श्वेता
 गुणैस्तुल्या मकीर्तिता ॥ २१ ॥ कासलूताहरा प्रोक्ता ' यणनामनिघटके ' ।
 पित्तकृदाहवृद् हृद्या दीपनी कुष्ठनाशिनी ॥ २२ ॥ कफघ्नी रक्तकुच्छुघ्नी
 स्वासघ्नी ॥ ' भदे ' स्मृता । हिक्कान्वराविपघ्नी स्यादोग्नेयघ्नी तु शूलहा
 ॥ २३ ॥ ६४ मरुवकः । म० मरवा । गु० मरुवो । मरुवः खरपत्रस्तु

गंधपत्रः फणिज्जकः । बहुवीर्यः शीतलकः सुराह्वश्च समीरणः ॥ २४ ॥
जंबीरः प्रस्थकुसुमो ज्ञेयो मरुवकस्तथा । आजन्मसुरमिपत्रो मरीचो
‘ राजनामकं ’ ॥ २५ ॥ फणी मरुत्तकश्चैव मरुर्मरुवको ‘ धने ’ ।
‘ केयदेवानिघटे ’ तु सुखात्मकः खरबुकः ॥ २६ ॥ मरुत्तीक्ष्णो ‘ मदे ’
चैव तथैव प्रस्थपुष्पकः । सुगणो मंजरीकश्च मरिचः कुलसौरभः ॥ २७ ॥
द्विधा मरुवकः प्रोक्तो श्वेतश्चैव सितेतरः । श्वतो भेषजकार्ये स्यादपरः
शिवपूजेन ॥ २८ ॥ गुणाः । मरुवः कटुतिक्तोष्णः कृमिकृष्टविनाशनः ।
विड्वधाध्मानशूलघ्नो मांशत्वग्दोषहा ‘ नृप ’ ॥ २९ ॥ ‘ केये ’ तु
कफपित्तास्रकुष्ठकडूज्वरापहः । लघुः शूलहरः प्रोक्तो वैद्यै ‘ द्रव्यनिघं-
टके ’ ॥ ३० ॥ वृश्चिकादिविषघ्नश्च श्लेष्मवातहरो ‘ मदे ’ । अग्निमदो
मिषकश्चेष्टैः प्रोक्तो ‘ भावप्रकाशके ’ ॥ ३१ ॥ ६५ क्षुद्रपणोऽर्जकः ।
म० बारीक पानांचा अजवला । गु० क्षीणो पाननो अजवलो । अर्जकः
क्षुद्रतुलसी क्षुद्रपर्णो मुखार्जकः ॥ ३२ ॥ उग्रगंधश्च जंबीरः कुठेरश्च
कठिंजरः । कुठो पर्णासकश्चैव ‘ नृपे ’ ‘ मदनपालके ’ ॥ ३३ ॥
६६ श्वेतार्जकः । म० पांढरा अजवला, रानतुळस । गु० धोळो
अजवलो । सितार्जकस्तु वैकुण्ठो वटपत्रः कुठेरकः । जंबीरो
गंधबहुलः सुमुखः कटुपत्रकः ॥ ३४ ॥ ‘ नृपे ’ प्रोक्तस्तथा
‘ धन्वे ’ पर्णासो त्रिन्वगंधकः । ‘ गणे ’ शुक्लार्जकोदण्यस्तथा
सौमधिपत्रकः ॥ ३५ ॥ तीक्ष्णश्च श्वेतपर्णासस्तीक्ष्णगंधः सितच्छदः ।
कपित्थार्जक इत्युक्तो त्रिन्वगंधो वटच्छदः ॥ ३६ ॥ ६७ कृष्णार्जकः ।
म० काळा अजवला । गु० काळो अजवलो । कृष्णार्जकः कालमालो
मालुकः कृष्णमालुकः । गरघ्नो कृष्णमल्लीका ‘ नृप ’ तु वनवर्बरः ॥ ३७ ॥
वर्बरी कारवी ‘ केये ’ करालः कपिलार्जकः । गुणाः । त्रयोऽर्जकाः
कटूष्णाः स्युः कफवातामयापहाः ॥ ३८ ॥ नेत्रामयहरा रुच्याः सुखप्र-
सवकारकाः । कृत्रिमं च विषं हन्यु रक्तदोषविनाशनाः ॥ ३९ ॥
‘ नृपोक्ता ’ ‘ द्रव्यरत्ने ’ तु कफवातज्वरापहा । अशोदद्रुकृमिघ्नीति

प्रोक्ता ' मदनपालके ' ॥ ४० ॥ अरुचिच्छर्दिहरेति प्रोक्ता
 ' गणनिघंटके ' । कटुः पाके विदाही च तीक्ष्णः हृत्वा रुचिपदा
 ॥ ४१ ॥ दीपनः पित्तला चैव श्वासकासहरा भयं । हृद्रोगपार्श्वशू-
 लघ्नी प्रोक्ता ' केयनिघंटके ' ॥ ४२ ॥ ६८ वनवर्बरिका । म० सुगंध
 अजवला । गु० सुगंध अजवलो । वर्बरिकाऽन्या तु सुगंधिः सुप्रसन्नकः ।
 चोषोत्कृशी विषघ्नश्च सुमुखः सूक्ष्मपत्रकः ॥ ४३ ॥ निद्रालुः शोफहारी
 च सुवक्त्रो ' राजनामके ' । सुवदनस्तथा सौम्यो गरुध्नः कटुपत्रकः
 ॥ ४४ ॥ ' धन्वंतरिनिघटे ' तु संप्राक्ता वैथनायकेः । गुणाः । वन-
 वर्बरिका चोष्णा सुगंधा कटुका तथा ॥ ४५ ॥ पिशाचवान्तिभूतघ्नी
 घ्राणसंतर्पणा ' नृपे ' । पित्तकुत्सार्श्वशूलघ्नी श्वासदौर्गन्ध्यकासहा ॥ ४६ ॥
 फफानिलविषघ्नी च ' धन्वंतरिनिघंटके ' । ६९ गंगापत्री । म० गंगा-
 वती । कौ० भांवरूढ । गंगापत्री सुपत्री स्वात्सुबधा गंधपत्रिका ॥ ४७ ॥
 गुणाः ॥ गंगापत्री कटूष्णा च वातव्रणहरा ' नृपे ' । ७० पार्ची । म०
 पाच । गु० पानडी । पार्ची मरकतपत्री हरितलता हरितपत्रिका पत्री
 ॥ ४८ ॥ सुरभिर्मल्लारिष्टा मारुतमपत्रिका तु ' नृपे ' । स्पृष्ट्वा देवी
 देवपत्री निर्मात्या ब्राह्मणी वधूः ॥ ४९ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्ता
 भिषग्विद्याविशारदेः । गुणाः । पार्ची कटूष्णा तिक्ता च कषया वात-
 रोगहा ॥ ५० ॥ ग्रहभूतव्रणघ्नी च त्वग्दोषापहरा ' नृपे ' । दाहतृष्णा-
 विषघ्नीति ' द्रव्यरत्नाकरे ' स्मृता ॥ ५१ ॥ ७१ बालक । म० पांढरा
 बाळा । गु० धोळो बाळो । बालकं वारिपर्यायेरुक्तं न्हिबि-
 रकं तथा । केश्यं वज्रमुदीर्यं च पिमं च ललनापिथं
 ॥ ५२ ॥ बालं च कुंतलोशरिं कचामोदं तु ' राजके ' ।
 न्हिबेरं वारि तापं च पिमं तु जलमंजृजं ॥ ५३ ॥ कचमाचमन ' धन्वे '
 गंधमूलं तु ' द्रव्यके ' । ' गणे ' वरिष्ठमन्त्राह्व बहिष्ठं केशमवच ॥ ५४ ॥
 कटापनं वीरमद्र बालं केशांबुनाम च । अवदंतं चावदानं कंभु दाहहरं
 तथा ॥ ५५ ॥ गुणाः । बालकं शीतलं तिक्तं पित्तवातितृषापहं । ज्वर-

कष्टातिसारघ्न केश्य श्वित्रवणापनुत् ॥ ५६ ॥ ' नृपे ' प्रोक्तं तथा
 ' धन्वे ' कटुघ्न दाहकुष्ठनुत् । पित्तश्लेष्मविसर्पघ्न कफरक्तहर ध्रुव
 ॥ ५७ ॥ दीपन पाचन चैव रक्तपित्तविनाशन । कफघ्न च हृत्लास
 दाह हृद्गदमित्यपि ॥ ५८ ॥ हन्ति ' केये ' भिषक्प्रथैः प्रोक्त विषहर
 ' मदे ' । ७२ चर्वर । म० रानतुलस, काली बावरी, वैजयती तुलस ।
 गु० वनतुलसी । चर्वरः सुमुखश्चैव गरुध्नः कृष्णचर्वरः ॥ ५९ ॥ सुकदनो
 गधपत्रः पूतगन्धः सुरार्हकः । प्रोक्ता ' राजनिघटे ' तु चर्वरी कवरी
 तथा ॥ ६० ॥ खरपुष्पाऽग्नगधा च वनजा कारवी तुर्गी । गुणाः ।
 चर्वरः कटुकोष्णश्च सुगन्धिर्वातनाशनः ॥ ६१ ॥ विसर्पविषविष्वसी
 स्वादोपशमनो ' नृप ' । ७३ सुरपर्ण । म० सुरपीण, सुरपत्री । गु०
 सुरपीण । सुरपर्णं देवपर्णं चिम्पर्णं सुगन्धिक ॥ ६२ ॥ मचिपत्र सूक्ष्म-
 पत्र देवाहं गधपत्रक । प्रोक्त ' राजनिघटे ' तु चिरपत्री तथा स्मृता
 ॥ ६३ ॥ गुणाः । कटूष्ण सुरपर्णं च कृमिश्वासनलासजित् । वीपनं
 कफघातघ्न वर्ण्य वातहर ' नृपे ' ॥ ६४ ॥ ७४ आरामशीतला । म०
 रामशाली, सुगन्धपत्रा । गु० आरामशीतला । आरामशीतलाऽऽनदा
 शीतला सा सुनदिनी । रामा चैव महानदा गन्धाढ्या रामशीतला ॥ ६५ ॥
 ' नृपे ' प्रोक्ता तथा ' केये ' देवगन्धा तु भूरिका । चिटिका भक्तिका
 भूरिः प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ ६६ ॥ गुणाः । आरामशीतला तिक्ता
 शीतला पिचिह्वारिणी । दाहघ्नी घ्नशोषघ्नी विस्फोटकहरा ' नृपे '
 ॥ ६७ ॥ रुक्मपित्तास्रजित् प्रोक्ता ' केयदेवनिघटके ' । ७५ कमल ।
 म०, गु० कमल । पाथाज कमल पद्म नलिनाभाजमवुज ॥ ६८ ॥ श्रीपद्म
 चाबुजन्मान्ज नभश्चाबुरुह कज । जलज सारस वार्जं पकजं सरसीरुह
 ॥ ६९ ॥ पकेरुह तामरस शतपत्र कुशेश्य । सहस्रपत्र कुटप ततः
 सलिलज मत ॥ ७० ॥ स्याद्विषकृसुम कजमरविद् महोत्पल । पाथो-
 रुह तु राजीव ततः सरमिज स्मृत ॥ ७१ ॥ प्रोक्त वारिरुह चैव पुष्करा-
 भोरुह ' नृपे ' । विसमसूननालीकनलानि जलजन्म च ॥ ७२ ॥ कदार जल-

तु सग्राहि प्रोक्त वैद्यविचक्षणैः । ८२ पद्मकंद । म०, गु० कमळकंद ।
 पद्मकंदस्तु शालूक पद्ममूल कटाह्वय ॥ ६ ॥ शालिन च जलालूक
 प्रोक्त ' राजनिघटके ' । शालूक करहाट च पद्ममूल तु ' अन्वके ' ॥ ७ ॥
 मृणालमूल भिस्माड भिस्सठ पकसूरणः । गोषमद्रः कजमूलं शालु चैव
 प्रकीर्तितः ॥ ८ ॥ गुणाः । शालूक कटुविटम्भि रूक्ष रुच्य कफापह ।
 कषाय कासपित्तघ्न तृष्णादाहहर ' नृप ' ॥ ९ ॥ ८३ किंजल्का म०, गु० कमळके-
 सरा । किंजल्क मकरव च केसर पद्मकेसर । किंज पीत पराग च तृग चापे-
 यक ' नृपे ' ॥ १० ॥ पद्मकिंजल्कमापीत गौर काचनक ' अने ' ।
 तथा ' मदनपाल ' तु कायनाह्वयमरित ॥ ११ ॥ तथा पीतपराग
 च चापेय काचन स्मृत । गुणाः । किंजल्क मधुर रूक्ष कटु चास्य-
 व्रणापह ॥ १२ ॥ शिशिर रुच्य पित्तघ्न तृष्णादाहहर ' नृपे ' । ' मदन'
 ग्राहि सप्रोक्त रक्तार्श कफपित्तजित् ॥ १३ ॥ विपशोपहर चैव कातिद
 ' भावनामके ' । ८४ संवर्तिका । म० कमळाच्या कोंवळ्या पाफळ्या ।
 गु० कमलना कृणा पान । संवर्तिका पद्मपत्र पद्मपर्ण नव दल ॥ १४ ॥
 गुणाः । संवर्तिका हिमा तिक्ता कषाया दाहतृट्णत् । मूत्रकृच्छ्रगुद-
 व्याधिरक्तपित्तहरा ' भवे ॥ १५ ॥ ८५ कर्णिका । म० ज्यात कम-
 ळाचे बीं अमर्ते ता गर्भकोश । गु० कषळकोश । बीजकोशोऽञ्जकर्णी
 स्याद्वराटी बीजमातृका । गुणाः । पद्मस्य कर्णिका तिक्ता कषाया
 मधुरा हिमा ॥ १६ ॥ मुख्यवैशद्यरूढाश्च तृष्णास्रकफपित्तनुत् । ' भावप्रकाशे '
 सप्रोक्ता वैद्यविद्याविचक्षणे ॥ १७ ॥ ८६ उत्पल । म० लहान कमळ चद्र-
 विकाशी । गु० नटाना कमळ चद्रविकाशी । अनृष्ण चोत्पल चैव रात्रिपुष्प
 जलाह्वयं । हिमाञ्ज सितजलज निशाफुल्ल तु ' राजके ' ॥ १८ ॥
 निशापुष्प तथा प्रोक्त वैद्यविद्याविशारदैः । गुणाः । उत्पल शिशिर
 स्वादु पित्तरक्तार्तिदायनुत् ॥ १९ ॥ दाहभ्रमवामिआतिवृमिज्वरहर
 ' नृप ' । ८७ कुमुद, धवलोत्पल । म० कुमुद, पादर कमळ चद्र-
 विकाशी, कापूतरुमळ । गु० पोथगा, धोळा कमळ चद्रविकाशी ।

निघंटुशिरोमणिः

धवलोत्पलं तु कुमुदं कल्हारं कैरवं तथा ॥ २० ॥ शीतलं शशिकर्तं
च चंद्रान्न चंद्रिकांबुज । तथेदुकमलं चैव प्रोक्तं 'राजनिघटके' ॥ २१ ॥
सितोत्पलं नीलवृत्तं चंद्रकांतं शशिप्रियं । गर्दभं श्वेतजलजं तथा सोम-
प्रियं मतं ॥ २२ ॥ श्वेतोत्पलं कुमुच्चैव शशिप्रभं जलेरुहं । गंधसोमं
तु श्रीगेहं चंद्रेष्टं तु प्रकीर्तितं ॥ २३ ॥ गुणाः । कुमुदं शीतलं स्वादु
पाके तिक्तं कफापहं । रक्तदोषहरं दाहश्रमपित्तहरं 'नृपे' ॥ २४ ॥
८८ नीलोत्पल । म० निळें कमळ चंद्रविकाशी । गु० नीलकमल
चंद्रविकाशी । नीलोत्पलं तु कंदोत्थं सुगंधं चासितोत्पलं । इर्दावरं चोत्पलकं
तथा सौमधिकं मतं ॥ २५ ॥ तथा कुवलयं चैव कुड्मलं 'राजनामके' ।
कंदोष्ठं तु तथा भद्रं प्रोक्तं वैद्यविशारदैः ॥ २६ ॥ गुणाः । नीलोत्पलमतिस्वादु
शीतं सुरभि सौख्यकृत् । पाके तु तिक्तमत्यन्तं रक्तपित्तहरं 'नृपे'
॥ २७ ॥ ८९ उत्पलिनी । म० , गु० चंद्रविकाशी कमलिनी । उत्प-
लिनी कैरविणी कुमुद्वती तदुत्तरं । कुमुदिनी तु चंद्रेष्टा स्यात्कुवलयिनी
स्मृता ॥ २८ ॥ स्यान्नीलोत्पलिनी चैव तथेदीवरिणी 'नृपे' । तथा
कुमुदिका चैव संप्रोक्ता चोद्धपमिश्रा ॥ २९ ॥ गुणाः । उत्पलिनी हिमा
तिका पित्तघ्नी रक्तदोषजित् । वान्त्यादिकफकासघ्नी तृष्णाश्रमहरा
'नृपे' ॥ ३० ॥ ९० कुमुद्वती । म० कुमुदबीज (धांगुडाचे भांतील
बी) । गु० कुमुदबीज । गुणाः । भवेत्कुमुद्वतीबीजं स्वादु रूक्षं हिमं
गुरु । ९१ रक्तकुमुद । म० रक्तोत्पल, तांबडं कुमुद । गु० लाल
कमोद । हल्लक रक्तकुमुद सोमाख्यं रक्तकैरवं ॥ ३१ ॥ तथा रक्तोत्पलं
रक्तकल्हारं रक्तसंध्यकं । ९२ जात्युत्पल । म० किंचित् श्वेतरक्तवर्ण
लहान जातीचें कमल । गु० धोळां लालरंगनु कमल । जात्युत्पलं
कल्हारं सौम्यकं सौम्यगन्धिक ॥ ३२ ॥ सौमधिकं सुगंधि च शीतं स्याच्छीतं-
रोहणं । तथा शीतरुहं चैव संप्रोक्तं च श्वेतोत्पल ॥ ३३ ॥ ९३
कल्हार । म० कल्हार, लहान जातीचें पांढरें कमल । गु० नहानी जा-
तनुं धोळां कमळ । कल्हारं ह्रस्वपायांज तथा सौमधिकं मतं । हेमाहं

हंसपाथोज महागंधं वनोत्पल ॥ ३४ ॥ रक्तनाल कर्णपूरं न्हम्बोत्पल-
मिति स्मृत । गुणाः । कन्हारं ग्राहि विष्टमि रूक्ष चातिहिम गुरु
॥ ३५ ॥ १४ कमलिनीपत्रगुणाः । म० कमळणीच्या पानाचे गुण ।
गु० कमळणीनां पाननां गुण । मधुर शीततुवर कटुक पश्चिनीदल ।
वातलं ग्राहि तिक्त च कफपित्तहर लघु ॥ ३६ ॥ १५ पुष्पद्रव । म०
१ पुष्पांशाल मध २ पुष्पाचा सुगंधी अर्क । गु० फूलना मध, फूलना
अर्क । पुष्पद्रवः पुष्पसारः पुष्पस्वेदश्च पुष्पजः । पुष्पनिर्यामकश्चैव पुष्पा-
वृजन्तु ' राजके ' ॥ ३७ ॥ मकरदः पुष्परसः ' कोशे ' चैव प्रकी-
र्तितः । गुणाः । पुष्पसारः सुगंधिश्च कषायः शीतलः सरः ॥ ३८ ॥
दाहश्रमवमिभ्रान्तिवृष्णापित्तकफापहः । अरोचकास्यरोगघ्नो गौल्यः
सतर्पणः स्मृतः ॥ ३९ ॥ १६ जात्यादिमोद । जाई आदिठरून
पुष्पाचा परिमल । जाती भाति मृदुर्भनाज्ञपधुराऽऽमोदो मुहूर्तद्वय । द्वैगु-
ण्येन च मल्लिका मदकरी गधाधिका यूथिका ॥ एकाह वनमालिका
मदकर चान्हा अप चपफ । तीव्रामोदमयाष्टवासरमिता मोदान्विता
केतकी ॥ ४० ॥

इति करवीरादिवर्गः समाप्तः ॥

१ आम्रादिवर्गः

१ आम्र । म० अवा । गु० आवो । आम्रः कामशरश्चूतो रसालः
कामवल्लभः । कागामः सहकारश्च कार्शेष्टो माधवद्रमः ॥ ४१ ॥ भृगाभीष्टः
सीधुरसा मधूली कोकिलोत्सवः । वसतद्वृतोऽम्लफलो मोदाख्यो मन्म-
थालयः ॥ ४२ ॥ मध्वावासः सुमदनः पिकुरागो नृपप्रियः । मि-
याम्बुः कोविलावासः प्रोक्तो ' राजनिघटके ' ॥ ४३ ॥ ' धन्वतरिनि-
घटे ' तु परपुष्टमहोत्सवः । वनपुष्पोत्सवश्चैव मधुद्वृतोऽतिसौ-
रभः ॥ ४४ ॥ वसतपादपश्चैव शरष्टो मदिरासवः । सुफलो मधुफलः

स्यान्माकदो मादिरासखः ॥ ४५ ॥ स्यात्पिकनांधवः प्रोक्तः ' केवे ' कोकिलबधुकः । मन्मथः सुपथो मोदः कातः पिकमहोत्सवः ॥ ४६ ॥ शामतैलश्चैत्रवृक्षस्तथा मद्यसखः स्मृतः । तथा ' मदनपाले ' तु पिक-
बधुर्वनोत्सवः ॥ ४७ ॥ मधुदूतस्तथा ' भावे ' ' गणे ' तु शौण्डिक-
प्रियः । तथा मधुकरप्रीतः प्रोक्तो मधुकरप्रियः ॥ ४८ ॥ चूतकोऽम्रो
मनोज्ञश्च भृगेष्टः पिकवल्लभः । मृषालकः फलश्रेष्ठो मजरी षट्पदा-
तिथिः ॥ ४९ ॥ वसतद्रुः फलोत्पत्तिः स्त्रीप्रियः केशवायुधः ।
अलिप्रियो मधवधुः पिकप्रियः शुरुप्रियः ॥ ५० ॥ तथा वैद्यैश्च
सप्रोक्तो कोषी तु भ्रमरप्रियः । गुणाः । बालाम्रः पित्तकृच्चैव वात-
कृत्कफकृत्तथा ॥ ५१ ॥ कंठामयहरश्चैव रक्तदोषप्रदः स्मृतः । त्रिदो-
षकृद्बिदः स्यात्कृषायाम्लरसः स्मृतः ॥ ५२ ॥ पकाम्रश्च त्रिदो-
षघ्नो गुरुः स्वादुश्च पुष्टिदः । धातुवृद्धिकरश्चैव तर्पणः
कातिकारकः ॥ ५३ ॥ तृष्णाश्रमहरः प्रोक्तो ' राजनामनिघटके ' ।
योनिदोषातिसारघ्नः प्रमेहघ्नश्च ' केयके ' ॥ ५४ ॥ ' द्रव्ये ' तु कफ-
घातघ्नो व्रणहेति प्रकीर्तितः । ग्राही त्वर्शोहरः प्रोक्तो ' मवने ' वैद्य-
नायकैः ॥ ५५ ॥ सहकाररसो हृद्यः सुरभिः स्निग्धरोचनः । त्वद्मूल-
पल्लवं ग्राहि कषाय कफपित्तान्जित् ॥ ५६ ॥ पकाम्रश्चैव हृद्यः च रुच्य
वर्णकरः स्मृतः । प्रोक्तः ' धन्वनिघटे ' तु रक्तमासबलप्रदः ॥ ५७ ॥
२ कोशाम्रः । म० कोशैव, । लाल रान अना । गु० कोशम ।
कोशाम्रस्तु धनस्कधो वनाम्रो जतुपादः । क्षुद्राम्रश्चेति रक्ताम्रो लाक्षावृक्षः
सुरक्तकः ॥ ५८ ॥ ' नृपे ' प्रोक्तस्तथा ' धन्वे ' सुकोशस्तु जतुद्रुमः ।
तथा कृमितरुश्चैव कोशाम्रः कृमिवृक्षकः ॥ ५९ ॥ गुणाः । कोशाम्रः
पित्तकफकृद्वाहकृच्छोफकृत्तथा । वातघ्नश्च तथा पक्व मधुर त्वम्लमेव
च ॥ ६० ॥ रोचन दीपन बल्य पुष्टिदः ' राजनामके ' । कुष्ठार्शःपित्त-
निघ्नश्च ' द्रव्ये ' व्रणकफापहं ॥ ६१ ॥ तन्मज्जा दीपनी बल्या
पित्तमारुतजि ' नृपे ' । ग्राही वातहरः प्रोक्तो वयै ' मविमका-

कंटाफलः कंटकारी स्यान्मुरजफलश्च सः ॥ ९५ ॥ चंपकालुश्चपकोपः
 प्रोक्तो वैद्यावेचक्षणैः । गुणाः । पनसो मधुरश्चैव पिच्छलो गुरुहृद्यकः
 ॥ ९६ ॥ नलवीर्यप्रदश्चैव भ्रमदाहविनाशनः । रुचिकृद्दुर्जरो ग्राही
 शोपनाशकरस्तथा ॥ ९७ ॥ ईपत्कपायं मधुरं तद्दीनं वातलं गुरु ।
 तत्फलस्य विकारघ्नं रुच्यं त्वग्दोषनाशनं ॥ ९८ ॥ नालं तु नीरसं हृद्यं
 मधुपक्वं तु दीपन । रुचिदं लवणायुक्तं पनसस्य फलं 'नृपे' ॥ ९९ ॥
 'भावे' शीतगुणः प्रोक्तो विटंभी चामनाशनः । वातघ्नो गुरुदाहघ्नो
 बन्धो कफविवर्धनः ॥ १०० ॥ मेदकृत्पनसो वर्ज्यो गुन्मिभिर्मदव-
 ह्निभिः । तथैव त्वरश्चैव वातलो रक्तपित्तहर्ता ॥ १०१ ॥ वृष्यो विपाके
 स्वादुश्च शीतलस्तर्पणो वृद्धतः । श्लेष्मलो वातापित्तघ्नः 'केये' रक्तक्षया-
 पहा ॥ १०२ ॥ 'द्रव्ये' पित्तहरः प्रोक्तो 'मदे' शुक्रमदः स्मृतः ।
 क्षतक्षयहरश्चैव 'भावे' बीजगुणः स्मृतः ॥ १०३ ॥ वृष्यो, गुरुमधुश्चैव
 मलबद्धकरस्तथा । मूत्रबद्धकरश्चैव वातपित्तकफापहा ॥ १०४ ॥ ११
 'कदली' । म०, गु० फेळ । कदली सुफला रंगा सुकुमारी सकृत्फल । मोषा
 गुच्छफला हस्तिविषाणी गुच्छदंतिका ॥ १०५ ॥ काष्ठिरसा च
 'निःसारा राजेष्टा नालकप्रिया । ऊरुस्तंभा मानुफला वनलक्ष्मीश्च
 'राजके' ॥ १०६ ॥ खाक्षुफला तथा दीर्घपत्रा ज्ञेया तु 'धन्वके' ।
 'स्याद्वायतच्छवा' वीरा ग्रंथिनी 'द्रव्यनामके' ॥ १०७ ॥ 'भावे'
 तु वारणमुसा संप्रोक्ता चांशमल्फला । कदलः कदलासारा तथा
 'हस्तिविषाणिका' ॥ १०८ ॥ चर्मण्वती हस्तिमुसाऽवनीसारा तु मोचकः ।
 'स्याद्धारणमुषा' तंतुविग्रहा नगरीषाधिः ॥ १०९ ॥ ग्रंथिनी ततपत्री च तथा
 वारणवल्लभा । गुणाः । नालं फलं कदल्यास्तु मधुराम्लं कपायक ॥ ११० ॥
 पित्तघ्न शिशिरं रुच्यं नालं पुष्पं तु पूर्ववत् । शूलघ्न कदलीपर्णं कंदं ॥
 'कुमिहारि' च ॥ १११ ॥ कदल्यास्तु फलं पक्वं कपायं मधुरं हिमं ।
 रक्तपित्तहरं बन्धं वृष्यं कफकरं गुरु ॥ ११२ ॥ मंदानले न पथ्यं च
 दीप्ताम्रैः सुखदं परं । सद्यः शुक्रकरतृष्णाक्लमघ्नं कातिदं तथा ॥ ११३ ॥

संतर्पणं दुर्जरं च प्रोक्तं ' राजनिघंटके ' । विष्टंभि मांसलं दाहक्षुधावा-
ताम्रनाशनं ॥ १४ ॥ ' केये ' प्रोक्तं तथा ' भावे ' मेहघ्नं नेत्ररोग-
जित् । कदलीगुणाः । श्लिग्धा स्वाद्वी च पिताम्रनाशनी योनिदोष-
जित् ॥ १५ ॥ कफाश्मरीहरा प्रोक्ता ' केयदेवनिघंटके ' । रंभासारः
शीतलश्च ग्राही हृद्यस्तृषापहा ॥ १६ ॥ मूत्रकृच्छ्रातिसारघ्नो दाहमो-
हहरस्तथा । रक्तपित्तहरश्चैव सोमरोगहरो ' द्रवे ' ॥ १७ ॥ १२ काष्ठ-
कदली । म० लोखंडी केळ । गु० काठकळ । सुकाष्ठा काष्ठकदली कद-
लीवनसंज्ञका । काष्ठिका दारुकदली ' फलाढ्याऽश्मकदन्यपि ॥ १८ ॥
वनमोचा शिलारंभा ' राजनामनिघंटके ' । श्वेताऽनुकदली चैव विपन्नी
कदली तथा ॥ १९ ॥ पाषाणकदली चैव ' धन्वंतरिनिघंटके ' । कर्पा-
'सवद्बीजफला काष्ठीला तदनंतर ॥ २० ॥ काष्ठीलिकाऽश्मसारा च
काष्ठा चैव तथा स्मृता । गुणाः । स्थात्काष्ठकदली रुच्या रक्तपित्त-
हरा हिमा ॥ २१ ॥ गुरुमंदाभिजननी दुर्जरा मधुरा ' नृपे ' । १३
गिरिकदली । म० रानकेळ । कौ० चवेणी, कौदर । गु० जंगली केळ ।
अरण्यकदली चैव तथा गिरिकदन्यपि ॥ २२ ॥ तथा पर्वतमोचा च
गिरिजा गजवल्लभा । गिरिरंभा तु सा ज्ञेया बहुबीजा तदुत्तरं ॥ २३ ॥
वनरंभा तथा प्रोक्ता ' राजनामनिघंटके ' । गुणाः । वनरंभा हिमा
बल्या दुर्जरा रुचिर्वीर्यदा ॥ २४ ॥ तुष्टपित्तदाहशोषघ्नी गुरु-
श्चैव ' नृपे ' स्मृता । १४ सुवर्णकदली । म०, गु० सोनकेळ ।
सुवर्णकदली पीता पीतरंभा सुरमिया ॥ २५ ॥ स्वर्णरेभा
स्वर्णमोचा गौरा स्वर्णफला तथा । ज्ञेया चंपकरंभा च गौररभा सुरं-
भिका ॥ २६ ॥ सुमगा फनकस्तंभा तथा हेमफला मता । प्रोक्ता
' राजनिघटे ' तु स्यात्कांचनकदन्यपि ॥ २७ ॥ गुणाः । स्वर्णमोचा
तु मधुरा दाहतृष्णापहा हिमा । स्वल्पाशने तु पथ्या च गुरुवृन्ध्या कफा-
पहा ॥ २८ ॥ १५ नारिकेल । म० नारळ, नारळी । कौ० माड ।
गु० नार्लपेर । नालिकेरो रसफलः सुतृणः कूचंशेखरः । दृढनीरो नीर-

जूरी स्थूलपिंडा मधुस्रवा ॥ ६२ ॥ फलपुष्पा स्वादुपिंडा हयमसा तु
 ' राजके ' । ' धन्वंतरिनिघंटे ' च स्थूलपिंडा प्रकर्तिता ॥ ६३ ॥
 दुरारोहा तु खर्जूर ' द्रव्यरत्ने ' मृदुच्छदा । तथा ' मदनपाले ' तु
 मृदुला निर्धलीफला ॥ ६४ ॥ फलमुद्गरिका पिंडा पिंडिका
 मधुरारसा । श्रेणी मृदुदला चैव दुरारोहा सुकटिका ॥ ६५ ॥
 तथा वैद्यैस्तु संप्रोक्ता सुफला दीपसंभवा । २१ राजखर्जूरी । म०
 राजपिंडखनूर । गु० राजखजूर । तथाऽन्या राजखर्जूरी राजपिंडा
 नृपप्रिया ॥ ६६ ॥ मुनिखर्जूरिका वन्या राजेष्टा ' राजनान्नि ' च ।
 गुणाः । पिंडखर्जूरिकायुग्मं गौल्यं स्वादे हिमं गुरु ॥ ६७ ॥ पित्तदा-
 हातिश्वासघ्नं श्रगह्दीर्घवृद्धिदं । तृष्णा दाहहरा वृष्णा मधुरा शोषहा-
 रिणी ॥ ६८ ॥ शीता संतर्पणी बल्या पुष्टिदा र्वायवर्धनी । वह्निमायकरी
 रक्तपित्तघ्नी तु विषापहा ॥ ६९ ॥ सिग्धाह्वया तथा प्रोक्ता खर्जूरी पिंड-
 नागका । मदपित्तकरी चैव दीपनी कफवातजित् ॥ ७० ॥ बलशुक्रकरी
 प्रोक्ता ' भावनामनिघंटके ' । २२ चार । म० चार, चाराळा । म०
 चारोली । चारः स्वादुः खरस्कंधोललनश्चारकस्तथा ॥ ७१ ॥ बहुबल्कः
 प्रियालश्च वनद्रस्तापसप्रियः । स्नेहबीजश्चापपटो भक्षबीजश्च ' राजके ' ॥ ७२ ॥
 ललनाऽम्लफलः शालः सन्नकद्रुर्धनुःपटः । द्राक्षाफलः ' केयदेवे ' मधु-
 राम्लफलो ' मणे ' ॥ ७३ ॥ राजादनस्तापसेष्टस्तथा राजादनी
 ' मवे ' । ' मदे ' धनुः पंटेऽथैव पियालो मुनिवल्लभः ॥ ७४ ॥
 मुनिप्रियस्तथाऽम्लत्वक्ज्ञेयो बहुलबल्कलः । गुणाः । चारस्य च फलं
 पक्वं वृष्यं गौल्याम्लकं गुरु ॥ ७५ ॥ तद्बीज मधुरं वृष्यं पित्तदाहहरं
 ' नृपे ' । ' केये ' तु कफपित्तघ्नं हिमं सिग्धं च बृंहणं ॥ ७६ ॥
 रक्तपित्तादिवातघ्नं क्षतक्षयहरं तथा । रक्तदोषहर ' द्रव्ये ' ' मदे '
 ' भावे ' तृषापहं ॥ ७७ ॥ विष्टंभि कफदं बल्यं सरं चैव तथा स्मृतं ।
 चारमूलं तु तुवर रक्तरुक्कफपित्तहृत् ॥ ७८ ॥ तन्मज्जा मधुरा वृष्णा
 पित्तानिलहरा ' धने ' । २३ भल्लातक । म० जिवा, भिलावा । गु०

मिलामा । मल्लातकोऽभिर्वहनस्तपनोरुक्करोऽनलः ॥ ७९ ॥ कृमिघ्नस्तैल-
बीजश्च वातारिः स्फोटबीजकः । पृथग्बीजो धनुर्वृक्षो मल्लतो बीजपा-
दपः ॥ ८० ॥ बन्धिर्वीरितरुश्चेति विज्ञेयो ' राजनामके ' । उष्णोऽग्नि-
कोऽरुक्करश्च धनुराग्निमुखी ' धने ' ॥ ८१ ॥ अरुक्को व्रणकृद्गुली स्फोट-
हेतुश्च ' केयके ' । वीरवृक्षोऽग्निवक्त्रश्च शोफकृद् ' न्मदने ' स्मृतः
॥ ८२ ॥ ' गणे ' स्फोटकरश्चैव क्षतकृत्परिकीर्तितः । अशोहितो निर्द-
हनो महातीक्ष्णश्च रजकः ॥ ८३ ॥ रक्तहरः स्नेहबीजश्चानलो
भूतनाशनः । अन्तःसत्त्वा शाफकरो दुर्दर्पो भेदनोऽग्निकः ॥ ८४ ॥
गुणाः । मल्लतकः फटुस्तिकः कषायोष्णः कृमीक्षयेत ।
फफवातोदरानाहमेहदुर्नामनाशनः ॥ ८५ ॥ मल्लतकफल कोष्ण कषाय
मधुर स्मृत । आसानाहविवधघ्न अमशूलकफार्तिजित् ॥ ८६ ॥ जठरा-
ध्मानकृमिघ्नश्च तन्मज्जा शोषदाहहृत् । पित्तघ्नी तर्पणी वातारोचकघ्नी
तु दीपनी ॥ ८७ ॥ ' नृपे ' मोक्षा तथा ' द्रव्ये ' गुल्मवातहरा स्मृता ।
कृमिघ्ना शुक्ला वृष्या वातश्लेष्महरा गुरुः ॥ ८८ ॥ व्रणज्वरश्वासकुष्ठ-
ग्रहणीवीह्निमाचजित् । ९४ क्षीरी । म० खिरणी, राजणी । गु०
रायणी । राजादनो राजफलः क्षीरवृक्षो नृपद्रुमः ॥ ८९ ॥ निवर्बीजो
मधुफलः कषीष्टो माषवोद्भवः । क्षीरी गुच्छफलः मोक्ष. शुकेष्टो राज-
वल्लभः ॥ ९० ॥ श्रीफलोऽथ दृढस्कधः क्षीरशुक्लस्तु ' राजके ' । राजा-
दनी क्षीरशुक्ला राजन्यः क्षीरशुक्लः ॥ ९१ ॥ ' धन्वतरिनिघटे ' तु
नृपश्च प्रियदर्शनः । फलाभ्यक्षो गुरुस्कधः क्षत्रियो वानरप्रियः ॥ ९२ ॥
इक्ष्वाकुः श्रीफलो राजपलाशी च । तथा स्मृतः । मदनकः पलाशी च
राजाह्वः ' केयदेवके ' ॥ ९३ ॥ तथा ' मदनपाले ' तु चिबुके मृचि-
लिदकः । दुग्धफला तथा मोक्षा शाखामृगप्रियो ' गणे ' ॥ ९४ ॥ इषामबीजो
राजफलः फलाक्षी क्षीरिणी तथा । दृढशाखी क्षीरिका च मोक्षा वैद्यवि-
शारदैः ॥ ९५ ॥ गुणाः । राजादनी तु मधुरा पित्तहृद्भ्रूतर्पणी । वृष्या
स्थौल्यकरी हृद्या स्निग्धा मेहहरा ' नृप ' ॥ ९६ ॥ वातघ्नी शीतला

रुच्या प्रोक्ता 'धन्वन्तरी' ध्रुव । तृष्णामूर्च्छाप्रपन्नी च त्रिदोषघ्नी क्षयापहा
 ॥ ९७ ॥ तिष्ठति रक्तमणिः ॥ १ ॥ मधुः ॥ २ ॥ दाडिमः ।
 म० दाडिम, डाडिम । गु० दाडिम । दाडिमा दाडिमासारः कुट्टिमः
 फलशाडः ॥ ९८ ॥ करको रक्तबीजश्च सुफलो दत्तबीजकः । मधु-
 बीजः कुचफलो रोचनः शुक्बल्लभः ॥ ९९ ॥ मणिबीजस्तथा वल्क-
 फलो वृत्तफलश्च सः । सुनीलो नीलपत्रश्च 'राजनामनिघटके' ॥ ३३० ॥
 स्वाद्वल्लश्च तथा 'धन्वे' 'भावे' लोहितपुष्पकः । स्याद्रक्तकुसुमः 'केये'
 मधुगम्लः शुकप्रियः ॥ १॥ तथा दशनबीजा च रक्तपुष्पा तु 'द्रव्यके' ।
 दाडिभः पर्वरुद् विडपुष्पः पिडारडालिमो ॥ २ ॥ गुणाः । दाडिम मधुर
 चाम्ल कषाय कासनाशन । वातादिरक्तपित्तघ्न ग्राहि दीपनशीतल ॥ ३ ॥
 अमघ्न लघु चोष्ण च रुच्य ज्वरहर स्मृत । दाडिम द्विविध श्लेष्ममल्ल
 तु मधुर तथा ॥ ४ ॥ कफनातहर चाम्ल तापजिन्मधुर 'नृपे' । हृष्य
 मेध्य कठमक्षशोषघ्न 'केयदेवके' ॥ ५ ॥ २६ तिंदुक । म० टेमुरणी ।
 गु० टिंदिरु । तिंदुको नीलमारश्च कालस्कन्धोऽतिमुक्तकः । स्फूर्जका
 रामणश्चैव स्फूर्जनः स्यदनाह्वय ॥ ६ ॥ 'नृपे' 'धन्वे' रवः सृष्टः
 स्यदनो रावणस्तथा । रमणः कालसारश्च स्यदिता चाविमुक्तका ॥ ७ ॥
 विस्फूर्जनी दीर्घनखी तिंदुकी विरला वरः । तिंदुलः त्रिदुकस्तिदुर्विस्फु-
 रणी तु 'केयके' ॥ ८ ॥ तथा 'भावप्रकाशे' च प्रोक्ता चाणित-
 सारका । 'ततस्त्वमरकोशे' च सप्रोक्तः शितिसारक ॥ ९ ॥ गुणाः ।
 तिंदुकस्तु कषायः स्यात्सग्राही वातकृत्परः । पक्वस्तु मधुरः क्षिप्तो
 दुर्जर श्लेष्मलो 'नृपे' ॥ १० ॥ 'केये' वातव्रणघ्नश्च 'धन्वे' तु
 कफपित्तजित् । तत्सारः पित्तरोगघ्नः प्रोक्तो 'मदनपालके' ॥ ११ ॥
 'भावेऽ' पक्वफल प्राक्त ग्राहि शीतलवातल । सग्राहि शीतल रुक्ष
 विवधारुचिवातकृत् ॥ १२ ॥ बलासापित्तानिपक्व फल प्रोक्त तु 'केयके' ।
 'मदे' त्वर्शः प्रमेहघ्न श्लेष्मद विषद गुरु ॥ १३ ॥ २७ काकति-
 दुक । म० काक टेमुरणी, काटे टेमुरणी । गु० काकावाळो टिंदिरवो ।

तिदुकोऽन्यः काकपीलुः काकाडः काकतिंदुरुः ॥ १४ ॥ कालस्फूर्जश्च
काकाडः कुपीलुः काकपीलुकः । गोक्तो ' राजनिघटेक ' तु काकैदुकी
तु ' केये ' ॥ १५ ॥ काकैदुकः काकतिदुर्धन्वे ' मर्कट-
तिदुकः । जलजः कालतिदुश्च कुलको दीर्घपत्रकः ॥ १६ ॥ काकैदुर्विष-
तिदुश्च कालपीलुस्तु ' भावके ' ॥ गुणाः । तिंदुरुश्च कपायोऽम्लो
गुरुर्वातविकारकृत् ॥ १७ ॥ पक्वस्तु मधुरः किञ्चित्कफघ्नोऽपि च वान्तिहृत् ।
' नृपे ' ' केये ' तु शीतश्च ' मदे ' ग्राही प्रकीर्तितः ॥ १८ ॥ भाव-
प्रकाशे ' मदकृत्कफपित्तासहृत्तथा । २८ अक्षोट । म० अकोड । गु०
अखोड । अक्षोटः पार्वतीयश्च फलमेहो गुडाशयः ॥ १९ ॥ कीरेष्टः
कदारालश्च मधुमज्जा बृहच्छदः । ' नृपे ' ' धन्वे ' तु आक्षोटः कर्पूरालः
पृथुच्छदः ॥ २० ॥ स्वादुमज्जा तु सप्रोक्तस्तथा ' द्रव्यनिघटके । ' अक्षो-
टकी वृत्तफलो मदनाह्वः स्वरामकः ॥ २१ ॥ आक्षोटः ककरोलश्च
प्रोक्तो ' मदनपालके । पीलुः शैलभवश्चैव प्रोक्तो ' भावप्रकाशके ' ॥ २२ ॥
रेखाफलस्तथाऽक्षोटश्चाखोटश्च पृथक्छदः १८ गुणाः । अक्षोटो मधुरो
बल्यः स्निग्धोऽणो वातपित्तजित् ॥ २३ ॥ शीतलो रक्तदोषघ्नः कफकृ-
द्राजनामके । ' द्रव्यरत्ने ' सरः ' प्राक्तो ' गणे ' हृद्रोगनाशनः ॥ २४ ॥
रस्ते पाके च मधुरः स्निग्धश्च गुरुबृहणः । वृण्यो बल्यश्च विष्टभी रोचनो
हृद्य एव च ॥ २५ ॥ रक्तक्षयहरश्चैव वातदाहहरः ' केये ' ॥ २६ लघुपीलु ।
म० लहान पीलु, मिरीचै शाड । कौ० सारीकिंकणः । गु० खारी
जात्य, महाना पीलु । पीलुः शीतसह्य सती धानी गुडफलोऽपि च
॥ २६ ॥ विरेचनफलः शाखी श्यामः करभवल्लभः । ' नृपे ' ' धन्वे ' तु
धारी च तथैव करभाप्रियः ॥ २७ ॥ सहस्रांगी सहस्रांशी ' केये '
तीक्ष्णतरुस्तथा । गुणाः । लघुपीलुस्तु कटुकः कपायो मधुराम्लकः
॥ २८ ॥ सरः स्वादुश्च गुल्मार्शः शमनो दीपनो ' नृपे ' । ' मदे ' वाता-
स्रकफहा ' गणे ' तु बह्निदीपनः ॥ २९ ॥ रक्तपित्तकरश्चैव बस्तिरो-
महरस्तथा । तस्नेहः कफवातघ्नः प्रोक्तो ' धन्वनिघटके ' ॥ ३० ॥

कफवाताग्नीप्लीहगरदोषोदरघ्नकः । आनाहघ्नो भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तः ' केय-
निघंटके ' ॥ ३१ ॥ ३० बृहत्पीलु । म० थोर पीलु । गु० मोटी जाल्य,
मोटा पीलु । अन्यश्चैव बृहत्पीलुर्महापीलुर्महाफलः । राजपीलुर्महावृक्षो
मधुपीलुस्तु ' राजके ' ॥ ३२ ॥ गुणाः । मधुरस्तु महापीलुर्वृष्यो विष-
विनाशनः । पित्तप्रशमनो रुच्य आमघ्नो दीपनो ' नृपे ' ॥ ३३ ॥
३१ पारेवतः । म० उत्तरी, पालेवत, लघु द्वीपांतर खजूरी । गु० पालेवत ।
पारेवतं रैवतकमारेवतमतः परं । ततोऽमृतफलारुखं च तथा रैवतकं मतं
॥ ३४ ॥ पारेवतकसंज्ञं च ज्ञेयं मधुफलं ' नृपे ' । पालेवतं तु संप्रोक्तं
तिंदुकाभफलं मतं ॥ ३५ ॥ सितपुष्पं तथा ज्ञेयं ' धन्वंतरिनिघंटके ' ।
तिंदुकाकृतिकलं प्रोक्तं ' सिद्धमंत्रनिघंटके ' ॥ ३६ ॥ तथा
च सिद्धमंत्रे । " पालेवतं मधुरमम्लमिति द्विधा स्या-
त्तिंदुकातिकलं लघुषांडपुष्पं । नीलच्छदांशिकथितमपरेवतारुखं तत्पु-
ष्कराश्रमसमीपवने प्रसिद्धं " ॥ ३७ ॥ गुणाः । पारेवतं स्मृतं रुच्यं मधुरं
कुमिवातजित् । वृष्यं हृद्यं ज्वरघ्नं च तृष्णादाहहरं तथा ॥ ३८ ॥ मूर्च्छा-
भ्रमविशोषघ्नं सिग्धं वीर्यकरं ' नृपे ' । कफकृत् ' द्रव्यरत्ने ' च ' मदे '
शीतं गुरुष्णकं ॥ ३९ ॥ ' गणे ' तु वह्निशमनं संप्रोक्तं वैद्यना-
यकैः । ३२ महापारेवत । म० माणवक, थोर द्वीपांतर खजूरी । महा-
पारेवतं चैव स्वर्णपारेवतं तथा ॥ ४० ॥ संभ्राडनी खारिकं च रक्त-
रेवतकं तथा । बृहत्पारेवतं द्वीपखजूरी द्वीपजं ' नृपे ' ॥ ४१ ॥
ततो माणवकं चैव महत्पालेवतं ' मदे ' । रक्तपालेवतं प्रोक्तं ' धन्वंतरि-
निघंटके ' ॥ ४२ ॥ गुणाः । महापारेवतं मौल्यं बलकृत्पुष्टिवर्धनं ।
' वृष्यं मूर्च्छाज्वरघ्नं च प्रोक्तं ' राजनिघंटके ' ॥ ४३ ॥ अल्पमिवातह-
श्चैव प्रोक्तं ' केयनिघंटके ' । ३३ मधुकः । म० मोहाचा वृक्ष । गु०
महुडो । मधुको मधुवृक्षश्च मधुपीलो मधुस्रवः ॥ ४४ ॥ गुडपुष्पो
लोघ्रपुष्पो वानप्रस्थश्च माधवः । ' नृपे ' ' केये ' तथा एलाफलश्चैव
महाद्रुमः ॥ ४५ ॥ वनवासस्तीक्ष्णसारो मधुरो गुडपुष्पकः । ' मदे '

गेलाफलश्चैव मधुकाष्ठो मधुद्रुमः ॥ ४६ ॥ मधुपुष्पो मधू-
 कश्च मधुश्चैव तथा स्मृतः । गुणाः । मधुक मधुर शीत
 पित्तदाहश्रमापहं ॥ ४७ ॥ वातल जतुदोषघ्न वीर्यवृद्धिविवर्द्धन ।
 बृद्धणीयमह्व च मधुककुसुम गुरु ॥ ४८ ॥ वातपित्तोपशमन फल
 तस्य तु ' राजके ' । ' द्रव्ये ' विषादहश्चैव ' मदे ' तु घणरोपणः
 ॥ ४९ ॥ ' केये ' तु तुवर प्रोक्तो घणवातकफापहः । तत्पुष्प मधुर शीत
 तत्फल गुरु चाष्णक ॥ ५० ॥ विष्टभि जुहण बन्ध कफकृन्मारुतापह ।
 रक्तपित्ततृषाघ्न च दाहश्वासरुकापह ॥ ५१ ॥ क्षतक्षयहर प्रोक्त बन्ध
 पक फल तथा । ३४ जलमधूक । म० जलमोहवृत्त । गु० जलमृदो ।
 ततो जलमधूकश्च मग्न्यो दीर्घपत्रकः ॥ ५२ ॥ क्षौद्रप्रियः पतमश्च
 कीरिष्ठो गौरिकाख्यकः । मधुपुष्पस्तथा प्रोक्तो ' राजनामनिघटके '
 ॥ ५३ ॥ जलजो न्हस्वपुष्पश्च गौरिका च मधूलिका । जलाख्या
 ' धन्वकोशे ' तु ' केये ' न्हस्वफलस्तथा ॥ ५४ ॥ मधूलो गौर-
 शाखी च मधूली च मधूलकः । मधुगश्चैव स्वादुश्च सप्रोक्तो वैद्यना-
 यकेः ॥ ५५ ॥ गुणाः । मधुपुष्प हिम वृष्य हृद्य पित्तविदाहहृत् । फल
 चैव तथा वातपित्तघ्न ' राजनामक ' ॥ ५६ ॥ ३५ भव । म०
 न्दीव, काकणात प्रसिद्ध । गु० रोमफल, ओटफल । भव भण्य भविष्य च
 भावन यक्त्रशोधन । तथा पिच्छलबीज च तच्च रोमफल ' नृपे ' ॥ ५७ ॥
 रोमातिक पिच्छल च ' केयद्वनिघटके ' । आविक सपुटाग च तथैव कुसु-
 मोदर ॥ ५८ ॥ गुणाः । भण्यमल कटूष्ण च बाल वातरुकापह । पक
 तु मधुराल च रुचिकृद्भ्रमशूलहृत् ॥ ५९ ॥ ' नृपे ' ' केय ' तु विशद हृद्य
 मुखविशोधन । वातल शीतल ग्राहि रक्तच्छर्दिहर घ्न ॥ ६० ॥ कफपित्त-
 हर चैव विष्टभाभानकृत् भव । ३६ आरुक । म० आलुबुखार । ग०
 आलु । आरुक वीरसेन तु वीर वीरास्क ' नृपे ॥ ६१ ॥ तच्च वि-
 याञ्चतुर्जाति पत्रपुष्पादिभेदतः । गुणाः । आरुक मधुर शीत रक्तदोष-
 हर पर ॥ ६२ ॥ अर्शःप्रमेहगुल्मघ्न ' राजनामनिघटके ' । ' केये ' तु

तुवरं भेदि गुरुष्णं कफपित्तजित् ॥ ६३ ॥ पक्वं फलं बृहत्तं च रोचनं
 गुल्लशोधनं । वातज्वरहरं चैव कफघ्नं मदेने स्मृतं ॥ ६४ ॥ ३७ द्राक्षा ।
 म० द्राक्षा । गु० धराख । द्राक्षा चारुफला कृष्णा प्रियाला
 तापमप्रिया । गुच्छफला रसाला च तथाऽमृतफला 'नृपे' ॥ ६५ ॥
 "अन्या साऽग्ला तु वनजा सा प्रोक्ता करगर्दिका" । गुणाः । द्रा-
 क्षातिगधुराऽग्ला च शीता पित्तार्तिदाहजित् ॥ ६६ ॥ मूत्रदापहा
 रुच्या वृष्या सतर्पणी 'नृपे' । हृद्या स्वर्या तु स्निग्धा च तृष्णाश्वास-
 क्षपापहा ॥ ६७ ॥ रक्तपित्तज्वरघ्नी च प्रोक्ता 'धन्वनिघंटके' । ३८
 गोस्तनी । म० काळी द्राक्षे । गु० काळी द्राख । मृद्वीका गोस्तनी
 हैमवती दीर्घफला हिमा ॥ ६८ ॥ स्वात्कपिलफला मृद्वी चोत्तरापथि-
 का तथा । काश्मीरी शतवर्षा च मधूली सुफला मता ॥ ६९ ॥ हागूरा
 च कपिलद्राक्षा तु हरिता तथा । स्वादमृतरसा ज्ञेया तथा मधुफला
 स्मृता ॥ ७० ॥ मधुवल्ली 'नृपे' प्रोक्ता 'धन्वे' मधुरसा स्मृता ।
 स्वाद्वी तु कपिला 'केये' गुडा कृष्णा फलोत्तमा ॥ ७१ ॥ स्वादुफला
 महायोनिर्वृहणी मधुसंभवा । गोस्तनी तु तथा प्रोक्ता यक्षगन्धी मधुव-
 ल्लरी ॥ ७२ ॥ गुणाः । गोस्तनी मधुरा शीता हृद्या च मदहर्पणी ।
 दाहमूर्च्छाज्वरश्वासतृषाहलासजि 'नृपे' ॥ ७३ ॥ स्निग्धानुलोमनी
 वृष्या रक्तवातश्रगापहा । श्वासकासहरा प्रोक्ता 'धन्वंतरिनिघंटके'
 ॥ ७४ ॥ ३९ काकलीद्राक्षा । म० किसमिस, वेदाणा । गु० किस-
 मिस । अन्या सा काकलीद्राक्षा जंबुका च फलोत्तमा । लघुद्राक्षा च
 निर्बीजा सुवृत्ता रुचिकारिणी ॥ ७५ ॥ गुणाः । शिशिरा श्वासह-
 लासनाशिनी जनवल्लभा । द्राक्षाविशेषगुणाः । द्राक्षानालफलं कटूष्ण-
 विशेदं पित्तासदोषप्रदं । मध्यं चाम्लरसं रसान्तरगते रुच्यातिबर्हिप्रदं ॥
 पक्वं चेन्मधुरं तथाऽग्लसहितं तृष्णास्रापित्तापहं । पक्वं शुष्कतमं श्रमार्ति-
 शमनं संतर्पणं पुष्टिदं ॥ ७६ ॥ शीता पित्तासदोषं दमयति मधुरा
 स्निग्धपाकाऽतिरुच्या चक्षुष्या श्वासकासश्रमवमिशमनी शोफतृष्णाज्वरघ्नी ।

दाहाध्मानभ्रमादीनपनयति परा तर्पणी पक्कशुष्का द्राक्षा सुक्षीणवीर्या-
 नग्नि मदन फलाकलिदक्षाऽन्विषते ॥ ७७ ॥ प्रोक्ता ' राजनिघटे ' तु
 वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ७८ ॥ ४० कर्मार । म० कर्मर । गु० कमरक । कमरिकः
 कर्मरकः कर्मारः कर्मरस्तथा । धाराफलः पीतफलः स्थान्मुद्गरफलः स्मृतः
 ॥ ७९ ॥ तथा मुद्गरकः प्रोक्ता ' राजनामनिघटके ' । कर्परग नागफल भव्य
 पिच्छलबीजक ॥ ८० ॥ प्राक्त ' मदनपाले ' तु मिषग्विद्याविशारदैः । गुणाः ।
 कर्मारकोऽम्ल उष्णश्च वातहृत्पित्तकारकः ॥ ८१ ॥ पक्कस्तु मधुराम्ल-
 स्याद्वलपुष्टिरुचिप्रदः । ' नृपे ' प्रोक्ता ' मदे ' चैव कफवातहरस्तथा ॥ ८२ ॥
 ४१ परूपक । म०, गु० कालसा । परूपक नीलपर्ण गिरिपीलु परावर ।
 नीलमण्डलमत्पास्थि परुष च परु ' नृपे ' ॥ ८३ ॥ परिमण्डलमध्यास्थि नील-
 वर्ण परापर । परूप चैव ' धन्वे ' तु ' गणे ' मृदात्तमण्डल ॥ ८४ ॥
 मुदुफल तथा ' केये ' रोषण धन्वनच्छद । नागद्रोपम चैव प्रोक्त
 वैद्यविशारदैः ॥ ८५ ॥ गुणाः । परूपक च कटुम्ल चामं पित्तकर
 तथा । कफवातापह चैव सोष्ण पक्क रुचिप्रद ॥ ८६ ॥ मधुर तर्पणं
 पित्तशोकघ्न ' राजनामके ' । ' भावे ' पक्कफल प्रोक्त ज्वरक्षयसमीर-
 गित् ॥ ८७ ॥ ' केये ' तु शुकल शीत हृद्य विष्टभि बृहण । वाता-
 दिपित्तरक्तान्न नृणादाहहरं तथा ॥ ८८ ॥ ४२ अश्वत्थ । म० पिपल ।
 गु० पीपलो । अश्वत्थश्चाच्युतावामश्वलपत्रः ५वेत्रकः । शुभद्रो बोधि-
 वृक्षश्च पाङ्क्तो गजभक्षकः ॥ ८९ ॥ श्रीगान्क्षीरद्रुमो विशेष मंगल्यः
 श्यामलश्च सः । पिप्पलो गृह्यपत्रश्च सेव्यः सत्यः शुचिद्रुमः ॥ ९० ॥
 चैत्यद्रुमो धन्यवृक्षो ' राजनामनिघटके ' । गजाशनो वन्यवृक्षस्तथैव
 श्यामलच्छदः ॥ ९१ ॥ ' धन्वे ' तु केशवावासः ' केये ' तु क्षीर-
 पादप । बोधिसत्त्वश्च लक्ष्मीवान् बोधिश्च स्वादुबीजकः ॥ ९२ ॥ बोधि-
 द्रुश्च तथा ' द्रव्ये ' श्रीवृक्षो द्विरदाशनः । महाद्रुमो नागमधुर्देवात्मा
 केशवालपः ॥ ९३ ॥ कृष्णावासश्चलदलश्चैत्यद्रुर्बोधिपादपः । हरि-
 वासस्तथा बोधितरुः स्वात्कुजगशनः ॥ ९४ ॥ गुणाः । अश्वत्थो

‘ गणे ’ । ४८ नयदुंदुरिका । म० नदी उंबर । गु० नदी उंबरो । नयदुं-
 बरिका चान्या लघुपत्रफला तथा ॥ २८ ॥ लघुहेमदुघा प्रोक्ता लघुपूर्व-
 सदाफला । लघ्वायुदुंबराद्या स्यात्प्रोक्ता ‘ राजनिघटके ’ ॥ २९ ॥ गुणाः ।
 रसवीर्यविषाकेषु किंचिन्गुणा च पूर्वतः । ४९ कृष्णोदुंबरिका । म०
 काला उंबर, गुई उंबर । कौ० बोखाडा, गांध्या उंबर । गु० देढ उं-
 बरो, गांडा उंबरो । कृष्णोदुंबरिका चान्या खरपर्जा शिवाटिका ॥ ३० ॥
 उदुंबरी च कठिना कुष्ठमी फल्गुवाटिका । अजाक्षी फल्गुनी चैव मलपू-
 श्वित्रभेषजा ॥ ३१ ॥ काकोदुंबरिका चैव धाक्षनाम्नी तु ‘ राजके ’ ।
 फल्गुनी फलसंभारा राजफल्गुस्तु ‘ धन्वेके ’ ॥ ३२ ॥ कक्षाफल्गुः फ-
 ल्गुवाटी फलिनी जपने फला । उदुंबरी तथा ‘ केये ’ मलपूर्मूलकर्कडी
 ॥ ३३ ॥ मंदारफलिका प्रोक्ता वायसी ‘ गणनामके ’ । कर्कशच्छदना
 युक्ता स्वसुभा हेगदुग्धिका ॥ ३४ ॥ उदुंबरफला मद्रा काफश्च खरप-
 त्रिका । क्षुद्रोदुंबरिका चैव मद्रोदुंबरिका तथा ॥ ३५ ॥ तथा
 बहुफला क्षुद्रोदुंबराश्वित्रभेषजा । गुणाः । काकोदुंबरिका शीता
 पक्वा गौल्याऽल्मिका कटुः ॥ ३६ ॥ स्वदोषपिचरक्तमी तद्वत्क
 चातिसारजित् । उदुंबरत्वचा शीता कपाया व्रणनाशिनी ॥ ३७ ॥
 गुर्विणीगर्भसंरक्षे हिता स्तन्यप्रदा ‘ नृपे ’ । ‘ केये ’ तु
 तुमरा तिक्ता स्तभिरी कफपित्तजित् ॥ ३८ ॥ व्रणादिश्वित्रकुष्ठमी
 कामलापांडुनाशनी । तत्फलं तर्पणं ग्राहि विष्टंभि दाहनाशनं ॥ ३९ ॥
 बृंहणं तु त्रिदोषघ्नं कफरक्तहरं तथा । स्वदोषशोफनिघ्नोक्तं ‘ द्रव्यरत्ना-
 करे ’ ध्रुवं ॥ ४० ॥ ५० बदरी । म० बोर । गु० बोरडी । बदरो
 बदरी कोलः कर्कधूः फेनिलः स्मृतः । सौवीरको गुडफलो बालेष्टः
 फलशैशिरः ॥ ४१ ॥ दृढबीजो वृत्तफलः कंटकी चक्रकंटकः । सुबीजः
 सुफलः स्वच्छः प्रोक्तो ‘ राजनिघटके ’ ॥ ४२ ॥ कोला कोलिर्गुडा
 कोली राष्ट्रवृद्धिकरी ‘ गणे ’ । कर्कधुर्बदरिः प्रोक्ता तथा गृध्रनखी
 स्मृता ॥ ४३ ॥ फलं तु बदरं कोलं सौवीरं फेनिलं कुहं । कर्कधुकं

कोशफलं कोलकं कुवलं तथा ॥ ४४ ॥ कोलात्मजः स्वादुर्कं च प्रोक्तं
 वैद्यविशारदैः । गुण्याः । बदरं चाम्लमधुर, कषायं पक्वमेव च
 ॥ ४५ ॥ उष्णं रुचिकरं रक्तश्रमशोषार्तिनाशन । अतिसारहर प्रोक्तं
 पाचनं तु तथा स्मृतं ॥ ४६ ॥ बदरस्य पत्रलेपो ज्वरदाहविनाशनः ।
 त्वचा विस्फोटशमनी बीजं नेत्रामयापहं ॥ ४७ ॥ कफवातहरं चैव
 पित्तानिलहर ' धने ' । ' केये ' मज्जा वीर्यदा च श्वासकासतृषापहा
 ॥ ४८ ॥ दाहच्छर्दिहरा प्रोक्ता वातपित्तहरा तथा । ५१ राजबदर ।
 म० रायबोर । गु० रायबोरडी । नृपटो राजबदरः स्थान्नुपबदरस्तथा
 ॥ ४९ ॥ स्याद्राजवल्लभश्चैव मधुरः फल एव च । पृथुकोलो राजकोल-
 स्तनुबीजस्तथा ' नृपे ' ॥ ५० ॥ स्निग्धच्छदा कोशफला हस्तिको-
 लीति ' द्रव्यके ' । सौबीरिका तथा प्रोक्ता वैद्यैर्मदनपालके ॥ ५१ ॥
 गुणाः । मधुरो राजबदरो दाहपित्तग्निलापहः । वृष्यः शीतो वीर्यवश्च
 भगशोषहरो ' नृपे ' ॥ ५२ ॥ ५२ भूवदरी । म० भूयबोर, चण-
 बोर । गु० चणिया बोर । भूवदरी क्षितिबदरी बल्लीबदरी च बदरिवल्ली
 च । बहुफलिका लघुबदरी बदरफली सूक्ष्मबदरी च ॥ ५३ ॥ प्रोक्ता
 ' राजनिघटे ' तु भिषक्शास्त्रज्ञपंडितैः । तथा ' मदनपाले ' तु लघ्वी
 कर्कधुका धुका ॥ ५४ ॥ गुणाः । तथा भूवदरी चाम्ला मधुरा कफवा-
 तजित् । दीपनी पाचनी रुच्या किंचित्पित्तास्रकारिणी ॥ ५५ ॥ ५३
 लघुबदर । म० क्षुद्रबोर, बोराटी । गु० नहानी बोरडी । सूक्ष्मफलो
 बदरोऽन्यो बहुकटः सूक्ष्मपत्रको दुस्पर्शः । मधुरः श्वराहारः शिखिप्रि-
 यश्चैव निर्दिष्टः ॥ ५६ ॥ गुणाः । लघुबदरं मधुराम्लं पक्वं कफवातनाशनं
 रुच्यं । स्निग्धं तु जन्तुकारकमीषत्वित्तिदाहशोषघ्न ॥ ५७ ॥ प्रोक्तं
 ' राजनिघटे ' तु वैद्यविद्याविशारदैः । ' केये ' तु शुष्कबदरीतृषाऽऽमघ्नी
 च दीपनी ॥ ५८ ॥ श्लेष्ममारुतपित्तघ्नी वैद्यैः प्रोक्ता न संशयः । ५४
 बीजपूर । म० महालुंग । गु० बीजोरु । बीजपूरो बीजपूर्णः पूर्णबीजः
 सुकेसरः ॥ ५९ ॥ बीजकः कसराम्लश्च मातुलिगः सुपूरकः । रुचको

बीजफलको जन्तुघ्नो दंतुरत्वचः ॥ ६० ॥ पूरको रोचनफलो 'नृपे'
 प्रोक्तस्तथा 'धने' । कुमिघ्नो मातुलुंगश्च केशरी फलपूरकः ॥ ६१ ॥
 अम्लोऽम्लको वराम्लश्च लुंगको बीजपूरकः । तथा म्लकेशरः प्रोक्तो
 मध्यकेशर एव च ॥ ६२ ॥ बीजाह्वः पूरकाह्वश्च संप्रोक्तो
 वेधनायकैः । गुणाः । बीजपूरफलं त्वम्लं कटूष्णं स्वासकास-
 जिह्व ॥ ६३ ॥ कठशुद्धिकरं हृद्यं दीपनं वातनाशनं । रुच्यं 'नृपे'
 तथा 'धन्ये' तृष्णाघ्नं 'केपवेवके' ॥ ६४ ॥ जिह्वाहृच्छोषमं स्वास-
 कफकासवमिघ्नकं । शूलघ्नं 'द्रव्यरत्ने' च दीपनाम्लं तु केसरं ॥ ६५ ॥
 लघु संघ्राहि गुल्मघ्नमर्शोहृद्रोगश्वासजित् । विवंधाजीर्णकासघ्नं 'ग्रह-
 णीनाशनं 'नृपे' ॥ ६६ ॥ अग्निदीपनकृच्चैव रक्तपित्तकरं 'धने' ।
 शूलहिध्मोदरघ्नं च मदास्ययहरं तथा ॥ ६७ ॥ रक्तमांसादिवलकूध्वृद्यं
 वर्ण्यं रुचिपदं । मंदाग्निफवातघ्नं स्वासकासापचिघ्नकं ॥ ६८ ॥ वीर्यदं
 पित्तवातघ्नं पार्श्वहृद्वस्तिशूलजित् । 'केपे' प्रोक्तं 'नृपे' चैव तद्बीजं
 तिक्तकं भवेत् ॥ ६९ ॥ गुल्मार्शः श्वयधुर्हारि 'केपे' तूष्णं कुमिघ्नकं ।
 दुर्जरं गर्भदं मूर्च्छामिदघ्नमकरं तथा ॥ ७० ॥ वातश्लेष्महरं बल्यं पित्ता-
 निलहरं 'ध्रुवे' । तत्पत्रं शीतलं ग्राहि रक्तपित्तहरं 'गदे' ॥ ७१ ॥
 तत्फलं मध्यमं बालं त्रिदोषादिकरं 'नृपे' । पक्व फल वर्णकरं हृद्यं
 पुष्टिबलादिकृत् ॥ ७२ ॥ शूलजीर्णविवंधघ्नं कफवातहरं ध्रुवं । स्वास-
 कासाग्निमांयघ्नं शोफारुचिहरं 'नृपे' ॥ ७३ ॥ त्वचा तिक्ता दुर्जरा
 च कुमिघ्नी कफवातजित् । सिग्धोष्णा तु 'नृपे' प्रोक्ता 'केपे'
 कट्टी प्रकीर्तिता ॥ ७४ ॥ गुर्वी शीता स्वादु 'धन्ये' मांसमारुतरोगजित् ।
 'द्रव्ये' तु पित्तला प्रोक्ता त्वचा मध्यमता 'नृपे' ॥ ७५ ॥ रुच्या वातहरा
 शूलकंठजाठररोगजित् । अग्निकृच्छर्दिकफहृत्प्रोक्ता 'धन्वानिघंटके' ॥ ७६ ॥
 'केपे' स्वादुगुरुः शीता बृंहणी श्लेष्मला स्मृता । तन्मूलं कफकृत्प्रोक्तं
 दुर्जरं कट्टु पाचकं ॥ ७७ ॥ कृमिगुल्महरं प्रोक्तं 'राजनाभनिघंटके' । तत्पुष्पं
 रक्तपित्तघ्नं शीतलं ग्राहि वातजित् ॥ ७८ ॥ 'केपे' विषूचिशूलघ्न

मूल त्वशोविबनजित् । ५५ वनबीजपूर । म० रानमहालुग । गु०
जगली बिजोरु । वनबीजकपूरश्च वनजो वनपुरक ॥ ७९ ॥ अत्यम्लो
वनबीजश्च गधादद्या तु वनाद्भवा । देवदूती देवदासी दवेष्टा मातुलु
गिका ॥ ८० ॥ पीता तु पचनी प्राक्ता 'राजनामि' महाफला ।
गुणा । वनबीजः कटूष्णोऽम्लो रुचिदो वातनाशन ॥ ८१ ॥ आम-
दापकमिघ्नश्च कफश्वासहरो 'नृपे' । ५६ मधुकर्कटी । म० पपई
पोपई । गु० पोपैयो, झाडचीमडी । मधुबीजकपूरश्च मधुपर्णी महा-
फला ॥ ८२ ॥ मधुवल्ली वर्धमाना ज्ञेया मधुरकर्कटी । तथा मधुफला
प्रोक्ता मधुकर्कटिका 'नृपे' ॥ ८३ ॥ स्वादुमज्जा तथा प्रोक्ता स्वाद्वी
तु स्वादुकर्कटी । घटालिका स्वादुलिगी मधुकर्कटिका 'कवे' ॥ ८४ ॥
'द्रव्ये' घटा तथा प्रोक्ता मधुरा नलिकादलः । एरड-
चिभिंदो वृक्षचिभिंदस्तु घटा तथा ॥ ८५ ॥ मध्वेरडस्तु सप्रोक्तो वातकम-
फलस्तथा । गुणा । मधुकर्कटिका स्वादु शिशिरा गुरुदुर्जरा ॥ ८६ ॥
त्रिदे वम्रा तु दाहघ्नी रुच्या वृष्या च 'राजके' । 'धन्व' पिप्पलासजिप्रोक्ता
ममघ्नी 'भावनामके' ॥ ८७ ॥ क्षयघ्नी स्वासकासघ्नी हिष्माजि 'के-
पदेयके' । ५७ आमलकी । म० आवळी । गु० आवळी । आमलकी
वपस्था च श्रीफला धात्रिका तथा ॥ ८८ ॥ अमृता च शिवा शान्ता
शीताऽमृतफला तथा । जातीफल च धात्रेयी ज्ञेया धात्रीफला
तथा ॥ ८९ ॥ वृष्या वृत्तफला चैव रोचनी 'राजनामके' । आमलका
तु सप्रोक्ता जातीफलरसा 'धने' ॥ ९० ॥ तिष्य तिष्यफला धात्री धारा
दिन्याऽमृतोद्भवा । तिष्यपुष्पा साधुफला 'केवदेवनिघटके' ॥ ९१ ॥
तथाऽकराऽमला शीतफला वृष्यफला स्मृता । पचरसा तु कायस्था प्रोक्ता
बहुफला तथा ॥ ९२ ॥ शुक्तिश्चैव तथा ज्ञेया सा शुष्कामलकी मता ।
फल त्वामलक तिष्य जातीफलरसा शिव ॥ ९३ ॥ धात्रीफल
श्रीफल च शकल चामृतोद्भव । वृष्य त्वामलकश्चैव
तथाऽमृतफल मत ॥ ९४ ॥ गुणाः । आमलक कपायाम्ल

मधुर गिगिरं लघु । दाहपित्तवर्माभिहशोफघ्न च रसायन ॥ ९५ ॥
 कषाय मधुर किंचिदम्ल रुचिरर कटु । कफघ्नमतिशीत च पित्तास्रघ्न
 श्रमघ्नक ॥ ९६ ॥ विषधाघ्नानविष्टभनाशन च फल ' नृपे ' । ' द्रव्ये '
 केऽस्या सरा वृष्या छर्दिघ्नी मेहहृत्स्मृता ॥ ९७ ॥ अम्लत्वात्पवन हन्ति
 पित्त माधुर्यशैत्यतः । कफ रुक्षकषायत्वात्त्रिदापघ्न फल ' मदे ' ॥ ९८ ॥
 ममसधानकारा च तृष्टपित्तघ्नी तथा ' कपे ' । तन्मज्जा प्रदरच्छर्दिवात-
 पित्तज्वरापहा ॥ ९९ ॥ कषाया मधुरा वृष्या स्वासकामनिवर्हणी ।
 परस्य यस्य फलरूपेह वीर्यं भवति यादृश ॥ ३५०० ॥ तस्य तस्यैव
 वीर्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् । अतिसारादिके शीतेऽभिन्यासे सूतिका-
 मपे ॥ १ ॥ शुद्धवाते च तद्वर्ज्यं मुक्तवैद्यैर्विशेषतः । ५८ काष्ठधारी ।
 म० लघु आवली । गु० नहाना आवली । अन्यच्चाऽऽमलक प्राक्त
 काष्ठधारीफल तथा ॥ २ ॥ क्षुद्रामलकमित्युक्तक्षुद्रजातीफल ' नृपे '
 गुणाः । काष्ठधारीफल स्वादु कषाय कटुक तथा ॥ ३ ॥ शीत पित्ता-
 स्रदापघ्न पूर्वोक्तमधिकमर्णः । १९ चिंचा । म० चिंच । गु० आवली ।
 चिंचा तु चुक्रिका चुक्रा साऽम्लिका शाकचुक्रिका ॥ ४ ॥ भ्रमली
 सुतिचिडी चाम्ला चुक्रिका ' राजनामके ' । तिचिडीका तथा
 सुक्रा सुक्रिका चिंचिका ' धने ' ॥ ५ ॥ दतशठाऽऽम्लिकाऽऽम्लाध
 त्वाम्लिका यमदतिका । गुरुपत्रा तु चारित्रा तितिणी तु सुच-
 क्रिका ॥ ६ ॥ सुतिचिडी तथा प्रोक्ता वैद्यविद्याविशारदैः । गणाः ।
 चिंचाऽऽम्ला भवदामा पक्का तु मधुराम्लिका ॥ ७ ॥ वातघ्नी पित्त-
 दाहास्रकफदोषप्रकोपनी । पक्वचिंचाफलरसो मधुराम्लो रुचिप्रदः ॥ ८ ॥
 शोफपाककरो लेपाद्व्रणदोषविनाशनः । चिंचापत्र च शोफघ्न रक्तदो-
 षव्यापह ॥ ९ ॥ तस्य शुष्कत्वचाक्षार शूलमदाग्निनाशन । प्रोक्ता
 ' राजनिघटे ' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ १० ॥ ' केये ' त्वपक्वा सप्रोक्ता
 चोष्णा गुर्वी च वातजित् । कफपित्तप्रदा रक्तपित्तदा ' मावना-
 मके ' ॥ ११ ॥ ' केये ' शुष्कफल हृव कफतृट्कमहारक । अमघ्न

कृमिदाहघ्न 'द्रव्यरत्ने' प्रकीर्तित ॥ १२ ॥ अमम्रातिहर प्रोक्त
 वैद्य 'मदनपालक' । 'धन्व' पक्का तु वातघ्नी 'केये' तूष्णा गुरु
 सरा ॥ १३ ॥ वास्तिशोधनिका हृद्या रोचनी वह्निदीपनी । 'द्रव्ये'
 तु दोषजतुघ्नी भाव' रूक्षा प्रकीर्तिता ॥ १४ ॥ अम्लसार । म० नि
 पच सार, पन्हें । अम्लसारस्त शाकाम्ल पुक्राम्ल याम्लचुक्रिका । विचा-
 म्लमम्ल गूढश्च चिरासारस्तु 'राजक' ॥ १५ ॥ गुणाः । अम्लसारस्त्वती-
 वाम्ला वातघ्न कफदाहकृत् । साम्येन शर्कगमित्रा दाहपित्तकफार्ति-
 नुत् ॥ १६ ॥ ६० आम्रातक । म० अम्राडा । गु० अम्रेडा । आम्रा
 तक पीतनक कपिगूतोऽम्लवायक । शुगी कपी रसाद्वयश्च तनक्षीर
 कपिम्रिय ॥ १७ ॥ कपिचूडाऽम्रातकश्च 'नृपे' 'धन्व' तथा स्मृत ।
 अम्रातो भावनश्चैव राजपुत्रो नृपात्मज ॥ १८ ॥ राजाम्रातक इ युक्त
 'केयदेवनिषक्त' । आम्रातक फली वैव प्राक्तो 'मदनपालके'
 ॥ १९ ॥ पीतना मर्कटाम्रश्च 'भाव' प्राक्त कपीता । स्यान्मधुरा-
 म्लको भृगीफल पशहरीतकी ॥ २० ॥ वर्षपाकी तथा प्रोक्तो वैद्य
 विद्याविशारदै । गुणा । आम्रातक कषायाम्लमाम हृक्ठहर्षण
 ॥ २१ ॥ पक्क तु मधुराम्लाख्य क्षिप्र पित्तकफापह । 'नृपे' 'धन्व'
 तथा वृष्य किमिन्द्रमारुतकृद्गुरु ॥ २२ ॥ आमवातहर रुच्य कफपि-
 त्तास्रनाशन । रसोष्ण तर्पणपक्व विटभि नृहण गुरु ॥ २३ ॥ रत्नक्षयहर
 दाहक्षतघ्न 'कगदेवके' । ६१ नारग । म० नारिग । गु० नारगी । नारगो
 नागरगश्च यागरग सुरगक ॥ २४ ॥ परावतो मधपत्रो वक्त्रवास सुगधक ।
 योगारगश्च मधाढ्यस्वग्मधश्च वरिष्ठ ॥ २५ ॥ 'नृप' प्रोक्तस्तथा
 'धन्वे' स्वस्वसुगधस्तथा स्मृत । स्याच्चिरानतक प्रोक्तो योगी वक्त्राधि-
 वासन ॥ २६ ॥ मूलमियो मधुराम्ल सप्रोक्तो योगभायकः । सुधा
 रुचिररश्चैव मधुराम्लरस 'वय' ॥ २७ ॥ जनप्रिय तु पीताग नारग
 'द्रव्यरत्न' । नारगो नागरकश्च तथा नागरक स्मृत ॥ २८ ॥
 किर्मीरश्च तथा प्राक्ता वैद्यविद्याविशारदै । गुणा । नारग मधुर चाम्ल

गुरुष्ण रोचन मत ॥ २९ ॥ वातामकृमिशूलघ्न श्रमहृद्बलद ' नृपे ' ।
 विषद दुर्जर हृद्य वातघ्न ' धन्वनामके ' ॥ ३० ॥ सर पिचासहृद्देव
 कफघ्न ' केयदेवके ' । ६२ निंबूक । म० निंबू, लिंबू । गु० कागदी
 लींबु । निंबूकस्त्वम्लजवीरा वह्निर्दीप्यश्च शोचन ॥ ३१ ॥ वह्निबीजोऽ-
 म्लसारश्च दताघातश्च रोचनः । निंबूको जन्तुमारी च प्रोक्तो ' राज-
 निघटके ' ॥ ३२ ॥ तथैव राजनिंबूकः प्राक्तो वैद्यविशारदैः । गुणाः ।
 निंबूक चाम्लरसक कटूष्ण गुल्मनाशन ॥ ३३ ॥ आमवातहर प्रोक्त
 चक्षुष्य वह्निवृद्धिकृत् । कासघ्न कफछर्दिघ्न कठरुग्नाशन ' नृपे ' ॥ ३४ ॥
 मलग्रहे बद्धगुदे हितकृत्सेवनेन तु । विपृच्छिन्न वैद्यनाथैः प्रोक्त
 ' भावप्रकाशके ' ॥ ३५ ॥ वातघ्न ' केयदेवे ' तु रुचिकृत्पित्तल
 तथा । विषघ्न चोदरदर क्षयघ्न शर्कराहर ॥ ३६ ॥ वातपित्तगरघ्न च
 तृष्णाशोपानिवारण । कटिग्रहजिदोषघ्न वानहृद्भावनामके ' ॥ ३७ ॥
 ६३ जंवीर । म० इंडनिंबू । गु० दोडिगा लींबु । दतशठश्च जवीर-
 जभजभीरजमला । रोचनो मुखशोधी च जाड्यचारिर्जन्तुजि-
 ' नृपे ' ॥ ३८ ॥ गेभीरो वक्त्रशोधी च ' धन्वके ' दतहर्षणः ।
 गुणाः । अपक्व चैव जवीर रसेऽम्ल मधुर तथा ॥ ३९ ॥ वातघ्न
 पित्तकृत्प्रोक्त न्नस्य पाचनरोचन । वह्निवृद्धिकर पक्व मधुर चास्रपि-
 त्तहृत् ॥ ४० ॥ कफघ्न तर्पण रुच्य पूष्टिद वीर्यवर्धन । वर्ण्य ' राज-
 निघटे ' तु तथा ' धन्वनिघटके ' ॥ ४१ ॥ वातश्लेष्मविबधघ्न तृष्णो-
 त्क्लेशनिवारण । छर्दिश्वासहर प्रोक्त रेचकृत्कफवातहृत् ॥ ४२ ॥ शूलामवो-
 पजतुघ्न प्रोक्त ' केयनिघटके ' । हृत्पीडावारणप्रोक्त वैद्यैर्मदनपालके ॥ ४३ ॥
 ६४ मधुजंवीर । म० साखरनिंबू । ततो मधुरजवीरो मधुजमस्तदुत्तर । श-
 खद्रावी तथा पित्तद्रावी शर्करक स्मृतः ॥ ४४ ॥ प्रोक्तो ' राजनिघटे ' तु
 तथैव मधुजमलः । तथा च मधुजवीरफलो ' धन्वनिघटके ' ॥ ४५ ॥

१ ' राजनिंबू ' या नावाची एक निंबात बेगली जात आहे असे मदनपालनि
 घटात सांगितले आहे

मिदनिबन्धस्तथा प्रोक्तो ' भावनामनिबन्धके ' । गुणा । मधुरो मधुजबीरः
 शिशिरः रुक्मपित्तमित् ॥ ४६ ॥ शोषघ्नस्तपणो वृष्यः श्रमघ्नः पुष्टिदो
 ' नृप ' । गरुध्न मर्षविषजिरुक्फोक्लृप्तपापह ॥ ४७ ॥ रक्तदोषारु-
 चिच्छर्दिनाशनो ' भावनामके ' । ६५ कपिस्थ । य० कवठ । गु०
 कौठ । कपिस्थो दधि मालूरो मगस्थो नीलमल्लिका ॥ ४८ ॥ चिर-
 पाकी तथा ग्राहिकलः करभवल्लभः । करडफलको दत्तशठा ग्रहिकल-
 स्तथा ॥ ४९ ॥ स्यात्कठिनफल. प्रोक्तो ' राजनामनिबन्धके ' । अक्षसत्स्यो
 दधिकलस्तथा ग्राही कपिमियः ॥ ५० ॥ गन्धफलो दधित्थश्च ' धन्व-
 तरिनिबन्धके ' । ' द्र०वे ' कपिस्थकः प्रोक्तः कपाय सुरभिच्छदः ॥ ५१ ॥
 ' भावे ' पुष्पफलश्चैव ' काशे ' मन्मथ एव च । तथा कृन्तफलः
 प्रोक्तः कर्पाटश्च सुगन्धिक ॥ ५२ ॥ गुणाः । कपिस्थो मधुराम्लश्च
 कपायस्तिकशीतल. । पुष्पः पिचानिल हन्ति सग्राही वृणनाशनः ॥ ५३ ॥
 कपिस्थमाममल्लोष्ण कफघ्न ग्राहि वातल । दोषत्रयहर पक्व मधुराम्लरस
 गुरु ॥ ५४ ॥ अन्यच्च । कठरोमरु चाम हिकाकृच्च जट्वहृत् ।
 दोषत्रयकर चैव सग्राहि विषहारक ॥ ५५ ॥ ' धन्वतरिनिबन्धे ' तु
 वातल कविभिः स्मृत । पक्व दोषत्रयहर गुरुश्वासवाग्निघ्नक ॥ ५६ ॥
 द्विभ्याङ्गगन्धहर ग्राहि ' राजनिबन्धके ' । रक्तक्षयकर प्राक्त वैद्यै ' द्रव्य-
 निबन्धके ' ॥ ५७ ॥ ततो ' मदनपाले ' तु दुर्गर कठशोषन । तृपा-
 निवारण प्रोक्त वैद्यै ' भाविप्रकाशके ' ॥ ५८ ॥ ६६ तुंवरु । म०
 तिरकळ, गिरकळ । कौ० तिसळी । गु० तुवरु । तुवरुः सौरभः सीरो
 वनजः सानुजोऽद्विजः । तीक्ष्णवन्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रो महा-
 मुनिः ॥ ५९ ॥ स्फुटफलः सुगन्धश्च प्रोक्तो ' राजनिबन्धके ' । तथाऽध-
 कश्च सप्तोक्तो भिषग्विद्याविशारदेः ॥ ६० ॥ कालायनफलैः पत्रैः केम्-
 रागैः समुद्रजैः । वृक्षस्तुवरको ज्ञेयो ' मदने ' तु प्रकीर्तितः ॥ ६१ ॥
 वृक्षस्तुवरको नाम पश्चिमाणेवनीरजः । वीर्यतिग्मविशोभमारुतोद्भूतप-
 ल्लवः ॥ ६२ ॥ अटागहृदये चैव वाग्मह्न प्रकीर्तितः । गुणाः । तुन-

चैव रक्तपित्तनिवारण । तृणामोदविपन्न च वातघ्न प्रकीर्तित ॥९८॥७१
 कर्कट । म० कान्द । कौ० काकड, कुडक । गु० करपटा, काकड ।
 कर्कटः कार्कटः कर्कः क्षुद्रपात्री च स स्मृतः । क्षुद्रामलकगजश्च प्रोक्तः
 कर्कफलो 'नृपे' ॥ ९९ ॥ गामेरुक कर्कटक कर्कट मृगलेडिक । तोदन
 क्रदन चैव मृगविट्मटश 'मदे' ॥ ३६०० ॥ गुणाः । कार्कट तु फल
 रुच्य कषाय क्षीपन पर । कर्कपिचहर ग्राहि चक्षुष्य लघु शीतल ॥ १॥
 ७२ श्लेष्मातक । म० भाकर, शेलवट । गु० गुढो मोढो । श्लेष्मातको
 चट्वागः पिच्छलो द्विजकुम्भित । शैलुः शीतफल शीतः शाकः
 पूर्वदारकः ॥ २ ॥ भूतद्रुमो मधुपुष्पो 'राजनागनिघटके' । तथा 'धन्व-
 निघटे' तु भाषितो लेखमाटकः ॥ ३ ॥ शैल. शैलुर्भूतवृक्ष शीतलो
 द्विजकुम्भित । स्थलश्लेष्मातकोहालो लेखाशालट एव च ॥ ४ ॥
 श्लेष्मातश्च तथा 'द्रव्ये' 'मदने' भूतपादयः । शैलुः शैलूश्च शैलूकः
 शैलकः पांक्तिर्तः ॥ ५ ॥ तथा 'भावप्रकाशे' तु बहुवारक एव च ।
 उद्दालक शीतफल. कर्कदारस्तथा स्मृतः ॥ ६ ॥ गुणाः । श्लेष्मातकः
 कादुहिमः कषायो मधुरस्तथा । पाचकः कृमिशूलक्ष्माभ्रमरक्षमा-
 पहः ॥ ७ ॥ मलरोधस्तदाहर. फफू 'द्राजनामके' । वाताग्मानब-
 लासादिकारको 'द्रव्यनामके' ॥ ८ ॥ विपस्काटविसर्पादिकुष्ठश्च
 कषायक. । उष्णः प्रको भिषक्भेद 'द्रव्यरत्नाकरे' ध्रुव ॥ ९ ॥
 तत्फल तु भवदृष्य वातपित्तक्षयघ्नक । ७३ लघुश्लेष्मातक । म०
 गोवणी । गु० गुदी नहानी । भूकर्कदारकश्चान्यो लघु श्लेष्मातक-
 स्तथा ॥ १० ॥ भूशैलुलघुशैलश्च पिच्छला लघुपूर्वकः । लघुशीतः
 सूक्ष्मफलः लघुभूतद्रुमो 'नृपे' ॥ ११ ॥ शलाटुर्बुदाकारो 'द्रव्ये'
 तु श्लेष्मलीफलः । मुक्ताफलो विट्फलो पकरत्नफलोऽपि च ॥ १२ ॥
 गुणः । भूकर्कद्वारा मधुरः कृमिघ्ना वातकापन । स्वर्णस्य मारक शीतो
 'राजनागनिघटक' ॥ १३ ॥ तत्फल तु यदा पक्व विटभि श्लेष्मल
 गुरु । रुक्ष च बृह । पाच्य वातापिचोदिग्नहन् ॥ १४ ॥ केश्य तिक्तो-

ष्णमधुरं तुवरं विषनाशनं । कटु विस्फोटव्रणजिक्कफपित्तासना-
शन ॥ १५ ॥ विसर्पघ्नं तथा ' केये ' ' द्रव्ये ' केशहरं तथा ।
७४ मुष्कक ॥ म० मोखा, मोखाडा । गु० । मरखो । मुष्कको
मोचको मुष्को मोक्षको मुजकस्तथा ॥ १६ ॥ गोलीढो
मेहनश्चैव क्षारवृक्षश्च पाटलिः । विपापहो जटालश्च वनवासी
सुतीक्ष्णकः ॥ १७ ॥ श्वेतः कृष्णश्च स द्वेवा ' राजनामनिघटके ' ।
मुष्टिस्तु गोलकश्चैव क्षारश्चेष्टस्तु ' धन्वके ' ॥ १८ ॥ घटा ' मदन-
पाले ' तु शिखरी क्षुद्रपाटली । मोक्षस्तु गोलिहश्चैव ' भावनामनि-
घटके ' ॥ १९ ॥ ' केये ' तु शटलो घटापाटलिः क्षारपादपः ।
घंटावस्तीक्ष्णकः क्षारी प्रोक्तो वैद्यविशारदैः ॥ २० ॥ गुणाः । मुष्ककः
कटुकोम्लश्च रोचनः पाचनो ' नृपे ' । प्रूहिगुल्मोदरातिघ्नो द्विधा
तुल्यगुणान्वितः ॥ २१ ॥ वातश्लेष्महरो ग्राही ' धन्वतारिनिघटके ' ।
निर्यासोऽस्य पर वृष्यः शोषपित्तानिलापहः ॥ २२ ॥ ' मदे ' प्रोक्त
' गणे ' चैव क्षीरशावनशुकहृत् । चक्षुरोगहरश्चैव वातहृद् ' द्रव्यर-
त्नके ' ॥ २३ ॥ विपकृमिहरी चैव बस्तिरोगहरः कटुः । तत्पुष्प कफ-
पित्तघ्न प्रोक्त ' मदनपालके ' ॥ २४ ॥ ७५ करमर्द । म० करवन्द ।
गु० करमर्दी, करमदा । करमर्दः सुषेणश्च कराम्लः करमर्दकः ।
आविघ्नः पाणिमर्दश्च कृष्णपाकफलो ' नृपे ' ॥ २५ ॥ क्षीरफेना साम्ल-
पुष्पा ' केये ' तु करमर्दिका । पाककृष्ण त्वविघ्न च त्वविघ्न ढिडिमं
मत ॥ २६ ॥ कृष्णपाक क्षीरफल तथा कृष्णफल स्मृतं । गुणाः ।
करमर्दः स तिक्ताम्लो बालो दीपनदाहकः ॥ २७ ॥ पक्वस्त्रिदोषश-
मनोऽरुचिघ्ना विपक्वा ' नृपे ' । तृष्णापित्तहर प्रोक्त ' धन्वतारिनिघ-
टके ' ॥ २८ ॥ रुच्य गुरुष्ण संप्रोक्त ' कगदेवनिघटके ' । कफप्रद
तु ' मदन ' रक्तपित्तप्रद तथा ॥ २९ ॥ रक्तपित्तहर पक्व मधुर ' धन्व-
नामके ' । ' कये ' नृद्व्यातहर सरः कफनिवारण ॥ ३० ॥ ततो
' मदनपाले ' तु पित्तदापहर स्मृत । ७६ तेजःफल । म० तेजफल । गु०

तेजफल । तेजःफलो बहुफलस्तथोक्तः शास्त्रलीफलः ॥ ३१ ॥ फलती-
 क्ष्णादिसंयुक्तः फलान्तस्तवकादिकः । स्तेयीफलो गंधफलः कंदवृक्षस्तु
 ' राजके ' ॥ ३२ ॥ गुणाः । तेजःफलः कटुस्तीक्ष्णः सुगंधिर्दीपनः
 परः । वातश्लेष्मारुचिघ्नश्च बालरक्षाकरः परः ॥ ३३ ॥ ७७ विकं-
 टक । म० हाशी । गु० हाशा । विकंटको मृदुफलो ग्रंथिकः स्वादुकं-
 दकः । योरेकः काफयानो व्याघ्रपादो घनद्रुमः ॥ ३४ ॥ गर्जाफलो
 घनफलो मेघस्तनितसंभवः । स्यान्मुदिरफलश्चैव प्रावृष्यस्तदनंतरः ॥ ३५ ॥
 तथा हास्पफलश्चैव स्यात्स्तनितफलो ' नृपे ' । गुणाः । विकंटकः कषायः
 स्यात्कटुरूक्षो रुचिप्रदः ॥ ३६ ॥ दीपनः कफहारी च बलरंगविधा-
 यकः । ७८ हरीतकी । म० हिरडा । गु० हरडे । हरीतकी हेमवती
 शिवा पथ्याऽप्यथाऽभया ॥ ३७ ॥ चेतना रोहिणी चैव प्रपथ्या पूनताऽमृता ।
 जीवप्रिया जीवनिका जीवन्ती च भिषग्बरा ॥ ३८ ॥ प्राणदा तु जया
 जीव्या कायस्था श्रेयसी तथा । देवी दिव्या च विजया प्रोक्ता ' राज-
 निघटके ' ॥ ३९ ॥ चेतकी नदिनी ' धन्ये ' ' केये ' चेतनिका
 तथा । जीवनीया वयस्था च प्रमथा तदनंतर ॥ ४० ॥ रसायनफला
 मेध्या शक्रमुखा तु पाचनी । गुणाः । हरीतकी पचरसा रेचनी कोष्ठ-
 रोगहृत् ॥ ४१ ॥ त्वग्रोगाक्षिरोगघ्नी संप्रोक्ता योगवाहिनी । रसायनी
 ' नृपे ' प्रोक्ता ' धन्ये ' हृद्योगकासजित् ॥ ४२ ॥ गलग्रहत्रिदोषघ्नी
 हनुरतभहरा तथा । शोफोदरहरा छर्दिकृच्छह ' न्यग्ने ' स्मृता ॥ ४३ ॥
 मूत्रकृच्छ्राग्नीषी च मूत्राघातहरा ' भवे ' । स्वादुपाका सरोण्या च
 रुक्षा लघ्वी च बृद्धणी ॥ ४४ ॥ दीपनी पाचनी मेध्या बलबुद्धिकरा
 तथा । स्मृतिप्रदा गुल्महन्त्री वैवर्ण्यस्य विनाशनी ॥ ४५ ॥ ततः पुरा-
 णविषमज्वररुक्पादुरोगहृत् । कामलामेढमोहघ्नी शिरारुग्ग्रहणीहरा ॥ ४६ ॥
 शोषशोफातिसारघ्नी श्वासकासकृमिघ्निका । ष्ठीदाऽऽनाह्वरघ्नी च विव-
 दोदरनाशिनी ॥ ४७ ॥ ऊरुस्तमारुचिघ्नी च हिष्माऽऽध्मानघ्ना-
 ज्जेतु । शलत्रिदोषहन्त्री च प्रोक्ता ' फेयनिघटके ' ॥ ४८ ॥ हरी-

तकीभेदाः । हरीतक्यमृतोत्पन्ना सप्तमदैरुदीरिता । तस्या मामाने
वर्णाञ्च वक्ष्याम्यथ यथाक्रमम् ॥ ४९ ॥ विजया रोहिणी चैव पूतना
चामृताऽभया । जीवन्ती चेतनी चेति नाम्ना सप्तविधा मता ॥ ५० ॥
अलावुनाभिर्विजया सुवृत्ता रोहिणी मता । स्वल्पत्वक्पूतना ज्ञेया स्थूल-
मोसाऽमृता स्मृता ॥ ५१ ॥ पञ्चाङ्गा चाम्रया ज्ञेया जीवन्ती स्पर्णवर्ण-
भाक् । अ्यस्तां तु चेतकीं विद्यादित्यासां रूपलक्षणम् ॥ ५२ ॥ विंध्याद्री
विजया हिमाचलभवा स्याच्चेतकी पूतना सिंधी स्यादथ रोहिणी तु वि-
जया जाता मतिस्थानके । चंपायाममृताऽभया च अनिता देशे सुराष्ट्रा-
ह्वये जीवन्ती च हरीतकी निगविता सप्तममेदा भुधैः ॥ ५३ ॥ सर्व-
प्रयोगे विजया च रोहिणी क्षतेषु लेपेषु तु पूतनोदिता । विरेचने स्याद-
मृता गुणाधिका जीवन्तिका स्यादि हर्मीर्णरोगजित् ॥ ५४ ॥ स्याच्चेतकी
सर्वरुजापहारिका नेत्रामयघ्नीमभया वदन्ति । इत्थं यथायोगमियं
प्रयोजिता ज्ञेया गुणादथा न कदाचिदन्यथा ॥ ५५ ॥ चेतकी च धृता
हस्ते यावत्तिष्ठति देहिनः । तावद्विरेचते वेगात्तत्प्रभावाच्च संशयः ॥ ५६ ॥
सप्तानामपि जातीनां प्रधानं विजया स्मृता । सूक्ष्मयोगसुलभा सर्वज्वा-
धिषु शस्यते ॥ ५७ ॥ क्षिप्वाऽप्सु निमज्जाति या सा ज्ञेया गुणवती
मिषगर्भयः । यस्या यस्या भुवो निमज्जनं सा गुणादथा स्यात् ॥ ५८ ॥
हरते प्रसम व्याधीन्मूयस्तरति यद्वपुः । हरीतकी तु सा प्रोक्ता तत्र
कीर्दिसिवाचकः ॥ ५९ ॥ हरीतकी तु तृष्णायां हनुस्तंभे गलग्रहे ।
शोथे नवज्वरे जीर्णे गुर्भिण्यां नैव शक्यते ॥ ६० ॥ इत राजनिघंटुः ॥
७९ विभीतक । य० बेहडा, बेहडा, हेडा । गु० बेडां बेहेडा ।
विभीतकस्तैलफलो मूतवासः कलिद्रुमः । सवर्तकस्तु घासंतः कलिवृक्षो
बहेढकः ॥ ६१ ॥ हार्पः कर्णफलः कल्को धर्मघ्नोऽक्षोऽनिलघ्नकः । विभीत-
कश्च कासघ्नो ' राजनामनिघंटके ' ॥ ६२ ॥ धर्मद्वेषी त्वक्षकश्च तुमुलो
विष्वजातकः । निलपुष्पो रोमहर्षो तुमलश्च वनामयः ॥ ६३ ॥ मोक्षः
' केयनिघटे ' तु ' मावे ' कलियुगालयः । मूतावागस्तूपः ' कोशे ' तथा

विभीतकी स्मृता ॥ ६४ ॥ कालिः कलिंदः सवर्तो विपीतश्च तथा स्मृत ।
 गुणाः । विभीतकः कटुस्निक्तः कपायोष्णः कफाघ्नः ॥ ६५ ॥ चक्षुष्यः
 पलितघ्नश्च विपाके मधुरा लघुः । 'नृपे' प्रोक्तस्तथा 'द्रव्ये' हिमो हृद्रोगहा
 स्मृतः ॥ ६६ ॥ कफपित्तहरश्चोष्णवीर्यो भेदी 'मदे' स्मृतिः । कृमिहा
 च सरो रूक्षः प्रोक्तो 'धन्वनिघन्त' ॥ ६७ ॥ वैवर्ण्यघ्नस्तथा केशवा
 रोचनः 'केयदेवके' । तन्मज्जा मदकृत्प्रोक्ता कफमारुन्हा 'कप' ॥ ६८ ॥
 तृट्छर्दिकफवातघ्नी प्रोक्ता 'भावप्रकाशक' । 'गणे' हिक्काहरा प्रोक्ता
 पुरातनचिकित्सकैः ॥ ६९ ॥ ८० पूग । म० सुपारी, पांफल । गु०
 सोपारी । पुगस्तु पूगवृक्षश्च क्रमुको दीर्घपादपः । वस्तुतस्तुट्ठवल्कश्चि-
 क्कणश्च तथा 'नृपे' ॥ ७० ॥ 'धन्वतरिनिघटे' तु गुवाकः खपूर
 स्तथा । घोंटा तु गुरुपुष्पश्च क्रमुः पुगी कर्पतितनः ॥ ७१ ॥ गुवाक
 क्रमुकी सती ततुसारः सुरजनः । गोपदलस्त्वकोटश्च करमट्टस्तृण-
 द्रुमः ॥ ७२ ॥ क्रमुकस्तृणवृक्षश्च गृहाशया तथा स्मृता । फल तु प्राक्त
 क्रमुक चोद्वेग केनुरु तथा ॥ ७३ ॥ स्यात्कपायफल पूग तथा चामर-
 पुष्पक । पुगीफल पूगफल स्यात्क्रमुकफल तथा ॥ ७४ ॥ घोंटाफल
 श्लक्ष्णक च प्रोक्त वैद्यविहारदैः । चिकणपूगफलनामानि । म० चिकण-
 सुपारीचीं नावें । पूग तु चिकणी चिका चिकण श्लक्ष्णक तथा ॥ ७५ ॥
 उद्वेग क्रमुकफल तथा पूगफल 'नृपे' । गुणाः । पूगवृक्षस्य निर्यासो
 हिमः समोहनो गुरुः ॥ ७६ ॥ विपाके सोष्णकक्षारः साम्लो वातघ्न-
 पित्तलः । खेरी च मधुरा रुच्या कपायास्ला कटुस्तथा ॥ ७७ ॥
 पथ्या च कफवातघ्नी मारिका मुखदोषनुत् । नैलवतं मधुर रुच्य कटुशु-
 द्विकर लघु ॥ ७८ ॥ त्रिदापशमन दीप्य रसाल पाचन सम । गौतम
 गुहागर्ग श्लक्ष्ण कपाय कटु पाचन ॥ ७९ ॥ विष्टमनडराध्मानहरण
 द्रावक लघु । घोंटी सुपारी । घोंटा कटुकपायोष्णा कठिना रुचिका-
 रिणी ॥ ८० ॥ मलविष्टमशमनी पित्तहृदीपनी तथा । चौलसुपारी ।
 पुगीफल चेष्टलमज्ञक यत्तत्कोकणेषु प्रथित सुगन्धि ॥ ८१ ॥ श्लोष्मा-

पहं दीपनपाचन च बलप्रदं पुष्टिकर रसाढ्य । वल्लग्नसुपारी । यत्का-
 कणे वल्लगुलाभिधानकं ग्रामाद्भव पूगफलं त्रिदोषनुत् ॥ ८२ ॥ आमा-
 पह रोचनरुच्यपाचन विष्टमतुदामयहारि दीपन । चदापरी सुपारी ।
 चंद्रापुरोद्भव पूग कफघ्न मलशोधन ॥ ८३ ॥ कटु स्वादु कषाय च
 रुच्यं दीपनपाचन । तैलगणातील सुपारी । आंध्रदेशोद्भवं पूग कषायं
 मधुर रसे ॥ ८४ ॥ वातजिद्वक्त्रजाड्यघ्नमीषदम्ल कफागह । पूगीफलत्रि-
 शेषगुणाः । पूग समोदकृत्तर्व कषायं स्वादु रचन ॥ ८५ ॥ त्रिदा-
 यशमन रुच्य वक्त्रकृदमलापह । आमं पूगं कषाय मुखमलशमन कटुशुद्धि
 विधत्ते । रक्तामश्लेष्मपित्तनशमनमुदराध्मानहार मर च । शुष्क कठाम-
 यघ्न रुचिकरमृदित पाचन रेचन स्यात्तत्पुष्पेर्नायुत चेज्जटिति वितनुते
 पाटुवात च शोफ ॥ ८६ ॥ ' नृपे ' प्रोक्त तथा ' धन्वं ' कफघ्न मृदि
 पित्तनिद्र ॥ ८७ ॥ मधुर गुरु हृद्य च प्रोक्त ' केयनिघटके ' । पक्वं
 फलं तु सप्राक्त वातल सिग्धमेव हि ॥ ८८ ॥ रक्तपित्तविवृद्धं च कफ-
 वातहर तथा । मुखदौर्भध्यहृत्फट्टमदंष्ट्रदहर ' कपे ' ॥ ८९ ॥ विशव
 कामकृत्योक्त श्लेष्मश्रमहरे ' मदे ' । ९० नागवल्ली । म० नागवेल, पान-
 वेल । गु० नागरवेण्य । नागवल्ली तु ताबूली तथा फणिलता मता ॥ ९० ॥
 फणिवल्ली पर्णलता तथा सप्तशिरा स्मृता । स्वाद्भुजगलता प्रोक्ता भक्ष्य-
 पत्री तथा च सा ॥ ९१ ॥ सा श्रीवाटाम्लादिवाटादिनानाग्रामस्तोम-
 स्थानमेदाद्विभिन्ना । एकाऽप्येषा देशमृत्स्नाविशेषाज्ज्ञानाकार याति फाणै
 गुणैश्च ॥ ९२ ॥ प्रोक्ता ' राजनिघटे ' तु तथा ' धन्वनिघटके ' ।
 बहुला च बला नेता भद्रा पातालवासिनी ॥ ९३ ॥ मुखरामकरी रौम्या
 चामृता त्वमृतोद्भवा । कामदा कामजननी जीवन्ती यावनी प्रिया ।
 ॥ ९४ ॥ आमादजननी हृद्या देवताभयभजनी, ताबूलवल्ली नामाह्व
 रंजनी तीक्ष्णमजरी ॥ ९५ ॥ देवप्रिया तथा प्रोक्ता कथिता दानवप्रिया ।
 तथा ' मदनपाले ' तु नागिनी नागवल्ली ॥ ९६ ॥ ताबूलपर्णिका चैव
 सप्रोक्ता नागवल्लिका । ताबूलवल्लिका नागपर्णी तु श्रमभजनी ॥ ९७ ॥

नागवल्लीदलं पोक्तं तांबूलं मुखभूषणं । पर्णं पत्रं तु संप्रोक्तं वैद्यविद्यावि-
 शारदैः ॥ ९८ ॥ गुणाः । नागवल्ली कटुस्तीक्ष्णा तिक्ता पीनसवातजित् ।
 कफकामहरा रुच्या दाहकृद्दीपनी परा ॥ ९९ ॥ शिरिवाडीपान ।
 श्रीवाटी मधुरा तीक्ष्णा चातपित्तकफापहा । रसाढ्या सरसा रुच्या
 त्रिपाके शिशिरा श्रुता ॥ ३७०० ॥ अंबाडेंपान । स्यादम्लवाटी
 कटुकाम्लतिक्ता तीक्ष्णा तथोष्णा मुखपाककर्त्री । विदाहपित्तास्रविको-
 पनी च विटम्बदा वातनिवर्हणी च ॥ ३ ॥ सप्तसीपान । सप्तसा मधुरा
 तीक्ष्णा कटुरुष्णा च पाचनी । गुल्मोदराध्मानहरा रुचिकृद्दीपनी परा ॥ २ ॥
 गुहागर,—अडगर—पान । गुहागरे सप्तशिरा प्रसिद्धा तत्पर्णजूर्णा-
 तिरसाऽतिरुच्या । सुगोधितीक्ष्णा मधुराऽतिहृद्या सेंदीपनी पुंस्त्वकराऽति-
 चल्या ॥ ३ ॥ विरेचनी वक्त्रसुगन्धकारिणी । अमरापान, माळव्यांत प्रसिद्ध ।
 नाग्न्याम्लसरा सुतीक्ष्णमधुरा रुच्या हिमा दाहनुग्विचोद्रेकहरा सुदीप-
 नकरी बल्या मुखामोदिनी । स्त्रीसौभाग्यविवर्द्धनी मदकरी राज्ञा मदा
 चक्ष्मा गुल्माध्मानविषयान्निष्ठ कथिता सा मालवे तु स्थिता ॥ ४ ॥
 पोदकूलीपान, तैलंगणांत प्रसिद्ध । आंध्र पटुलिका नाम कषायोष्णा
 कटुस्तथा । मलापकर्षा कंठस्य पित्तकृद्वातनाशनी ॥ ५ ॥ घोरसमुद्रदे-
 शपान । त्वेसणीया कटुस्तीक्ष्णा हृद्या दीर्घदला च सा । कफवातहरा
 रुच्या कटुर्दीपनपाचनी ॥ ६ ॥ सयस्त्रोदितमक्षितं मुखरुजाजडपापहं
 क्षौषकृदाहारोचकरक्तदापि मलकृद्विषमि बान्तिप्रदं । यद्भूयो जलपान-
 मोपितरसं तंश्च शिरास्त्रोदितं तांबूलीदलमुत्तमं च रुचिकृद्दुग्धं त्रिदोषार्ति-
 नुत् ॥ ७ ॥ कृष्णं पर्णं तिक्तमुष्ण कषाय धत्ते दाहं वक्त्रजाड्यं मलं
 च । शुभ्रं पर्णं श्लेष्मवातामयघ्नं पथ्यं रुच्य दीपन पाचन च ॥ ८ ॥
 शिरापर्णं तु शैथिल्यं कुर्यात्तस्यास्रहृद्रमः । शीर्णं त्वग्दोषद तस्य भक्षितं
 च शितं संदा ॥ ९ ॥ अनिधाय मुग्धे पर्णं पूगं खादति यो नरः ।
 मतिभ्रंशोऽपरिर्द्धिः स्योदन्ते स्मरतिनो हरिम् ॥ १० ॥ ८२ चूर्ण । म०
 चुना । गु० चुनो । चूर्णं सुषा शिलाक्षार नौधभूषणकं तथा । सुधा-

हृषं तु संप्रोक्तं 'द्रव्यनामनिघटके' ॥ ११ ॥ गुणाः । चूर्णं चार्जुन-
वृक्षजं कफहरं गुल्मघ्नमर्काह्वयं शोफघ्नं कुट्जं करंजनितं वातापहं
रुच्यदं । पित्रघ्नं जलजं बलाभिरुचिदं शैलमृद्वयं पित्तदं स्फाटिक्य दृढ-
दन्तपंक्तिजननं शुक्ल्यं क्षिजं रूक्षदं ॥ १२ ॥ तांबूललक्षणं । पर्णाधिक्ये
दीपनी रंगदात्री पूगाधिक्ये रूक्षदा कृच्छ्रदात्री । साराधिक्ये खाद्विरे
शोषदात्री चूर्णाधिक्ये पित्तकृत्पूतिगंधा ॥ १३ ॥ इति राजनिघटात् ॥
इति आम्रादिवर्गः समाप्तः ।

१० चंदनादिवर्गः

१ चंदन । म० चंदन । गु० सुखड, चंदन । श्रीखड चंदनं प्रोक्तं
महार्हं श्वेतचंदन । गोशीर्षं तिलपर्णं च मंगल्यं मलयोद्भव ॥ १४ ॥
गंधराजं सुगंधं च सर्पावासं च शीतलं । गंधाढ्यं गंधसारं च भद्रश्री-
मोगिवल्लभ ॥ १५ ॥ पावनं स्थान्मलयजं शीतयथं च 'राजके' ।
शिशिरं श्रीस्तथा भद्रं हिमं श्वेतं तु 'द्रव्यके' ॥ १६ ॥ चंद्रद्युति-
स्तथा तैलपर्णको 'भाषनामके' । चंद्रकांतं च पाटीरं गंधं
स्थालिलपर्णिकः ॥ १७ ॥ एकांगं तु पटीरं च शीतं मद्रा-
भयं स्मृतं । सर्पप्रियं राजयोग्यं प्रोक्तं वैद्यविचक्षणैः ॥ १८ ॥ गुणाः ॥
चंदनं कटु तिक्तं च शीतलं प्रातिपित्तजित् । घामिज्वरकृमिघ्नं च
तृषासतापनाशनं ॥ १९ ॥ वक्त्ररुणापहं पुष्पं कांतिसौरभ्यदं तथा ।
श्रेष्ठं क्रीडारकर्षरोपकलितं सुगंधि सद्गौरवं छेदे रक्तमयं तथा च विमलं
पीतं च यद्वर्पणं । स्वादस्तिककटुः सुगंधबललं शीतं यदल्पं गुणे क्षीणं
चार्धगुणान्वितं तु कथितं तच्चंदनं मध्यमं ॥ २० ॥ चंदनं द्विविधं
प्रोक्तं वेष्टमुष्काडिसंज्ञकं ॥ २१ ॥ वेष्टं तु सार्धविच्छेदं स्वयं शुष्कं तु
मुष्काडि । मलयान्निसमीपस्थाः पर्वता वेष्टसंज्ञकाः ॥ २२ ॥ तज्जातं
चंदनं यत्तु वेष्टवाच्यं कचिन्मते । अतीव शीतलं वेष्टं दाहपित्तज्वरापहं
॥ २३ ॥ छर्दिमोहतृषाकुष्ठतिमिरं रक्तकामजित् । मुष्काडिचंदनं तिक्तं
कृच्छ्रपित्तास्रदाहनुत् ॥ २४ ॥ शैत्यसुगंधदं चार्धं शुष्कं लेहं तद-

न्यथा । ' नृपे ' प्रोक्तं तथा । ' धन्वे ' त्वत्तदाहापट्टारकं ॥ २५ ॥
 विषमं रक्तपित्तमं नेत्ररीगव्रणापहं । ' केये ' गुरुकृमहरं दाहपित्तक-
 कापहं ॥ २६ ॥ हृद्यमाह्लादकृष्णोक्तं ' मवने ' वैद्यनायकेः । २
 शबरचंदन । म० किंचित्पीत चंदन, कौकणांत प्रसिद्ध । गु० शब-
 रचंदन । नातिपीतं तु कैरातं तथा शबरचंदनं ॥ २७ ॥ वन्यं च गंध-
 काष्ठं च शैलगंधं तथा स्मृतं । किरातकाष्ठकं चैव
 प्रोक्तं ' राजनिघंटके ' ॥ २८ ॥ गुणाः । कैरातं शीतलं
 तिक्तं श्लेष्मानिलश्रमघ्नकं । पित्तघ्नं स्फोटपामाघ्नं तृट्पाप-
 विमोहहृत् ॥ २९ ॥ ३ पीतचंदन । म० मलयागर पीतचंदन, होसपा
 वेशांत प्रसिद्ध । गु० पीळो चंदन । पीतगंधं तु कालीय पीतकं माध-
 वप्रियं । कालीयकं पीतकाष्ठं बर्वरं पीतचंदन ॥ ३० ॥ प्रोक्तं ' राज-
 निघंटे ' तु तथा कालानुसारकं । कालानुसारकं पीतं तथा नारायण-
 प्रियं ॥ ३१ ॥ पीतसारं तु कालेयं मलयोत्थं तु जायक । तथा मलयजं
 कालसारं चैव हरिप्रियं ॥ ३२ ॥ कालेयकं वर्णदं च पीतामं कांति-
 दापकं । गुणाः । पीतं च शीतलं तिक्तं कुष्ठश्लेष्मानिलापहं ॥ ३३ ॥
 कंदूविचर्चिकादद्गुक्कमिहम्कांतिदं परं । ४ पत्रांग । म० पतंग । गु० पतंग ।
 पतंगं चैव पत्रांगं रक्तकाष्ठ सुरंगदं ॥ ३४ ॥ पत्रादयं पट्टरागं च भार्या-
 वृक्षश्च रक्तकः । लोहितं रंगकाष्ठं च रागकाष्ठं कुचंदनं ॥ ३५ ॥ पट्ट-
 रंजनकं चैव सुरंगं ' राजनामके ' । सुरंगकं तथा ' धन्वे ' पट्टरंजन-
 भेव च ॥ ३६ ॥ पतंगं चैव पत्तूरं पत्रकाष्ठ नवन्यकं । पत्तूरपत्रं ' केये '
 तु तथा ' भाषप्रकाशके ' ॥ ३७ ॥ रक्तसारं रंजनं च पट्टरंजकमेव च ।
 गुणाः । पत्रांगं कटुकं रुक्षमम्ल शीतं तु मीन्यकं ॥ ३८ ॥
 यातपित्तज्वग्धं च । निस्फोटान्मादभूतहृत् । ' नृपे ' प्रोक्तं
 तथा ' धन्वे ' प्रणरोपणकं स्मृतं ॥ ३९ ॥ ' केये ' तु पित्तरुहहृत्
 ' द्रव्ये ' मूत्राश्मरीघ्नकं । ५ रक्तचंदन । म० रक्तचंदन । गु० रतां-
 जनी । रक्तचंदनमन्यं तु लोहितं हरिचंदनं ॥ ४० ॥ रक्तमारं ताम्रसारं

रुश्च भूतहारि तदुत्तर ॥ ५८ ॥ मवदारुस्तथा प्रोक्तं ' राजनामनिघं-
टके । ' दारुः सुगन्ध किलिमं सुदारुस्त्विन्द्रवारु च ॥ ५९ ॥ इन्द्रद्रुस्त्वि-
न्द्रवृक्षश्च तथा त्वमरदारु च । सहवृक्षं महादारु प्रोक्तं ' धन्वनिघ-
टके ' ॥ ६० ॥ ' कंये ' सुरद्रुमश्चैव शक्रद्रुश्च तथा स्मृतं । सेहवृक्षः
शक्रदारुः प्रोक्तो ' मदनपालके ' ॥ ६१ ॥ मस्तदारु द्रुक्किलिमं
' भावे ' तु सुरभृरुहः । शक्रद्रुमः पारिभद्रः शक्रपादप एव च ॥ ६२ ॥
गुणाः । देवदारु द्विधा ज्ञेय तत्रायं सिग्मदारुकं । द्वितीयं काष्ठदारु
स्याद्वयोर्नामान्यभेदतः ॥ ६३ ॥ सिग्मदारु स्मृतं तिक्तं दिग्गोष्णं
श्लेष्मवातजित् । आमदोषविषं गरीः प्रमेहज्वरनाशनं ॥ ६४ ॥ उष्ण च
श्लेष्मवातघ्न प्रोक्तं ' धन्वनिघंटके ' । ' कंये ' हिकाज्वरघ्न च कडु-
पनिसनाशन ॥ ६५ ॥ ' भावे ' तन्द्रारक्तहृच्च श्लेष्माश्वासानिलापह ।
१ काष्ठदारु । म०, गु० काष्ठद्रवदार । देवकाष्ठं पूतिकाष्ठं भद्रकोष्ठ
सुकाष्ठक ॥ ६६ ॥ असिग्मदारुकं चैव काष्ठदारुत्तु ' राजके ' । गुणाः ।
देवकाष्ठ तु तिक्तोष्ण रुक्ष श्लेष्मानिलापह ॥ ६७ ॥ भूतदोषापह धत्तं
लिममगेषु कालिक । ' नृप ' प्रोक्त तथा ' धन्वे ' तूष्णं सिग्मं च
वातहृत् ॥ ६८ ॥ आमदोषविषधम प्रमेहश्लेष्मरोगजित् । १० चीडा ।
म०, गु० चिडादेवदार, पजावात प्रमिद्ध । चीडा तु दारुगंधा च तारा
गंधवधूस्तथा ॥ ६९ ॥ मगल्या भूतमारी च तरुणी मधमादनी ।
कपाडिनी ग्रहजिह्व प्रोक्तं ' राजनिघटके ' ॥ ७० ॥
सुमंगल्यं च फण्ट वातभूतनिवारिणी । तरुगं तु तथा ' धन्वे ' संप्रोक्त
ग्रहभीतिजित् ॥ ७१ ॥ गुणाः । चीडा कटूष्ण कासघ्नी कफजि-
घ्नीपनी परा । आयतं भविता सा तु पित्तश्लेष्मश्रमापहा ॥ ७२ ॥
' धन्वे ' तु रक्तपित्तघ्नी कफवातहरा स्मृता । ११ सप्तपर्ण । म०
सानवीण । गु० सार्वान । सप्तपर्णश्चतुर्गणः शुक्तिपर्णः सुपर्णकः ॥ ७३ ॥
मम उदो मुञ्जपुष्पो युग्मपर्णो मुनिच्छदः । मुहृच्चग्वहपुष्पश्च तथा
शान्मल्लिपत्रकः ॥ ७४ ॥ मदग ॥ मंथिगणः प्रोक्ता ' राजनिघंटके ' ।

सप्ताह स्थूलपत्रश्च छत्री बहुच्छदः ' कये ' ॥ ७५ ॥ सप्तपत्रो
विशालस्वरु बहुत्यक् विषमच्छद । बृहद्वल्कः पृथक्पर्णः पृथक्पत्रः
शिरोरुजा ॥ ७६ ॥ ग्रहनाशो दलेमंवा ग्रहाशी च गुहाशयः । सुदीर्घः
स्थूलपर्णी च अयुग्मच्छद एव च ॥ ७७ ॥ स्याद्वृहद्वल्कलो युग्मपत्रः
स्याच्छादस्तथा । गुणाः । सप्तपत्रेस्तु त्रिकोणस्त्रिरोषधश्च दीपनः ॥ ७८ ॥
मदगधो निरुपऽय प्रगरक्तमयकुमीन् । प्रोक्ता ' राजनिघटे ' तु ज्वर-
ग्रस्तु ' गणे ' स्मृतः ॥ ७९ ॥ शूलगुरुमहश्चैव सरः कुष्ठहरो
' धने ' । ' कये ' स्निग्धः स्वासहरो हृद्यः प्रोक्तो भिषग्वरैः ॥ ८० ॥ ' मदे'
श्लेष्मानिलहरः सप्रोक्तो भिषगुत्तमैः । १२ सरल । म०, गु० सरल देवदार ।
सरलः पूतिक्राय च उच्चः र्धनद्रुमुच्छ्रितः ॥ ८१ ॥ स्निग्धदारुस्तथा
दीपतरुमारीचपत्रकः । स्निग्धश्चैव तथा प्रोक्तो ' राजनामनिघटके ' ॥ ८२ ॥
' धन्व ' प्रोक्तो दीपवृक्षश्चीडा पीतद्रुमस्तथा । मदनो सुरदारुश्च खलि-
द्रुमस्तथा ' कये ' ॥ ८३ ॥ नमेरुश्च महादीर्घो ' मदने ' परिकी-
र्तितः । मदनो धूपवृक्षश्च चडा सुरभिदारुकः ॥ ८४ ॥ मद्रदारुः पीत-
दारुः पीतवृक्षः कलिद्रुमः । तथा सुरभिदारुश्च सप्रोक्तो वेयनायकैः ॥ ८५ ॥
गुणाः । सरलः कटुत्रिकोष्णः कफवातविनाशनः । त्वग्दोषशोकफडूति
घ्नणमः कोष्ठशुद्धिदः ॥ ८६ ॥ ' नृपे ' प्रोक्तस्तथा ' भावे ' पूता-
स्वेदहरः स्मृतः । वक्त्रसावम्ब्रशनेत्ररोगघ्नणान्तकृत् ॥ ८७ ॥ ' धन्वे'
प्रोक्तस्तथा ' कये ' काष्ठमठरुजापहः । मधुरो रसपाके च कटुस्निग्ध-
स्तथैव च ॥ ८८ ॥ १३ कुंकुम । म० केशर । म० केसर । काश्मीरज तु
काश्मीर फंकुम त्वग्निशेखर । असुम्बरं शठ रक्त बाहिकं शोणितं
मत ॥ ८९ ॥ पीतक रुधिर गौरं कात वह्निशिखं तथा । घुसृण पिशुन
पैव वरेण्यस्वरुण स्मृत ॥ ९० ॥ कालेयक जागुड च स्यात्केसरवर ' नृपे ' ।
अस्र चारु च सकोचं सप्रोक्त ' धन्वनामके ' ॥ ९१ ॥ काश्मीरजन्माग्निशिखं धीर
लोहितचदन । बाहिक पीतन ' कोशे ' त्वस्नाह ' मदनपालके ' ॥ ९२ ॥
वर्ण्य पीत तु सप्रोक्त तथैव वरयोगिक । सौरम केसर पल दीपक कुसु-

जित् ॥ २२ ॥ किलासकफदौर्गन्धवातालक्ष्मीमलापहा । प्रोक्ता ' राज-
 निघंटे ' तु तथा ' धन्वंतरे ' स्मृता ॥ २३ ॥ विषघ्नीदोषशमनी हृद्या
 बस्तिविशोधनी । उष्णा कफादिच्छर्दिघ्नी शोथवातहरा ' भवे ' ॥ २४ ॥
 मुखशोषहरा वृष्या प्रोक्ता ' गणनिघंटके ' । कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा
 नेपाली मध्यमा भवेत् ॥ २५ ॥ काश्मीरदेशसंभूता कस्तूरी हृद्यमा
 मता । कामरूपोद्भवा कृष्णा नेपाली नीलवर्णयुक् ॥ २६ ॥ काश्मीरी
 कपिलच्छायां कस्तूरी त्रिविधा ' भवे ' । १७ गोरोचन । म०, गु०
 गोरोचन । गोरोचना रुचिः शोभा रुचिरा शोभना शुभा ॥ २७ ॥ गौरी
 च रोचना पिंगा मंगल्या पिंगला शिवा । पीता च गोमती मय्या वंदनीया
 च कांचनी ॥ २८ ॥ मेघ्या मनोरमा श्यामा रामा ' राजनिघंटके ' ।
 पावनी धंदनी योग्या मांगल्या गौतमी ' धने ' ॥ २९ ॥ रक्षा गोपि-
 चजा वश्या ' केयदेवनिघंटके ' । वंद्या तु ' भवने ' प्रोक्ता ' गणे '
 चैव ग्रहापहा ॥ ३० ॥ तथा वैद्यैस्तु संप्रोक्ता श्यामा गोपित्तसंभवा ।
 शुष्णाः । गोरोचना कुमिघ्नी च शीता रुष्या तु पाचनी ॥ ३१ ॥
 विषघ्नी कुष्ठहंत्री च वश्या भूतग्रहापहा । शुंगारवर्द्धिनी चैव मंगला
 जनमोहिनी ॥ ३२ ॥ ' नृपे ' प्रोक्ता तथा ' धन्वे ' नेत्ररोगहरा मता ।
 सौभाग्यकरणी प्रोक्ता ' द्रव्ये ' वृष्या तथा स्मृता ॥ ३३ ॥ उन्माद-
 गर्भभावघ्नी क्षतासघ्नी च ' केयके ' । १८ कर्पूर । म० कापूर । गु०
 कपूर । कर्पूरो घनसारश्च शीतः शीतकरस्तथा ॥ ३४ ॥ शशांकः
 शांभवश्चंद्रः शीतांशुर्हिमवालुका । शिला हिमकरो गौरस्तुषारो मिहिका
 तथा ॥ ३५ ॥ शीतप्रमस्त्वभ्रसारस्ताराग्रः कुमुदस्तथा । चंद्रालोकस्त-
 थंशुश्च शुभांशुः स्फटिको ' नृपे ' ॥ ३६ ॥ वेधको रेणुसारश्च सिताग्रः
 स्फटिकोपमः । मरमाह्वयो हिमांशुश्च नक्षत्रेशो निशापतिः ॥ ३७ ॥
 भस्मवेधो विभुः श्वेतस्तरुसारो हिमाह्वयः । मुक्ताफलं तुराजार्हं शशी
 त्वग्रं हिमोपलः ॥ ३८ ॥ शीताह्वः शीतरश्मिश्च हिमः शीतरजः
 स्मृतः । सितामः शीतलरजस्तुहिनश्चंद्रसंज्ञकः ॥ ३९ ॥ भूतिकश्चंद्र-

मस्यश्च हिमाश्वत्थंद्रनामकः । १९ पोतास । म०, गु० भीमसेनी कापूर ।
पोतासो भीमसेनश्च पांशुः सितकरस्तथा ॥ ४० ॥ शकरावाससज्ञश्च
पिंजो हिमपुतो हिमः । अन्दसारो बालुका च जूटिका शीतलस्तथा
॥ ४१ ॥ तुषारः पत्रिकास्वश्च प्रोक्तो ' राजनिघटके ' । कर्पूरलक्ष-
णानि । शिरो मध्यं तलं चेति कर्पूरस्त्रिविधः स्मृतः ॥ ४२ ॥ शिर-
स्तंभाग्रसंजातं मध्यं पर्णतले तलं । मास्वाद्विशदपुलकं शिरोजातं तु
मध्यमं ॥ ४३ ॥ सामान्यपुलकं स्वच्छं तले चूर्णं तु गौरकं । स्तंभगर्मस्थित
श्रेष्ठं स्तंभबाह्ये च मध्यमं ॥ ४४ ॥ स्वच्छमीपद्मरिद्रामं शुभं तन्मध्यमं
स्मृतं । सुदृढं शुभ्ररूक्षं च पुलकं बाह्यजं वदेत् ॥ ४५ ॥ अपि च ।
स्वच्छं भुंगारपत्रं लघुतरविशदं तोलने तिक्तकृ चेत्स्वादे शैथ्यं सुहृष
बहुलपरिमलामोदसौरभ्यदायि । निःस्रोहं दाढ्यपत्रं शुभतरमिति चेद्वाज-
योग्यं प्रशस्तं कर्पूरं चान्यथा चेद्दुहतरशमने स्फोटदायि वृणाय ॥ ४६ ॥
गुणाः । कर्पूरः शिशिरस्तिक्तः स्निग्धश्चोष्णोऽस्रबाहवः । विरस्थो
दाहदोषघ्नः स घृतः शुभ्रकृ ' नृपे ' ॥ ४७ ॥ तृण्मेदोविषदोषघ्नं चक्षुष्य
मवकारकं । ' धन्वे ' प्रोक्तं तथा ' द्रव्ये ' मेहघ्नो गरनाशनः ॥ ४८ ॥
' केये ' तु कफशोषघ्नो मुखवेरस्यनाशनः । २० चीनकर्पूर । म०,
गु० चिनी कापूर । चीनकश्चीनकर्पूरः कृत्रिमो धवलः षट् ॥ ४९ ॥
मेघसारस्तुषारश्च द्विपकर्पूरजो ' नृपे ' । गुणाः । चीनकः कटुतिक्तोष्ण
श्चैवच्छीतः कफापहः ॥ ५० ॥ कंठदोषहरो मेघ्यः पाचनः कृमिनाशनः ।
२१ जवादि । म०, गु० जवादी कस्तूरी । जवादिर्वधराज स्यात्कृत्रिम
मृगचर्मजम् ॥ ५१ ॥ समूहगंध गंधाढ्यं स्निग्धं साम्राणिकर्दमं । सुगंधं
तैलनिर्यासं कुटामोदं तु ' राजके ' ॥ ५२ ॥ मार्जारिका पूतिका च
' केवदेवनिघटके ' । ' द्रव्ये ' पूतिकता चैव मार्जारी मधुनेलिका
॥ ५३ ॥ गंधमार्जारवीर्यं च प्रोक्तो ' मावप्रकाशके ' । मार्जारमधुमुख्या
च गंधमार्जारवीर्यजा ॥ ५४ ॥ गंधमार्जारजा पूतिर्यवचेली तथा स्मृता ।
बहुगंधा वेधमुख्या प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ ५५ ॥ गुणाः । सौगंधिकं

तुरुष्को यावना धूम्रो धूम्रवर्णः सुगंधिकः ॥ २२ ॥ सिल्हको
 सिल्हसारश्च पीतसारः कपिस्तथा । पिण्याकः कपिजः कल्कः पिंडितः
 पिंडितेलकः ॥ २३ ॥ करेवरः कृत्रिमको लेपनो ' राजनामके ' ।
 कपितेलं मुक्तिमुक्तः पिंगलः कृत्रिमस्तथा ॥ २४ ॥ सुगंधिः पिंडकश्चैव
 कृतको ' धन्वनामके ' । यावनः पंडितो धूमः कपिलः कपिशस्तथा
 ॥ २५ ॥ कृतपिंडीतकः प्रोक्तः ' केये ' यवनदेशजः । पिंडितेलोऽश्मपु-
 ष्यश्च दावनः कपिनामकं ॥ २६ ॥ सिल्हश्च वृक्षधूपश्च तेलं चंचलते-
 लकः । गुणाः । तुरुष्कः सुरभिस्तिकः कटुस्निग्धश्च कुष्ठजित् ॥ २७ ॥
 कफपित्ताश्मरीमूत्राघातभूतज्वरापहः । ' नृप ' ' मदे ' कातिकृष
 कटूष्णः शुक्रकुक्ष्या ॥ २८ ॥ वृष्यः स्वेदहरो ' भावे ' ज्वरदाहग्रहा-
 पहः । ' गण ' तु वातपित्तिकाण्डेवहा कफपित्तहा ॥ २९ ॥ ३०
 गुग्गुलु । म० गुग्गुळ । गु० गुग्गुळ । गुग्गुलुः पवनद्विष्टो भवाभीष्टो
 निशादकः । जटालः कालनिर्यासः पुरोभूतहरः शिवः ॥ ३० ॥ कौशिकः
 शाम्भो दुर्गो यातुम्रो महिषाक्षकः । देवेष्टो मरुविष्टोऽपि रक्षोहा रूक्ष-
 गंधकः ॥ ३१ ॥ दिव्यरतु महिषाक्षश्च प्रोक्तो ' राजनिघंटके ' ।
 नक्तंचरो जटायुश्च ' धन्वतग्निघटके ' ॥ ३२ ॥ उलूखलं
 निशापायी ' केये ' तु शिवधूपकः । पलंकषा निशाशापी
 कुमुदो घामिनीचरः ॥ ३३ ॥ कुंभोलूखलकं कुंभं स्फाटुलूखलकं तथा ।
 उलूखलं देवधूपो गुग्गुलुः पवनद्विष्टः ॥ ३४ ॥ उपः कुती च घृक्षश्च
 उद्दीपन्तु निशाचरः । सर्वसहस्तथा प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ३५ ॥
 गुणाः । गुग्गुलुः कटुतिक्तोष्णः कफमारुतकागजित् । कृमिपातोदरघ्नी-
 हशोफाशोघ्नो रसायनः ॥ ३६ ॥ प्रोक्तो ' राजनिघंटे ' तु तथा
 ' धन्वंतरौ स्मृतः ' । कपायी पिच्छलो वर्ण्यः स्वर्ग्यः सूक्ष्मश्च रूक्षकः ॥ ३७ ॥
 स्निग्धः मरो लघुश्चैव नस्तिमेदांघ्रणघ्नकः । भृन्घ्नो मेहशोफघ्नो विशद-
 स्तक्षिण एव च ॥ ३८ ॥ स नवो चूंहणो वृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ।
 ' केये ' तु दीपनो बल्यो मग्नं चानकारकः ॥ ३९ ॥ अंधिमंडापथी-

मश्वे वातरक्ताविनाशनः । आर्मकटूकमिध्रश्च कुष्ठमस्तु विषमकः ॥ ४० ॥
 गडमांसाऽमवानमः प्रोक्तो ' भावप्रकाशके ' । मांसवृद्धिकरः प्रोक्तो
 रक्षोघ्नो ' गणनामके ' ॥ ४१ ॥ ३८ कणगुग्गुलु । म०, गु० कण-
 गुग्गुलु । गंधराजः स्वर्णकणः सुवर्णः कणगुग्गुलुः । कनको वशीतश्च
 सुरसश्च पलंकया ॥ ४२ ॥ गुणाः । कणगुग्गुलुः कटूष्णश्च सुरभिर्वातश्लहत् ।
 कफगुल्मोदराग्मानहरश्चैव रसायनः ॥ ४३ ॥ ३९ भूमिजगुग्गुलु ।
 म०, गु० भूमिगुग्गुलु । गुग्गुलुश्च तृतीयोऽन्यो भूमिजा दैत्यमदजः ।
 दुर्गाह्लाद इडाजात आशादि रिपुसंभवः ॥ ४४ ॥ मज्जाजो मेदनश्चैव
 महिषासुरसंभवः । गणाः । गुग्गुलुर्भूमिजस्तिकः कटूष्णः कफवात-
 जित् ॥ ४५ ॥ उमाग्रिषश्च भूतघ्नो मेघ्यः सौरभ्यदो ' नृप ' । ४० राल ।
 म० राल । गु० राल । रालः सर्जरसश्चैव शालः कनकलोद्भवः ॥ ४६ ॥
 ललनः शालनिर्घासो देवेष्टः शीतलस्तथा । बहुरूपः शालरसः सर्जनि-
 र्पासकस्तथा ॥ ४७ ॥ सुरभिः सुरधूपश्च यक्षधूपाऽयिवल्लभः । कालः
 कलपजः प्रोक्तो ' राजनामनिघटके ' ॥ ४८ ॥ रवः सणो महारूपः
 सुरालो धूपनस्तथा । सुधूमः क्षणकः सर्जस्वरालो धूनकः स्मृतः ॥ ४९ ॥
 तथा सर्वरसः प्रोक्तो भिषग्विद्याविशारदैः । गुणाः । रालस्तु शिशिरः
 क्षिग्धः कपापस्तिकसंग्रहः ॥ ५० ॥ वातपिचहरस्फोटघ्नकटूहरो
 ' नृप ' । विषादिभूतहंता च भग्नसंयानकृन्मतः ॥ ५१ ॥ स्वादुश्श्रेष्ठाः स्तम्भ-
 नश्च ' धन्वे ' तु व्रणरोपणः । अतिसं हरो ' भावे ' शूलस्वेदज्वरापहः
 ॥ ५२ ॥ रक्तदोषविसर्पघ्नो ग्रहघ्ना ' केयदेवके ' । ' गणे ' तु श्लेष्म-
 पित्तघ्नो ह्यग्निग्धव्रणघ्नकः ॥ ५३ ॥ ४१ कुंदरु । म० सालईचां
 डीक । गु० कुंदरु, सालेडाना गुंद । सौराष्ट्रः कुदकस्तीक्ष्णः पालिदः
 शिखरी च सः । तथा कुंदरुकः कुंदरुको गोपुरकः स्मृतः ॥ ५४ ॥
 बहुगंधो भीषणश्च प्रोक्तो ' राजनिघटके ' । धन्वे तु गोपुरः कुदः कुद-
 रश्च तथा बली ॥ ५५ ॥ मुकुदस्तीक्ष्णगंधश्च मेचकः खपूरो ' द्रवे ' ।
 मुकुदः कुदुरुः कुडुः पलकी ' कोशके ' तथा ॥ ५६ ॥ ' वेये ' तु

मेदुरः स्वाक्षो नागश्रीवल्लभः परः । तथा ' गणनिघटे ' तु प्रोक्तो नाग-
 चधूप्रियः ॥ ५७ ॥ शल्लीनिर्यासकश्चैव प्रोक्तो वेद्यविशारदैः । गुणाः ।
 कुन्दुरुमधुरस्तिकः कफपित्तातिदाहनुत् ॥ ५८ ॥ पाने लेपे च शिशिरः
 प्रदरामग्रहा ' नृप ' । ' धन्वे ' तु कटुकः प्रोक्तो वातश्लेष्मामयापहः
 ॥ ५९ ॥ रक्तप्रदरहा ' द्रव्ये ' ' भावे ' तु मुखरोगहा । ज्वरघ्ना
 स्वेदहा ' केपे ' यूकाऽलक्ष्मीग्रदघ्नकः ॥ ६० ॥ ' मदे ' वृध्नरः
 प्रोक्तस्तथा ' शोढलके ' स्मृतः । शर्करासहितो मेहं वृषणस्य
 च्चथां हरेत् ॥ ६१ ॥ ४२ कुष्ठ । म० कोष्ठ । गु० कृठ,
 उपलेठ । कुष्ठं रुजाग्रदो व्याधिरामयं पारिमद्रक । रामं धानीरज
 वाप्यं ज्ञेयं स्वदोषमुत्पल ॥ ६२ ॥ कुत्सं ह्यपाठवं चैव पद्मकं ' राज-
 नामके ' । कौबेर पाफजं रोगः पाफलं ' धन्वनामके ' ॥ ६३ ॥
 रोमाह्वयं तु कौबेरं पारिमव्यं गदाह्वयं । मासुरं पारिभाव्यं च गदाख्यं
 बाण्यसंज्ञितं ॥ ६४ ॥ व्याप्यं मास तु किञ्चल्कमामं ह्याप्यं तु पावन ।
 परिहार्यं कदाख्यं च कुठिकं हरिभव्यकं ॥ ६५ ॥ हरिमद्रकसंज्ञं तु
 रुक् तपोत्पलकुठकं । गुणाः । कुष्ठ कटूष्णं तिक्तं स्वात्कफमारुतकुष्ठ-
 जित् ॥ ६६ ॥ विमर्षविषकण्डूतिखर्जदद्रुमकांतिकृत् । ' नृप ' ' धन्वे '
 त्रिदोषघ्न रक्तजिघ्र तथा स्मृतं ॥ ६७ ॥ ' गणे ' रसायनो वृष्यः ' केपे '
 वातास्रकातजित् । वांतिवृष्णाहरो ' द्रव्ये ' ' मदे ' शत्रुप्रदः स्मृतः
 ॥ ६८ ॥ ४३ सारिवा । म० श्वेत उपलसरी, पांढरी कावळी । गु०
 धाळी उपलसरी, कपूरी काळी बेल । सारिवा शारदा गोपा गोपवल्ली
 प्रतानिका । गोपकन्या लताऽऽस्फोता श्वेता स्वात्काष्ठसारिवा ॥ ६९ ॥
 प्रोक्ता ' राजनिघटे ' तु तथा धवलसारिवा । स्फोता गोपांगना गोपी
 शारिवा फणिजिह्विका ॥ ७० ॥ गौरा सुगंधमूला च सुगंधा तु सुगंधिका ।
 गोपालिका कराला च त्वहिजिह्वा कृशोदरी ॥ ७१ ॥ गोपिनी फणिजिह्वा च
 नामजिह्वा तु शारदी । तथा गोपवधुः प्रोक्ता गोपिका वेद्यनाथकः ॥ ७२ ॥
 ४४ कृष्णसारिवा । म० काळी उपलसरी, काळी कावळी । गु० काळी

उपलसरी । मारिवाऽन्या कृष्णमूला कृष्णा चंदनसारिवा । भद्रा चंदन-
गोपा तु चंदना कृष्णवल्लभ्यपि ॥ ७३ ॥ प्रोक्ता ' राजनिघटे ' तु तथै-
वोत्पलसारिवा । श्यामाऽनंता महाश्यामा कालिद्युत्पलसारिवा ॥ ७४ ॥
भद्रवल्ली महागोपी तथा कालानुमारिणी । स्याद्भद्रवल्लिका प्रोक्ता तथा
चंदनमूलिका ॥ ७५ ॥ महामोपा तथा ज्ञेया सप्रोक्ता कृष्णवल्लरी ।
स्यात्कृष्णसारिवा चैव प्राक्ता वैद्यविशारदैः ॥ ७६ ॥ गुणाः । सारिवा-
युगलं स्वादु कफवातासनाशनं । कुष्ठकंडुज्वरहर मेहदुर्गाधिनाशनं ॥ ७७ ॥
' नृप ' ' द्रव्य ' तु पित्तघ्नं वृष्य ह्यामज्वग्भ्रकं । कफरक्तगरघ्नं च
तृष्णादाहहरं ' गणे ' ॥ ७८ ॥ कासघ्नं स्वतिसारघ्नं त्रिदोषघ्नं तु
' केयके ' । रक्तप्रदं विषघ्नं च क्षामातीसारहृत्तथा ॥ ७९ ॥ अग्नि-
माद्यारुचिश्वासवमिकासतृषापह । दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनं ॥ ८० ॥
गुरु शुक्रफरं स्निग्धं प्रोक्तं ' मदनपालके ' । ' शोढले ' रक्तपित्तास्र-
विषमज्वरनाशनं ॥ ८१ ॥ शिरोरोगहर चैव प्रोक्तं वैद्यविशारदैः ।
कृष्णमूली तु संग्राहिशिशिरा कफपित्तजित् ॥ ८२ ॥ तृष्णारु-
चिप्रशमनी रक्तपित्तहरा ' नृपे ' । ४५ नख । म० , गु० नखला
(प्राणिनद्रव्य) । नखः कररुहः शिल्पी शुक्तिशंखः खुरः शफः ॥ ८३ ॥
चलः कोशी च करजां हनुर्नागहनुस्तथा । पाणिजो बदरीपत्रा धूप्यः
पण्यविलासिनी ॥ ८४ ॥ संधिनालः पाणिरुहः प्रोक्तो ' राजनिघटके ' ।
तथा कोलदलं चैव नखी हृष्टविलासिनी ॥ ८५ ॥ चलकम् नखाद्वश्च
नखाजो नखरः खरः । सहः करस्तु निर्लोभं नखरी बदरिच्छदः ॥ ८६ ॥
बदरीपत्रकश्चैव तथा करकचः स्मृतः । गुणाः । नखः स्यादुष्णकटुको
विष हन्ति प्रयोजितः ॥ ८७ ॥ कुष्ठकंडुमण्ड्यश्च भूतविद्रावणो ' नृपे ' ।
' धन्वे ' कफघ्नकः प्रोक्तो ' मेदे ' न्नयं तु शुक्ल ॥ ८८ ॥ लघु
हृद्य तथा प्रोक्तं वातास्रज्वरनाशनं । मेघ्य नृ वातपित्तघ्नं रुद्धिघ्नं ' द्रव्य-
रत्नेके ' ॥ ८९ ॥ अलक्ष्मीमुखदुर्गाधिनाशनं कांतिदं ' धने ' । ४६
व्याघ्रनख । म० वाघनख, लघु नखला, हा एक सुगंधी कटु प्रसिद्ध

अश्मवल्कः शिलावल्को हिमवासी हिमप्रियः । सीमनस्य सुखकरं गंधाढ्यं
 पियदर्शनं ॥ २४ ॥ शिलाकं शैलिज प्रोक्तं तथा कालानुसारिणी । शिला-
 भव तु संप्रोक्तं भिषग्विद्याविशारदैः ॥ २५ ॥ गुणाः । शैल्यं शिशिरं
 तिक्तं सुगंधि कफपित्तजित् । दाहतृष्णावमिश्वासव्रणदोषहरं 'नृप'
 ॥ २६ ॥ रक्तदोषहरं 'धन्वे' विषकड्विनाशनं । श्लेष्मज्वरहरं रुच्यं
 हृद्रोगाश्मरिनाशनं ॥ २७ ॥ कुष्ठघ्नं तु तथा 'केये' रक्तगुल्म-
 हरं 'भव' । ५१ चोरकं । म० भटोरा, गठोन्याचा भेद, हा नपाळ्हात
 प्रसिद्ध आहे । गु० भटीडर. भटोरा । चोरकः शंकितश्चंडा दुष्पन्नः
 क्षेमको रिपुः ॥ २८ ॥ चपलः कितवो धूर्तः पटुर्नीचा निशाचरः । गण-
 हासः कोपनकश्चोरकः फलचोरकः ॥ २९ ॥ दुष्कुलो पर्णबोरश्च
 'राजनामनिघंटके' । 'कोशे' धनहरी क्षेमां राक्षसी गणहासकः
 ॥ ३० ॥ चंडस्तु तस्करश्चोरी शटी धनहरस्तथा । गोपनो दुष्कुलीयश्च
 दौष्कुलेयस्तु चामरः ॥ ३१ ॥ तथा शंखिनिका चैव कौशिका कृमिका
 स्मृता । क्रोधना तु तथा प्रोक्ता वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ३२ ॥ गुणाः ।
 चोरकस्तीक्ष्णगंधोष्णस्तिक्तो वातकफापहः । नासापूस्वरुजाजीर्णकृमिदो-
 षहरो 'नृप' ॥ ३३ ॥ विपरक्तहरा 'धन्वे' कुष्ठकड्वणघ्नकः
 समीरघ्नस्तथा 'केये' रक्षःस्वेदज्वरघ्नकः ॥ ३४ ॥ माहघ्नो मधुरो
 रुक्षो हिमहृत्कुष्ठकड्वहृत् । 'भावे' मेदाहरः प्राक्तो 'गणे' त्वग्दो-
 षहारकः ॥ ३५ ॥ ५२ ग्रंथिपर्ण । म०, गु० गठोना, 'हा आता-
 मांत होता । ग्रंथिपर्णो ग्रंथिदलो ग्रंथिपत्रस्तु गुच्छकं । ग्रंथिर्ग्रंथि-
 दलां चैव ग्रंथिकं गुच्छकच्छदं ॥ ३६ ॥ ग्रंथिका ग्रंथिपर्णी च ग्रंथिलो
 नीलपुष्पकं । सुग्रंथिर्ग्रंथिपर्णश्च शुक्रपुष्पं शुक्रच्छदं ॥ ३७ ॥ काकपुष्पं
 तथा प्रोक्तं सुगंध तैलपर्णकं । ग्रंथिपर्णलक्षणं । ग्रंथिकः पांडुरः किं-
 चित् कनिष्ठांगुलिसन्निभः ॥ ३८ ॥ उत्तमः कृष्णवर्णो यः स्थूलोतीव
 च निदितः । शुष्कः संस्वेद्य गोमूत्रं कुंकुमेनैव वासयेत् ॥ ३९ ॥
 इति डण्डणमिश्रः । गुणाः । ग्रंथिपर्णो लघुस्तिक्तो रुच्योष्णः कफवात-

जित् । ' नृपे ' प्रोक्तस्तथा ' भाव ' दीपनः कटुकस्तथा ॥ ४० ॥
विषश्वासहरश्चैव कंटर्दार्गन्धनाशनः । ५३ पञ्चक । म० पञ्चफल,
याचा वृक्ष हिमालयावर टोतो । गु० पञ्चकनं लाकडु । पञ्चक पीतक
पीत मालय शीतल हिम ॥ ४१ ॥ शुभ्र रुदारज रक्त पाटलापुष्प-
सन्निभ । पञ्चफल पञ्चवृक्ष प्रोक्त ' राजनिघटके ' ॥ ४२ ॥ ' धन्वे '
तु मलयश्वारु. पीतरक्तः सुराद्भवः । सुप्रमः शीतवीर्यश्च पाटलापुष्प-
वर्णकैः ॥ ४३ ॥ पञ्चवर्णं ह्रमपञ्च पञ्चमधिर्मरुत्स्थित. । ' कये ' पञ्चा-
ह्वय ' भावे ' हेमपत्र ' गणे ' स्मृत ॥ ४४ ॥ पञ्चगव्यं शुभं
चैव प्रोक्त वैद्यविशारदैः । गुणाः । पञ्चक शीतल तिक्त रक्तपित्तवि-
नाशन ॥ ४५ ॥ मोहदाहज्वरभ्रातिकुष्ठविस्फोटह ' नृपे ' । ' धन्वे '
भ्रातिहर ' कये ' वातल तु तृषापह ॥ ४६ ॥ विषपित्तकफास्रघ्न व्रणवातिविम-
पंहत् । गर्भस्थापनक चैव त्वर सप्रकीर्तित । ४७ ॥ ५४ प्रपौडरीक ।
म० । पुडरीकवृक्ष । गु० पाडेरना । प्रपौडरीक चक्षुष्य पुडर्यं पुडरी-
यक । पौडर्यं च सुपुष्पं च सानुजं चानुज ' नृपे ' ॥ ४८ ॥ श्रीपुष्प
सितपुष्पं च पौडरीयं तु ' धन्वे ' । ' केयदे ' स्मृत नूनं पौड्राह
पुडमेवच ॥ ४९ ॥ तथा ' मदनपाल ' च श्वतपुष्पं प्रकीर्तित । एक-
मुल ऋषिभ्रेष्ठ पुंडरीक शुचिघ्न ॥ ५० ॥ तथा मृनिवर प्राक्त पुंडरी-
मुलसाधन । मूलशोथनक चैव समाक्त वेदनार्पकः ॥ ५१ ॥ गुणाः ।
प्रपौडरीक चक्षुष्यं मधु तिक्तशीतल । पित्तकफगन्धाहति ज्वरदाहतृषा-
पह ॥ ५२ ॥ ' नृप ' च शकल ' भावे ' श्लेष्मल पित्तनाशनं । ५५ लाम-
जक । म० पतवाळा । ग० पाळा बाळा, मुगवि पीळु खड्ड, ऊड
वाला । लामजक सुनाल स्यादमृगालं लघु लघु ॥ ५३ ॥ डटकाप-
पिक शीघ्र दीर्घमूल जलाश्रय । प्राक्त ' राजनिघट ' तु तथा लघुलघु
हिम ॥ ५४ ॥ अवदाह जलाधारमवदाहेटकापय । तथटकापय चैव
तोयज स्वदाहकं ॥ ५५ ॥ मृणाली त्वदाहेट सितिज तु जलाशय ।
तथा जलवगार मपाक्त तु जटपद ॥ ५६ ॥ गुणाः ।

११ अनुक्तीषधिवर्गः

१ श्वेतवृंताक । म० पांढरें वांगें । ततस्तु श्वेतवृंताकं कुक्कुट्रंडो-
पमं फलं ॥ ८९ ॥ ' धन्वन्तरिनिघटे ' तु संपोक्तं भिषजां वरैः ।
गुणाः । श्वेतवृंताकमर्शोघ्नं रुचिदं तु गुणाधिकं ॥ ९० ॥ २ किंकिरात ।
म० फंफ्री, कोकई, देवनाभूळ । दे० नेडीनाभूळ । किंकिरातः किंकि-
राटः पीतकः पीतभद्रकः । हेमगौरो विप्रलंबी षट्पदानंदवर्धनः ॥ ९१ ॥
' धन्वे ' प्रोक्तस्तथा ' द्रव्ये ' कोकई चेति विश्रुता । तथैव भिषजां
नाथैः प्रोक्ता षट्पदमोदिनी ॥ ९२ ॥ गुणाः । किंकिरातो
मवेदुष्णस्तिक्तः कफविनाशनः । अर्शसां निवर्णं हन्ति शोक-
संधातनाशनः ॥ ९३ ॥ किंकिरातोद्भवं पुष्पं सुगंधिं हर्षपुष्टिदं ।
' धन्वे ' प्रोक्तं तथा ' भावे ' हिमः पित्तकफघ्नकः ॥ ९४ ॥ पिपासा-
शोषघ्नातिघ्नस्तथा कुमिहरः स्मृतः । कषायो रक्तदाहघ्नः श्लेष्मज्वर-
हरो ' द्रव ' ॥ ९५ ॥ ३ चपल । म० चपल धातु, जस्ताचा मेद ।
गौरः श्वेतोऽरुणः कृष्णश्चपलश्च चतुर्विधः । हेमामश्वैव तारामो विशेष-
षाद्रसबंधनौ ॥ ९६ ॥ चपलश्चैव संपोक्तश्चोज्ज्वलः स्फटिकोपमः ।
शेयौ तु मण्यौ लाक्षावच्छीघ्रद्रावौ तु निष्कलौ ॥ ९७ ॥ वंगवद्द्रवते
बह्वै चपलस्तेन कीर्तितः । गुणाः । चपलो लेखनः स्निग्धो देहलो-
हकरस्तथा ॥ ९८ ॥ रसराजसहायः स्यात्तिक्तोष्णो ' मधुरो मतः ।
चपलः स्फटिकच्छायः षड्वर्णिः क्षिग्धको गुरुः ॥ ९९ ॥ त्रिदोषघ्नोऽ-
तिवृष्णश्च रसबंधकरो ' धने ' । ४ प्राचीनामलक । म० पाण आंवळी ।
प्राचीनामलकं प्राची नागरं रक्तकं ' धने ' ॥ १०० ॥ अंबुजामलकी
रक्ता नागरा ' द्रव्यरत्नके ' । पानीयामलकं प्रोक्तं ' भावनामनिघंटके ' ॥ १०१ ॥
गुणाः । प्राचीनामलकं रुच्यं गुरुष्णं गरवातहृत् । तत्पक्वं पित्तकफहृद्-
दुर्जरं गुरु वातजित् ॥ १०२ ॥ प्रोक्तं ' धन्वनिघटे ' तु भिषग्विद्याविशा-
रदैः । प्राचीनामलक ' द्रव्ये ' कफवाततृषामकं ॥ १०३ ॥ दोषत्रयहरं
' भावे ' ' केयोक्तं ' कफपित्तहृत् । ५ साराम्ल । म० साराम्ल,

नदीमल्लातकः ' कये ' । गुणाः । वृषांकस्तु भवेत्तित्तः कपायो मधुरो हिमः ॥ २२ ॥ संग्राही वातलश्चैव कफरक्तादिपित्तहा । घणहेति भिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्तः ' केयनिघंटके ' ॥ २३ ॥ १० वाताम । म० बदाम । वातामस्त्वानिलांतश्च युग्मशुक्तिपटोपमं । सुफलं ' द्रव्यरत्ने ' तु वातवैरिस्तथा ' मदे ' ॥ २४ ॥ नेत्रोपमफलं चैव बादामं संपकीर्तितं । गुणाः । वातामो गुरुस्निग्धश्च रसे पाके मधुस्तथा ॥ २५ ॥ वृष्यश्चोष्णो बृंहणश्च बल्यो वातहरो ध्रुवं । कफकृदाहपित्तघ्नः क्षतक्षयविनाशनः ॥ २६ ॥ विष्टंभह ' त्केयदेवे ' ' द्रव्ये ' शुक्रकरस्तथा । पित्तानिलहरा मज्जा स्निग्धा तु कफकारिणी ॥ २७ ॥ रक्तपित्तकरा चोष्णा प्रोक्ता ' मदनपालके ' । ११ मुकूलक । म० पिस्ते । पित्तं मुकूलकं शेषं दंतीफलसमाकृतिः ॥ २८ ॥ गुणाः । मुकूलं दुर्जरं स्निग्धं वृष्योष्णं स्वादु बृंहणं । रक्तप्रसादनं बल्यं वातघ्नं कफपित्तहृत् ॥ २९ ॥ विशेषात्तु गुरु शेषं प्रोक्त ' मदनपालके ' । १२ निकोचक । म० जर्दाळु । निकोचकं चारुफलमंकोट जलगोजकं ॥ ३० ॥ अंकोलफलसकाश निकोचं तु निकोटकं । तथैव चारुफलक प्रोक्त वैद्यविशारदैः ॥ ३१ ॥ गुणाः । निकोचकं गुरु स्निग्धं वृष्योष्णं स्वादु बृंहणं । रक्तप्रसादनं बल्यं वातघ्नं कफपित्तहृत् ॥ ३२ ॥ १३ लवली । म० हरपररेवडी, रायआंवली । घनस्कथो महाप्रांशुः प्रपुत्रादसद्वच्छदः । सुगंधमूला लवली पांडुकोमलवल्कला ॥ ३३ ॥ ' केयदेवनिघटे ' तु संप्रोक्ता भिषजां वरैः । घनस्कथा तु संप्रोक्ता तथा कोमलवल्कला ॥ ३४ ॥ लवल्याः फलमुद्दिष्टं इषामं न्योत्स्नाफलं तथा । गुणाः । लवलीफलमसार्शः कफपित्तहरं गुरु ॥ ३५ ॥ विशद रोचन रूक्षं स्वादुम्लं तुवरं ' भवे ' । तथा ' केयनिघटे ' तु हृद्यं तिक्तं तु वातलं ॥ ३६ ॥ सुगंधितु ' मदे ' प्रोक्त त्वर्शोघ्नं वातपित्तजित् । १४ कालशाक । म० कालशाक । कालिका कालशाक च कालिक ' केयदेवके ' ॥ ३७ ॥ तथैव विपिनद्रुश्च कृष्णवर्णस्तु ' द्रव्यके ' । श्राद्धशाकं तथा ' भावे ' प्रोक्तं वैद्यविशारदैः ॥ ३८ ॥

गुणाः । कालिका कटुका क्षीरा तिक्ता पाचनदीपना । मेदनी वातला
 वर्शःकफशोकगरापहा ॥ ३९ ॥ ' केये ' ' द्रव्ये ' सरा चोष्णा
 मिषग्भिः परिकीर्तिता । ' भावे ' रुच्या तु बल्या च रक्तपित्तहरा
 हिमा ॥ ४० ॥ १५ चतुष्पत्री । म० सुणसुजा, चतुष्पत्री । वितुन्नः
 सुनिषण्णश्च तथा वितुन्नरुः स्मृतः । चाटोरीपत्रसदृशः चतुर्दल इती-
 रितः ॥ ४१ ॥ शाको जलान्विते देशे चतुष्पत्रीति चोच्यते । गुणाः ।
 चतुष्पत्री हिमा स्वादुः कपाया लघुदीपना ॥ ४२ ॥ त्रिदोषहरिणी
 रुक्षा हृद्या वृष्या च ग्राहिणी । ज्वरहृत् श्वासकृष्णी मेहारुचिहरा
 ध्रुव ॥ ४३ ॥ अमह ' केयदेवे ' च समोक्ता वैद्यनायकैः । १६
 दुग्धिका । म० दुधी । राजक्षवा दुग्धनिका दुग्धिका स्वादुपुष्पिका ॥ ४४ ॥
 क्षीरावी क्षारिका शीता शीताबुर्मुपपिक्ता । ' केय ' प्रोक्ता तथा
 ' द्रव्ये ' क्षीरी तु क्षीरिणी तथा ॥ ४५ ॥ अपणिकाऽर्कपुष्पी चर्वण-
 नायैः प्रकीर्तिता । गुणाः । दुग्धिका मधुरा तिक्ता गुर्वी क्षीरा
 कटुः पटुः ॥ ४६ ॥ रूक्षोष्णा वातला हृद्या सृष्टमूत्रमलापहा । विष्ट-
 भिनी गर्भकारी कुमिकुष्ठकफापहा ॥ ४७ ॥ प्रोक्ता ' केयनिघटे-'
 तु शिषक्शास्त्रपरायणेः । १७ उत्तानका । म० फुरदी, नागरमोप्यावा
 भेद, इच्छा मुल्लास कचन्याचे कद असें ह्यणतात । उत्तानका बद्ध-
 शिखा चूडाला चक्रलाञ्छटा ॥ ४८ ॥ ' केयदेवनिघटे ' तु समोक्ता
 भिषजां वैरैः । गुणाः । उत्तानकारसे पाके मधुरा ज्वरपित्तहृत् ॥ ४९ ॥
 मुखशोषज्वरश्वासमेदतृष्णापहा ' केये ' । १८ शिरीषिका । म०
 जलशिरस, पाणशिरस । शिरीषिका दिदिणिता दुर्लभा शिरीषिका
 ॥ ५० ॥ टिटिणिका च सुफला दुर्लभा ' केयदेवके ' । शिरीषा तु
 तथा प्रोक्ता ' गणनामनिघटके ॥ ५१ ॥ गुणाः । दिदिणी तु सरा चोष्णा
 कुष्ठार्शःकफपित्तहृत् । विषग्भी सन्निपातार्द्र, मृदाग्भी ' केयदेवके ' ॥ ५२ ॥
 १९ ब्रह्मसोमा । म० श्वेतवरपारा । देवाधिर्ब्रह्मसोमा यत्त्वमिममथश्चतुर्गुणः ।
 आग्नेयी च महाश्यामा वृद्धवारुण ण्य च ॥ ५३ ॥ ' केयदेवनिघटे '

तु भिषक्श्रेष्ठैर्निगद्यते । गुणाः । ब्रह्मसोमा कटुस्तिक्ता तीक्ष्णोष्णा दीपनी सरा ॥ ५४ ॥ पाचनी पित्तजननी कफकासविनाशनी । २० चोहार । म० किरमाणी ओवा । चांहारश्चौरपूर्वश्च यवानी पारसी-यकः ॥ ५५ ॥ जंतुनाशनसंज्ञश्च ' केयदेव ' प्रकीर्तितः । ' द्रव्यर-त्नाकरे ' चैव चोराहः प्रोच्यते बुधैः ॥ ५६ ॥ गुणाः । चोहारस्तु कटुस्तिक्तस्तीक्ष्णस्तूष्णश्च दीपनः । वृष्यस्त्रीदोषहाऽऽर्णिकृमिशूलहरा ' केये ' ॥ ५७ ॥ २१ लताकस्तूरिका । म० मुसकदाणा । लता-कस्तूरिका कट्वी कटुर्दक्षिणदेशजा । ' केयंदेवे ' निगदिता वैद्यविद्याविशा-रदैः ॥ ५८ ॥ लताकस्तूरिका तिक्ता स्वाद्वी वृष्या लघुर्हिमा । चक्षुष्णा श्लेष्मतृष्णाघ्नी प्रोक्ता वैद्यविशारदैः ॥ ५९ ॥ बस्तिरोगहरा ' भावे ' मुखरोगविनाशनी । २२ अस्थिशृंखलिका । म० हाडसंधी, हाडसाखळ । पञ्चवत्यस्थिसंहारो वज्रांगः कांष्ठुचंडिका ॥ ६० ॥ प्रोक्ता ' केयनिघटे ' तु ग्रंथिमान् ' द्रव्यरत्नके ' । तथास्थिशृंखला चैव वज्रांगी वज्रवल्लरी ॥ ६१ ॥ वज्री ' मदनपाले ' च संप्रोक्ता वैद्यनायकैः । गुणाः । अस्थिशृंखलिका शीता स्वाद्वी वृष्या बलप्रदा ॥ ६२ ॥ अस्थि-संधाननी चैव श्लेष्मलानिलनाशिनी । २३ मृगदंती । म० मखमाल, झेंडू । मदा गला विरजनी मृगदंती खरस्वरा ॥ ६३ ॥ अलंबुमा गंध-वती मदपती वरत्नना । ' केयंदेवनिघटे ' तु संप्रोक्ता भिषजा वरैः ॥ ६४ ॥ गुणाः । मदा तु लघुस्वादुश्च ' केये ' पित्तकफापहा । २४ कंचुका । म० कोत्री । कंचुका पेलुका पेलुः पेलिका दलशालिनी ॥ ६५ ॥ ' केय-देवनिघटे ' तु संप्रोक्ता वैद्यनायकैः । गुणाः कंचुका तु कटुः पाके तिक्ता ग्राहिर्हिमा लघुः ॥ ६६ ॥ दीपना रोचना हृद्या कफपित्तज्वरापहा । कुठकासप्रमेहघ्नी वातला ' केयदेवके ' ॥ ६७ ॥ २५ भूमिच्छत्र । म० भृमफाड, अळवें । सर्पछत्रो भूमिहंदा भूमिक्कोटोऽहिछत्रकः । पृथ्वीस्फोटः शिल्पिभं च कचकः ' केयदेवके ' ॥ ६८ ॥ गुणाः । भूमिहंदा मधुरो वृष्यो बल्यो रूक्षो हिमो गुरुः । रोचनो दुर्जरं भेदी ' केयंदेवनिघटके ' ॥ ६९ ॥

सर्वदोषप्रकोपी स्या ' न्मदे ' पीनसकारकः । २६ मानकंद । म० मान-
कंद । मानकश्च महापत्रो तथा दीर्घदलः स्मृतः ॥ ७० ॥ महच्छदो
महत्पत्रो मानकदः प्रकीर्तितः । गुणाः । मानकश्च गुरुः शीतो मधुरो
रक्तपित्तहृत् ॥ ७१ ॥ कटुः शोथहरश्चैव वातलः प्रोच्यते बुधैः । २७
राजकदंबक । म० राजकळब । सुमंघिपुष्पः स्वादुमूलः पक्षसस्यो महो-
न्नतः ॥ ७२ ॥ मधूकपत्रसदृशः पत्रो राजकदंबकः । फलराजकदंबश्च
नीपराजकदंबकः ॥ ७३ ॥ नीपश्च ' केयंदेवे ' तु संप्रोक्तो वैद्यनाथकैः ।
गुणाः । नीपं स्वादु कषावाग्लं गरदोषहरं ध्रुवं ॥ ७४ ॥ तत्फलं मधुरं
शीतं गुरु पित्तास्रवातहृत् ॥ २८ जिगिणी । म० मोई, मोक, मोण । जिगिणी
जिगिणी झिल्ली योदफी गुडमंजरी ॥ ७५ ॥ जातरारा च फलुषमं-
जरी काममंजरी । पार्वतेया सुनिर्घाता ' केये ' गवममंजरी ॥ ७६ ॥
' द्रव्यरत्नाकरे ' चैव जिगी प्रोक्ता ' भिषग्भैः । जिगी तु जिगिनी
चैव ' भावे ' प्रोक्ता प्रमोदिनी ॥ ७७ ॥ सुनिर्घाता भिषग्भैः ' गणे '
प्रोक्ता न संशयः । गुणाः । जिगिणी मधुरा चोष्णा कषाया योनि-
शोधनी ॥ ७८ ॥ कटुपाका वातहरा व्रणहृद्रोगनाशनी । अतिसारहरा
वैद्यैः प्रोक्ता ' केयनिघटके ' ॥ ७९ ॥ तद्विषयस्य नस्येन ' रोगबाहुः
ल्पनाशनी । २९ लोहान । म० लोहवंदी ऊद । लोहानं द्रुमनिर्घातो
धूपः सर्गश्च गौडजः ॥ ८० ॥ ' द्रव्यरत्ननिघटे ' तु संप्रोक्तो वैद्यना-
थकैः । गुणाः । ततस्तु लोहवानं च संग्राहि कफवातहृत् ॥ ८१ ॥
उष्णं व्रणघ्नं संप्रोक्तं वैद्यैः ' द्रव्यनिघटके ' । ३० भूमडली । म०
भूमडली, जलमांडवी । भूमडली भिषग्भैः ' द्रव्यरत्नाकरे '
स्मृता ॥ ८२ ॥ गुणाः । भूमडली लघु हिमा गरपित्तकफाहृत् ।
३१ वनजा गंधनिशा । म० वनअविहलद । वननाड्या गंधनिशा
गंधपत्री सुपाकिनी ॥ ८३ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्ता भिषग्भैः
संशयः । गुणाः । अथ गंधनिशा तैक्ष्णा कफवाताग्निपित्तकृत् ॥ ८४ ॥
३२ मिष्टनिंब । म० कडीनिंब । मिष्टनिंबश्च कैरातो रामणोः रामण-

- स्तथा । ' द्रव्यरत्ननिघंटे ' तु भिषग्भिः परिकीर्तितः ॥ ८५ ॥
 गुणाः । कैरातः शीतलस्तिक्तो दाहार्शःकृमिशूलहा । ३३ हन्वंती ।
 म० हनुमंती । हैमवती तु हन्वंती करपत्रा हिमावती ॥ ८६ ॥
 ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्ता वैद्यनाथैर्न संशयः । गुणाः । हन्वंती तुवरा
 वृष्या तद्दीजं ग्राहि मेहहृत् ॥ ८७ ॥ ३४ खुरसाना । म० खुरा-
 सनी ओवा । यवानी तु खुरासानी यवाहा तु यवानिका । ' द्रव्य-
 रत्नाकरे ' प्रोक्ता वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ८८ ॥ पारसीकयवानी तु प्रोक्ता
 भावप्रकाशके । यवानी यावनी चैव तीव्रा तु तदनंतरं ॥ ८९ ॥ तुरुस्का
 मदकारीति ' मदे ' प्रोक्ता भिषग्जनेः । गुणाः । खुरसाना
 कटूष्णा च । ग्राहिणी श्लेष्मवातहृत् ॥ ९० ॥ पूर्वोक्ता ' द्रव्यरत्ने ' च
 ' मदोक्ता ' मादिनी गुरुः । ' भावे ' तु पाचनी प्रोक्ता विशेषाद्वैद्य-
 नायकैः ॥ ९१ ॥ ३५ तोयपंजरी । म० पाणअघाडा । तोयोद्भवस्त्वपा-
 मार्गो रामठस्तोथमंजरी । ' द्रव्यरत्नाकरे ' चैव प्रोक्तो वैद्यविशारदैः ॥ ९२ ॥
 गुणाः । तोयोद्भवः शोफहा च कासमारुतहा स्मृतः । ३६ आकल । म०
 अकलकारा । आकारकरभश्चैवाकलकोथ ह्यकलकः ॥ ९३ ॥ तथा
 ' मदनपाले ' तु संप्रोक्तो वैद्यनायकैः । गुणाः । आकलरतु मवेदुष्ण-
 स्तीक्ष्णो बल्यश्च शोफहा ॥ ९४ ॥ श्लेष्मानिलहरः प्रोक्तः पूर्वोक्तेः सह
 ' द्रव्यके ' । ' भावे ' ऽभिदीपनो वृष्यः कामदो मदकृत्स्मृतः ॥ ९५ ॥
 ३७ तमालपत्र । म० तमालपत्री, सांभारपान । तमालपत्रं गौर्यश्च त्वक्-
 पत्री याम्यदिग्भवा । ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः ॥ ९६ ॥
 गुणाः । तमालपत्रं वातघ्नं पिचश्लेष्मशिरोर्तिहृत् । ३८ समुद्रशोष ।
 म० समुद्रशोक । समुद्रशोषः सामुद्रो वाह्निशोषो सरित्पतिः ॥
 ॥ ९७ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्तो भिषग्विद्याविशारदैः । गुणाः । ततः
 समुद्रशोपस्तु संग्राही पित्तलः स्मृतः ॥ ९८ ॥ ग्रथिरोमं वातरोमं शोथं
 चैव विनाशयेत् । ३९ शंखेसरी । म० शंखासुर, गुलतूरा । शंखेसरी
 शमीपत्रा सुपुष्पश्च महाद्रुमः ॥ ९९ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्तो वैद्य-

विद्याविचक्षणैः । गुणाः । शंखेसरी तु शूलघ्नी स्यादुष्णा वातनाशनी
 ॥ ४२०० ॥ ४० रक्तरंगा । म० मेहेदी । रक्तरंगा तु रक्तांगा यव-
 नेटा च रंजका । रक्तगर्भा तथा 'द्रव्ये' भिषग्भिः परिकीर्तिता ॥ १ ॥
 गुणाः । रक्तरंगा दाहहन्त्री वातिकृच्छलेष्मकुष्ठहृत् । ४१ सर्पदंष्ट्रा । म०
 सताप । सर्पदंष्ट्रा गुच्छपत्रा हर्म्यारोहा विषापहा ॥ २ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे'
 वैद्यैः प्रोच्यते नैव संशयः । गुणाः । सर्पदंष्ट्रा तु तिक्तोष्णा कफवातहरा
 सरा ॥ ३ ॥ ४२ रक्तपुष्प । म० गुलाब । रक्तपुष्पो बृहत्पुष्पो महाकण्डोतिम-
 ज्जलः । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव सप्रोक्तो भिषजा वरैः ॥ ४ ॥ गुणाः । रक्तपुष्पो
 गुलाबस्तु रक्तदोषहरो ध्रुव । वृश्चिकाणां विषघ्नश्च प्रोक्ता 'द्रव्यनिघंटके'
 ॥ ५ ॥ ४३ अंजीर । म० अंजीर । अंजीर मृदुल वृक्ष रामोदुन्नरिकाफलं ।
 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तं भिषग्विद्योपजीविभिः ॥ ६ ॥ गुणाः । अंजीर शीतल
 स्वादु दाहघ्नं रक्तपित्तजित् । ४४ कुकुरुंद । म० कुकरबंध, कुकुरुंदा ।
 कुकुरुंदस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः ॥ ७ ॥ कुकुरुः कुकरद्रुश्च
 सप्रोक्तो 'द्रव्यरत्ने' । गुणाः । कुकुरुंदा रक्तदाहघ्नो ज्वरतृष्णाकफा-
 पहः ॥ ८ ॥ ४५ फाफणाकतरु । म० फोपटें । फाफणाकतरुश्चैव 'द्रव्ये'
 तु तबलाकृतिः । गुणाः । फाफणस्तुवरो ग्राही तत्फलं वातहारकं ॥ ९ ॥
 ४६ विशल्या । म० बेहकळ भेद । व० भाराटी । विशल्या रक्तफटा
 च शल्या खरदलाह्वया । विशल्या तु भवेत्तिका लूतावणविनाशिनी
 ॥ १० ॥ ४७ वनमेधिका । म० रानमेथी । अहिल्यारण्यमेथी च
 वास्तिका शैल्यमेधिका । 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव संप्रोक्ता वनमेधिका
 ॥ ११ ॥ गुणाः । अहिल्या हयरोगघ्नी ततः स्वल्पगुणा स्मृता । ४८
 फोग । म० फोगू शाक । फोगः प्रसादनः शृंगी सूक्ष्मपुष्पो मरुद्भवा
 ॥ १२ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्ता प्राचीनभिषगुत्तमैः । गुणाः । फोगः
 शीतश्च सग्राही रक्तपित्तकफापहः ॥ १३ ॥ ४९ गोलिका । म०
 गोलीशाक । गोलिका दुर्गरा पिच्छा पुनर्भूः पिच्छलच्छदा । 'द्रव्यर-
 त्नाकरे' चैव संप्रोक्ता वैद्यनायकैः ॥ १४ ॥ गुणाः । गोलिका तु सरा

रूक्षा पित्तहृत्कफघ्नकृदुरुः । ५० चिरपोटा । म० चिरपोटाणी । चिर-
पोटा दीर्घपत्रा कुंतली तिलका ' द्रवे ' ॥ १५ ॥ गुणाः । चिरपोटा
हिमा रूक्षा भेदिनी श्वत्सकासजित् । ५१ तिलपर्णी । म० तिलपर्णी ।
तिलपर्णी शिरोरंध्री वारिदा करपत्रिका ॥ १६ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्ता
वैद्यविद्याविशारदैः । गुणाः । तिलपर्णी कटूष्णास्यात्युन्निपाताघ्ननाशनी
॥ १७ ॥ ५२ झुंझरु । म० झुंझरुशाक । झुंझरुश्चैव संप्रोक्तो वनज-
स्तिकशाककः । ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्तः पुरातनभिषग्वरैः ॥ १८ ॥ गुणाः ।
सुसुरा किंचिदुष्णा च वातश्वासकरुकापहा । ५३ वृश्चिकाली । म०
आग्या, धोर आग्या । गु० मोटो आगियो । वृश्चिकाली तु वुःस्पर्शा
र्ताक्ष्णाह्वा सूनवल्लभा ॥ १९ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्ता प्राचीनभिषजा वरैः ।
गुणाः । वृश्चिकाली तु वृज्जती सरोष्णा च त्रिदोषहृत् ॥ २० ॥ अग्नि-
कृद् ' द्रव्यरत्ने ' च पूर्वोक्तेः सह संस्मृता । ५४ शंखालु । म० श्वेत
अळ् । शंखालुः शंखसकाशो ' द्रव्यरत्नाकरे ' स्मृतः ॥ २१ ॥ गुणाः ॥
शंखालुर्गुरुविटंगी बृंहणो बलवीर्यकृत् । ५५ कटूदरी । म० लघु
बाघांटी । कटूदरी दीर्घवृत्ता व्याघ्रघंटीदलापमा ॥ २२ ॥ ' द्रव्यरत्ना-
करे ' प्रोक्ता पुरातनचिकित्सकैः । गुणाः । कटूदरी च तिक्तोष्णा
विपुचिश्लेष्मवातजित् ॥ २३ ॥ ५६ तारसत्त्वं । म० मुरदाडशिंश ।
तारसत्त्वं स्वर्णवर्णं गोर्जर त्वर्बुदाद्रिज । ' द्रव्यरत्नाकरे ' चैव संप्रोक्त
वैद्यनायकैः ॥ २४ ॥ गुणाः । तारसत्त्वं तु वातघ्न ' द्रव्ये '
स्यात्केशरंजनं । ५७ सस्यक । म० सस्यकमणि । सस्यक चैव तार्क्ष्यं च
तापिजं नीलमेव च ॥ २५ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' वैद्यैः रामोक्तं मर्कताद्रिजं ।
गुणाः । तापिजं तु भवेत्तिकं स्वग्दापोदरशूलहृत् ॥ २६ ॥ विषहृद् ' द्रव्य-
रत्ने ' च मस्मृत वैद्यनायकैः । ५८ चुंबक । म० लोहचुंबक । चुंबको
लोहकार्क्यः कातः कानशिला तथा ॥ २७ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' चैव
संप्रोक्ता शास्त्रवेत्तृभिः । गुणाः । चुंबको लेखनः शीतो विषमदः सर्गि-
रहा ॥ २८ ॥ ५९ काच । म० कांच । काचः कुनिमरलश्च पिपाणः काच-

भाजनं । ' द्रव्यरत्नाकरे ' प्रोक्तं वैद्यविद्याविशारदैः ॥ २९ ॥ गुणाः ।
 वायस्तु व्रणविद्रावश्चक्षुष्यः शूलहृत्सरः । ६० सेव । म० शेव । मुष्टि-
 ममाणबदरं सेवं सिंचितिकाफलं ॥ ३० ॥ प्रोक्तं ' मदनपाले ' तु पुरा-
 तनभिपंगवरैः । गुणाः । सेवं तु वातपित्तघ्नं कफकृद्बृंहणं गुरु ॥ ३१ ॥
 वृष्णं तु रसपाके च स्वादु हैर्म ' मदे ' स्मृतं । ' भावे ' शुक्रकरं
 प्रोक्तं प्राचीनभिपजां वरैः ॥ ३२ ॥ ६१ महत्सिंचितिकाफल । म० सफ-
 र्जन, सफरचंद । अन्यवंगफलं चान्यं महत्सिंचितिकाफलं । प्रोक्तं ' मदनपाले '
 तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ३३ ॥ गुणाः । अपरं सेवगुणकृत् विशेषात् तुवरं
 हिमं । ६२ अमृतफल । म० अमृतफल । फाबूली-नासपात । अमृ-
 ताह्वं रुचिफलं लघुबलित्वफलाकृति ॥ ३४ ॥ प्रोक्तं ' मदनपाले ' तु
 वैद्यशास्त्रपरायणैः । गुणाः । ततोऽमृतफलं चैव स्वाद्वम्लं गुरु वातहृत्
 ॥ ३५ ॥ रुचिशुक्रकरं प्रोक्तं ' मदने ' वैद्यनाथकैः । ' भावे ' वृष्णं त्रिदो-
 षघ्नं संप्रोक्तं भिषगुत्तमैः ॥ ३६ ॥ ६३ आलूक । म० सषाळं । आलू-
 कमल्लकं मल्ल मल्ल रक्तफलं ' मदे ' । गुणाः । आलूकं रसतः शीतं
 स्वाद्वम्लं वातपित्तहृत् ॥ ३७ ॥ ६४ कपित्थपत्री । म० कंवठपत्री ।
 कपित्थपत्री फणिजा कुलजा जीवपत्रिका । प्रोक्ता ' मदनपाले ' तु
 भिषक्शास्त्रपरायणैः ॥ ३८ ॥ गुणाः । कपित्थपत्री तीक्ष्णोष्णा कफमेह-
 विनापहा । ६५ डिंडिश । म० धेङ्गसं । डिंडिशो रोमशफलो मुनि-
 निर्मित इत्यपि ॥ ३९ ॥ प्रोक्तो ' मदनपाले ' तु वैद्यविद्याविशारदैः ।
 गुणाः । डिंडिशो रुचिकृद्देवी पित्तश्लेष्मापहः स्मृतः ॥ ४० ॥ सुशीतो
 वातलो रूक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः । ६६ मरुद्भव । म० पाठ । मारिषो
 बाष्पको मार्ष्यः श्वेतो रक्तस्तु ' भावके ' ॥ ४१ ॥ गुणाः । मारिषो
 मधुरः शीतो विष्टंभी पित्तनुद्गुरुः । वातश्लेष्मकरो रक्तपित्तनुद्विप-
 माभिजित् ॥ ४२ ॥ रक्तमार्शो गुरुर्नातिसक्षारो मधुरः स्मृतः । श्लेष्मलः
 कटुकः पाके स्वल्पदोष उदीरितः ॥ ४३ ॥ ६७ छिकनी । म० नाक-
 शिक्षणी । छिकनी सवक्रसीक्षणा छिकिका घ्राणदुःखदा । गुणाः ।

टिकनी कटुका रुच्या तीक्ष्णोष्णा वह्निपित्तकृत् ॥ ४४ ॥ वातरक्तहरी
 कुष्ठकृमिवातकफापहा । प्रोक्ता 'मदनपाले' तु मिषक्शास्त्रपरायणेः ॥ ४५ ॥
 ६८ चंद्रशूर । म० रानमेर्धभिद । चंद्रिका चर्महंत्री च पशुमेहन-
 कारिका । नंदिनी कारवी भद्रा वासपुष्पा सुवासरा ॥ ४६ ॥ प्रोक्ता
 'भावप्रकाशे' तु वैद्यविद्याविशारदेः । गुणाः । चंद्रशूरं हितं हिकावात-
 श्लेष्मातिसारिणं ॥ ४७ ॥ असृग्वातगरद्वेपि बलपुष्टिविवर्द्धनं । ६९ खस-
 खसफलोद्भूतबल्कल । म० खसखशाच्या फळांचें बोंड । खसख-
 सफलोद्भूतं बल्कलं 'भावनामके' ॥ ४८ ॥ गुणाः । स्वात्वा-
 खसफलोद्भूतं बल्कलं शीतलं लघु । ७० चणकाम्ल । म० हरम-
 न्याची आंब । चणकाम्लं मिषक्शेष्टैः प्रोक्तं 'भावप्रकाशके' ॥ ४९ ॥
 गुणाः । चणकाम्लकमत्युष्णं दीपनं दंतहर्षणं । शूलाजीर्णविबंधघ्न
 'मदने' परिकीर्तितं ॥ ५० ॥ ७१, गंधकोकिला तथा गंधमालती ।
 म० गंधकोकिला व गंधमालती । स्वाग्ंधकोकिला 'भावे' तथोक्ता
 गंधमालती । गुणाः । क्षिग्धोष्णा कफहृत्तिक्ता सुगंधा गंधकोकिला
 ॥ ५१ ॥ गंधकोकिलया तुल्या विज्ञेया गंधमालती । ७२ सुदर्शना । म०
 सुदर्शना । सुदर्शना सोमवल्ली चक्रांका मधुपर्णिका ॥ ५२ ॥ गुणाः ।
 सुदर्शना तु स्वादूष्णा कफशोफहरा भुवं । रक्तवातहरा प्रोक्ता वैद्य-
 'भावप्रकाशके' ॥ ५३ ॥ ७३ मखान्न । म० मखाणे । गु० मखाणा ।
 मखान्नं पद्मबीजामं पानीयफलमेव च । गुणाः । मखान्नं पद्मबीजस्य
 गुणैस्तुल्यं विनिर्दिशेत् ॥ ५४ ॥ ७४ कुमुदिनीबीज । म० कुमुदिनीचें
 बीज । कुमुदिन्यास्तु बीजं च तथा कैरविनीफलं । गुणाः । ततः कुमु-
 दबीजं तु स्वादु रुक्षं हिमं गुरु ॥ ५५ ॥ मेहघ्नं स्वासपांडुघ्नं प्रोक्तं
 'भावप्रकाशके' । ७५ यसद । म० जस्त । गु० जसत । यसदं रंग-
 सदृशं रतिहेतुस्तु 'भावके' ॥ ५६ ॥ गुणाः । यसदं तुवरं तिक्तं
 शीतलं कफपित्तहृत् । चक्षुष्यं परमं मेहान् पांडु स्वासं च नाशयेत्
 ॥ ५७ ॥ ७६ स्थूलग्रंथि । म० थोर कोळिजन । महाभरीवचा

चैव स्थूलग्रथिस्तथा स्मृता । गुणा । महामरीवचा प्रोक्ता विशेषाः क-
फनाशनी ॥ ५८ ॥ सुगन्धा स्याचु सप्रोक्ता ततो हीगुणा ' भवे ' ।
७७ द्वीपांतरवचा । म० चापरीनी । गुणा । द्वीपांतरवचा कटु-
तिक्तोष्णा वह्निर्दामिकृत् ॥ ५९ ॥ विद्यवाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधनी
वातव्याधिमपस्मारमुन्माद तनुवदना ॥ ६० ॥ व्यषोहति विशेषेण
फिरगामयनाशनी । चापरीनी वह्निर्दीप्ता विद्यवाध्मानशूलहृत् ॥ ६१ ॥
' भावे ' चैव तथा प्रोक्ता शकृन्मूत्रविशोधनी । ७८ कलंत्री ।
म० फलत्रीशाक । फलत्री शतपर्वा च सप्रोक्ता ' भावनामके '
॥ ६२ ॥ गुणाः । कलत्री स्त-यदा प्रोक्ता मधुरा शुक्रकारिणी ।
७९ शुक्रनासा । म० शुक्रनासा । शुक्रनासा तु तुहिना शाखाद फलिन-
स्तथा ॥ ६३ ॥ गुणाः । शुक्रनासा महावीर्या पित्तघ्नी रसायनी । ८०
तमाख । म० तमाखू । धूम्राखपो धूमवृक्षश्च बृहत्पत्रश्च धूसर ॥ ६४ ॥
तमाखगुच्छफलतो धूमयत्रप्रदर्शक । बहुबीजो बहुफल सूक्ष्मबीजस्तु
दीर्घक ॥ ६५ ॥ दीर्घताटलवर्ण र पुष्प तस्य प्रतीतित । गुणा । तस्य
पत्र तु तक्षिगोष्ण कफनाशहर पर ॥ ६६ ॥ श्वासकासहर चैव फोष्ठ
वातहर तथा । वातानुलोमनकर वस्तिशोमनमृचण ॥ ६७ ॥ दतरु-
कुशमन त्रैव कृमियूकादिनाशन । मदपित्तभ्रमहर वमनरेचन स्मृत ॥ ६८ ॥
दृष्टिमायकर चैव क्षीणशुक्रहर तथा । तस्यैव धूम्रपानेन विशेषाद् दृष्टि-
शुक्रहृत् ॥ ६९ ॥ दशांतरप्रभेदेन तक्षिण चातीवपित्तल । वमनस्य
प्रभावन वृश्चिकादिविष हरेत् ॥ ७० ॥ रेचनत्वाद्देहात् श्लेष्माण
चाधिगच्छति । वज्रभृगी वटूष्णा जलगुडमिलिता धूम्रपाने प्र-
शस्ता श्वान काम च निद्राकफपराकृतान् हति रोगान् प्रसेया ।
गुग्गुलीहाकृनिघ्ना पवाकफरुज हति साम र शूल हिक्कारोग च
यत्र्यामपशुमित्रनित पीनम न्ययोगात् ॥ ७१ ॥

॥ इति अनुत्तापनिवर्गः समाप्त ॥

ताम्र पक्क हैम विवमहत् । कफपाडूदरघ्न च शूलगुल्महर कटु
 ॥ ८ ॥ घनघातसह स्निग्ध रक्तत्रामल मृदु । शुद्धास्तरमनुत्पन्न
 ताम्र शुभमसकर ॥ ९ ॥ प्रोक्त ' राजनिघटे ' तु भिषग्बिद्यावि-
 शारदः । अशोभि कृमिशोफघ्न कुष्ठप्लीहविनाशन ॥ १० ॥ मोह-
 दाहभ्रपोत्क्लेशभेदघ्न तु रमायन । ' धन्वे ' प्रोक्त तथा ' केये ' लेखन
 कासनाशन ॥ ११ ॥ स्वासक्षयहर चैव सप्रोक्त भिषगुत्तमैः । वृष्य सर-
 पीनसघ्न ज्वरपित्तहर ' भवे ' ॥ १२ ॥ ४ त्रपु । म० कथील । गु०
 कलई कथीर । त्रपु त्रपुसमानील वग च मधुर हिम । कुर्यात् चिप्पट
 रग पूतिगध तु ' राजके ' ॥ १३ ॥ कीरटा कीरट तीव्र सिंहलचित्र-
 रजक । चित्रट तु गुरुश्रेष्ठ पिबट त्रपुक यन ॥ १४ ॥ कस्तूरि खरटी ' धन्वे '
 नीलिका नागजीवन । ततोऽच्चट सित शीत मलिन तीरक ' द्रवे '
 ॥ १५ ॥ तथा तीर चक्रसज्ञ मृद्वग गुरुपत्रक । तमर नागज नाग
 स्यादालीनकमापुष ॥ १६ ॥ क्षुरक मिश्रक ' भावे ' द्विविध वगमुच्यते ।
 उत्तमक्षुरक तत्र मिश्रक त्वहिनमत ॥ १७ ॥ गुणा । त्रपुस कटु तिक्त च
 कषाय लवण हिम । सर मेहकृमिघ्न च पाडुवाहहर तथा ॥ १८ ॥ रसायन
 कातिकृच्च प्रोक्त ' राजनिघटके ' । श्वेत लघुमृदुस्वच्छ स्निग्धमुष्णापह हिम
 ॥ १९ ॥ सूतपत्रकर कात त्रपु श्रेष्ठ तु ' राजके ' । पलितघ्न विषघ्न च प्रोक्त
 ' धन्वनिघटके ' ॥ २० ॥ ' मदने ' श्वामहम्योक्तगीपत्तिजलमित्पि ।
 ' भावप्रकाशे ' चक्षुष्यमुष्ण पुष्टिवलपद ॥ २१ ॥ ' केये ' भेदि
 लघूष्ण च लेखन रुक्षमेव हि । वृष्य कफश्वासहर वातघ्न कविभि-
 स्मृत ॥ २२ ॥ ५ सीसक । म० शिरो । गु० शीतु । सीसक तु जड
 सीस यवनट भुजगम । यागट नागमुरग कुवग परिपिटक ॥ २३ ॥
 मृदु कृष्णायग पद्म तारशुद्धिकर स्मृत । शिरोवृत्त च वग स्याच्चीनपिट
 तु ' राजके ' ॥ २४ ॥ तथा बहुमल चैव भुजग गुरु पार्थत । महा-
 कृष्ण वातुमल विशिष्ट धातुशोथन ॥ २५ ॥ तथैव त्रपुक वध कुवग
 धातुमभव । ' केये ' ' भाव ' तथा वध वध म्यानागनामक ॥ २६ ॥

तथैव चीनवंशे च चीरे कृष्ण निषीतकं । धातुविट् त्रपुपिष्टं च कृष्णरंगं
तु कृष्णकं ॥ २७ ॥ उरगः पीतपिष्टं च वर्ब सिद्धरकारणं । गंडूपदभवं
चैव तमरं यामुनष्टकं ॥ २८ ॥ स्वर्णारिस्तु तथा प्रोक्त चीनरंगं महाबलं । गुणाः
सीसं तु चंगतुल्यं स्याद्रसवीर्यविपाकतः ॥ २९ ॥ उष्णं च कफवातघ्न-
मर्शोघ्नं गुरु लेखनं । स्वर्णे नीलं मृदु स्निग्धं निर्मलं च सुगौरव ॥ ३० ॥
रौप्यसशोधनं क्षिप्रं सीसकं च तदुत्तमं । प्रोक्तं ' राजनिघटे ' तु तथा
' धन्वंतरौ ' स्मृतं ॥ ३१ ॥ नागो हि नामसममेव बलं ददाति व्याधी-
न्विनाशयति चाऽऽचुरलं करोति । प्रधानधातोरपि वर्धनश्च भुजगगजो
हरते च मृत्यु ॥ ३२ ॥ ' द्रव्ये ' पाण्डुरहरं प्रोक्तं ' मदे ' बलप्रदी-
पनं । बलकामप्रदं वैद्यैः संशोक्तं नैव सशयः ॥ ३३ ॥ ६ पित्तलं । म०
पित्तलं । गु० पीतलं । रीतिः क्षुद्रसुवर्णं च पिंगलं लोहितं तथा ।
आरकूट पीतकं च ज्ञेयं पिंगललोहकं ॥ ३४ ॥ तथा सिंहलकं चैव
' नृपे ' पित्तलकं स्मृतं । ' धन्वे ' तु लोहकं पिंगं कपिलोहं सुव-
र्णकं ॥ ३५ ॥ आर सिंहलकं चैव निष्ठुरं वारुकुण्डकं । पीतलोहं ' मदे '
प्रोक्तं कपिलं सुकृमारकं ॥ ३६ ॥ तथा रीतिं मुलोहं च द्रव्यं स्याद्दारु-
दारुकं । ७ राजरीतिः । म० सोनपित्तलं । गु० सोनपीतलं । राजरीतिः
काकतुड्डी राजपत्नी महेश्वरी ॥ ३७ ॥ ब्राह्मणी ब्रह्मरीतिश्च कपिला
पिंगला ' नृपे ' । ' धन्वे ' राज्ञी तथा ' द्रव्ये ' संशोक्तं स्वर्णरीतिकं
॥ ३८ ॥ तथा विरिचिरीतिश्च ब्रह्मचारी ततः स्मृतः । ब्राह्मणी च
तथा प्रोक्ता भिषक्शास्त्रपरायणे ॥ ३९ ॥ गुणाः । रीतिकायुगुलं
तिकं शीतलं लवणं रसं । शोधनं पाण्डुवातघ्नं कृमिघ्नीहातिपित्तजित् ॥ ४० ॥
शुद्धा स्निग्धा मृदुः शीता सुरंगा सूत्रपत्रिणी । हेमोपमा शुभा स्वच्छा
जन्वा रीतिस्तु ' राजके ' ॥ ४१ ॥ रुक्षा सरा भिषग्नी च बलीपालित-
नाशनी । आयुर्वेद्विहरा चैव बलधातुपदा ' धने ' ॥ ४२ ॥ ' द्रव्ये '
तु गुग्महप्रोक्ता रक्तपित्तविनाशनी । ' मदे ' तु कफपित्तघ्नी भिराभिः
परिकीर्तिता ॥ ४३ ॥ ८ कांस्यं । म० कंसिं । गु० कांसु । कांस्यं

‘सौराष्ट्रिकं घोषं कांसीयं वह्निलोहकं । दीप्तं लोहं धोरपुष्पं दीप्तं
सुमनाह्वयं ॥ ४४ ॥ प्रोक्तं ‘ राजनिघंटे ’ तु वैद्यविद्याविचक्षणैः ।
‘ धन्वंतरौ ’ निजं घोषं प्रकाशं कांस्यकं बलं ॥ ४५ ॥ घोषपुष्पं च
पिंडांतं शब्देः पर्यायवाचकैः । ‘ केये ’ तु कमलं कंसं दीप्तलोहं तु
‘ कंराजं ॥ ४६ ॥ तथैव ताम्रत्रपुजं ‘ द्रव्ये ’ प्रोक्तं भिषग्जनेः । ज्ञेयं विद्युत्प्रियं
‘ पंचलोहं चिदासुराह्वयं ॥ ४७ ॥ तथा वैद्यैस्तु सप्रोक्तं कसकं वंगशुन्बजं ।
गुणाः । कांस्यं पथ्यं तु तिक्तोष्णं चक्षुष्मं कफघातहृत् ॥ ४८ ॥ रुच्यं कषायं
रूक्षं च दीपनं लघु पाचनं । श्वेतं दीप्तं मृदु ज्योतिः शब्दाढ्यं स्निग्ध-
निर्मलं ॥ ४९ ॥ घनाग्निसहसूत्रांगं कांस्यं त्रेष्टं तु ‘ राजके ’ । दृढ-
वेहंकरं ‘ धन्वे ’ कामवृद्धिकरं ध्रुवं ॥ ५० ॥ बलासमं बलकरं स-
‘ प्रोक्तं वैद्यनायकैः । लेखनं विशदं ‘ केये ’ कफपित्तविनाशन ॥ ५१ ॥
‘ द्रव्ये ’ भेदीति संप्रोक्तं ‘ मदने ’ तु सरं स्मृतं । १ बट्टलोह । म०,
गु० बट्टलोह । वर्तलोहं वर्ततक्षिणं वर्तकं लोहसंकरं ॥ ५२ ॥ नी-
लिका नीललोहं च लोहजं षट्टलोहकं । ‘ राजनामनिघंटे ’ तु प्रोक्तं
वैद्यविचक्षणैः ॥ ५३ ॥ वर्तुलोहं तथा पंचलोहकं ‘ धन्वनामके ’ ।
त्रिलोहं ‘ द्रव्यरत्ने ’ तु बहुलोहं ‘ गणे ’ स्मृतं ॥ ५४ ॥ गुणाः ।
वर्तलोहं कटूष्णं च तिक्तं च शिशिरं तथा । मधुरं कफपित्तघ्नं दाहमे-
हहरं ‘ नृपे ’ ॥ ५५ ॥ १० कांतलोह । गु०, म० कांतलोह । अम-
रकांतं कांतलोहं कांतं स्याल्लोहकांतिकं । कांतायसं कृष्णलोहं महालोहं
तु ‘ राजके ’ ॥ ५६ ॥ कांताश्मजं तथा वज्रलोहं प्रोक्तं तु ‘ द्रव्यके ’ ।
‘ भ्रामकं चुंबकं चैव रोमकाख्यं च छेदकं ॥ ५७ ॥ कांतं चतुर्विधं
प्रोक्तं ‘ राजनामनिघट्टके ’ । सामरं चुंबकं चैव कर्णकं द्रावकं तथा
॥ ५८ ॥ ‘ धन्वंतरिनिघंटे ’ तु रोमकांतं च पंचमं । गुणाः ।
कांतं तु तीक्ष्णमुष्णं च रूक्षं पांडुकफापहं ॥ ५९ ॥ शोफघ्नं पित्तह-
र्त्राक्तं ‘ नृपे ’ चैव रसायनं । ‘ द्रव्ये ’ भेदादरघ्नं च दोषघ्नं दाहना-
शन ॥ ६० ॥ ‘ भावे ’ गुण्यार्शःशूलघ्नं वानघ्नं व्यामनाशनं । मगंदर-

हरं चैव कामलाकृष्टहृत्तथा ॥ ६१ ॥ यकृन्प्रीहाम्लपित्तं शिरोरोगहर,
तथा । पुष्टिदं बलद चैव वीर्यदं देहसिद्धिदं ॥ ६२ ॥ अयस्कांत-
चिषेपगुणाः । अयस्कांतविशेषाः स्युर्भ्रामिकाश्चुंबकादयः । रसायनकराः,
सर्वे देहसिद्धिकराः पराः ॥ ६३ ॥ न सूतेन विना कात न कातेन
विना रसः । सूतकांतसमायोगाद्रसायनमुदीरितं ॥ ६४ ॥ ११ लोह-
किट्ट । म० लोहफीट, मडूर । गु० लोढानु किट्ट । लोहकिट्ट तु किट्टं
स्याल्लोहचूर्णमथेमल । लोहज कृष्णचूर्णं च काष्ण्यं लोहमल ' नृपे '
॥ ६५ ॥ लोहोच्छिष्टं च मंदूरमयः किट्टं मलोद्भवं । लोहोत्थ लोह-
निर्पांसमयोच्छिष्टं च ' घन्वके ' ॥ ६६ ॥ मंदूरक धनोद्भूत ' द्रव्य-
रत्ने ' त्वयोरजः । तथा ' मदनपाले ' च रजः प्रोक्त भिषग्जनैः ॥ ६७ ॥
सिंहाण चैव सिंहांनं ' कोशे ' सिंघाणमेव च । सिंहासनं लोह-
विट् च प्रोक्त वैद्यविशारदैः ॥ ६८ ॥ गुणाः लोहकिट्ट तु मधुर
कटूष्णं कुमिवातनुत् । पक्तिशूलं मरुच्छूलं मेहगुल्मातिशोकनुत्,
॥ ६९ ॥ ' नृपे ' प्रोक्तं तथा ' द्रव्ये ' कफघ्नं शूलिनाशन ।
मेदि पांडूदरघ्नं च ' केये ' स्याल्लोहवस्मृतं ॥ ७० ॥ १२ मुंडं ।
म० लोखंड । गु० लोढं । मुंडं मुंडायसं लोह हृत्पत्तारं शिलात्मज ।
अश्मज क्वाविलोहं च आरं कृष्णायसं ' नृपे ' ॥ ७१ ॥ पारावतं धन
वीरं दृढं कूटं मलीमस । आशर त्वश्मसारं च तथा पारशवं शिवं ॥ ७२ ॥
१३ तीक्ष्ण । म० पोलाद, तिखें । गु० गजवेल । तीक्ष्ण शस्त्रापतं ।
शस्त्रं पिष्टं पिंडायसं मुरु । आपस निशित तीक्ष्ण लोह खड्गं च मुंडज ॥ ७३ ॥
अपश्चिन्नायसं प्रोक्त चीजनं ' राजनाम्नके ' । कालायसं ' केयदेवे '
व्यंग परशुवधन ॥ ७४ ॥ तथा व्यदध धनं चैव ' द्रव्यरत्नाकरे ' स्मृतं ।
चक्रं कुष्ठं तथा प्रोक्तं वैद्यैर्गणनिघटके ' ॥ ७५ ॥ गुणाः । लोहं रुक्षो-
ष्णतिकं स्याद्वातपित्तकफावहं । प्रमेहपांडूशूलघ्नं तीक्ष्णं मुंडायिकं ' नृपे '
॥ ७६ ॥ आयुर्वलपदं चैव वीर्यकुत्त्वामनातहत् । शोधनं कृष्टद्वयोक्तं
बलीपलितनाशन ॥ ७७ ॥ वातरक्तहरं शीतं सरं चैव कपायकं ।

मधुरं गुरु रूक्षं च चक्षुष्य लेखनं तथा ॥ ७८ ॥
 गरशूलार्शःशोफघ्नं कृमिमेदोहरं ध्रुवं । ग्रहणीघ्नं तथा
 प्रोक्तमतिसारहरं स्मृतं ॥ ७९ ॥ अर्धसर्वांगवातघ्नं छर्दिश्वासहरं तथा ।
 परिणामाख्यशूलघ्नं ' केये ' ' धन्व ' तथा स्मृतं ॥ ८० ॥ समस्ता-
 शोधितधातुदोषाः । स्वर्णं सम्यगशोधितं श्रमकरं खेदावहं दुःसह
 रीप्यं जाठरजाड्यमांशजननं ताम्रं वमिभ्रांतिदं । नागं च त्रपु चांगदो-
 षदमयो गुल्मादिदोषपदं तीक्ष्णं शूलकरं च कांतिमुदितं काश्यामयस्फो-
 टदं ॥ ८१ ॥ विशुद्धिहीनौ यदि मुंडतीक्ष्णौ क्षुधापहौ गौरवगुल्मदा-
 यकौ । कांस्यापसं हृद्दकतापकारकं रीत्यौ च संमोहनशोषदायके ॥ ८२ ॥
 १४ मनःशिला । म० मनशील । गु० मणशल । मनःशिला मनो-
 गुप्ता मनोह्रा कुनटी शिला ॥ ८३ ॥ मनोज्ञा नामजिह्वा च तथा ।
 नेपालिका स्मृता । तथा कल्याणिका रोमशिला प्रोक्ता तु ' राजके '
 ॥ ८४ ॥ ' धन्वे ' फला तु गोला च तथा ' केयनिघंटके ' । नेपाली
 नागपुष्पा च नाली तु करवीरका ॥ ८५ ॥ कुला दिव्यौषधी चैव नाग-
 माता मनोह्रिका । ' मदे ' ' गणे ' कनरी संप्रोक्ता वैद्यनायकैः
 ॥ ८६ ॥ सुरामा त्वरुणा दीप्ता रत्नासरा च पार्थिवा । तथा वैद्यस्तु
 संप्रोक्ता फुलटी नामजिह्विका ॥ ८७ ॥ गुणाः । मनःशिला कटुः स्निग्धा
 लेखनी विषभूतहृत् । भयोन्मादहारा वक्ष्यकारिणी ' राजनामके ' ॥ ८८ ॥
 भूतवेशभयं हन्ति प्रलेपतिलकादिभिः । कफवाताग्निमांशघ्नी कंडुकास-
 क्षयापहा ॥ ८९ ॥ गुरुः सरा तथा श्वासकासघ्नी रक्तदोषहृत् । तथैव
 विषहृत्वोक्ता ' धन्वतरिनिघटके ' ॥ ९० ॥ १५ सिंदूर । म०
 शंदूर । गु० सिंदूर । सिंदूरं नागरेणुः स्याद्रक्तं सीमंतकं तथा । नागजं
 नागगर्भं च शोणं वाररजः स्मृतं ॥ ९१ ॥ गणेशभूषणं संप्यारामं
 शृगारकं स्मृतं । सौभाग्यमरुणं चैव मंगल्य ' राजनामके ' ॥ ९२ ॥
 शृगारभूषणं श्रीमान्वसंतोत्सवमंडनं । ' धन्वतरिनिघटे ' तु वसंतोत्सवभूषणं
 ॥ ९३ ॥ चीनपिटं तथा श्रीमत् वसंतोद्भवमंडनं । वसंतमंडनं नागरक्तं

स्याद्रक्तवर्णक ॥ १४ ॥ रक्तरणुस्तथा प्रोच ' केयदेवनिघटके ' ।
 असुरेणुस्तथा ' द्रव्ये ' ' मदे ' रक्तरज स्मृत ॥ १५ ॥ रसिरोपधातु
 सप्रोक्त सीमज ' भावनामके ' । सौभाग्यमडन राग गणेशमिषमेव
 च ॥ १६ ॥ तथाविकामिव नागसमव रत्नवालुक । रक्त-
 चूर्णं तथा वैद्ये सप्रोक्त भालदर्शन ॥ १७ ॥ गुणा ।
 सिद्धर पटुक्त तित्तमुष्ण घणविरोपण । कुष्ठान्विषकडूतिविषतर्पशमन
 ' नृप ' ॥ १८ ॥ तथा ' धन्वनिघटे ' तु शीर्षघ्नहर पर । मग्नसधा-
 नृचैव विषशोकहर तथा ॥ १९ ॥ त्रिदोषशमन चैव ' द्रव्यरत्ना-
 करे ' स्मृत । सिद्धरलक्षणं । सुरगोऽग्निरह सूक्ष्म क्षिप्त स्वच्छो
 गुरुर्मृदु ॥ ४४०० ॥ सुवर्णपरज शुद्ध सिद्धरो मगलमद । १६
 भूनाग । म० गाडूळ, दवणा, काडवे । गु० गाडूळ । भूनाग क्षिति-
 नागश्च भूजतू रत्नजतुक ॥ १ ॥ क्षितिज क्षितिजतुश्च भूमिजो रक्त-
 शुडक । प्रोक्तो ' राजनिघटे ' तु वसुसखाहवो भुव ॥ २ ॥ गुणा ।
 भूनागो वज्रमार स्याजानाविज्ञानकारक । रसस्य जारण तूक्त तत्तत्त्व
 तु रसायन ॥ ३ ॥ ' नृप ' ' द्रव्ये ' तु तत्तत्त्व विषघ्न समकीर्तित ।
 १७ हिंगुल । म० हिंगूळ । गु० हिंगूलो । हिंगुल बर्बर रक्त सुरग
 सुरग स्मृत ॥ ४ ॥ रजन दरद श्लच्छ चित्राग चूर्णपारद । अन्यच्च मारक
 चैव मणिराग रसोद्भव ॥ ५ ॥ रजक रसगर्म च सप्रोक्त ' राजनामके ' ।
 मणिरागकर चैव ' धन्व ' चर्मानुरजन ॥ ६ ॥ इगुल तु तथा ' भाव '
 ' गणे ' स्यात्पर्वताद्भव । चर्मारक तु हसामि सप्रोक्त ' द्रव्यरत्नके ' ॥ ७ ॥
 कपिशिर्ष तथा वैद्ये सप्रोक्त रत्नपारद । दरदस्त्रिविध प्रोक्तश्चर्मार
 शुक्लतुडक ॥ ८ ॥ हसपादस्तृतीय स्याद्गुणनुदुत्तरोत्तर । चर्मार शृङ्गवर्ण,
 स्यात्सपीत शुक्लतुडक ॥ ९ ॥ जपावसुमसकाशो हसपादो महाक्षम ।
 प्रोक्ता ' भावप्रकाश ' तु तथा ' केयनिघटके ' ॥ १० ॥ गैरेय पर्वत
 चैव कुरुविंद तथा स्मृत । अतिरक्त हसपाद तद्ददालुकिन
 स्मृत ॥ ११ ॥ मणिवर्चस्तथा प्रोक्त सैवत कौण्डलोहित । गुणा । हिंगुल

मधुरं गुरु रुक्षं च चक्षुष्यं लेखनं तथा ॥ ७८ ॥
 गरशूलार्शःशोफघ्नं कृमिमेदोहरं ध्रुवं । ग्रहणीघ्नं तथा
 प्रोक्तमतिसारहरं स्मृतं ॥ ७९ ॥ अर्धसर्वांगनातघ्नं छर्दिश्वासहरं तथा ।
 परिणामाख्यशूलघ्नं ' केये ' ' धन्वे ' तथा स्मृतं ॥ ८० ॥ समस्ता-
 शोधितधातुदोषाः । स्वर्णं सम्यगशोधितं श्रमकरं खेदावहं दुःसहं
 रौप्यं जाठरजाड्यमांथजननं ताम्रं वमिभ्रांतिदं । नागं च त्रपु चांगदो-
 पदमयो गुल्मादिदोषप्रदं तीक्ष्णं शूलकरं च कांतिमुदितं काश्यामयस्फो-
 टदं ॥ ८१ ॥ विशुद्धिहीनौ यदि मुंडतीक्ष्णौ क्षुधापहौ गौरवगुल्मदा-
 यकौ । कांस्यायसं हृष्टकतापकारकं रीत्यौ च संमोहनशोषदायके ॥ ८२ ॥
 १४ मनःशिला । म० मनशील । गु० मणशल । मनःशिला मनो-
 गुप्ता मनोह्वा कुनटी शिला ॥ ८३ ॥ मनोज्ञा नागजिह्वा च तथा ।
 नेपालिका स्मृता । तथा कल्पाणिका रोगशिला प्रोक्ता तु ' राजके ' ॥
 ८४ ॥ ' धन्वे ' कला तु गोला च तथा ' केपनिघंटके ' । नेपाली
 नागपुष्पा च नाली तु करवीरका ॥ ८५ ॥ कुला विष्णोपधी चैव नाग-
 माता मनोह्रिका । ' मदे ' ' गणे ' कवरी संप्रोक्ता । वैद्यनायकेः
 ॥ ८६ ॥ सुरामा त्वरुणा दीप्ता रात्रिसात्रा च पार्थिवा । तथा वैद्यस्तु
 संप्रोक्ता कुलटी नागजिह्विका ॥ ८७ ॥ गुणाः । मनःशिला कटुः स्निग्धा
 लेखनी विषभूतहृत् । भयोन्मादहरा वक्ष्यकारिणी ' राजनामके ' ॥ ८८ ॥
 भूतावेशभयं हन्ति प्रलेपतिलकादिभिः । कफदातामिमांशुघ्नी कंदुकास-
 क्षयापहा ॥ ८९ ॥ गुरुः सरा तथा श्वासकासघ्नी रक्तवैषहृत् । तथैव
 विषहृत्प्रोक्ता ' धन्वंतरिनिघंटके ' ॥ ९० ॥ १५ सिंदूर । म०
 शंदूर । गु० सिंदूर । सिंदूरं नागरेणुः स्याद्रक्तं सीमंतकं तथा । नागर्जं
 नागगर्भं च शोणं वीररजः स्मृतं ॥ ९१ ॥ गणेशभूषणं संच्यारामं
 शृंगारकं स्मृतं । सीभाग्यमंरुणं चैव मंगलघ्नं ' राजनामके ' ॥ ९२ ॥
 शृंगारभूषणं श्रीमान्वसंतोत्सवमंडनं । ' धन्वंतरिनिघंटे ' तु वसंतोत्सवभूषणं
 ॥ ९३ ॥ चीनपिटं तथा श्रीमत् वसंतोद्भवमंडनं । वसंतमंडनं नागरक्तं

स्याद्रक्तवर्णक ॥ ९४ ॥ रत्नरत्नस्तथा प्रोक्त ' केयदेवनिघटके ' ।
 अस्ररत्नस्तथा ' द्रव्ये ' ' भवे ' रत्नरत्न स्मृत ॥ ९५ ॥ रत्नोपधातु
 सप्रोक्त सीसज ' भावनामने ' । सौभाग्यमदन राम गणेशप्रियमेव
 च ॥ ९६ ॥ तथाविकाप्रिय नागसमभव रत्नवालुक । रक्त-
 पूर्णं तथा वैद्ये सप्रोक्त मालदर्शन ॥ ९७ ॥ गुणा ।
 सिद्धर कडुक तित्तमुष्ण व्रणविरोपण । कुट्टास्रविषकडूतिविषसर्पशमन
 ' नृप ' ॥ ९८ ॥ तथा ' धन्वनिघटे ' तु शीर्षव्रणहर पर । मग्नसधा
 नरुचैव विषशोफहर तथा ॥ ९९ ॥ त्रिदोषशमन चैव ' द्रव्यरत्ना-
 करे ' स्मृत । सिद्धरलक्षणं । सुरमोऽग्निसह सूक्ष्म सिग्ध स्वच्छा
 गुरुर्मृदु ॥ ४४०० ॥ सुवर्णपरज शुद्ध तिष्ठते मयलमद । १६
 भूनाग । म० गाडूळ, दवणा, वादव । गु० गाडूळ । भूनाग क्षिति-
 नागश्च भूजतू रत्नजतुक ॥ १ ॥ क्षितिज क्षितिजतुध्व भूमिजो रक्त-
 तुडक । प्रोक्तो ' राजनिघटे ' तु वसुसख्याह्वयो धव ॥ २ ॥ गुणा ।
 भूनागो वज्रमार स्थानानाविज्ञानकारक । रसस्य जारण तूक्त तत्सत्त्व
 तु रसापन ॥ ३ ॥ ' नृप ' ' द्रव्ये ' तु तत्सत्त्व विषम सप्तकीर्तित ।
 १७ हिंगुल । म० हिंगूळ । गु० हिंगूळो । हिंगुल वर्बर रक्त सुरग
 सुरग स्मृत ॥ ४ ॥ रजन दरद म्लेच्छ चित्राग चूर्णपारद । अन्यश्च मारक
 चैव मणिराग रसोद्भव ॥ ५ ॥ रजक रसगर्भ च सप्रोक्त ' राजनामक ' ।
 मणिरागकर चैव ' धन्व ' चर्मानुरजन ॥ ६ ॥ इगुल तु तथा ' भाव '
 ' गण ' स्यात्पर्वताद्भव । रमारक तु हसप्रि सप्रोक्त ' द्रव्यरत्नके ' ॥ ७ ॥
 कपिशिर्ष तथा वैद्ये सप्रोक्त रक्तपारद । दरदस्त्रिविव प्रोक्तश्चर्मार
 शुक्लतुडक ॥ ८ ॥ हसपादस्तृतीय स्याद्वृणनुदुत्तरोत्तर । चर्मार शुक्लवण
 स्यात्सपीत शुक्लतुडक ॥ ९ ॥ जपाकुतुमयकाशा हसपादा महात्तम ।
 प्रोक्ता ' भावप्रकाश ' तु तथा ' कयनिघटके ' ॥ १० ॥ गैरेय धारत
 चैव कुरुविंद तथा स्मृत । अतिरक्त हसपाद तद्वद्वालकिन
 स्मृत ॥ ११ ॥ मणिर्वस्तथा प्रोक्त मैकत कौन्डलोहित । गुणा । हिंगुल

ममृतोत्पन्नं तु तस्य स्वर्परिका- 'नृपे' । तथा स्वर्परिकातुल्यं तदर्थेऽमुतसंगकं
 ॥ १६ ॥ तथैव तु तस्य रसकंसमोक्तं वैद्यनायकैः । गुणाः । स्वर्गरी फट्टका तिक्ता
 चक्षुष्या च रसायनी ॥ १७ ॥ त्वग्दोषशमनी रुच्या दीप्या पुष्टिवि-
 क्षेपी । नेत्रनमंल्यकारी च सर्वगेहहृदा तथा ॥ १८ ॥ कफपित्तक्षय-
 हरा 'नृपे धन्वे' स्मृता बुधैः । ३७ पारदा म० पारा गु० पारदो ।
 परिदो रसराजश्च रतनायो महारसः ॥ १९ ॥ रसश्चैव महातेजो रस-
 लोहो रसोत्तमः । सूत्राद् चपलो जैनः शिववीज शिवस्तथा ॥ २० ॥
 अमृतं च रसेन्द्रः स्याल्लोफेशो दुर्धरः प्रभुः । रुद्रजो हरतेजश्च रसधातुर-
 चिंत्त्यजः ॥ २१ ॥ स्नेहरश्मावरः प्रोक्तो देहवो मृत्पुनाशनः । रक्त-
 रक्तधांशकः सूतो देवो दिग्परस्तथा ॥ २२ ॥ प्रोक्तो रसाग्नयेष्टो
 यशोदश्च 'नृपे' स्मृतः । हरबीजो रुद्रेतश्चलश्चैव त्रिलोचनः ॥ २३ ॥
 शिवपुत्रो हेमनिधिलोकनाथस्तदुत्तरं । ज्ञानं चैव महानीलो 'धन्वनरि-
 निघटके' ॥ २४ ॥ पारतः शम्भुबीजश्च 'द्रव्यरत्न' प्रकीर्तितः ।
 शीतस्त्रिनेत्रा विख्यातो स्वामी तु रोपणस्तथा ॥ २५ ॥ प्रोक्तो 'मद-
 नपाले' तु 'भावे' चैव शिवाह्वयः । अविरजस्तथा सिद्धधातुश्चैव
 रजःस्वलः ॥ २६ ॥ पारश्च सूतकः प्रोक्तो वैद्यविद्याविश्वगुणैः ।
 गुणाः । पारदः पट्टतः प्रोक्तः सर्वगेगविनाशनः ॥ २७ ॥
 पद्मभूतमयश्चैव देहलोहकरस्तथा । मूर्छितो हरते स्याधीन्वद्धः स्नेहर-
 सिद्धिदः ॥ २८ ॥ सर्वसिद्धिकरो लीनो निरुद्धो देहसिद्धिदः ।
 प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु 'केच' चैव रसायनः ॥ २९ ॥
 चक्षुष्यो योगवाही स्यान्महावृष्यश्च कृष्णनुत् । ३८ अभ्रक । म०
 गु० अभ्रक । मृगमग्नं तन्मग्नं च ग्यामावरमतः परं ॥ ३० ॥
 ततोतिरिक्षमाकाशं स्वमनतःतदुत्तरं । गौडीजं गौरिजेयं च बहुपद्म 'नृपे'
 स्मृतं ॥ ३१ ॥ 'धन्वे' तु विमलं शुभ्रं वर्णीतं च पीतकं । निर्गलं
 पर्जन्योद्भूतं तथा म्रपटलं मतं ॥ ३२ ॥ 'मदने' पटलं स्वच्छं 'फोशे'
 तु गिरिनामसं । जाम्बूनं गगनं शून्यं नभः 'केपनिघटके' ॥ ३३ ॥

तपैव। गिरिजातेजःपार्वतीं 'द्रव्यरत्नकोः' । अथ तु गिरिजामीजं गिरिज
स्मलः घनं ॥ ३४ ॥ घनाब्दयं तथा प्रोक्तं गिरिविद्याविशारदैः ।
गुणाः । श्वेतः पतिं लोहितं नीलमग्रं चातुर्विध्यं पातिः भिन्नक्रियाहेम् ।
श्वेतः तारे काचेन चैतरके नील व्याघ्राद्यग्रमग्रयः गुणादयः ॥ ३५ ॥
नीलाग्र ददुंगे नामः पिनाको वज्र- इत्यपि ॥ ३६ ॥ चतुर्विंश भवे-
त्तत्र परीक्षा कथ्यते क्रमात् ॥ वदन्हीति निहिततनोति नितराः भेकारव
दुंगे नामः फूरकुरुते धनुः श्वनमुपादत्ते पिनाकः किल । वज्र नैव विकारमेति
तदिमान्यासंचमानः क्रमाद्रुली । च वगवाश्च कुस्मितगदी नीलकृ च राजापने
३७ ॥ अभ्रकं त्वमृतां चैव वानपिशक्षपावह ॥ ३८ ॥ प्रज्ञाकरं व्यग्र
काव्यमायुष्यदं ध्रुव । नम्य जिवः रुचिकरमागम कफनाशनं ॥ ३९ ॥
दीपन शीविधीर्धं च योगदाहीति माधुर । कषाप्र गुठ कृष्ण व्रणमेह-
तिषापहं ॥ ४० ॥ ग्रीहोदरकिमिहर त्रिदोषघ्नं तु चातुक्रुत् । अविहृत्
दाजिकरण 'नृप' केशे च मायके ॥ ४१ ॥ ३९ स्फाटिकी । प०
तुरदी । गु० पटकी । पटकी च स्फाटिकी प्रोक्ता श्वेता शुभ्रा च रगदा ।
ददरंगा रगदटा रंगंगा 'राजनामके' ॥ ४२ ॥ स्फाटिका फुल्लतु-
वरी शुभ्रा भूर्दरगदा । 'द्रव्यरत्नको' चैव तथा 'मदनपा-
लके' ॥ ४३ ॥ स्फाटिकास्या तु मृत्ता च वार्शति सौराष्ट्रमगदा ।
क्षीपाक्रान्तु सौराष्ट्री 'गणे' च हेमशोधनी ॥ ४४ ॥ तथा संया
षादनी चासुरमा सुरमृत्तिका । रगदा मृत्तिका चैव त्वरी । ददरा-
गदा ॥ ४५ ॥ नणाः । स्फटी च कटका क्षिप्वा च पापा मयरापहा ।
मेहकुच्छ्रुतमीशोपदांपरी ददरगदा ॥ ४६ ॥ 'शोपाह्वकफपित्तर्षा
विषमणविनाशनी । चित्रकृष्णविसर्पघ्नी योनिसंयानकारिणी ॥ ४७ ॥
'नृप' द्रव्ये मदे भावे । भिषग्भिः परिकीर्तिता । ४० सुद्रसंख । म० लहान
शंख । गु० नहानो शंख । सल्लकः सुद्रसंखश्च शंबूको नखसंखकः ॥ ४८ ॥
प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु 'केये' शंखनकः स्मृतः । लघुसंखस्तथा
प्रोक्तो । 'द्रव्यनामनिघटके' ॥ ४९ ॥ गुणाः । सुद्रकः फट्कारितकः

गु० सोमल । ततो मूर्धेकपापाणस्त्वास्तुपापाण एव च ॥ ११ ॥ प्रोक्तो
 'राजनिघटे' तु लोहसंकरकारकः । १३ माणिक्यं । म० 'माणिक्य' ।
 गु० माणिक्य' । माणिक्येय शोणेरत्नं च रत्नराट् वीररत्नकम् ॥ ४६०० ॥
 रागहृत्पद्मरागं च रत्नगोणोपलेस्तथा । सौमधिकं लोहितं च कुरुविद्
 तु शुभिरम् ॥ १ ॥ तत्तरेणो' रागमाणिक्यं रत्ननार्यक्रमेव च । प्रोक्तं 'राज-
 निघटे' तु वैद्यविद्याविघट्टेणैः ॥ २ ॥ माणिक्यं सत्यं चैव 'केय' ।
 वसुमणिः स्मृतः । कुप्यकं 'द्रव्यरत्ने' च 'मदने' शोणरत्नकं ॥ ३ ॥
 गुणाः । माणिक्यं मधुरं स्निग्धं वातपित्तत्रणापहं । रसायनकरं
 चैव प्रोक्तं 'राजनिघट्टके' ॥ ४ ॥ ५४ मौक्तिकं । म० गुं० मोती ।
 मुक्ता सौम्या मौक्तिकं च मौक्तिका तदनन्तरं । तारा च तारका चैव
 स्वम्भ सारं च शीतलं ॥ ५ ॥ नीरर्जं चैव नक्षत्रमिदं तथैव च ।
 लक्षं मुक्ताफलं चैव तद्वद्विदुर्लभं स्मृतं ॥ ६ ॥ मुक्तिकं चैव शौक्ल्यं
 तथा मुक्तेयणिः स्मृतः । शशिप्रियं तु स्वच्छं च हिमे हेमवतं तथैव ॥ ७ ॥
 सुधा शुभ्रं सुधाशुभ्रं रत्नं 'राजनिघट्टके' । शैलेयकं शुक्तिमणि-
 'धन्वतरिनिघट्टके' ॥ ८ ॥ रसोद्भवं 'केयदे' निषग्भिः परिकीर्तितं ।
 सिंधुजातं शुक्तिजश्च शारदो 'द्रव्यरत्नके' ॥ ९ ॥ शौक्तिकं सौक्तिकं
 प्रोक्तं 'मदने' परिकीर्तितम् । शुक्तिः शंखो गजश्चैव कोटः फणिमतः पर
 ॥ १० ॥ मच्छो वृणुर्दुर्लभं प्रोक्तो 'भावप्रकाशके' । गुणाः । मौक्तिकं
 मधुरं शीतं दृष्टिदोषविपापह ॥ ११ ॥ राजयक्षभविनाशं च क्षीणघोष-
 विवर्धनं । बलपुष्टिवर्धनं च त्रिदोषघ्नं 'तृपे' स्मृतं ॥ १२ ॥ ५५
 प्रवाल । म० पौवळ । गु० परवाळ । उद्धारकमणिश्चैव प्रवालो विद्रु-
 माशकः । भौमादिपद्मश्चैव रक्तं रक्तार्धं एव च ॥ १३ ॥ प्रोक्तो
 'राजनिघटे' तु रक्ताकुरलतामणिः । प्रवालं विद्रुमं चैव भूषणार्हं सुव-
 ल्लिजं ॥ १४ ॥ सामुद्रजं महारक्तं बलिपापाणसमम् । 'धन्वतरिनि-
 घटे' च संपोक्तं भिषजावरैः ॥ १५ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तं
 सिंधुवल्ग्वप्रनामकं । तथा सिंधुलताय तु रक्तवर्णं 'मदे' स्मृतं ॥ १६ ॥

चन्द्रकोपलः । शीताश्माशशिकान्तश्च चन्द्रिकाद्रुत ' राजकु ' ॥ ४९ ॥
 ' द्रव्यरत्नाकरे ' चैव समोक्तः स्फटिकोपमः । स्फटिकः ' केयदेवे ' तु
 ' मदे ' चन्द्रमणिः स्मृतः ॥ ५० ॥ गुणाः । चन्द्रकान्तस्तु शिशिरः
 स्निग्धः पित्तस्रतापहृत् ॥ ६६ ॥ राजावर्तः । म० गु० राजावर्तमणिः ।
 राजावर्तो नृपावर्तो राजन्योवर्तकस्तथा ॥ ५१ ॥ आवर्तमणिसहस्र
 ह्यावर्तो ' राजनामके ' । गुणाः । राजावर्तः कटुः स्निग्धः शिशिरः
 पित्तहा ' नृपे ' ॥ ५२ ॥ ६७ पेरोजः । म० पेरोजः । गु० पीरोजो ।
 हरिताश्म तु पेरोज भस्माम्, हरित द्विधा । गुणाः । पेरोजः सुकषाय
 स्यान्मधुर दीपन परम् ॥ ५३ ॥ चराचरविषमः च शूलभूतहर ' नृपे ' ।
 इति, सुवर्णादिवर्गः समाप्तः ।

१२. पानीयवर्गः ।

१ पानीयः । म० । गु० पाणी । पानीयं जीविन् चैव, वनममृतमेव
 च ॥ ५४ ॥ पुष्कराम्भस्तु पाथश्च शम्भुर च पथस्तथा । सलिलमुवक
 चापो वातुणः करुवधनम् ॥ ५५ ॥ जल नीर च कीलाल, वारि तु कम-
 लानि च । विशाणुशी, च भुवनमरातिदहन तथा ॥ ५६ ॥ निन्नम मेघ-
 प्रसव क्षीर घनरस रसः । प्रोक्त ' राजनिषण्डे ' तु, वातोप सर्वतोमु-
 खम् ॥ ५७ ॥ नील वीर्य च शम्भोम्भु ' धन्वन्तरिनिषण्डके ' । गुणाः ।
 पानीयं मधुर हैम रुचिद् शोषहारकम् ॥ ५८ ॥ तृष्णामोहघातिहर
 भुक्तान्नस्य च पाचनम् । निद्रालस्यविषम च श्रुतातिवर्षण स्मृतम् ॥ ५९ ॥
 वीर्यर वीर्यजनन, पुष्टिः ' द्राजनामके ' । पित्तव्रणानीर्णहर छर्दिमू-
 र्च्छापदापहम् ॥ ६० ॥ प्रोक्त ' द्रव्यनिषण्डे ' च पुरातनचिकित्सके ।
 २ आकाशोदकः । दिव्योदक खवारि, स्यादाकाशसलिल तथा ॥ ६१ ॥
 व्योमोदक चान्तरिक्षजल चेष्वभिवाहयम् । गुणा । दिव्योदक त्रिदो-
 षघ्न मधुर पश्यद पम् ॥ ६२ ॥ रुच्य दीपनद तृष्णाम्रममेहापहारकम् ।
 ३ भर्द्दवर्गील पावसाचै पाणी । सद्योवृष्ट्यम्भु भूनिस्थ कलुष

दोषदायकम् ॥ ६३ ॥ चिरस्थित लघु स्वच्छ पथ्य स्वादु सुखा-
यह । ४ समुद्र । यादोनाथसमुद्रासिन्धुजलदाकूपारपाथोभयः पारावारपयो-
धिमागरसरिन्नाथाश्च वारानिधिः । अम्भोराशिसरस्वदम्बुधिनदीनाथा-
ब्धिनिर्त्यार्णवेदन्वद्वारिधिवार्धयः कविरपानाथोऽपि रत्नाकरः ॥ ६४ ॥
गुणा । सागरस्थोदकविस्त लवण रक्तरोगकृत् ॥ ६५ ॥ उष्ण वैव-
र्ण्यद चैव दाहपित्तकर ध्रुवम् । त्रिदापकृद्भिषङ्नाथे प्रोक्त ' राजनि-
घण्टके ' ॥ ६६ ॥ ५ नदी । नदी धुनी निर्झरणी तरगिणी सरस्वती
शैवलिनी समुद्रगा । कूलकपा कूलवर्ता च निम्नगा शैवालर्नि सिन्धुरथा-
ऽऽपगाऽपि च ॥ ६७ ॥ 'हविनी समुद्रकान्ता सागरगा न्हादिनी सरि-
रूप' । स्रोतस्विनी मुनीरा रोधोवक्त्रा च वाहिनी तटिनी ॥ ६८ ॥ गुणा ।
नादेय सलिल स्वच्छ लघु दीपनपाचनम् । रुच्य तृपापह पथ्य मधुर चैव-
दुष्णकम् ॥ ६९ ॥ नदीसामान्यमुदक स्वच्छ दीपनपाचनम् ॥ । तृपापह
रुचिकर मधुर त्वीपदुष्णक ॥ ७० ॥ ६ समस्तनदी नामानि । गङ्गा
भानुसुतारेवा चन्द्रभागा सरस्वती । मधूमती पिशाचाप शोणो घर्षरक-
स्तथा ॥ ७१ ॥ वेन्नवती क्षोद्रवती ययोष्णी तापी वितस्ता । सरयूश्च
सिन्धु । मही सुरेन्द्री हाथा गौतमी स्यात्कृष्णा च । तुङ्गा
च कावेरिकान्या ॥ ७२ ॥ इत्येवमाद्याः सरितः समस्ता तडागवापी
न्हृद्रूपकाद्याः । अनेष्वनूपात्मदेशभेदा लोकाभिधानैः स्वयमूह-
नीयैः ॥ ७३ ॥ धाराकारादिक तोयमन्तरिक्षमव तथा । परीक्षे च तथा
चोक्त ज्ञातव्या जलवेदिभि ॥ ७४ ॥ ७ पृथङ्मन्यादिनामगुणाः ।
भागीरथी । गङ्गा स्वर्गसरिद्धरा त्रिपथगा मन्दाकिनी जान्हवी पुण्या विष्णु-
पदी समुद्रसुभगा भागीरथी स्वर्णदी । त्रि-स्रोता सुरदीर्घिका-सुरनदी
सिद्धापगा स्वर्धुनी ज्येष्ठा जन्हुमुता, च । मीन्यजननी शुभ्रा
च शैलेन्द्रजा ॥ ७५ ॥ गुणाः । शीत स्वादु स्वच्छमत्यन्तरुच्य पथ्य
पाक्य पावन पापहारि । तृष्णामोहध्वसन दीपन च प्रज्ञा दत्ते वारि
भागीरथीयम् ॥ ७६ ॥ ८ यमुना । यमुना तपनतनूजा कलिदकन्या यमम्बना च

कालिंदी । गुणाः । पित्तदाहवमनश्रमापहं स्वादुवातजननं च पाचनम् ।
 ॥ ७७ ॥ बन्धिदीपनकरं च रोचनं यामुनं जलमिदं बलपदम् । ९
 नर्मदा । रेवा मेकलकन्या सोमसुता नर्मदा च विज्ञेया ॥ ७८ ॥ गुणाः ।
 सलिलं लघु शीतलं सुपथ्यं कुरुते पित्तकफप्रकोपनम् । सकलामयमर्दनं
 च रुच्यं मधुरं मेकलकन्यकासमुत्थम् ॥ ७९ ॥ १० सरस्वती ।
 सरस्वती पृथ्वीसमुद्भवा च सा दाक्षप्रदा ब्रह्मसती च भारती । वेदाग्रणी-
 श्वेव पयोष्णिजाता वाणी विशाला कुटिला दशान्धा ॥ ८० ॥
 गुणाः । सरस्वतीजलं स्वादु पूतं सर्वरुजापहम् । रुच्यं दीपनदं पथ्यं
 देहकान्तिकरं लघु ॥ ८१ ॥ ११ चन्द्रभागा—काश्मीरे प्रसिद्धा ।
 गुणाः । चान्द्रभागसलिलं सुशीतलं दाहपित्तशमनं च वातघ्नम् १२
 मधुमती । काश्मीरे प्रसिद्धा । चन्द्रभागगुणसाम्यदं जलं किंच माधुमतम-
 मिदीपनम् ॥ ८२ ॥ १३ श्रुतद्रवादिनदीजलानां गुणाः । श्रुतद्वेर्वि-
 पाशापुजः सिन्धुनद्याः सुशीतं लघु स्वादु सर्वामयघ्नम् । जलं निर्मलं
 दीपनं पाचनं च प्रदत्ते बलं बुद्धिमेधायुजं च ॥ ८३ ॥ १४ शोण-
 जलगुणाः । शोणे पर्परके जलं तु रुचिदं संतापशोषापहं पथ्यं बन्धि-
 करं तथा च बलदं क्षीणांगपृष्टिप्रदं । १५ वेत्रवती । तत्रान्या दधते
 चलं समुधुरं कान्तिप्रदं पृष्टिदं वृष्यं दीपनपाचनं बलकरं वेत्रावतीपा-
 वनी ॥ ८४ ॥ १६ पयोष्णी । पयोष्णीसलिलं रुच्यं पवित्रं पाप-
 नाशन । सर्वामयहरं सौख्यं बलकान्तिप्रदं लघु ॥ ८५ ॥ १७ वितस्ता
 । वितस्तासलिलं स्वादु त्रिदोषशमनं लघु । प्रज्ञाबुद्धिप्रदं पथ्यं तापजाड्य-
 हरं परम् ॥ ८६ ॥ १८ यही । यहीजलं च सुस्वादु बलपित्तकरं लघु । १९
 शरयू—उत्तरे प्रसिद्धा पश्चिमगंगा । शरयूसलिलं स्वादु बलपृष्टिप्रदायकं
 ॥ ८७ ॥ २० गोदावरी । गोदावरी गीतमसमवासा ब्रह्माद्रिजाताऽप्यथ
 गीतमी च । गुणाः । पित्तातिरक्तातिसमीरहारी पथ्यं परं दीपनपाप-

१ वेत्रवती उत्तर हिंदुस्थानान्न प्रसिद्धा. २ पयोष्णी विन्ध्याद्र्या दक्षिणेण प्रसिद्धा. ३ विन्ध्या काश्मीरात्त प्रसिद्धा.

हारि ॥ ८८ ॥ कुष्ठादिदुष्टामयदोषहारि गोदावरी वारि तृषानिवारि ।
 २१ कृष्णा । कृष्णानदी कृष्णसमुद्रवा स्यात्सा कृष्णवेणाऽपि च
 कृष्णगंगा ॥ ८९ ॥ गुणाः । काष्ण्यं जाड्यकरं स्वादु पूत पित्तास्रको-
 पनम् । कृष्णवेणानलं स्वच्छं रुच्यं क्षीपनपाचनम् ॥ ९० ॥
 २२ घट्टप्रभा । कृष्णासमगुणं पथ्यं लघु स्वादुकरं तथा । सुकान्तिदं
 मलापघ्नं प्रोक्तं ' राजनिघण्टके ' ॥ ९१ ॥ २३ भीमरथी ।
 मलापहा भीमरथी च घट्टगा यथा च कृष्णानलसाम्यदा गुणैः ।
 मलापहाघट्टगयोस्तथाऽपि पथ्यं लघु स्वादुतरं सुकान्तिदम् ॥ ९२ ॥
 २४ तुंगभद्रा । तुंगभद्राजलं सिग्धं निर्मलं स्वाददं गुरु । कंडुपित्तास्रहृत्
 प्रायः साम्ये पथ्यकरं ' नृपे ' ॥ ९३ ॥ २५ कावेरी । कावेरीस-
 लिलं स्वादु श्रमघ्नं लघु क्षीपनम् । द्रुकृष्ठादिदोषघ्नं मेधाबुद्धिरुनिप्र-
 दम् ॥ ९४ ॥ २६ नदीविशेषगुणाः । नदीनामित्थमन्यासां देशदो-
 षादिभेदतः । तत्तद्गुणान्वितं वारि ज्ञातव्यं कृतबुद्धिभिः ॥ ९५ ॥ नद्या गूर्वा
 प्राङ्मुखीवाहिनी या लघ्वी पश्चाद्वाहिनी निश्चयेन । देशे देशे तद्गुणानां
 दिशेषादिषा धत्ते गौरवं लाघवं च ॥ ९६ ॥ विन्ध्यात्याची याऽप्यवाची पत्तीची
 या चोर्दाची स्याज्जदी सा क्रमेण । वाताटोपं श्लेष्मपित्तातिलोपं पित्तो-
 द्रकं पथ्यपाकं च धत्ते ॥ ९७ ॥ हिमवति मलयक्षले च विन्ध्ये प्रम-
 वति सहागिरी च या स्रवन्ती । सुनति किल शिरोरुजादिदोषानपनुदतेऽपि
 च पारियात्रजाता ॥ ९८ ॥ इति देशविशेषाज्जदीजलगुणाः । २७
 ताम्रपर्णी । ताम्रपर्णीनदीतोय पवित्रं पुण्यवर्धनं । स्नानपाने हितं प्रोक्तं
 वैद्यै ' राजनिघंटके ' ॥ ९९ ॥ २७ कालभेदाश्रदोजलगुणभेदः । नद्यः
 प्रावृषिजान्तु पीनसकफश्वासादिकासंपदाः पथ्या वातकफापहा शरदिजा हे-
 मतत्रा बुद्धिदाः । संतापं शमयन्ति शं विदधते शीशिर्षवामंतत्रास्मृष्णा-
 दाह्वमिश्रमार्तिशमदा श्लेष्मे यथा सद्रुणाः ॥ १०० ॥ २८ अनूपदे-
 शजम् । अनूपसलिलं स्वादु सिग्धं पित्तहरं गुरु । तनोति पामक-
 ण्डूतिककवातन्त्ररामयान् ॥ १ ॥ २९ जांगलसन्निभम् । जांगलं

सलिलं स्वादु त्रिदोषघ्नं रुचिप्रदम् । पथ्यं चाऽयुर्वलवीर्यपुष्टिदं कौतिकु-
 तारम् ॥ २० ॥ ३० । साधारणजलगुणविशेषः । साधारणजलं रुच्यं
 दीपनपाचनं लघु । श्रमतृष्णापहं वातकफमहघ्नपुष्टिदं ३ ॥ ३१ ॥ विशेष-
 जलं । जात ताम्रमृदस्तदेव सलिलं वातादिदोषप्रदं देशान्जाड्यकरं च
 दुर्जरतरं दोषापहं धूसरम् । वातघ्नं तु शिलाशिरोत्थममलं पथ्यं लघु
 स्वादु च श्रेष्ठं श्याममृदस्त्रिदोषशमनं सर्वामपघ्नं पथ्यः ॥ ४ ॥ ३२
 हृद्ग्नारि । म० डोहाचें पाणी । हृद्ग्नारि 'घण्टिजननं मधुरं कफवात-
 हारि पथ्यं च । ३३ प्रस्रवणजलं । ओहळाचें पाणी । प्रस्रवणजलं
 स्वच्छं लघु मधुरं रोचनं च दीपनकृत् ॥ ५ ॥ ३४ तडागमं-
 लिल । तळ्याचें, पाणी । तडागसलिलं स्वादु कपाय
 वातदं कियत् । ३५ चापीजलं । बिहिरिचें पाणी । चापीजलं
 तु संतापि घातश्लेष्मकरं गुरु ॥ ६ ॥ ३६ कूपोदक । आडाचें पाणी ।
 कफघ्नं कूपपानीयं क्षारं पित्तकरं लघु । ३७ औद्धिदजलं । औद्धिदं
 पित्तशमनं सलिलं लघु च स्मृतम् ॥ ७ ॥ ३८ केदारसलिलम्
 पाडाचें पाणी । केदारसलिलं स्वादु विपाकं दोषदं गुरु । तदेव बद्धमुक्तं
 तु विशेषादोषदं भवेत् ॥ ८ ॥ ३९ हंसोदक । नादेय नवमृदद्वेषु
 निहितं सततमक्रीडाभिर्यामिभ्यां च निविष्टमिन्दुकिरणैर्भन्दानिलान्दोलि-
 तम् । प्लाथैः परिवासितं श्रमहरं पित्तोष्णदाहे विषे मूच्छारिक्तमदात्य-
 येषु च हितं शंसन्ति हंसोदकम् ॥ ९ ॥ ४० घ्राणपीतोदकगुणाः ।
 यः पानीयं पिबति शिशिरं स्वादु नित्यं निशीथे प्रत्युषे वा पिबति
 यदि वा घ्राणरन्ध्रेण धीरः । सोऽयं सद्यः पतगपतिना स्पर्धते नेत्र-
 शक्या स्वर्गाचार्यं प्रहसति धिया द्देष्टि दसौ च तन्वा ॥ १० ॥
 ४१ दूपितजलम् । विष्मन्तारुण गीलिकाविषहतं तप्तं घनं फेनिलं दन्त-
 ग्राह्यमनुचरं सलवणं शैवालकैः गवृतम् । जंतुघातविमिश्रितं गुरुतरं
 पर्णोपपन्नाविलं चन्द्राक्रीडतिरोहितं च न पिबेत्तीरं जडं दंष्ट्रालम् ११ ॥
 ४२ शीतांशुपग्विर्जनम् । पार्श्वशूले पतिश्यामे वानदोषे नवज्वर ।

हिकाध्मानादिदोषेषु शीताम्बु परिवर्जयेत् ॥ १२ ॥ ४३ शृतशीतजलं ।
धानुक्षये रक्तविकारदोषे वान्त्यसंगहे विषविभ्रमेषु । जीर्णज्वरे शैथिल-
सन्निपाते जल प्रशस्तं शृतशीतल तु ॥ १३ ॥ ४४ तप्तादिजलम् ।
तप्तं पाथः पादभागेन हीन प्रोक्त पथ्य वातजातामयघ्नम् । अर्धांशोन
नाशयेद्वातापित्तं पादप्रायं तत्तु दोषत्रयघ्नम् ॥ १४ ॥ हेमन्ते पादहीन तु
पादार्धेन तु शारदं । प्रावृद्धवसते शिशिरे ग्रीष्मे चार्वावशोपितम् ॥ १५ ॥
कौष प्रस्रवण वाऽपि शिरिरर्तुवमन्तयोः । ग्रीष्मे चौड तु संवेत दोषद
स्यादतोऽन्वया ॥ १६ ॥ ४५ वेलाजलगुणाः । तप्तं दिवा जाड्यमुपैति
नक्तं नक्तं च तप्तं तु दिवा गुरु स्यात् । दिवा च नक्तं च नृभिस्तदाश्वतप्त
जलं युक्तमतीग्रहीतुम् ॥ १७ ॥ उष्णं कापि कापि शीतं क्वोष्णं कापि कापि
काथशीतं च पाथः । इत्थं नृणां पथ्यमेतत्पुक्तं कालावस्था देहसंस्थानुबो-
धात् ॥ १८ ॥ अपनयति पवनदोषं दलयति कफमाशु नाशयत्यरुचिम् । पाचयति
चान्नमनलं पुष्णाति निशीथपीतमुष्णाम्भः ॥ १९ ॥ रात्रौ पीतमजीर्ण-
दोषशमनं शसन्ति सामान्यतः पीतं चारि निशावसानसमयं सर्वाभयध्वं-
सनम् । भुक्त्वा तूर्ध्वमिदं च पुष्टिजननं प्राकृच्छदपुष्टिपदं रुच्यं जाठरव-
ह्निपाटवृत्तरं पथ्यं च भुक्त्वान्तरे ॥ २० ॥ ४६ जलपानलक्षणम् ।
अत्यम्बुपानान्नं विपच्यतेऽन्नमनम्बुपानाच्च स एव दोषः । तस्मान्नरो वह्नि-
विवर्धनार्थं मुहुर्पहुर्वारि पिबेदभूरि ॥ २१ ॥ ४७ जलभेदाः । जलं
चातुर्विधं प्राहुः श्लेष्मिणोऽद्भवाः । धारं च फारं चैव तीपारं हेममित्यपि
॥ २२ ॥ अम्बुवर्षोऽद्भवं धारं फारं वर्षोपलोद्भवं । नीहारतोषं तीपारं
हेमं पातर्हिणोऽद्भवं ॥ २३ ॥ धारं च द्विविधं प्रोक्तं गांगसामुद्रभेदतः । तत्र
गांगं गुणादयं स्याददोषं पाचनं परम् ॥ २४ ॥ यदा स्यादाश्विनं मासि
सूर्यः स्वातिविशाम्बयोः । तदाम्बु जलदेर्मुक्तं गांगमुक्तं मनीषिभिः ॥ २५ ॥
अन्यदा मृगशीर्षादिनक्षत्रेण यदम्बुदेः । अभिवृष्टमिदं तोयं सामुद्रमिति
शब्दिनम् ॥ २६ ॥ धाराधरे वर्षति रौप्यपात्रे विन्यस्य शाल्यादनासिद्ध-
पिण्डे । दध्नापदिभ्यं निहितं मुहूर्तादिभिरुक्तं गांगमथान्यथा स्यात् ॥ २७ ॥

गांगं जलं स्यादु सुशीतलं च रुचिप्रदं पित्तकफापहं च । निर्दोषमच्छ लघु
 तत्र नित्यं गुणाधिकं ज्योम्नि गृहीतमाहुः ॥ २८ ॥ चन्द्रकान्तोद्भवं वारि
 पित्तघ्नं विमलं लघु । मूर्च्छापित्तासदाहेषु हितं काशमदात्यये ॥ २९ ॥
 सामुद्रसालिलं शीतं कफवातपदं गुरु । चित्रावामाश्विने तत्र गुणाढ्यं
 गांगवद्भवेत् ॥ ३० ॥ पतितं भुवि यत्तोयं गांगं सामुद्रमेव वा । स्वस्वा-
 श्रयवशाद्गच्छेदन्यदन्यद्रसादिकम् ॥ ३१ ॥ आम्लं च लवणं च स्यात्प-
 तितं पार्थिवस्थले । आप्ये तु मधुरं प्रोक्तं कटुं तिक्तं च तैजसे ॥ ३२ ॥
 कषायं वायवीये स्यादव्यक्तं नाभये स्मृतम् । तत्र नागसमेनोक्तमुत्तमं दाष-
 चर्जितम् ॥ ३३ ॥ यत्र चेदाश्विने मासि नैव वर्पति वारिदः । गांगतोष-
 विहीने स्युः काले तत्राविका रुमः ॥ ३४ ॥ कचिदुष्णं कचिच्छीतं कचि-
 त्कथितशीतलम् । कचिद्भेषजसयुक्तं न कचिद्धारि वार्यते ॥ ३५ ॥ इति
 पानीयप्रकरणम् । इक्षु । उप्त । इक्षुः कर्कटको वशः कान्तारः सुकुमारकः ।
 असिपत्रो मधुतृणो वृष्यो गुडतृणो ' नृप ' ॥ ३६ ॥ ' धन्वन्तरिनिघण्टे '
 तु संप्रोक्तो वेणुनिखनः । महारसो गुडपत्रो तृणराजस्तदुत्तरम् ॥
 ३७ ॥ गण्डीरी मृदुपत्रश्च प्रोक्तो ' मदनपल्लवे ' । श्वेतेशु । पादरा-
 ऊप्त । श्वेतेशुस्तु मितेशुः स्यात्काष्ठैश्वर्षपत्रकः ॥ ३८ ॥
 सुवर्षाः प्राण्डुरेशुश्च काण्डेश्वर्षवलेक्षकः । ' नृपे ' ' केये ' मृरिसो
 गण्डाकी गुडदारु च ॥ ३९ ॥ गुडशूलोत्पिपत्रश्च शूलश्चैव तथा स्मृतः ।
 वशेशु भिषकी पौरस्तापसमिव ' द्रव्यके ॥ ४० ॥ गुणाः । सितेशुः
 कठिनो रुच्यो गुरुश्च कफमृत्रकुत् । दीपनः पित्तदाहघ्नो विपाके कोष्णघ्नो
 ' नृपे ' ॥ ४१ ॥ पुंढक । पुंढा ऊप्त । पुण्ड्रकस्तु रसालः स्याद्गोक्षुः
 सुकुमारकः । कर्षुतो मिश्रवर्णश्च नेपालेशु ' नृपे ' स्मृतः ॥ ४२ ॥
 गुणाः । पुण्ड्रोऽतिमधुरः क्षीतिः कफकृत्पित्तनाशनः । दाहश्रमहरो रुच्यो
 रसे सतर्पणः परः ॥ ४३ ॥ करं कशालि । रसाल ऊप्त । तथा परङ्कु-
 शालिः स्यादिक्षुवाटीक्षुवाका । यावनी चैक्षुयोनिश्च रसाली रसदा-
 लिका ॥ ४४ ॥ ' कथं देवनिघण्ट ' तु मय्यक् पोत्तेशुवालिका

गुणाः । करकशालिर्मधुरः शीतलो रुचिकृन्मृदुः ॥ ४५ ॥ पित्तदाह-
हरा वृष्यस्तेजोबलविवर्धनः । कृष्णैक्षु । काळा ऊम । कृष्णैक्षुरिक्षरः-
प्रोक्तः इयामेक्षुः कोकिलाक्षकः ॥ ४६ ॥ इयामवशः इयामलेक्षुः कोकि-
लेक्षुश्च 'राजक' । 'धन्वन्तरि निघण्टे' च त्विक्षुगन्धः प्रकीर्तितः ॥ ४७ ॥
शतपर्वा ह्रस्वपर्वा वाशिका तदनन्तरम् । कान्तारो दीर्घपर्वा च 'केये'
कोकिलयष्टिका ॥ ४८ ॥ गुणाः । कृष्णैक्षुर्मधुरो हृद्यः पाके स्वादू रसे कटुः ॥
त्रिदोषघ्नो वीर्यदायी बलदायी 'नृपे' स्मृतः ॥ ४९ ॥ रक्तेक्षु । तांबडा
ऊम । रक्तेक्षुः सूक्ष्मपत्रश्च शोणा लोहिन उरकट । मधुरो न्हस्वमूलश्च
लोहिनेक्षु 'नृपे' स्मृतः ॥ ५० ॥ 'केयदेवनिघण्टे' तु दीर्घलोहितय-
ष्टिका । गुणाः । लोहिनेक्षुश्च मधुर पाके स्याच्छीतलो मृदुः ॥ ५१ ॥
पित्तदाहहरो वृष्यस्तेजोबलविवर्धनः । इक्षुमूल । इक्षुमूल त्विक्षुनेत्र तच्च
मोरटक तथा ॥ ५२ ॥ वशनेत्र वशमूल मोरट वशपूरकम् । गुणाः ॥
मूलादूर्ध्वं तु मधुरा मध्येऽतिमधुरास्तथा ॥ ५३ ॥ इक्षवस्तेऽग्रमागेषु
कमालवगनीरसाः । यंत्रपीडितरसगुणाः । यंत्रपीडपरसश्चैव श्लेष्मानि-
लहरो ध्रुवम् ॥ ५४ ॥ वातिहृद्वातजननो जाड्यकृत्पतिश्यायदः । मृन्त-
निष्पीड्यैक्षुरसो रक्तविधममापहा ॥ ५५ ॥ शीतलः श्लेष्मदोऽल्पश्च
स्निग्धो हृद्यो रुचिपदः । मूत्रशुद्धिकरश्चैव कान्तिकृद्बलकारकः ॥ ५६ ॥
बृहणस्तृप्तिदायी च वृष्यस्त्रेदोपवारण । अथेक्षुरसपानीयमिश्रगुणाः । तत-
स्त्रेक्षुरसश्चैव पानीपरसमिश्रितः ॥ ५७ ॥ कफानिलकरः प्रोक्तः पूर्वोक्ते सह-
'राजके' । गृह । गृह । इक्षुसारो गुडश्चैव मधुरो रसपाककृत् ॥ ५८ ॥ खण्डनो-
द्भवजः सिद्धो मोदकी घृतसारकः । शिशुप्रियः सितः । दिः स्यात्कृणो रमजो
'नृपे' ॥ ५९ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु मप्रोक्तो रसपाकजः । स्वादु-
लोष्टो घनश्चैव 'द्रव्ये' चैक्षुरसोद्भवः ॥ ६० ॥ गुणाः । गृहः सुम-
धुरः सारो गृह्णः कफवातनुत् । अहितः पित्तरके च जीर्णश्चैव रसा-
यनः ॥ ६१ ॥ यावनालमुहगुणाः । यावनालमुहः सारः कटुर्मधुर इव
हि । कफवातहरश्चैव प्राक्तो 'राजनिघण्टक' ॥ ६२ ॥ जीर्णगृहगुणाः ।

अथ जीर्णगडः प्रोक्तः पित्तघ्नश्च रसायनः । वातातिगिद्रुचिकरो हृद्य-
 स्त्रेदोषवारणः ॥ ६३ ॥ प्रमेहघ्नः श्लेष्मघ्नः श्लेष्मघ्नः श्लेष्मघ्नः श्लेष्मघ्नः 'नृप' ।
 मीनाण्डी । खडीसाखर । शर्कराक्ता तु मीनाण्डी श्वेता मत्स्यण्डिका च सा
 ॥ ६४ ॥ अहिच्छन्ना तु सिक्ता सिता चैव गृढोद्भवा । गुणाः । शर्करा मधुरा
 शीता पित्तदाहश्रमापह्ना ॥ ६५ ॥ रक्तदोषहृग आतिकृमिकापहृग 'नृप' ।
 यावनाली । जोंधळीसाखर ॥ ६६ ॥ यावनाली हिमोत्पन्ना हिमानी हिम-
 शर्करा । क्षुद्रशर्करिका क्षुद्रा गृढजाजलबिंदुजा ॥ ६७ ॥ गुणाः । हिमजा
 शर्करा गौल्या सोष्णा तिक्ताऽतिपिच्छिला । वातघ्नी सारिका रुच्या दाह-
 पिना हृदापिनी ॥ ६८ ॥ माध्वी मिता । मधाची साखर । माध्वी सिता
 मधूत्पन्ना मधुजा मधुशर्करा । माक्षीकशर्करा चैव क्षौद्रजा क्षौद्रशर्करा
 ॥ ६९ ॥ 'नृप' 'द्रव्ये' शृङ्गिका स्यात् माध्वी चैव तथा स्मृता ।
 गुणाः । उद्धृणं यन्मधु प्रोक्तं तद्गुणा तस्य शर्करा ॥ ७० ॥ विशेषाद्-
 लक्ष्यं च तर्पण क्षीणदेहिनाम् । तवराजशर्करा । यवासशर्करा त्वन्वा
 सुधा मोदकमोदकः ॥ ७१ ॥ तवराजः खण्डमारः खण्डजा खण्डमो-
 दकः । प्राक्ता 'राजनिषण्ड' तु 'द्रव्ये' चैव तथा स्मृता ॥ ७२ ॥
 यवश्वेता यवोद्भूता यावसकाथसम्भवा । गुणा । तवराजोऽतिमधुरः पित्त-
 श्रमतृषापहः ॥ ७३ ॥ वृष्यो विदाहमूर्च्छातिश्रान्तिशान्तिकरः सरः ।
 पुष्पोद्भवशर्करा । फूलसाखर । पुष्पोद्भवा पुष्पासेता प्रसूतरससम्भवा
 ॥ ७४ ॥ 'द्रव्ये' 'गणे' पुष्पजा च पुष्पसंस्कृतशर्करा । साधा-
 रणशर्करागुणा । दाह निवारयति तापमपाक्गोति तृष्णा नियच्छति
 निहन्ति च मोहमूर्च्छाम् । श्वाम निवारयति तपयतीन्द्रियाणि
 शीतं सदा सुमधुरः खलु सिद्धिखण्डः ॥ ७५ ॥ श्लेष्मघ्नः पुण्ड्रकशर्करा
 हितकरी क्षीणे क्षयऽराचके चक्षुष्या बलवर्धिनी सुमधुरा रुक्षा च वशे-
 क्षुजा । वृष्या तृप्तिवल्गुदा भ्रमहरा श्यामेक्षुजा शीतला ज्विग्वा
 कान्तिहरा रमालजनिता रक्तेक्षुजा पित्तजित् ॥ ७६ ॥ मधः । मध ।
 मधु क्षौद्र च माक्षीक माक्षिक कुसुमामयम् । पुष्पामव यवत्र च पित्र्य

पुष्परसाह्वयम् ॥ ७७ ॥ मधुजातयः । मधाच्या जाती । माक्षिक
 आमर क्षौद्र पौत्तिक छात्रक तथा । अर्घ्यमौद्दालक दालमित्यष्टौ मधु-
 जातयः ॥ ७८ ॥ नानापुष्पसाहारा कपिला वनमक्षिकाः । या. स्थूला-
 स्ताभिरुत्पन्न मधु माक्षिकमुच्यते ॥ ७९ ॥ ये स्निग्धाञ्जनगोलाभाः पुष्पा-
 सवपरायणाः । अमरैर्जनितैस्त आमर मधु भण्यते ॥ ८० ॥ पिंगला
 मक्षिकाः सुक्ष्माः क्षुद्रा इति हि विश्रुताः । ताभिरुत्पादितं यत्तु तत्क्षौद्र
 मधु कथ्यते ॥ ८१ ॥ अन्नजा मक्षिकाः पिंगा पुत्तिका इति कीर्तिता ।
 तज्जात मधु धीमाद्भिः पौत्तिक समुदाहृतम् ॥ ८२ ॥ छात्राकार
 तु पटल सरघा पीतापिंगला । यत्कुर्वन्ति तदुत्पन्न मधु छात्र-
 कमीरितम् ॥ ८३ ॥ मक्षिकास्तीक्ष्णतण्डा पास्तथा पट्पदस-
 न्निभाः । तदुद्भूतं यदर्घ्यं तदर्घ्यं मधु वर्ण्यते ॥ ८४ ॥ औद्दालः कपिलाः
 कीर्ण भमरुदलना. स्मृताः । वल्मीकान्तस्तदुत्पन्नमौद्दालकमुदीर्यते ॥ ८५ ॥
 इन्द्रनीलदलाकाराः सूक्ष्माश्चिन्वन्ति मक्षिकाः । यद्वृक्षकोटरान्तस्थं मधु
 दालमिदं स्मृतम् ॥ ८६ ॥ इत्येतस्याष्टधा भेदैरुत्पत्तिः कथिता क्रमात् ।
 माक्षिक तेलवर्णं स्याच्छुत आमरमुच्यते ॥ ८७ ॥ क्षौद्रं तु कपिलाभासं
 पौत्तिक घृतसन्निभम् । अपीतवर्णं छात्रस्यापिंगलं चार्घ्यनामकम् ॥ ८८ ॥
 औद्दालं स्वर्णतट्टशमापीतं दालमुच्यते । गुणाः । माक्षिक मधुर रुक्ष
 लघु श्वासादिदोषघ्नम् ॥ ८९ ॥ आमर पिच्छल रुक्ष गंधर मुखजाड्य-
 जित् । क्षौद्रं तु शीत चक्षुष्म पिच्छल पित्तवातजित् ॥ ९० ॥ पौत्तिक
 मधु रुक्षोष्णमसपित्तादिदाहकृत् । चित्रमेहकृमिघ्नं च विद्याच्छात्र
 गुणोत्तमम् ॥ ९१ ॥ अर्घ्यं मध्वतिचक्षुष्यं कफपित्तादिदोषहृत् । औद्दाल-
 कं तु कुष्मादिदोषघ्नं सवसिद्धिदम् ॥ ९२ ॥ दालं कटु कषायाम्लं
 मधुरं पित्तदायि च । नव मधु भवन्त्यान्यं नातिश्लेष्मकरं परम्
 ॥ ९३ ॥ देहस्योल्यापहं ग्राहि पुराणं मधु लेखनम् । एक
 दोषघ्नयम मधु विविगरुजाजाड्यजिह्वामयादिध्वजं धत्ते च रुच्य
 बलमतिधृतिश्च वीर्यवृद्धिं विरते । आमं चेटामगुल्माभयपदनरुजं पित्त-

दाहासवोपमातन्वानं विशोष जनयति नयति ध्वसमष्टांगवृद्धिम् ॥ १४ ॥
 व्रणशोधनसंधाने व्रणसरोपणादिषु ॥ १५ ॥ साधारण्या मधु हितं
 तत्तुल्या मधुशर्करा । उष्णैः सहोष्णकाले वा स्वयम्पूष्णमथापि वा ॥ १६ ॥
 अज मधु मनुष्याणां विषवत्तापदायकम् । कीटक्रादियुतम्लवूषित पञ्च
 पर्णपितकं मधु स्वतः । कण्टकोटरगतं च मेचरु तच्च गेहजनितं च
 दोषकृत् ॥ १७ ॥ वण्डेर्निहत्य यदुपात्तमपास्तदश तादृग्विधं मधु
 रसायनयोगयाम्यम् । हिकामुदाकुरविशोफरुफवणादिदोषापहं भवति
 दोषदमन्यथा चेत् ॥ १८ ॥ इति मधुप्रकरणम् । मय । दारु । मय
 सुरा प्रसन्ना स्थान्मदिरा वारुणी वरा ॥ १९ ॥ मत्ता कादम्बरी जीता
 चपला क्रामिनीम्रिया । मदगन्धा च माध्वीरु मधु सन्धानमासवः ॥ ४८०० ॥
 परिसृताऽमृता वीरा मेधावी मदनी च सा । सुप्रतिभा मनोज्ञा
 च विपाना मोदिनी तथा ॥ १ ॥ हालाहलगुणाऽगिष्ट सर-
 कोऽथ मधूलिका । मदोत्कटा महानन्दा प्रोक्ता ' राजनिघण्टके ' ॥ २ ॥
 रसा इरा तु मडा च मदकारी च माध्वी । जगदोन्मादका हाला बला
 तु वरुणात्मजा ॥ ३ ॥ ' धन्वे ' ' द्रव्ये ' सुष्टुगन्धा शुण्डा च परि-
 कीर्तिता । हारा सुधा च विख्याता कल्पा गन्धोत्तमा तथा ॥ ४ ॥ देव-
 स्रष्टाभिषक्श्रेष्ठैः प्रोक्ता ' मदनपालके ' । गुणाः । मय सुमधुराश्लं
 च कफगारुतनाशनम् ॥ ५ ॥ बलवीषिकर हृद्य स्रमेतन्मदावहम् । मय
 तादन्त्रिविधं गौडी माध्वी च पैष्टिका चेति ॥ ६ ॥ अन्यच्च सैन्धिकादि
 द्रव्यान्तरयागनो विविधम् । स्याद्धातकीरसगुडादिकृता तु गौडी पुष्पद्रवादि-
 मधुसारमयी तु माध्वी । पैष्टी पुनर्विविधान्यविकारजाता ख्याता मदा-
 धिकतयाऽत्र च पूर्वपूर्वा ॥ ७ ॥ तालादिरसनिर्घातः सैन्धी हाला सुरा
 जगुः ॥ ८ ॥ नानाद्रव्यकदम्बेन मय कादम्बर स्मृतम् । सैन्धी कादम्बरी
 चैव द्विविध मयलक्षणम् ॥ ९ ॥ गौडी तीक्ष्णोष्णमधुरा वातहृत्पित्तका-
 रिणी । बलकूदीपनी पथ्या कान्तिकृत्तर्पणी परा ॥ १० ॥ माध्वी तु

मधुरा हृद्या नात्युष्णा पित्तत्रातहृत् । पाण्डुकामलगुल्मार्शः प्रमेहशमनी
परा ॥ ११ ॥ पैष्टी कटूष्णा तीक्ष्णा स्यादीषद्वीडीतमा ' नृपे ' ।

इति पानीयवर्गः ।

१४ क्षीरादिवर्गः ।

१ क्षीरं । दूध । क्षीरं पीयूषमूधस्य दुग्ध स्तन्यं पयोऽमृतम् ॥ १२ ॥
' नृपे ' ' धन्वे ' वारिसात्म्य सौम्ये प्रसवणं तथा । समाभय जीवने च
प्रोक्त स्वादुरसापनम् ॥ १३ ॥ जीवनाहं च स्त्रीणां ' द्रव्ये ' सजी-
वनं स्मृतम् । २ दधि । दही । क्षीरज दधि मगल्यं बिरलं मस्तु तज्जलं
॥ १४ ॥ तक्रजन्म पयोद्देवर्नवनीतोद्भव ' धनौ ' । ३ संतानिका ।
साय । संतानिका तु सप्रोक्ता पयःफेनो ' मदे ' ध्रुवम् ॥ १५ ॥ ' ४
नवनीत । दधियं नवनीत च सारो ह्येयगवीनकम् । प्रोक्तं ' राजनिघ-
ण्टे ' तु प्राचीनभिषजावरैः ॥ १६ ॥ घृतहेतुर्दधिभवं दधिमण्डोद्भव तथा ।
शिशुमिषं ' धन्वके ' च तथैव मधनोद्भवम् ॥ १७ ॥ सारिर्गर्भं सारमन्ध
' द्रव्यं ' सारभय स्मृतम् । सारज मधन प्रोक्त वैद्य ' मदनपालके '
॥ १८ ॥ ५ घृत । तूप । घृतमाज्य हविः सर्पिः पवित्र नवनीतजम् ।
अमृतं चाभिरारश्च होम्यमायुश्च तैजसम् ॥ १९ ॥ प्रोक्तं ' राजनिघ-
ण्टे ' तु जीवनीय तु ' धन्वके ' । ६ मूक्षण । चोपडे । मूक्षणं जेहनं
ऋहः स्निग्धता मूक्ष एव च ॥ २० ॥ अभ्यंगोऽभ्यञ्जन चैव चोपडं तु
घृतादिकम् । ७ तक्र । ताक । तक्र मोरसज घोल कालसेयं विलो-
डितम् ॥ २१ ॥ दण्डाहतपरिष्टं च त्वम्लमोदम्बिकं तथा । मधितद्रव-
संज्ञं च द्रवो मस्तु ' नृपे ' स्मृतम् ॥ २२ ॥ श्वेत छागपयः सात्म्यं
स्मृतं ' धन्वन्तरी ' ध्रुवम् । ८ गोमूत्र । गोमूत्रं गोमूत्रं गोमूत्रं गोमूत्रं गोमूत्रं
गोमूत्रः ॥ २३ ॥ ' नृपे ' प्रोक्त तथा ' द्रव्ये ' गोमूत्रं नल्लाम् एव
च । गोपानीयं तथा गोभूगोसवश्च यवापकः ॥ २४ ॥ गोफिलाल च
गोनीरं ' धन्वे ' च सुरभीनलम् । ९ गोमय । शेण । गोमय गोपुरीष

च. गोविटा गोमलं ' नृपे १२ - ॥ २५ ॥ १०० काञ्जिकम् । काञ्जी ।
 काञ्जिकं-काञ्जिका वीरं कुल्माषाभिपयं तथा । अवन्ति सोमस्त्वानि
 सोमा धान्याम्ल एव च ॥ २६ ॥ आरुणालोऽम्लसारश्च प्रोक्तं ' तानि-
 घण्टके ' । सौवीरं चैव कुल्माषा-तथैवामिसुतं स्मृतम् ॥ २७ ॥ मन्त्र
 च सौवीरं सुविराम्लं तथैव च । यवगोधूमसंभूतं यवोत्पं च यवप्रभम्
 ॥ २८ ॥ तुषोदकं तुषोदं च प्रोक्तं ' धन्वन्तरौ ' ध्रुवम् । ११ बुक्कम्
 क्राञ्जीभेद । चूकं सहस्रवेधं चैरसाम्लं चूकवेधकम् ॥ २९ ॥ शाक-
 भेदनं चण्डं स्वाम्लसारं च चुक्रिका । १२ सौवीरकं । तुषोदकं । सौवी-
 रकं सुवीराम्लं गोधूमसलिलोद्भवम् ॥ ३० ॥ यवास्तजं यवोत्पं च
 तुषोत्पं च तुषोदकम् । १३ तण्डुलाम्बु । तांदुलायं ध्रुवम् । तण्डु-
 लायं तण्डुलाम्बु प्रोक्तं ' राजनिघण्टुकं ' ॥ ३१ ॥ गोदुग्धगुणाः ।
 गव्यं क्षीरं पथ्यमात्यतः सूच्यं स्वादु - क्षिप्रं विज्ञातागमम् ।
 फान्तिभञ्जावृद्धिमेषांगपुष्टिं धत्ते स्पष्टं वीर्यवृद्धिं विभक्ते ॥ ३२ ॥
 महिषीक्षीर । ह्यशीचं दूधं । गोत्वं तु महिषीक्षीरं विपाके क्षीर-
 गुरु । बलपुष्टिदं दूष्यं पिच्छदाटासनाशनम् ॥ ३३ ॥ अजापयः ।
 श्लेष्मीचं दूधं । अजानां लघूकायत्वाजानाद्रन्ध्रनिषेवणात् । नात्पन्धुराताइ
 व्याथामारसर्वव्याधिहरं परम् ॥ ३४ ॥ गोदुग्धवीर्याधिकं गुणे च सुक्षी-
 णदेहेद् च पथ्यमृक्तम् । स्थूलजदुग्धं कथितं पयोक्षिः सूक्ष्माजदुग्धं
 त्विहकिंनिवृत्तम् ॥ ३५ ॥ आविकं पयः । गेठीचं दूधं । आविकं तु पयः
 क्षिप्रं कफपित्तहरं परम् । स्थोत्पमेकहरं पथ्यं लोभशं गुरु वृद्धिदम्
 ॥ ३६ ॥ हस्तिनीपयः । हस्तिनीचं दूधं । मधुरं हस्तिनीक्षीरं दूष्यं
 गुरु फागपयम् । क्षिप्रं स्थैर्यकरं जीतं चक्षुष्यं बलवर्धनम् ॥ ३७ ॥
 अश्वीक्षीरम् । घोटीचं दूधं । अश्वीक्षीरं तु रुद्राम्लं लघुणं दीपनं लघु ।
 दुर्लभं स्थैर्यकरं वन्यं गौरवं फान्तिवृत्तारम् ॥ ३८ ॥ गर्दभपयः । गार्द-
 वीचं दूधं । बलवृद्धिदं दीक्षीरं वातश्वासहरं परम् । मधुराम्लरसं रुद्र-
 दीपनं पाणदे स्मृतम् ॥ ३९ ॥ उट्टीपयः । उट्टीचं दूधं । उट्टी-

क्षीरं कुष्ठशोकापहं तत्पित्ताशोघ्नं तत्कफाटोपहारि । आनाहार्तिं जन्तुगु-
 ल्मोदराख्यं श्वासोद्धासं नाशयन्त्याशु पीतम् ॥ ४० ॥ मानुषीपयः । स्त्रीचै दूध ।
 मधुरं मानुषीक्षीरं कषायं च हिमं लघु । चक्षुष्यं दीपनं पथ्यं पाचनं
 रोचनं च तत् ॥ ४१ ॥ सामान्यक्षीरगुणाः । क्षीरं कासश्वास-
 कोपाय सर्वं गुर्वामं स्यात्पायशो दोषदायि । तच्चेत्काथावर्तितं पथ्यमुक्तं
 नारीक्षीरं स्वाममेवाऽमयघ्नम् ॥ ४२ ॥ उक्तं गव्यादिकं दुग्धं धारोष्णम-
 मृतोपमम् । सर्वाभयहरं पथ्यं चिरसस्थं तु दोषदम् ॥ ४३ ॥ अन्यच्च ।
 अधाविकं पथ्यतमं शृतोष्णं क्षीरं स्वजानां शृतशीतमाहुः । धाराशुशीतं
 महिषीपपथ्यं गव्यं तु धारोष्णमिव प्रशस्तम् ॥ ४४ ॥ वृष्यं वृंहणमग्निव-
 र्धनकरं, पूर्वाण्डपीतं पयो मध्यान्हे बलदायकं रतिकरं कृच्छ्रस्य
 विच्छेदकम् । भाल्ये बान्हिकरं ततो बलकरं वीर्यप्रदं वार्धके, राज्ञौ क्षीर-
 मनेकदोषशमनं सेव्यं ततः सर्वदा ॥ ४५ ॥ क्षीरं, मुहूर्तत्रितयोपितं
 यदतस्तमेतद्विकृतिं प्रयाति । उष्णं तु दोषं कुरुते तदूर्ध्वं विपापमं स्यादु-
 वितं दशानाम् ॥ ४६ ॥ जीर्णज्वरे कफे क्षीणे क्षीरं स्यादमृतोपमम् ।
 तत्रैव तरुणे पीतं विषवद्भ्रमं मानुषम् ॥ ४७ ॥ चतुर्थमागं सलिलं
 निधाय यत्नाद्यदावर्तितमुत्तमं तत् । सर्वाभयघ्नं बलपुष्टिकारि वीर्यप्रदं
 क्षीरमर्तिप्रशस्तम् ॥ ४८ ॥ गव्यं पूर्वाण्डकाले स्यादपराण्डे तु
 माहिषम् । क्षीरं सशर्करं पथ्यं यद्वा स्वात्म्ये च सर्वदा ॥ ४९ ॥
 पित्तघ्नं शृतशीतलं कफहरं पक्वं तदुष्णं भवेच्छीतं यत्तु न पाचितं तद-
 खिलं विट्ममदोषप्रदम् । धारोष्णं त्वमृतं पयः अमहरं निद्राकरं कामिदं
 घृष्यं वृंहणमग्निवर्धनमतिस्वादु, त्रिदोषापहम् ॥ ५० ॥ क्षीरं न युज्यते
 कदाऽप्यतमं तमं न चैतलवणेन सार्धम् । विट्प्रजतन्धानरुमापमुद्रकोशा-
 तकीकन्दफलादिकैश्च ॥ ५१ ॥ तथा च । मन्त्रप्रसादमुद्रमुद्रमूलकैः
 कुष्ठमावहति सेवितं पयः । शाकनाम्बरसेस्तु सेवितं मारयन्त्यनुपमाशु
 सर्ववत् ॥ ५२ ॥ क्षीरसेवनम् । स्त्रियं शीतं गुरुक्षीरं सर्वकालं न
 सेवेत्तु । दीपाम्निं कुरुते मन्दं मन्दाग्निं नष्टमेव च ॥ ५३ ॥ नियमः

तीव्रामिना सेव्यं सुपक्वं माहिषं पयः । पुष्पन्ति धातवः सर्वे बलपुष्टि-
 विवर्धनम् ॥ ५४ ॥ क्षीरं गवाजकादेर्मधुरं क्षारं नवप्रसूतानाम् । रुक्षं च
 पित्तदाहं करोति रक्तामयं कुरुते ॥ ५५ ॥ मधुरं त्रिदोषशमनं क्षीरं
 मध्यप्रसूतानाम् । लवणं मधुरं क्षीरं विदाहजननं चिरप्रसूतानाम् ॥ ५६ ॥
 गुणहीनं निःक्षारं क्षीरं मध्यमं प्रसूतानाम् । मध्यवयसां रसायनमुक्तमिदं
 दुर्बलं तु वृद्धानाम् ॥ ५७ ॥ तासां मासत्रयादूर्ध्वं शुर्विणीनां च यत्पयः ।
 तद्वाहि लवणं क्षीरं मधुरं पित्तदोषकृत् ॥ ५८ ॥ वर्षभेदक्षीरादिगुणाः ।
 गवादीनां वर्णभेदाद्गुणा दुग्धादिके पृथक् । कैश्चिदुक्तो विशेषाच्च विशेषो
 वेशभेदतः ॥ ५९ ॥ गवां शुभ्राणां वातघ्नं कृष्णानां पित्तनाशनम् ।
 श्लेष्मघ्नं रक्तवर्णानां त्रीन्हन्ति कपिलापयः ॥ ६० ॥ देशविशेषे क्षीरा-
 दिगुणाः । देशेषु देशेषु च तेषु तेषु तृणान्मुनी मादृशदोषयुक्ते । तस्मैव-
 नावेव गवादिकानां गुणादि दुग्धादिषु तादृशं मतम् ॥ ६१ ॥ शीतं
 स्निग्धं गुरु मौल्यं वृण्यं पित्तापहं परम् । ज्ञेया चैवाभिधा तस्य क्रीलाटं तु
 पयश्शुद्धः ॥ ६२ ॥ इति क्षीरप्रकरणम् ॥ गोदधि । गार्दचें दही ।
 दधि गन्धमतिपवित्रं शीतं स्निग्धं च दीपनं बलकृत् । मधुरमरोचकहारि-
 आहि च वातामयघ्नं च ॥ ६३ ॥ महिषीदधि । हशीचें दही । माहिषं
 मधुरं स्निग्धं श्लेष्मकृद्रक्तपिचजित् । बलासवर्धनं वृण्यं भ्रमघ्नं शोषनं
 दधि ॥ ६४ ॥ अजादधि । शेळीचें दही । दध्यानं कफवातघ्नं लघूष्णं
 नेत्रदोषनुत् । दुर्गन्धमश्वासकासघ्नं रुच्यं दीपनपाचनम् ॥ ६५ ॥ आविकं
 दधि । मेंडीचें दही । आविकं दधि सुस्निग्धं कफपित्तकरं गुरु । वाते
 च रक्तवाते च पथ्यं शोफव्रणापहम् ॥ ६६ ॥ हस्तिनीदधि । हस्ति-
 णीचें दही । हस्तिनीदधि कषायलघूष्णं पक्षिशूलशमनं रुचिप्रदम् ।
 दीप्तिदं खलु बलासघदघ्नं वीर्यवर्धनबलप्रदमुक्तम् ॥ ६७ ॥ अश्वी-
 दधि । घोडीचें दही । अश्वीदधित्स्यान्मधुरं कषायं कफा-
 तिमुच्छामयहारि रुक्षम् । वातान्पदं दीपनकारि नेत्रदोषापहं
 तन्कथितं पृथिव्याम् ॥ ६८ ॥ गर्दभीदधि । गाढवीचें

दही । ' गर्दभीदधि रूक्षोष्णं लघुदीपनपाचनम् । ' मधुराम्लरसं रुच्यं
 वातदोषविनाशनम् ॥ ६९ ॥ उट्टीदधि । उट्टिणीचै दही । औष्ट्र-
 मशांसि कुष्ठानि कृमिशूलोदराणि च । विहन्ति कटुकं स्वादु किंचिद-
 म्लरसं दधि ॥ ७० ॥ स्त्रीदधि । स्त्रीचै दही । विपाके मधुरं बल्य-
 मम्लं संतर्पणं गुरु । चक्षुष्यं ग्रहदोषघ्नं । दधि स्त्रीस्तन्यसंभवम् ॥ ७१ ॥
 सामान्यदधिगुणाः । दध्यम्लं गुरु वातदोषशमनं संग्राहि मूत्रापहं
 बल्यं शोककरं च रुच्यशमनं बन्धेश्च शान्तिप्रदम् । कासश्वाससुपीन-
 सेषु विषमे शीतज्वरे स्वाद्वितं रक्तोद्रेककरं करोति सततं शुक्ररपः वृद्धि-
 पराम् ॥ ७२ ॥ दधिवर्जम् । लवणमरिचसर्पिः शर्करामुद्रधात्रीकुसुम-
 रसविहीनं नैतदभन्ति नित्यम् । न च शरदि वसन्ते नोष्णकाले न रात्रौ
 न दधि कफविकारे पित्तदोषेऽपि नाद्यात् ॥ ७३ ॥ त्रिकंदुकपुतमेतद्वा-
 जिकाचूर्णमिश्रं कफहरमनिलघ्नं बन्धिसंधुक्षणं च । तुहिनशिशिरकाले
 सेवितं चातिपथ्यं रचयति तनुदाढ्यं कान्तिमत्त्वं च नृणाम् ॥ ७४ ॥
 इति दधिप्रकरणम् ॥

मस्तु । दद्याचै पाणी । उष्णाम्लं रुचिपङ्क्तिं क्लमहरं बल्यं । कषायं
 सरं भृक्किच्छेदकरं तृषोदरगदद्वीहाशीसां नाशनम् ॥ स्रोतःशुद्धिकरं
 कफानिलहरं विट्ममशूलापहं पाण्डुश्वासविकारगुल्मशमनं । मस्तु मशस्तं
 लघु ॥ ४८७५ ॥

तक्र । ताक । उक्तं श्लेष्मसमीरहारि मथितं तल्लेष्मपित्तापहं रुच्यं प्राहु-
 रुदश्विगव्यमधिकं तक्रं त्रिदोषापहम् । मन्दाग्रावरुचौ विदाहविषम-
 श्वासात्तिकासादिषु श्रेष्ठं पथ्यतमं वदन्ति सुधियस्तक्रत्रयं हृत्तमम् ॥ ७६ ॥
 तक्रं त्रिदोषशमनं रुचिदीपनीयं रुच्यं वमिश्रमहरं क्लमहारि मस्तु । बल्य-
 प्रदं पवननाशमुदश्विदाख्यं शस्तं कफभ्रममरुद्धमनेषु घोलम् ॥ ७७ ॥
 अम्लेन वातं मधुरेण विषं कफं कषायेण निहन्ति सद्यः । यथा सुरा-
 णाममृतं हिताय तथा नराणामिह तक्रमाहुः ॥ ७८ ॥ आपातिसारे च ।

विपूचिकायां वातज्वरे पाण्डुषु कामलेषु । प्रमेहगुल्मोदरवातशूले नित्यं
पिबेत्तक्रमरोचके च । ॥ ७९ ॥ अपि च । शीतकालेऽग्निमान्ये च कफ-
पाण्डुमयेषु च । मार्गोपरोधे कुष्ठादिव्याधौ तक्रं प्रशान्तये ॥ ८० ॥
वातोदरी पिबेत्तक्रं पिप्पलीलवणान्वितम् । शर्करामरिचोपेतं स्वादु पित्तो-
दरी पिबेत् ॥ ८१ ॥ यवानीसिन्धवाजाजीव्योषमुक्तं कफोदरी । सन्नि-
पातोदरी तक्रं त्रिकटुक्षारसैर्ध्रुवैः ॥ ८२ ॥ तक्रवर्ज्यं । तक्रं दद्यान्न
क्षते नोष्णकाले नो दीर्घल्पे नो तृषामूर्च्छिते च । नैव भ्रान्तौ नैव
पित्तास्रदोषे नो दद्याद्दे स्रुतिकायां विशेषात् ॥ ८३ ॥ तक्रलक्षणं ।
तक्रं स्नेहान्वितं तुन्दनिद्राजाड्यप्रदं गुरु । अर्धावशिष्टं सामान्यं विशेषं
लघु पथ्यहम् ॥ ८४ ॥

नवनीत । लोणी । शीतं वर्णनलावहं सुमधुरं घृण्यं च पितापहं
वातघ्न कफहारकं रुचिकरं सर्वाङ्गशूलापहम् । कासघ्नं भ्रमनाशनं सुख-
करं कान्तिप्रदं पुष्टिदं चक्षुष्यं नवनीतमृद्धतनवं गोः सर्वदोषापहम्
॥ ८५ ॥ गार्ङ्गिं क्षशीचं लोणी । गव्यं च माहिषं चापि नवनीतं
नवोद्भवम् । शस्यते बालवृद्धानां बलकृद्वातवर्धनम् ॥ ८६ ॥ क्षशीचं
लोणी । माहिषं नवनीतं तु कषायं मधुरं रसे । शीतं घृण्यप्रदं ग्राहि
पिचान्नं तु बलप्रदम् ॥ ८७ ॥ शेळीचं लोणी । लघ्वनाजं तु मधुरं कषायं
च त्रिदोषनुत् । चक्षुष्यं दीपनं बन्धं नवनीतं हितं सदा ॥ ८८ ॥ लोमस
शेळीचं लोणी । नवनीतं नवोत्थं तु छागनं क्षयकृतानित् । बन्धं नेत्रा-
मयघ्नं तु कफघ्नं दीपनं परम् ॥ ८९ ॥ मेढीचं लोणी । मेढकं नवनीतं
तु हृष्टगन्धं च शीतलम् । मेधाहृद्गुरु पुष्टिं च रक्षत्य मन्दामिद्वीकनम्
॥ ९० ॥ ण्डकीचं लोणी । आविकं नवनीतं तु विषाके तु हिमं लघु ।
योनिशूले कफे वाते दुर्नाम्नि च हितं सदा ॥ ९१ ॥ हस्तिणीचं लोणी ।
हस्तिनीनवनीतं तु कषायं शीतलं लघु । तिक्तं विटग्निं जन्तुघ्नं हन्ति
पित्तफक्ताग्निम् ॥ ९२ ॥ पौडीचं लोणी । अश्वीयं नवनीतं रसात्कषायं
करुकामानित् । चक्षुष्यं षट्कं चोष्णमीषदातापहारकम् ॥ ९३ ॥

गाढवीचें लोणी । गर्दमीनवनीतं तु कषायं कफवातनुत् । बल्यं दीपनदं
पाके लघूष्ण मूत्रदोषनुत् ॥ ९४ ॥ उटिणीचें लोणी । औष्ट्र तु नवनीतं
स्याद्विपाके शीतलं लघु । वृणकृमिकफास्रघ्नं वातघ्नं विषनाशनम् ॥ ९५ ॥
स्त्रीचें लोणी । नवनीतं तु नारीणां रुच्यं पाके लघु स्मृतम् । चक्षुष्यं
सर्वरोगघ्नं दीपनं विषनाशनम् ॥ ९६ ॥ साधारणं नवनीत । शीतं रुच्य-
नबोद्धृतं सुमधुरं वृष्यं च वातापहं कासघ्नं कृमिनाशनं कफहरं । सग्राहि
शूलापहम् । बल्यं पुष्टिकरं तृषार्तिशमनं संतापविच्छेदनं चक्षुष्यं - श्रमहारि
तर्पणकरं दध्युद्भवं पित्तजित् ॥ ९७ ॥ जुनें लोणी । एकाहाध्युषितं
प्रोक्तमुत्तरोत्तरगन्धिदम् । अह्वयं सर्वरोगाद्व्यदधिजं तद्वृत्तस्मृतम् ॥ ९८ ॥
गाईचें तूप । धीकान्तिस्मृतिदायकं बलकरं मेधाप्रदं पुष्टिकृद्वात-
श्लेष्महरं श्रमोपशमनं पित्तापहं हृद्यदम् । वल्लेर्बुद्धिकरं विपाकमधुरं वृष्यं
वपुःस्थैर्यदं गव्यं हव्यतमं घृतं बहुगुणं मोग्यं मवेद्भाग्यतः ॥ ९९ ॥
ह्यशीचें तूप । सर्पिर्माहिषमुत्तमं धृतिकरं सौख्यप्रदं कान्तिकृद्वातश्लेष्म-
निवर्हणं बलकरं वर्णप्रदाने क्षमम् । दुर्नामग्रहणीविकारशमनं मन्दानले
दीपनं चक्षुष्यं नवगव्यतः परमिदं ह्वयं मनोहारि च ॥ १०० ॥
शेळीचें तूप । आजमाज्यं च चक्षुष्यं दीपनं बलवर्धनम् । कासश्वास-
कफातंकराजपक्ष्मासु शस्यते ॥ १ ॥ एडकीचें तूप । पाके लघ्वाविकं
सर्पिर्न च पित्तप्रकोपनम् । योनिदोषे कफे वाते शोषे कम्पे च तद्धितम् ॥
२ ॥ मेंढीचें तूप । मैडक घृतमतीवगौरवाद्बुद्ध्यमेव सुकुमारदेहिनाम् । बुद्धि-
पाटवकरं बलावहं सेवितं च कुरुते नृणां वपुः ॥ ३ ॥ हस्तिणीचें तूप ।
निहन्ति हस्तिनीसर्पिः कफपित्तविषक्रिमीन् । कषायलघु विटग्निं तिक्तं
चामिकरं परम् ॥ ४ ॥ घाडीचें तूप । अश्वासर्पिस्तु कटुकं मधुरं च कषा-
यकम् । ईषदीपनकृन्मूर्च्छाहारि वाताल्पदं गुरु ॥ ५ ॥ उटिणीचें तूप ।
घृतमौष्ट्र तु मधुरं विपाके कटुशीतलम् । कुष्ठकृमिहरं वातकफगुल्मोदरा-
पहम् ॥ ६ ॥ स्त्रीचें तूप । नारीसर्पिस्तु चक्षुष्यं पथ्य सर्वाभयापहम् ।
मन्दाग्निदीपनं रुच्यं पाके लघु विपापहम् ॥ ७ ॥ जुनें तूप । मदाप-

स्मारमूर्च्छादिशिरःकर्णाक्षिजा रुजः । सर्पिः पुराणं जयति व्रणशोधन-
रोपणम् ॥ ८ ॥ 'सामान्य तूप । आयुर्वृद्धिं वणुवि' दृढतां सौकुमार्यं च
कान्तिं नूनं धत्ते स्मृतित्रलकरं वान्तिविध्वंसनं च । पथ्यं बाल्ये वयसि
तरुणे वार्धके चातिवत्यं नान्यत्किञ्चित्त्रिजगति नृणां सर्पिषः पथ्यमस्ति ॥ ९ ॥

॥ इति घृतमकरणम् ॥

अथ काञ्जीगुणाः । काञ्जिकं वातशोफघ्नं पित्तज्वरविनाशनम् । दाहमू-
र्च्छाघ्नमघ्नं च शूलाध्मानविवन्धनुत् ॥ १० ॥ काञ्जिकं तिलतैलं च
पलितं वातहारकम् । दाहकं गात्रशैथिल्यं भक्षणांश्च च मर्दनात् ॥ ११ ॥
काञ्जीभेदचुक्रगुणाः । चुक्रे तित्काम्लकं स्वादु कफकासविनाशनम् ।
नासिकागददुर्गन्धशिरोरोगहरं परम् ॥ १२ ॥ गोधूमपवतु-
षाम्बुगुणाः । सौवीरिकं चाम्लरसं केश्यमस्तकदोषजित् । जरा-
शैथिल्यहरणं बलसंतर्पणं परम् ॥ १३ ॥ ध्रुवणगुणाः । तन्दुलोत्थं
च कविभिः कषायं मधुरं लघु ॥ सग्राहि विषविच्छेदितृद्दाहमणनाश-
कृत् ॥ १४ ॥ अथ शिवरसः । अजोदनः शिवरसश्चहृत्पुषिते रसे ॥
प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु प्राचीनभिषजावरैः ॥ १५ ॥ दीपनं मधुराम्लं तु
दाहजिल्लघुतर्पणम् ॥ १६ ॥ गोमूत्रगुणाः । गोमूत्रं कटु तिक्तोष्णं कफ
वातहरं लघु ॥ पित्तकृद्दीपनं मेघ्यं त्वग्दोषघ्नं मतिप्रदम् ॥ १७ ॥ शेळीचै
मूत्र ॥ अजामूत्रं कटूष्णं च रुक्षं नाडिविवर्तिजित् ॥ घृहीहोदरकफश्वास-
गुल्मशोफहरं लघु ॥ १८ ॥ महिषीमूत्र ॥ माहिषं मूत्रमानाहशोफगुल्मेषु
दोषनुत् । कटूष्णं कुष्ठकण्डूतिशूलोदररुनापहम् ॥ १९ ॥ मेंढीचैमूत्र ।
आविकं तित्तकटुकं मूत्रमुष्णं च कुष्ठजित् । दुर्नामोदरशूलास्रशोफमेह-
विषापहम् ॥ २० ॥ घोड्याचैमूत्र । अश्वमूत्रं च तिक्तोष्णं तीक्ष्णं च
विषदोषजित् । वातप्रकोपशमनं पित्तकारि मदीपनम् ॥ २१ ॥ गाढ-
घाचैमूत्र । खरमूत्रं कटूष्णं च क्षारं तीक्ष्णं कफापहम् । महावातापहं
भूतकम्पोन्मादहरं परम् ॥ २२ ॥ कन्देयाचैमूत्र । आण्डं तु कटुतिक्तोष्णं

लवणं पित्तकोपनम् । बल्यं अठररोगघ्नं वातदोषविनाशनम् ॥ २३ ॥ हस्ति-
मूत्र । हस्तिमूत्रं तु तिक्तोष्णं लवणं वातभूतनुत् । तिक्तं कषायं शूलघ्नं
हिक्काश्वासपरं परम् ॥ २४ ॥ नरमूत्र । मानुषं मूत्रमामघ्नं कुमित्रण-
विषांश्चनुत् । तिक्तोष्णं लवणं रुक्षं भूतत्वद्दोषवातनुत् ॥ २५ ॥ शूल-
गुल्मोदरानाह । वातजिच्छर्दनादिषु । मूत्रप्रयोगसाध्येषु गोमूत्रं कल्पये-
द्बुधः ॥ २६ ॥ इति मूत्रप्रकरणम् । अथ तैलम् । तैलं जेहोत्तमं चैव
तिलजं तिलसंभवम् । अभ्यञ्जनं मृद्भक्षणं च मर्दनं 'धन्व'नामके ॥ २७ ॥
तैलजाति । तैलेयत्तिलसर्षपादितकुसुमोत्थातसीधान्यजं यश्चैर-
ण्डकरञ्जकैर्गण्डफलैर्निम्बाक्षनैर्गुण्डकैः । ज्योतिष्मत्यभयोद्भवं मधुलिका
कोशाम्रचित्रीभवं कर्पूरत्रपुसादिजं च सकलं सिध्ये क्रमात्कथ्यते
॥ २८ ॥ तिळाचै तैल ॥ तिलतैलमलं करोति । -केश्यं मधुरं
तिक्तकषायमुष्णतीक्ष्णम् ॥ बलकृत्कफवातजन्तुसर्ज्वणकण्डूतिहरं च
कान्तिदायि ॥ २९ ॥ अथशिरसेल ॥ सर्षपतैलं तिक्तं कटुकोष्णं
वातकफविकारघ्नम् ॥ पित्तास्रदोषदं कृमिकुष्ठघ्नं । तिलवच्च चक्षुष्यम् ॥
३० ॥ कुसुमतैल ॥ कुसुमतैलं कृमिहारि तेजोबलापहं यक्ष्ममलापहं
च ॥ त्रिदोषकृत्पुष्टिबलक्षय-च करोति कण्डूं विकरोति दृष्टिम् ॥ ३१ ॥
जवसाचै तैल ॥ मधुरं त्वत्तसीतैलं पिच्छलं चानिलापहम् ॥ मदगंधि
कषायं च कफकासापहारकम् ॥ ३२ ॥ धान्यतैल ॥ गोधूमयावनाल-
त्रीह्रियवाद्यखिलधान्यजं तैलम् । वातकफपित्तशमनं कण्डूकुष्ठाविहारि
चक्षुष्यम् ॥ ३३ ॥ एरंडेल ॥ एरण्डतैलं कृमिदोषनाशनं वातामघ्नं
सकलाङ्गशूलहृत् । कुष्ठापहं स्वादु रसायनोत्तमं पित्तमकोपं कुरुतेति
दीपनम् ॥ ३४ ॥ करजेल । करञ्जतैलं नयनार्तिनाशनं वातामघ्नं-
सनमुष्णतीक्ष्णकम् । कुष्ठार्तिकण्डूतिविचर्चिकापहं लेपेन नानाविध-
चर्मदोषनुत् ॥ ३५ ॥ हिङ्गणाचै तैल । स्निग्धं स्यादिङ्गुदीतैलं मधुरं
पित्तनाशनम् । शीतलं कान्तिदं बल्यं श्लेष्मदं केशवर्धनम् ॥ ३६ ॥
निम्बेल । निम्बतैलं तु नात्युष्णं कृमिकुष्ठकफापहम् । बेहडेल । आक्ष स्वादु

हिमं केश्यं गुरु पिच्चानिलातिनुत् ॥ ३७ ॥ अथ शेडगेल् । शिग्रु-
 तैलं कटूष्णं च वातजिक्फनाशनम् । त्वादोषघ्नणकण्डूतिशोफहारि च
 पिच्छलम् ॥ ३८ ॥ अथ ज्योतिष्मतीः तैल । कटूष्णोतिष्मतीतैलं
 तिक्तोष्णं वातनाशनम् । पित्तसंतापनं मेधाप्रज्ञाबुद्धिविवर्धनम् ॥ ३९ ॥
 सर्वव्याधिहरं पथ्यं नानात्वग्दोषनाशनम् । अथ हिरडेल । शीतं हरी-
 तकीतैलं कषायं मधुरं कटु ॥ ४० ॥ अथ महुरेल । तीक्ष्णं तु
 राजिकतैलं श्लेष्म वातादिदोषनुत् । शिशिरं कण्डूदोषघ्नं केश्यं त्वग्दोष-
 नाशनम् ॥ ४१ ॥ अथ अम्बसेल । सरं कोशाम्नजं तैलं कृमिकुष्ठव्रणापहम् ।
 तिक्ताम्लमधुरं बल्यं पथ्यं रोचनपाचनम् ॥ ४२ ॥ चिंचारेतैल । यवाचिञ्चीमवं
 तैलं कटुपाके विलेखनम् । कृफवातहरं रुच्यं कषायं नातिशीतलम् ॥ ४३ ॥
 अथकर्पूरतैल ॥ कर्पूरतैलहिमतैलसितांशुतैलं शीताघ्नतैलतुहिनांशुसुधांशु-
 तैलम् । कर्पूरतैलकटुकोष्णकफापहारि वातामयघ्नरददादर्थदपिचकारि
 ॥ ४४ ॥ अथ कांकडीवालुकादितैल । त्रपुसेर्षारिकचारफकूष्माण्ड-
 प्रभृतिबीजं च यत्तैलम् । तन्मधुरं गुरुशिशिरं केश्यं कफापित्तनाशि
 कान्तिकरम् ॥ ४५ ॥ तैलं न सेषयेद्दीमान्यस्य कस्य च यद्भवेत् । विष-
 साम्यगुणत्वाच्च योगे प्रोक्तं न वर्जयेत् ॥ ४६ ॥ उक्कंच । विषस्य तैलस्य
 न किंचिदन्तरं मृतस्य सुप्तस्य न किंचिदन्तरम् । ऋणस्य दास्यस्य न
 किंचिदन्तरं मूर्लस्य काष्ठस्य न किंचिदन्तरम् ॥ ४७ ॥

॥ इति क्षीरादिवर्गः समाप्तः ॥

१४ अथ धान्यवर्गः । तत्र सामान्य साखी । शालयः कमला रुच्या
 ब्रीहिश्रेष्ठा नृपप्रियाः ॥ ४८ ॥ धान्योचमाश्व कैदारास्तथैव सुकुमारकाः ॥
 प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु दैवविद्याविशारदः ॥ शकुनादितस्तु गरुडो सुमन्विः
 कलमस्तथा ॥ ४९ ॥ कलामकश्च पुण्डूश्च तथा माहिषमस्तकः ॥ पूर्ण-
 चन्द्रः पुण्डरीकस्तथैव च प्रमोदनः ॥ ५० ॥ पुष्पाण्डकः शीतभीरुः
 काञ्चनः शकुनादितः ॥ पाण्डुगौरो लोमपुष्पो हयनो दीर्घनालकः ॥ ५१ ॥
 महाद्वपकमंशश्च द्वपका मदन स्मृतः ॥ अथ राजशालि ॥ शालिर्नृपाञ्ज

राजानं राजाहं दीर्घशूककम् ॥ ५२ ॥ धान्यश्रेष्ठं राजधान्यं राजेष्टं
 दीर्घकूरकम् ॥ प्रोक्तं राजनिघण्टे तु गजधान्यं च द्रव्यके ॥ ५३ ॥
 राजानं तु त्रिदोषघ्नं सुस्निग्धं मधुरं लघु ॥ दीपनं बलकृत्पथ्यं कान्तिदं
 वीर्यवर्द्धनम् ॥ ५४ ॥ राजानं त्रिविधं स्वशूकमिधया ज्ञेयं सितं
 लोहितं कृष्णश्वेतरसाधिकं च कथितं स्वादोत्तरोत्तरतः ॥ त्रैविध्या-
 दिह तन्दुलाश्च हरिताः श्वेतास्तथा लोहिताः सामान्येन भवन्ति
 तेऽप्यधगुणैः स्युः पूर्वपूर्वोत्तराः ॥ ५५ ॥ राजानं भाग्यप्रसिद्धः ॥ पटिकः
 पटिशालिः स्यात्पटिजः स्निग्धतण्डुलः । पटिवासरजश्चैव तथा मास-
 द्वयोद्भवः ॥ ५६ ॥ प्रोक्तो राजनिघण्टे तु पुरातनभिषग्वरैः । महाप्रीहिः
 कृष्णप्रीहिर्विषकः पाक एव च ॥ ५७ ॥ रक्तसारमुखो यश्च प्रोक्तो
 धन्वन्तरौ ध्रुवम् । द्रव्यरत्नाकरे प्रोक्तं अन्हवो भिषजावरैः ॥ ५८ ॥ गौरो
 नीलः पटिकोऽपि द्विधा स्यादाद्यो रुच्यः शीतलो दोषहारी । बल्यः पथ्यो
 दीपनो वीर्यवृद्धिं दत्ते चास्मार्क्किचिदूनो द्वितीयः ॥ ५९ ॥ काळीसाळ ॥
 कृष्णशालिः कालशालिः श्यामशालिः सितेतरः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु
 भिषक्विद्यापरायणैः ॥ ६० ॥ शाश्वरश्चैव न्हस्वश्च हतको धन्वनामके ।
 कृष्णशालिः सिद्धोपघ्नो मधुरः पुष्टिवर्धनः ॥ ६१ ॥ वर्णकान्तिकरो बल्यो
 दाहजिदीर्यवृद्धिकृत् । अथ रक्तशाली । रक्तशालिस्ताम्रशालिः शोण-
 शालिश्च लोहितः ॥ ६२ ॥ प्रोक्तो राजनिघण्टे च प्राचीनभिषगुत्तमैः ।
 वृन्दारको महाशालिः सुगन्धः प्रसवस्तथा ॥ ६३ ॥ मुष्टिको भिषजां
 श्रेष्ठैः प्रोक्तं धन्वन्तरौ ध्रुवम् । रक्तशालिः सुगधुरो लघुः सिग्धो बला-
 यहः ॥ ६४ ॥ रुचिकृद्दीपनः पथ्यो मुखजाड्यरुजापहः । सर्वाभयहरो
 रुच्यः पित्तदाहानिलासजित् ॥ ६५ ॥ अथ निःशूकशाली ॥ मुण्डशालि-
 मुण्डनको निःशूको यवशूकजः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु भिषग्वि-
 दोषजैर्विभिः ॥ ६६ ॥ मुण्डशालिसिद्धोपघ्नो मधुराम्लो बलप्रदः ।
 अथ थोरसाळी । स्थूलशालिर्महाशालिः स्थूलांगः स्थूलतन्दुलः ॥ ६७ ॥
 एवमुणाटपशालाश्च नामान्युक्तानि तुरिभिः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु

हिमं केश्यं गुरु पित्तानिलार्तिनुत् ॥ ३७ ॥ अथ शेडगेल । शिमु-
 तैलं कटूष्णं च वातजिक्फनाशनम् । त्वग्दोषत्रणकण्डूतिशोफहारि च
 पिच्छलम् ॥ ३८ ॥ अथ ज्योतिष्मती तैल । कटुज्योतिष्मतीतैलं
 तिकोष्णं वातनाशनम् । पित्तसंतापनं मेधाप्रज्ञावृद्धिविवर्धनम् ॥ ३९ ॥
 सर्वव्याधिहरं पथ्यं नानात्वग्दोषनाशनम् । अथ हिरडेल । शीतं हरी-
 तकीतैलं कषायं मधुरं कटु ॥ ४० ॥ अथ महुरेल । तीक्ष्णं तु
 राजिकातैलं श्लेष्म वातादिदोषनुत् । शिशिरं कण्डूदोषघ्नं केश्यं त्वग्दोष-
 नाशनम् ॥ ४१ ॥ अथ अम्बसेल । सरं कोशाम्रज तैलं कृमिकुष्ठत्रणापहम् ।
 तिकांम्लमधुरं बल्यं पथ्यं रोचनपाचनम् ॥ ४२ ॥ चिंचारेतैल । यवचिञ्चीभव
 तैलं कटुपाके विलेखनम् । कफवातहर रुच्यं कषायं नातिशीतलम् ॥ ४३ ॥
 अथकर्पूरतैल ॥ कपूरतैलहिमतैलसितांशुतैलं शीताम्रतैलतुहिनांशुमुधांशु-
 तैलम् । कर्पूरतैलकटुकोष्णकफपहारि वातामपघ्नरददाढ्यदपित्तकारि
 ॥ ४४ ॥ अथ कांकडीवालुकादितैल । त्रपुसैर्वाकचकारककूष्माण्ड-
 प्रभृतिबीजं च यत्तैलम् । तन्मधुरं गुरुशिशिरं केश्यं कफपित्तनाशि
 कान्तिकरम् ॥ ४५ ॥ तैलं न सेवयेद्धीमान्यस्य कस्य च यद्भवेत् । विष-
 साम्यगुणत्वाच्च योगे प्रोक्तं न वर्जयेत् ॥ ४६ ॥ उक्तंच । विषस्य तैलस्य
 न किञ्चिदन्तरं मृतस्य सुप्तस्य न किञ्चिदन्तरम् । भ्रूणस्य वांसस्य न
 किञ्चिदन्तरं मूर्तस्य काष्ठस्य न किञ्चिदन्तरम् ॥ ४७ ॥

॥ इति क्षीरादिवर्गः समाप्तः ॥

१४ अथ धान्यवर्गः । तत्र सामान्य साब्जी । शालयः कमला रुच्या
 ग्रीहिश्रेष्ठा नृपप्रियाः ॥ ४८ ॥ धान्योत्तमाश्च कैदारास्तथैव मुकुमारकाः ॥
 प्रोक्ता 'राजनिघण्ट' तु वैद्यविद्याविशारदः ॥ शकुनादितस्तु गरुडो सुगन्धिः
 कलमस्तथा ॥ ४९ ॥ कालामकश्च पुण्ड्रश्च तथा महिषमस्तकः ॥ पूर्ण-
 चन्द्रः पुण्डरीकस्तथैव च प्रमोदनः ॥ ५० ॥ पुण्याण्डकः शीतभीरुः
 काञ्चनः शकुनाहतः ॥ पाण्डुगौरो लोमपुष्पो हयनो दीर्घनालकः ॥ ५१ ॥
 महाद्रूपकसंशश्च द्रूपको मदनः स्मृतः ॥ अथ राजशालि ॥ शालिर्नृपराज

राजाज्ञं राजाहं दीर्घशूककम् ॥ ५२ ॥ घान्यश्रेष्ठं राजधान्यं राजेष्टं
दीर्घकूरकम् ॥ प्रोक्तं राजनिघण्टे तु गजधान्यं च द्रव्यके ॥ ५३ ॥
राजाज्ञं तु त्रिदोषम् सुस्निग्धं मधुरं लघु ॥ दीपनं बलकृत्यप्यं कान्तिदं
वीर्यवर्द्धनम् ॥ ५४ ॥ राजाज्ञं त्रिविधं स्वशूकमिधया ज्ञेयं सिद्धं
लोहितं कृष्णश्वतरसाधिकं च कथितं स्वादोचरोतयतः ॥ त्रैविष्वा-
दिह तन्दुलाश्च हरिताः श्वेतास्तथा लोहिताः सामान्येन भवन्ति
तेऽप्यधगुणैः स्युः पूर्वपूर्वोत्तराः ॥ ५५ ॥ राजाज्ञं प्रायेण सिद्धः ॥ पटिकः
पटिशालिः स्यात्पाष्टिजः स्निग्धतण्डुलः । पटिश्वसरजश्चैव तथा मास-
द्वयोद्भवः ॥ ५६ ॥ प्रोक्तो राजनिघण्टे तु पुरातनमिषावरैः । महावीहिः
कृष्णवीहिर्ध्रुवकः पाक एव च ॥ ५७ ॥ रक्तसारमुखो यश्च शोच्य-
धन्वन्तरौ ध्रुवम् । द्रव्यरत्नाकरे प्रोक्तं अन्धवो मिषजावरैः ॥ ५८ ॥ कर्ण-
नीलः पटिकोऽपि द्विधा स्यादाद्यो रुच्यः शीतलो दोषहारी । रक्तः कृष्ण-
दीपनो वीर्यवृद्धिं दत्ते चास्मात्किञ्चिद्भूतो द्वितीयः ॥ ५९ ॥ काटीशालः
कृष्णशालिः कालशालिः श्यामशालिः सितेतरः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु
मिषकृदिद्यापरायणे ॥ ६० ॥ शावरश्चैव ह्रस्वश्च हतको धन्वन्तरौ
कृष्णशालिः स्निग्धोपमो मधुरः पुष्टिवर्धनः ॥ ६१ ॥ वर्णकान्तिको कर्ण-
दाहनिघ्नीर्ध्रुवकृत् । अथ रक्तशाली । रक्तशालिस्ताम्रशालिः कर्ण-
शालिश्च लोहितः ॥ ६२ ॥ प्रोक्तो राजनिघण्टे च प्राचीनमिषकृत्
वृन्दारको महाशालिः सुगन्धः प्रसवस्तथा ॥ ६३ ॥ मुष्टिश्च मिष-
श्रेष्ठः प्रोक्तः धन्वन्तरौ ध्रुवम् । रक्तशालिः सुमधुरो लघुः सिद्धो रक्ता-
वहः ॥ ६४ ॥ रुचिकृदीपनः पथ्यो मुखजाड्यरुक्तापः । रक्तमहरो
रुच्यः पित्तदाहानिलासजित् ॥ ६५ ॥ अथ तनूशूकश्चैव ॥ मुष्टिशालि-
मुष्टनको निःशूको यवशूकजः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु मिषमि-
षोपजीविभिः ॥ ६६ ॥ मुष्टशालिसिद्धोपमो यवशूकश्चैव मिषमि-
षश्च थोरसाळी । स्थूलशालिर्महाशालिः स्थूलाऽऽयुक्तः ॥ ६७ ॥
एवगुणाढ्यशालाश्च नामान्युद्धानि सुरभिः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु

हिमं केश्यं गुरु पित्तानिलातिनुत् ॥ ३७ ॥ अथ शेडगेल । शिमु-
तैलं कटूष्णं च वातजित्कफनाशनम् । त्वग्दोषत्रणकण्डूतिशोफहारि च
पिच्छलम् ॥ ३८ ॥ अथ ज्योतिष्मती तैल । कटुज्योतिष्मतीतैलं
तिकोष्णं वातनाशनम् । पित्तसंतापनं मेधापज्ञाबुद्धिविवर्धनम् ॥ ३९ ॥
सर्वव्याधिहरं पथ्यं नानात्वग्दोषनाशनम् । अथ हिरडेल । शीतं हरी-
तकीतैलं कषायं मधुरं कटु ॥ ४० ॥ अथ महुरेल । तीक्ष्णं तु
राजिकातैलं ज्ञेयं वातादिदोषनुत् । शिशिरं कण्डूदोषघ्नं केश्यं त्वग्दोष-
नाशनम् ॥ ४१ ॥ अथ अम्बसेल । सरं कोशाम्बज तैलं कृमिकृष्ठव्रणापहम् ।
तिक्ताम्लमधुरं बल्यं पथ्यं रोचनपाचनम् ॥ ४२ ॥ चिंचारेतैल । पवचिञ्चीभवं
तैलं कटुं पाके विलेखनम् । कफवातहर रुच्यं कषायं नातिशीतलम् ॥ ४३ ॥
अथ कर्पूरतैल । कर्पूरतैलहिमतैलसितांशुतैलं शीताम्रतैलतुहिनांशुमुधांशु-
तैलम् । कर्पूरतैलकटुकोष्णकफापहारि वातामयघ्नरददाढ्यदपित्तकारि
॥ ४४ ॥ अथ कांकडीवालुकादितैल । त्रपुसेवार्कचारककूष्माण्ड-
प्रभृतिव्रीजं च पतैलम् । तन्मधुरं गुरुशिशिरं केश्यं कफापित्तनाशि
कान्तिकरम् ॥ ४५ ॥ तैलं न सेवयेद्जीमान्यस्य कस्य च यद्भवेत् । विष-
साम्यगुणत्वाच्च योगे प्रोक्तं न वर्जयेत् ॥ ४६ ॥ उक्तंच । विषस्य तैलस्य
न किञ्चिदन्तरं मृतस्य सुप्तस्य न किञ्चिदन्तरम् । अणस्य दासस्य न
किञ्चिदन्तरं मूर्लस्य काष्ठस्य न किञ्चिदन्तरम् ॥ ४७ ॥

॥ इति क्षीरादिवर्गः समाप्तः ॥

१४ अथ धान्यवर्गः । तत्र सामान्य साली । शालयः कमला रुच्या
वीहिश्रेष्ठा नृपप्रियाः ॥ ४८ ॥ धान्योत्तमाश्च कैदारास्तथैव सुकुमारकाः ॥
प्रोक्ता 'राजनिघण्ट' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ शकुनादितस्तु गरुडो सुगन्धिः
कलमस्तथा ॥ ४९ ॥ कलामकश्च पुण्ड्रश्च तथा महिषमस्तकः ॥ पूर्ण-
चन्द्रः पुण्डरीकस्तथैव च प्रमोदनः ॥ ५० ॥ पुष्पाण्डकः शीतभीरुः
काञ्चनः शकुनाहतः ॥ पाण्डुगौरी लोध्रपुष्पो हयनो दीर्घनालकः ॥ ५१ ॥
महाद्वयकांक्षश्च द्वयको मदने स्मृतः ॥ अथ राजशालि ॥ शालिर्नृपान्न

राजान्नं राजाहं दीर्घशूककम् ॥ ५२ ॥ धान्यश्रेष्ठं राजधान्यं राजेष्टं
 दीर्घकूरकम् ॥ प्रोक्तं राजनिघण्टे तु गजधान्यं च द्रव्यके ॥ ५३ ॥
 राजान्नं तु त्रिदोषघ्नं सुरिगन्धं मधुरं लघु ॥ दीपनं बलकृत्यर्थं काशितदं
 वीर्यवर्द्धनम् ॥ ५४ ॥ राजान्नं त्रिविधं स्वशूकमिधया ज्ञेयं सितं
 लोहितं कृष्णश्चैतरेसाधिकं च कथितं स्वादोत्तरोत्तरैः ॥ त्रैविध्या-
 दिह तन्दुलाश्च हरिताः श्वेतास्तथा लोहिताः सामान्येन भवन्ति
 तेऽप्यधगुणैः स्युः पूर्वपूर्वोत्तराः ॥ ५५ ॥ राजान्नं जाधेपसिद्धः ॥ पष्टिकः
 पष्टिशालिः स्यात्पष्टिजः सिम्बतण्डुलः । पष्टिवासरजश्चैव तथा मास-
 द्वयोद्भवः ॥ ५६ ॥ प्रोक्तो राजनिघण्टे तु पुरातनभिषग्वरैः । महाव्रीहिः
 कृष्णव्रीहिर्यवकः पाक एव च ॥ ५७ ॥ रक्तसारमुखो यश्च प्रोक्तो
 धन्वन्तरौ भवम् । द्रव्यरत्नाकरे प्रोक्तं बन्धवो भिषजावरैः ॥ ५८ ॥ गौरो
 नीलः पष्टिकोयं द्विधा स्यादाद्यो रुच्यः शीतलो दोषहारी । बन्धः पथ्यो
 दीपनो वीर्यवृद्धिं दत्ते चास्मान्किंचिदूना द्वितीयः ॥ ५९ ॥ काळीसाल ॥
 कृष्णशालिः फालशालिः श्यामशालिः सितेतरः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु
 भिषक्विद्यापरायणैः ॥ ६० ॥ शावरश्चैव नृहस्वश्च हतको धन्वनामके ।
 कृष्णशालिः सिद्धोषघ्नो मधुरः पुष्टिवर्धनः ॥ ६१ ॥ वर्णकान्तिस्तरो बन्धो
 दाहनिद्वीर्यवृद्धिकृत् । अथ रक्तशाली । रक्तशालिस्ताम्रशालिः शोण-
 शालिश्च लोहितः ॥ ६२ ॥ प्रोक्तो राजनिघण्टे च प्राचीनभिषगुत्तमैः ।
 वृन्दारको महाशालिः सुगन्धः प्रसवस्तथा ॥ ६३ ॥ मुष्टिको भिषजां
 श्रेष्ठः प्रोक्तं धन्वन्तरौ भवम् । रक्तशालिः सुमधुरो लघुः सिम्बो बला-
 वहः ॥ ६४ ॥ रुचिकृदीपनः पथ्यो मुखजाड्यरुजापहः । सर्वामयहारो
 रुच्यः पित्तदाहानिलास्रजित् ॥ ६५ ॥ अथ नःशूकशाली ॥ मुण्डशालि-
 मुण्डनको निःशूको यवशूकजः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु सिद्धि-
 दोषजैर्विभिः ॥ ६६ ॥ मुण्डशालिस्त्रिदोषघ्नो मधुरान्तो वृन्दः ।
 अथ धोरसाळी । स्थूलशालिर्महाशालिः स्थूलांसः स्थूलतन्दुलः ॥ ६७ ॥
 एवमुणादयशालाश्च नामान्युक्तानि सुरिभिः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु

मिषग्विद्योपजीविभिः ॥ ६८ ॥ महाशालिस्वादुर्मधुरशिशिरः पित्तश-
मनो ज्वरं जीर्णं दाहं जठररुजमह्वय शमयेत् । शिशूनां वायूनां यदपि
जयतां वा हितकरः सदा सेव्यः सर्वैरनलबलवीर्याणि कुरुते ॥ ६९ ॥
वारीक माळी । सूक्ष्मशालिः सूचिशालिः श्वेतशालिश्च सूचकः ।
प्रोक्ता राजनिघण्टेस्मिन्पुरातनचिकित्सकैः ॥ ७० ॥ सूक्ष्मशालिः
सुमधुरो लघुपित्तासदाहनुत् । दीपनः पाचनः पथ्यः किञ्चिद्वात-
विकारजित् ॥ ७१ ॥ अथ सुगन्धशाली । गन्धशालिस्तु कुल्माषो
गन्धालुः कलमोत्तमः ॥ सुगन्धिर्गंधबहुलः सुरभिर्गन्धतण्डुलः ॥ ७२ ॥
प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ सुगन्धशालिर्मधुरोतिवृष्यदः
पित्तभ्रमास्रावचिदाहशान्तिदः ॥ स्तन्यस्तु गर्भास्थिरताल्पवातदः पुष्टिप्र-
दश्चाल्पकफश्चबल्यदः ॥ ७३ ॥ अथ तिरियशाली ॥ तिरियो मधुरः
स्निग्धः शीतलो दाहपित्तजित् ॥ त्रिदोषशमनो रुच्यः पथ्यः सर्वामया-
पहः ॥ ७४ ॥ अथ गौरशाली ॥ ग्रीहीगौरो मधुरशिशिरः पित्तहारी
कृषापः स्निग्धो वृष्यः कृमिकफहरस्तापरकापहश्च ॥ ७५ ॥ पुष्टिं दत्ते
भ्रमशमनकृद्दीर्घवृद्धिं विधत्ते रुच्योत्पन्नं जनयति मुदं वातकृन्मेघ-
कोन्यः ॥ ७६ ॥ जौधळेसामान्य ॥ यवनालो पावनालः शिखरी
वृत्ततण्डुलः १ दीर्घवालो दीर्घशरः क्षेत्रेऽश्वेषुपत्रकः ॥ ७७ ॥ प्रोक्तो
'राजनिघण्टे' तु पुरातनचिकित्सकैः । जूर्णाब्धयस्त्वद्गलश्च धन्वे प्रोक्तो युग-
न्धरः ॥ ७८ ॥ अथ नालो देवधान्यं जुनला तु नलस्तथा । तानीषक-
रुक्षिणीफा य जमली 'केयदेवके' ॥ ७९ ॥ पाठरे जौधळे । धवलो
यावनालश्च पाण्डुरस्तारतण्डुलः । नक्षत्रकान्तिविस्तारो दृढो मौकि-
कतण्डुलः ॥ ८० ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः । धवलो
यावनालस्तु गौत्यो बल्यस्त्रिदोषनुत् ॥ ८१ ॥ वृष्यो रुचिप्रदोर्शोभः
पथ्यगुल्मप्रणापहः । तुरेजौधळे । तुवरो यावनालश्च कृषावादिस्तथै-
व ॥ ८२ ॥ रक्तस्तु लोहितश्चैव प्रोक्तं तुवरधान्यकम् । तुवरो याव-
नालस्तु कृषापोष्णो विशोकृत् । संयाही वातशमनो विदाही शोष-

कारकः ॥ शारदो यावनालस्तु श्लेष्मदः पिच्छलो गुरुः ॥ ८३ ॥
 शिशिरो मधुरो वृष्यो दोषघ्नो बलपुष्टिदः । गह्वं । गोधूमो बहुदुग्धः
 स्यादपूपो म्लेच्छभोजनः ॥ ८४ ॥ यवमानिस्तुपक्षीरी रसालः सुमनश्च
 सः । मोक्षो 'राजनिघण्टे' तु वैद्यशास्त्रज्ञपण्डितैः ॥ ८५ ॥ 'धन्वन्तरिनि-
 घण्टे' च डुडुवा परिकीर्तितः । हीनो यवो दन्तिवयस्तोको हीनमरस्तथा ८६
 पयोत्तमो यवनकः प्रोक्तः 'केयनिघण्टके' । स्मृतो 'मदनपाले' तु मधुलोऽनुदि-
 सीतकः ॥ ८७ ॥ गोधूमः स्निग्धमधुरो वातघ्नः पित्तदाहकृत् ॥ गुरुः श्ले-
 ष्मपदो बल्यो रुचिकृद्दीर्यवर्धनः ॥ ८८ ॥ जोडगह्वं ॥ अन्यो गोधूम-
 संज्ञश्च स्निग्धस्तु लघूपूर्वकः ॥ ८९ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्ट' तु वैद्यशास्त्रज्ञपं-
 ङितैः ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव विंशतिक इति स्मृतः ॥ ९० ॥ नादीमुखोत्पयो-
 धूमांस्तत्क्षोकः सायसीकफः ॥ प्रोक्तो 'मदनपाले' तु वैद्यविद्याविशारदैः
 ॥ ९१ ॥ मधुली स्वल्पगो धूमो मध्यदेशज एव च ॥ निशीको देसिकश्चैव दीर्घक-
 स्तदनन्तरम् ॥ ९२ ॥ गोधूमः सूक्ष्मसंज्ञश्च केयनन्दीमुखी स्मृतः ॥ स्निग्धो-
 न्यो लघुगोधूमो गुरुवृष्यकफापहः । आमदोषकरो बल्यो मधुरो वीर्यपुष्टिदः
 ॥ ९३ ॥ जव ॥ यवो मध्यस्तु दिव्यश्च सितशूकस्तथैव च ॥ अक्षता
 फंचुकी चैव धान्यराजस्तदुत्तरम् ॥ ९४ ॥ तीक्ष्णशूकस्तु सस्तश्च
 हृषेष्टस्तदनन्तरम् ॥ पवित्रधान्यः संप्रोक्तो 'राजनामनिघण्टके' ॥ ९५ ॥
 बाजीमियः शुचिश्चैव निःशूकोऽतिवस्तथा ॥ यवशूको हरीतश्च स्तोकास्तु
 'केयदेवके' ॥ ९६ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' चैव वैद्यैः प्रोक्तो हविष्यकः ॥ मिलित्वा
 विंशतिः प्रोक्तो वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ९७ ॥ पवंः कपापो मधुरः सुशी-
 तलः प्रमेहजित्पित्तकफापहारकः ॥ अशुकमण्डस्तु यवो बलपदो वृष्यश्च
 नृणां बहुवीर्यपुष्टिदः ॥ ९८ ॥ अथ वेणुयव ॥ वेणूचै धीज ॥ वेणुनो वेणुवी-
 जश्च वंशजो वंशतण्डुलः ॥ वंशधान्यं च वंशाह्वं वेणुस्तु तदनन्तरम्
 ॥ ९९ ॥ वंशबीजं च कविभिः प्रोक्तं 'राजनिघण्टके' ॥ शीतः कपापो
 मधुरास्तु रूक्षो मेहक्रिमिस्त्रेष्माविपापहश्च ॥ पुष्टिं च वीर्यं च बलं च दत्ते
 पितापहो वेणुयवशस्तः ॥ १०० ॥ सामान्यमूग ॥ सूषश्रेष्ठस्तु मुद्गश्च

वर्णार्हश्च रसोत्तमः ॥ मुक्तिप्रदो हयानन्दो भूफलो वाजिभोजनः ॥ १ ॥ प्रोक्तो
 'राजनिघण्टे' च वैद्यशास्त्रज्ञपण्डितैः ॥ मंगल्या हरिता मुद्रा बलाटः प्रथमो
 हरित् ॥ २ ॥ पीतः प्रथमखण्डीरः शारदा वस्तुको जयः ॥ केयदेवनिघण्टे' तु
 मिलित्वा दश सप्त च ॥ ३ ॥ कालेभूग ॥ वासन्तः कृष्णमुद्रश्च वासन्तो माध-
 वस्तथा ॥ 'राजनामनिघण्टे' तु त्रयैः 'प्रोक्ता' सुराष्ट्रजा ॥ ४ ॥ 'केयदेवनि-
 घण्टे' च संप्रोक्तो हरिमन्थनः ॥ कृष्णमुद्रस्त्रिदोषघ्नो मधुरो वातनाशनः ॥ ५ ॥
 लघुश्च दीपनः पथ्यो बलवीर्यागपुष्टिदः ॥ हिरवेभूग ॥ हरिन्मुद्रः शार-
 दश्च धूमरो 'गजनामके' ॥ ६ ॥ हरिन्मुद्रः कषायाम्लो मधुरः कफपि-
 त्तहृत् ॥ रक्तमूत्रामयघ्नश्च शीतलो लघुदीपनः ॥ ७ ॥ सुग्या ॥ वनमुद्रा
 तुवरको राजमुद्रा च खण्डकः ॥ 'केयदेवे' भिषक्त्रेष्टैः संप्रोक्तो नैव
 संशयः ॥ ८ ॥ अथ धूसर पिबले भूग ॥ तद्वच्चधूसरो मुद्गोरस-
 पीर्यादिषु स्मृतः । कषायो मधुरो रुच्यः पित्तवातविबन्धकृत् ॥ ९ ॥
 सुगाचैकदण । पित्तज्वरार्तिशमन लघुमुद्रपूषं संतापहारि तदरोचकना-
 शनं च । रक्तप्रसादनमिदं यदि सैन्धवेन युक्तं तदा भवति सर्वरुजाप-
 हारि ॥ १० ॥ उडीद । मापस्तु करविन्दश्च धान्यवीरो वृषाकरः । बलाढ्यो
 मांसलश्चैव पित्र्यश्च पितृभोजनः ॥ ११ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु पुरातन-
 चिकित्सकैः । धन्वन्तरिनिघण्टे ' च कुरुविन्दस्तृपाकरः ॥ १२ ॥
 पित्रार्हकविभिः प्रोक्तं 'द्रव्यरत्ननिघण्टके' ॥ मापः स्निग्धो बहुमलकरः
 शोषणः श्लेष्मकारी वीर्येणोष्णो झटति कुरुते रक्तपित्तप्रकोपम् । हन्याद्वातं
 गुरुबलकरं रोचको भक्ष्यमाणः स्वादुर्निव्यं श्रमसुखवतां सेवनीयो
 नराणाम् ॥ १३ ॥ हिरवेउडीद । राजमापो नीलमापो नृपमापो
 नृपोचितः । प्रोक्तो 'राजनिघण्ट' तु वैद्यविद्याविचक्षणैः ॥ १४ ॥ अलसाद्रस्तु
 चपलो बलो 'द्रव्यनिघण्टके' । चञ्चलश्च महामापः प्रोक्तो मदनपालके ॥ १५ ॥
 कफपित्तहरो रुच्यो वातकृद्दलदायकः । हरभरे । चणस्तु हरिमन्थश्च
 सुगन्धः कृष्णचञ्चुकः ॥ १६ ॥ बालभोज्यो वाजिभक्षश्चणकः कञ्चुकी
 'नृपे' । वाजिमन्थः 'केयदेवे' संप्रोक्तो हयजीवनः ॥ १७ ॥ वाजिभक्षोऽथ जी-

वश्च 'द्रव्यरत्नाकरे' स्मृतः । चणको मधुरो रूक्षो मेहजिह्वातपित्तकृत् ॥ १८ ॥
 दीप्तिवर्णकरो बल्यो रुच्यश्चाध्मानकारकः ॥ मठ ॥ मकुटः कामयष्टश्च
 वनमुद्रः किमीलकः ॥ १९ ॥ अमृतोरण्यमुद्रश्च बलीमुद्रो 'नृपे' स्मृतः ।
 अतिरूढा तथा प्रोक्ता 'धन्वन्तरिनिघण्टके' ॥ २० ॥ कामकुटोऽभकुटश्च
 बल्लको 'मदने' स्मृतः । मकुटकः कषायः स्यान्मधुरो रक्तपित्तजित् ॥ २१ ॥
 ज्वरदाहहरः पथ्यो रुचिकृत्सर्वदोषहृत् ॥ मसूर ॥ मसूरो रागदालिश्च
 मङ्गल्या पृथुबीजकः ॥ २२ ॥ शूरकल्याणबीजश्च गुटबीजस्तु 'राजके' ॥
 मसूरिका मयूरश्च पाण्डुरा 'केयदेवके' ॥ २३ ॥ मधुरा चैव सूष्या च पृथवः
 पित्तभेषजः ॥ हरेणवः सतीनश्च चणक्यस्तु करालकः ॥ २४ ॥ अष्टा-
 दशे तु संप्रोक्ता मिलित्वा सर्वतोभ्रुवम् ॥ मसूरो मधुरः शीतः संग्राही
 कफपित्तजित् ॥ २५ ॥ वातामयकरश्चैव मूत्रकृच्छ्रहरो लघुः । बाटाणे ।
 कलापो मुण्डचणको हरेणुश्च सतीनकः ॥ २६ ॥ शमनोत्तलकश्चैव
 कण्ठी 'राजनिघण्टके' । 'धन्वन्तरौ' स्मृतो नूनं वर्तुलः स्वल्पवर्तुलः ॥ २७ ॥
 नवसंख्यो भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्तो नैव सशयः । कलायः कुरुते वातं पित्त-
 दाहकफापहः ॥ २८ ॥ रुचिपुष्टिपदः शीतः कषायश्चामदोषकृत् ॥
 लांक ॥ लंका कराला त्रिपुटा काण्डिका रूक्षणाग्निका ॥ २९ ॥
 करटा खण्डका चैव कलापो 'धन्वनामके' । घण्टिका क्षुद्रघण्टिका 'द्रव्य-
 रत्नाकरे' स्मृता ॥ ३० ॥ तथा 'मदनपाले' तु चण्डिका प्रोच्यते बुधैः ॥
 लका रुच्या हिमा गौल्या पित्तजिह्वातकृद्गुरु ॥ ३१ ॥ तुरी ॥ आढकी
 तुवरी वर्षा करवीरभुजा तथा । वृत्तबीजा पीतपुष्पा कृष्णरक्ता सिता-
 'नृपे' ॥ ३२ ॥ करवीरानुगा तुल्या 'धन्वन्तरिनिघण्टके' । 'द्रव्यरत्नाकरे'
 सूष्या प्रोक्ता वैद्यजने भ्रुवम् ॥ ३३ ॥ आढकी तु कषाया स्यान्मधुरा
 कफपित्तजित् ॥ ईषद्वातकरा रुच्या विदुला गुरुसंग्राही ॥ ३४ ॥ सा च श्वेता
 दोषहन्त्री हिता चेद्रुच्या बल्या पित्ततापादिहन्त्री ॥ साङ्गामा चेद्दीपनी पित्त-
 दाहध्वंसा बल्यं चाढकी थूपयुकम् ॥ ३५ ॥ कुलित्थ । कुलित्थस्ताम्रबीजश्च
 श्वेतबीजः सितेतरः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ३६ ॥

चत्रिकश्चैतुचक्रश्च कुलाली वनजस्तथा । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्ता पुरातन-
 भिषग्वरैः ॥ ३७ ॥ उर्वरा स्थिरमुद्राश्च त्वलिस्कन्धः सुराष्ट्रजा । काक-
 वृन्तस्तु कविभिः स्मृतो 'धन्वन्तरौ' ध्रुवम् ॥ ३८ ॥ कुलधानकरश्चैव प्रोक्तो
 'मदनपालके' । कुलित्यस्तु कषायोष्णो रुच्यो वातकफापहः ॥ ३९ ॥ चव-
 द्या । क्षुवः क्षुधाभिजननश्चपलो दीर्घशिंशिका । सुकुमारो वृत्तबीजो मधुरः
 क्षवको 'नृपे' ॥ ४० ॥ क्षवः कषायो मधुरः शीतलः कफपित्तजित् । वृष्यः
 श्रमहरो रुच्यः पवनाध्मानकारकः ॥ ४१ ॥ गोड पावटे ॥ मधुरः श्वेतनि-
 प्पावो माध्वीका मधुशर्करा । पलङ्कपा स्थूलाशिम्बी वृत्ता मधुसिताऽ
 सिता ॥ ४२ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु वैद्यविद्याविचक्षणैः । निष्पावः श्वेत-
 शिम्बी च पालकाख्या मुखप्रिया ॥ ४३ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्ता
 वै नैव संशयः । राजशिम्बी बलकश्च प्रोक्तो 'मदनपालके' ॥ ४४ ॥
 कडु पावटे । ततस्तु कटुनिष्पावः पिचुंठो नदिजस्तथा । नदीनिष्पावसं-
 जस्तु प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ ४५ ॥ मधुशर्करा सुरुच्या मधुराल्पक-
 षायका । शिशिरा वातला बल्या चाध्मानगुरुपुष्टिदा ॥ ४६ ॥ कटु
 पावटे । नदीनिष्पावकस्तित्तः कटुकोष्ठप्रदो गुरुः । वातुलः कफो
 रुक्षः कषायो विषदोपनुत् ॥ ४७ ॥ तीळ । तिलस्तु होमधान्यश्च
 पवित्रः पितृतर्पणः । पापघ्नं पूतधान्यं च जर्तिलस्तु वनोद्भवम् ॥ ४८ ॥
 प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु वैद्यशास्त्रपरायणैः । ततस्तैलफलं पूतः स्नेहपूरः
 परोपलः ॥ ४९ ॥ 'कैषदेवनिघण्टे' तु संप्रोक्तो भिषजांवरैः । श्लिग्धो
 वर्णबलाग्निवृद्धिजननः स्तन्योनिलघ्नो गुरुः सोष्णः पित्तकरोल्पमूत्रक-
 रणः केद्व्योतिष्यो वणे । ग्राही स्यान्मधुरः कषायसहितस्तिको विपाके
 कटुः कृष्णः पथ्यतमः सितोन्पगुणदः क्षीणातिलान्येतिलः ॥ ५० ॥
 पेंड । तैलकिट्टं च पिण्याकः खरस्तु तैलकल्कजः । प्रोक्तो 'राजनि-
 घण्टे' तु पुरातनचिकित्सकैः । पललं तिलकल्क स्यात्तिलचूर्णं च पिष्टकम् ।
 ॥ ५१ ॥ पललं मधुरं रुच्यं पित्तास्रबलपुष्टिदम् । पिण्याकः कटुको

गौत्यः कफवातप्रमेहनुत् ॥ ५२ ॥ जवस । अतसी पिछला देवी मद-
गन्धा मदोत्कटा । उमा क्षुमा हेमवती सुनीला नीलपुष्पिका ॥ ५३ ॥
प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु भिषक्शास्त्रोपजीविभिः । रुद्रपत्नी रुद्रनीला
मसृणा च सुवल्कला ॥ ५४ ॥ चेलु सौधी 'केयदेवे' वैद्यश्रेष्ठैः स्मृता
ध्रुवम् । तथा 'मदनपाले' तु पार्वती परिकीर्तिता ॥ ५५ ॥ अतसी मद-
गन्धा स्वान्मधुरा बलकारिका । कफवातकरी चैषपित्तहृत्पृथुशूल-
हृत् ॥ ५६ ॥ मोहरी । असुरी राजिका राजी रक्तका रक्तसर्षपः । तीक्ष्ण-
गन्धा मधुरिका स्रवका क्षुतका क्षरः ॥ ५७ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
'वैद्यशास्त्रविषयैः' । असुरी कटुतिक्तोष्णा वातघ्नीहातिशूलनुत् ॥ ५८ ॥
दाहपित्तप्रदा हन्ति कफगुल्मक्रिमिघणान् । राजसर्षपकः । राजसर्षपक-
स्तित्तः प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ ५९ ॥ राजसर्षपकस्तित्तः कटूष्णो वातशूलनुत् ।
पित्तदाहप्रदो गुल्मकण्डूकुष्ठघ्नापहा ॥ ६० ॥ श्वेतमोह्या । सर्ष-
पस्त्वनघो गौरः सिद्धार्थो भूतनाशनः ॥ कटुस्नेहो ग्रहघ्नश्च कण्डु-
घ्नो राजिकाफलः ॥ ६१ ॥ दुराधर्षस्तीक्ष्णकश्च रक्षोघ्नः कुठनाशनः ।
सितसर्षपमंघ्रश्च प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' । ॥ ६२ ॥ रक्षोपहस्तु भूतघ्नो
बर्दुभो विजयावहः । 'केयदेवे' भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्तो नैव संशयः ॥ ६३ ॥
सिद्धार्थः कटुतिक्तोष्णो वातरक्तग्रहापहः । त्वग्दोषशमनो रुच्यो
विषभूतघ्नापहः ॥ ६४ ॥ इति शिबीधान्यवर्गः ॥

अथसावे ॥ श्यामाकः श्यामबीजश्च स्त्रीबीजोऽविषिषस्तथा ।
सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजात्तमो 'नृप' ॥ ६५ ॥ धन्वन्तरिनिघण्टे'
तु तृणभक्षो गवांम्रियः । मुनिभक्तो भिषक्श्रेष्ठैः संप्रोक्तो नैव संशयः ॥ ६६ ॥
श्यामाकः क्षुद्रधान्यश्च 'द्रव्यरत्ने' तृणामिधो । श्यामाको मधुरः स्निग्धः
कृष्णो लघुः सितलः ॥ ६७ ॥ नाजकृत्कफपिजम् । संप्राही विषदोष-
नुत् । कोद्रवः हरक । कोद्रवः कोरद्वश्च कुदालो मदना-
मजः ॥ ६८ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु वैद्यकमोपजीविभिः ॥
कोद्रवो मधुरस्तित्तो व्रजीनां पथ्यकारकः ॥ ६९ ॥ कफपित्तहरो रूक्षो

मोहकृद्वातलो गुरुः । अथ वन्या । वरकः स्थूलकं गुश्च रुक्षः स्थूल-
 प्रियङ्गुकः ॥ ७० ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टाख्ये' पुरातनभिषग्नैः । 'द्रव्य-
 रत्नाकरे' चैव गुच्छो जूलकसंस्मृतः ॥ ७१ ॥ गवेधुक्ता च गोजिह्वा
 कर्षणीया सिता धनी । वरको मधुरो रुक्षः कषायो वातपित्तकृत् ॥ ७२ ॥
 राळे । प्रियङ्गुः कङ्गुणी कङ्गुचीनकः पीततण्डुलः । वर्तुलः कुसुमा-
 रश्च प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ ७३ ॥ चीनाकस्त्वस्थिसवन्वी' धन्वन्तरिनि-
 घण्टके' । 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तो वार्षिकः पाटलोपमः ॥ ७४ ॥ प्रियङ्गुर्म-
 धुरो रुच्यः कषायः स्वादुशीतलः । वातकृत्पित्तदाहघ्नो रुक्षो ममास्थि-
 सन्धिकृत् ॥ ७५ ॥ रानसाळी । नीवारोऽरण्यधान्यश्च मुनिधान्यतृणो-
 द्भवम् । प्रोक्त 'राजनिघण्टे' च वैद्यविद्याविशारदः ॥ ७६ ॥ तापसो मुनि-
 भक्तश्च जलजश्च प्रसारकः । सुप्रसादकसज्ञश्च प्रोक्तो 'धन्वन्तरौ' ध्रुवम्
 ॥ ७७ ॥ नीवारोमधुरः स्निग्धः पवित्रः पथ्यदो लघुः । नाचण्या । राङ्गी
 तु लांछनश्चैव तद्रद्वहुदलस्तथा ॥ ७८ ॥ ततो गुञ्जकणीशश्च प्रोक्तो
 'राजनिघण्टके' । नर्तकश्चकमस्यं च निःशूलो मूहरः स्वरः ॥ ७९ ॥
 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तो भिषक्भेदैर्न संशयः । तिकां गधुरकषायः शीतः
 पित्तासनाशनो बलदः ॥ ८० ॥ कुरीधान्य । कुरी तु तृणधान्यं च
 प्रोक्त राजनिघण्टके । कुरी तु मधुरं बल्य वाजिनां पुष्टिदायकम् ॥ ८१ ॥
 लाजा । एके च ब्रीहयो भ्रष्टास्ते लाजा इति सञ्ज्ञिताः । यवादयश्च ये
 भ्रष्टास्ते धानाः परिकीर्तिताः ॥ ८२ ॥ लाजाश्च यवधानाश्च तर्पणं
 पित्तनाशनी । अथ भाजीपाल्याचे गुण । गोधूमशावनालोत्था किचिदु-
 ष्णाश्च क्षीपनाः ॥ ८३ ॥ ओल्या पोहे । केदारपकैर्गोधूमेराकुलः परिकीर्तितः ।
 ब्रीहयोप्यर्धपकास्तु तमास्ते पृथुकाः स्मृताः ॥ ८४ ॥ आकुला गुरवो
 नृण्याः स्वादवो बलकारिणः । यथुका दुर्जराः स्निग्धा हृद्या
 मान्यविवर्धनाः ॥ ८५ ॥ हुरडा, ओलेतादुळ ॥ दुग्धबीजा सुमधुरा दुर्जरा
 वीर्यपुष्टिदा ॥ अडळा ॥ तमाश्चणाः कफहंराः परमोलकास्ते सयस्तृपा-
 तिरुचिपित्तकृतश्चजग्धाः । वाताल्पदाः सुखकरा ह्यत्रलाश्च रुक्षा हृद्या

भवन्ति सुखदा युवबालकानाम् ॥ ८६ ॥ घुगडिया ॥ मुद्गगोधूमचणका
 यावनालादयः स्मृताः ॥ यद्वर्षकं तद्धान्यं विट्माम्भानदोषकृत् ॥ ८७ ॥
 कणिक ॥ शुष्कगोधूमचूर्णं तु कणिका समुदाहृता ॥ स्फोटास्तु चणका-
 दीनां दालीति परिकीर्तिता ॥ ८८ ॥ अथनवादिधान्यगुणाः ॥ पक्वं
 हरितलूनं च धान्य सर्वगुणावहम् ॥ शुष्कलूनं तु निःमारं रूक्षं तत्क्षत-
 नाशम् ॥ ८९ ॥ नवं धान्यमभिष्यान्दि तत्रु संवत्सरोपितम् ॥ पद्मपितं
 लघु पथ्यं त्रिवर्षात्रिर्बल मवेत् ॥ ९० ॥ नवं जुनें धान्य गुणः ॥
 चणस्तु यवगोधूमस्तिलमाषा नवा हिताः । पुराणा विरसा रूक्षा अहिता
 दुर्जराबलाः ॥ ९१ ॥ अथ वापितावापितधान्यगुणाः ॥ धान्यं वापितमुत्तमं
 तदखिलं छिन्नोद्भव मध्यमं ज्ञेयं यद्यद्वापितं तदधमं निःसारदोषप्रदम् ।
 दग्धापां भुवि यत्करोति विपिने ये वापिताः शालयो ये च च्छिन्नमवा
 भवन्ति खलु ते विण्मूत्रपन्धप्रदाः ॥ ९२ ॥ उदकभेदमूमिभेदधान्य-
 गुणाः ॥ क्षारोदकसमुत्पन्नं धान्यं सर्वरुजापहम् ॥ स्वादुशुभ्रोदके जातं
 धान्यं सर्वरुजापहम् ॥ ९३ ॥ सुस्निग्धमृत्तिकोद्भूत धान्यमोजोबलाप-
 हम् । बलपुष्टिभावघ्नं बालकामृत्तिकोद्भवम् ॥ ९४ ॥ अथ धान्यादिचतु-
 ष्यम् ॥ धान्यं श्रेष्ठं पटिकं राज्यभोग्यं मांसं त्वाज तैत्तिरं लावकीयम् ।
 पानीयं स्यात्कृष्णमृत्स्नास्थलोत्थं क्षीराज्यार्दा गव्यमाज्यं च शस्तम्
 ॥ ९५ ॥ सजगुरे । सज्जको बहुशूकश्च तद्धान्यं दीर्घपत्रकम् ।
 वंशपत्रं चातिदीर्घं दीर्घशीर्षिकरः स्मृतः ॥ ९६ ॥ कृष्णशूकस्तीक्ष्णशूको
 ह्यरुणः शूकश्रेणिधृक् । मरुदेशोद्भवश्चैव प्रवरानीरदेशतः ॥ ९७ ॥
 जातः सज्जगुरुर्नाम पाके गुरुतरः स्मृतः । अवृष्यो लघुशीतश्च वृषशो-
 फकरः परः ॥ ९८ ॥ रूक्षः कषायः स्वादुश्च सर्ववातप्रकोपनः ।
 आध्मानरुक्करश्चैव रक्तपित्तहरः स्मृतः ॥ ९९ ॥

॥ इति धान्यवर्गः समाप्तः ॥

अथ मांसवर्गः । तत्र मांसम् । मांसं तु विशिष्टं कव्यं पलं सारमसु-
 कथा । पलल जांगलं कीरं मारिणं राजनाम के ॥ ६१०० ॥ आमिषं

लोमनं रस्यं तथा शोणितसंभवम् । अङ्गुर्जं कीनसंज्ञं च 'धन्वे' राक्ष-
 समोजनम् ॥ १ ॥ अथ सिंहः । सिंहः पञ्चमुखो नखी मृगपतिर्मान्नी
 हरिः केसरी क्रव्यादो नखरायुधो मृगारिपुः शूरः कटीरावकः । वि-
 क्रान्तो द्विरदान्तको बहुबलो दीप्तो बली विक्रमी प्रोक्तो राजनिघण्टके
 कविवरैर्हर्षक्षकः पिङ्गलः ॥ २ ॥ 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तो मृगेंद्रः पञ्च-
 वक्त्रकः । त्रयोविंशतिसंख्याको मिलित्वा प्रोच्यते बुधैः ॥ ३ ॥ सिंह-
 मांसं शिरोरोगसमीरणकफापहम् । अथ शरभ ॥ शार्दूल ॥ महामृ-
 गस्तु शरभो महास्कन्धी महामनः ॥ ४ ॥ अष्टपादो महासिंहो मनस्वी
 पर्वताश्रयः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु शास्त्रविद्याविचक्षणैः ॥ ५ ॥
 मेघस्कन्धो धन्वनाम्नि कविभिः परिकीर्तितः । शार्दूलो मृगनाथश्च 'द्रव्ये'
 पञ्चनखः स्मृतः ॥ ६ ॥ शार्दूलं तु कफानाहनेत्रामपहरं लघु ।
 अथ वाघ । व्यामः पञ्चनखो व्यालः शार्दूलश्च गुहाश्रयः ॥ ७ ॥
 तत्क्षिण्दंष्ट्रः पुण्डरीको द्विपी मीरुर्नखायुधः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
 कविभिर्विदुषां वरैः ॥ ८ ॥ मृगारिमृगहृष्येव पालिर्भामपराक्रमः ।
 द्रव्यरत्नाकरे प्रोक्तः शास्त्रविद्याविशारदैः ॥ ९ ॥ अथ चित्ता ॥ चित्रक-
 श्चित्रकायश्च ह्युपव्याघ्रो मृगान्तकः । शूरश्च क्षुद्रशार्दूलश्चित्रव्याघ्रो
 नृपे स्मृतः ॥ १० ॥ चित्तको वेगवाञ्छित्ता द्विपी स्वात्तीक्ष्णदंष्ट्रकः ।
 'द्रव्यरत्नाकरे' प्रोक्तो द्वादशाब्धो मनीषिभिः ॥ ११ ॥ अस्वल ।
 अशस्तु भल्लको भल्लः सशन्यस्तदनन्तरम् । दुर्घोषश्चैव भक्तश्च पृष्ठद-
 ण्डिस्वदुत्तरम् ॥ १२ ॥ रागीधो दीर्घकेशश्च चिरायुर्दुश्चरस्तथा । दीर्घ-
 वृशी कविवरैः प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ १३ ॥ तरस । मृगादनस्त-
 नक्षुश्च तथैव घोरदर्शनः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' च 'धन्वे' केरुस्तु
 भल्लकः ॥ १४ ॥ शार्दूलसिंहशरभर्क्षतरक्षुमुख्या येन्यान्प्रसह्य विनिहत्य हि
 वर्तयन्ते । ते कीर्तिताः प्रसहनाः पल्लं तदीयमर्शप्रमेहजठरामयजाड्यहारि
 ॥ १५ ॥ कोल्हा । शृगालो वञ्चकः क्रोष्टा पौरवः फेरुजम्बुकी । शाला-
 वृकः शिवालुश्च फेरण्डो व्यामसेवकः ॥ १६ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे'

तु शास्त्रज्ञकुशलैर्नरैः । शृगालमांसं बलदं वृष्यं वातकफापहम् ॥ १७ ॥
 लांडगा । ईहामृगस्तु कोकश्च विरुग्वत्सादनस्तथा । गोवत्सारिष्ट्या-
 गभोजी छागलाजोऽजनाशनः ॥ १८ ॥ प्रोक्तो ' राजनिघण्टे तु पुरातन-
 महाजनैः । उष्णं वातहरं स्वर्णं हितमक्षिविकारजित् ॥ १९ ॥ कुत्रे ।
 कुक्कुरः सारमेयश्च भीषणः शुनकः शुनः । मल्लको वक्रलांगूलो वृकारी
 रात्रिजागरः ॥ २० ॥ कालेषको ग्राम्यमृगो मृगारिर्भृङ्गदशकः । शूरो
 बद्धः शयालुश्च मण्डश्चैवातिकामुकः ॥ २१ ॥ प्रोक्तो ' राजनिघण्टे '
 तु शास्त्रविद्याविशारदैः । मक्षणः श्वा मूस्तरश्च मल्लको ' राजना-
 मके ' ॥ २२ ॥ शुनामिष गुरु स्निग्धमुष्णं निद्रा च शुक्रहृत् ।
 मांजर । बिडालो मूषकारातिर्वीतुश्च विपदंशकः ॥ २३ ॥ शालावृकश्च मा-
 र्जारो मायावी दीप्तलोचनः । संप्रोक्ता राजनाम्रीति पुरातनमनीषिभिः ॥ २४ ॥
 विश्वन्तश्च गोमायुर्धन्वे मूषकमक्षकः ॥ मार्जारमांसं स्निग्धोष्णं मधुरं
 कफवातजित् ॥ २५ ॥ जवारी मांजर ॥ लोमंशश्चैव मार्जारो पूतिको
 मारजातकः ॥ सुगन्धिमूत्रपतनो गन्धमार्जारको नृपे ॥ २६ ॥ धन्वन्तरि-
 निघण्टे तु संप्रोक्तः पूतिसोरकः । गुणस्तु पूर्ववत् ॥ हस्ती ॥ द्विरदस्तु
 गजः कुम्भी मतङ्गश्चैवमसंज्ञकः ॥ २७ ॥ तथा द्विरदनश्चैव वारणः पद्म एव
 च । हत्ती करी च कररी विपाणी नागनामकः ॥ २८ ॥ कुक्षरो रवनी मन्दो
 बलसादो द्विपी तथा ॥ भद्रसवरमो दन्ती द्रुमारिः पट्टिहायनः ॥ २९ ॥
 धन्वतरौ द्विपः पश्वी मातङ्गः सिन्धुरस्तथा ॥ स्तम्भेरमो मतङ्गश्च प्रोक्तो
 विद्याविशारदैः ॥ ३० ॥ भद्रो मदो मृगश्चैव त्रिविधो गज उच्यते ॥
 हस्तिकव्यं गुरु स्निग्धं वातुलं श्लेष्मकारकम् ॥ ३१ ॥ बलपुष्टिपदं चेष-
 हुर्जरं मन्दबन्धदम् ॥ हस्तीर्चै पिलूं ॥ बालस्तु कलगश्चैव दुर्दान्तो
 व्याल एव च ॥ ३२ ॥ मस्तहस्ति ॥ प्रभिन्नो गर्जितो आन्तो मत्तो
 मदकलस्तथा ॥ हस्तीण ॥ इमी तु करिणी चैव हस्तिनी धेनुका वशा
 ॥ ३३ ॥ करेणुः पद्मिनी चैव मातङ्गी वासिता तथा । प्रोक्ता राजनि-
 घण्टे तु पुरातनमनीषिभिः ॥ ३४ ॥ गेंडा ॥ रुद्धः खड्गमृगः क्रोधी

क्रोडी च मुखशूङ्कः ॥ मुखेवली गण्डकश्च वज्रचर्मस्तु खड्गिणी ॥ ३५ ॥
 वध्राणिः कविभिः प्रोक्तो राजनामनिघण्टके । गण्डजं वन्दविण्मूत्रपवित्रो-
 करवाजिवत् ॥ ३६ ॥ अथउंट ॥ उष्ट्रो दीर्घगतिश्चैव बली करभ एव
 च । दासेरुको धूसरश्च लम्बाष्ठो रवणस्तथा ॥ ३७ ॥ क्रमेलको महा-
 जघो दीर्घो बीजाधिकस्तथा ॥ महाञ्जुंखलकश्चैव महाग्रीवो महाङ्गकः
 ॥ ३८ ॥ महाभ्रगो महानादा महापृष्ठो बलिष्ठकः । प्रोक्तो राजनिघ-
 ण्टे तु वैद्यविद्याविचक्षणैः ॥ ३९ ॥ मेलकश्चैव धूम्रश्च तथैव दीर्घमार्गकः ।
 वक्रग्रीवो दीर्घजघोऽमयो दासेरुको धनौ ॥ ४० ॥ उष्ट्रमांस तु शिशिरं
 त्रिदोषशमनं लघु ॥ बलपुष्टिपदं रुच्यं मधुरं वर्धिवर्धनम् ॥ ४१ ॥
 हेलगा । महिषः कातरः क्रोधी कलुषोऽश्वारिरेव च । सैरिभस्तु लुला-
 यश्च मत्तो रक्ताक्षिरेव च ॥ ४२ ॥ विषाण्यङ्गवली चैव बली चैव नृपे
 स्मृतम् । शृङ्गी यमः कृष्णदन्ती पीनस्कन्धो रजस्वलः ॥ ४३ ॥ धन्वन्तरि-
 निघण्टे तु संप्रोक्तो विदुषांवरैः । ह्यैस । महिषी मन्दगमना महाक्षीरा
 पयस्विनी ॥ ४४ ॥ लुलायकान्ता कलुषा तथा तुरगद्वेयिणी । प्रोक्ता
 राजनिघण्टे तु विद्यार्थकुशलैर्नरैः ॥ ४५ ॥ ग्रामिण माहिष मांसं स्निग्धं
 निद्राकरं च पित्तहरम् ॥ वृषभ । गौर्भद्रो बलीवर्धो दम्भो दान्तः स्थिरो
 बली ॥ ४६ ॥ उक्षोऽनङ्गान्ककुद्वाश्च वृषभो ऋषभो वृषः । धर्मस्तु धूरिणो धूर्यः
 शाकरो हरवाहनः ॥ ४७ ॥ गोनाथश्चैव षोढश्च धवलः सैरभेयकः । धवलः
 शबलस्ताम्रः श्वित्रः करसलो नृपे ॥ ४८ ॥ धन्वन्तरिनिघण्टे च दुर्धरः
 परिकीर्तितः । अथपेटविला वैल । विनीतः शिक्षितश्चैव धैरिकः परिकी-
 र्तितः ॥ ४९ ॥ गोन्हा । बालो वत्सतरश्चैव दुर्दान्तो गण्डरः स्मृतः ।
 गोम्रियो गोपतिश्चैव महोक्षः पुगवः स्मृतः ॥ ५० ॥ गाय ॥ गौर्मातोऽज्ञा
 शृङ्गिणी च सैरभेयी महेन्द्रजा । अध्व्या तु रोहिणी धेनुर्दोग्धी मद्रा
 तदुत्तरम् ॥ ५१ ॥ भूरिमहानडह्या च कल्याणी पावनी तथा । अर्जु-
 नीति कविश्रेष्ठैः प्रोक्ता राजनिघण्टके ॥ ५२ ॥ अप्लुत गोभवं गव्यं
 गुरुवातकफपदम् । वनगाय । वनगौर्गवयश्चैव बलभद्रो महागवः ॥ ५३ ॥

गवयी वनधेनुश्च प्रोक्ता मिलगवी नृपे । गवयामिष ॥ वन्यः रुच्य वृष्य
च बृहणम् ॥ ५४ ॥ चामरी गायः । चमरो व्यजनो वन्यो धेनुर्गोपाल-
धी प्रियः । चमरी दीर्घवाला च नृपे प्रोक्ता गिरिमियः ॥ ५५ ॥ कीर्तित
नात्यभिप्यन्दि मास प्रायस्तु जाड्गलम् । रानहुकर । वराहस्तनुरोमश्च
स्तन्वरोमस्तु रोमशः ॥ ५६ ॥ किटिर्दष्टी वक्रदष्टः कीरश्च सूकरस्तथा ।
क्राडो वन्तायुधश्चैव बलिश्च पृथुस्फुधकः ॥ ५७ ॥ भृदारश्चैव 'पौत्री
च कोलो घोणान्तगेदनः । पौत्रायुधश्च शूरश्च बहूपत्यो रदायुधः ॥ ५८ ॥
प्रोक्तो ' राजनिघण्ट ' तु कविभिः शास्त्रविचमैः । किटिक्रौडः किटि-
श्चैव ' धन्वन्तरिनिघण्टके ॥ ५९ ॥ वाराहमास गुरु वातहारि वृष्य बल-
स्वादुकर वनोत्थम् । ग्रामहुकर ॥ विड्वराहो ग्रामिणश्च ग्रामसूकर एव
च ॥ ६० ॥ ग्राम्यक्रौडो ग्राम्यकोलो विष्टाशो भूविदारक । विलम्बित-
मृगश्चैव प्रोक्तो ' राजनिघण्टके ' ॥ ६१ ॥ तस्माद्गुरुग्रामवराहमास
तनाति मदोबलवीर्यवृद्धिम् । घोडा ॥ अश्वो घाटस्तुरङ्गश्च तुरगस्तु
तुरङ्गम ॥ ६२ ॥ बाहो बाजी मुद्रमोजी वीतिसप्तिश्च सैधवः ।
हरिर्हयश्च धारागो जवनो जीतवो जवी ॥ ६३ ॥ ' गन्धर्वो बाहनश्रेष्ठो
श्रीभ्राताऽमृतसोदर । प्रोक्तो ' राजनिघण्ट ' तु शास्त्रार्थकृशालैर्नरैः
॥ ६४ ॥ हसस्तु शालिहोत्रश्च ययुर्धन्वन्तरौ स्मृतः । अथ शिंगरु ।
भृङ्गला दुर्विनीतश्च किशोरस्तुरगार्भकः ॥ ६५ ॥ अथ घोडी । वाजि-
नी बडवा वापी प्रसूराश्वाश्विनी 'नृपे । ' धन्वन्तरिनिघण्ट ' च वामनी
परिकीर्तिता ॥ ६६ ॥ अश्वमास मवेदुष्ण वातघ्न गौरव लघु । पित्तदाह-
प्रद नृणां तदेतन्नातिसेवनात् ॥ ६७ ॥ गाढव । गर्दभ शकृकर्णश्च बलीयो
रासमः खरः । भारवाहो भूरिगमश्चक्रिवान्धूसरो ' नृपे ' ॥ ६८ ॥
' धन्वन्तरिनिघण्टे ' च सप्रोक्तो रेणुभूषितः । गर्दभप्रभव मास किञ्चि-
द्गुरु बलप्रदम् ॥ ६९ ॥ रुच्य तु वनज शैत्य बहुवीर्यबलप्रदम् ।
अथ खेचर । खेसरोऽश्वखरोद्भूतः सकृद्गर्भेष्वगः क्षमी ॥ ७० ॥
सतुष्टो मिश्रजश्चैव मिश्रशब्दोतिभारगः । प्रोक्तो ' राजनिघण्टे ' ॥

तु कविभिः शास्त्रवेत्तभिः ॥ ७१ ॥ ' धन्वन्तरिनिघण्टे ' च वाग्भोऽ-
 श्वतराध्वगः । वोकट शैली । अजो बुकस्तु मेध्यश्च लम्बकर्णश्च.
 छागलः ॥ ७२ ॥ बर्करश्चैव छागश्च मेको वस्तः पयस्वलः । अजा
 पयस्विनी भीरुश्छागी मेध्या गलस्तनी ॥ ७३ ॥ मोको ' राजनिघण्टे '
 तु बुद्धिमद्भिर्न संशयः । छागमांसं लघु स्निग्धं नातिशीतं रुचिप्र-
 दम् ॥ ७४ ॥ निर्दोष वातपित्तघ्नः मधुरं बलपुष्टिदम् । मेढी । मेपो
 मेढो हुडश्चैव मेढुः कर्णयुक्तरुणः ॥ ७५ ॥ एटका । शृंगी तु पेडको-
 ऽविश्च त्वरत्रो लोमशो बली । मोको ' राजनिघण्टे ' तु कविभिर्विदुषां
 वरैः ॥ ७६ ॥ मेपमांसं गुरुस्निग्धं बल्यं पित्तकफप्रदम् । मेदपुद्गामिपं
 वृष्यं कफपित्तकरं गुरु ॥ ७७ ॥ हरण । मृगः कुरङ्गो वातापुः कृष्ण-
 सारः सुलोचनः । हरिणोऽजिनयोनिश्च येनः पृथतराजके ॥ ७८ ॥
 कुसारङ्गः सशालोऽड्डुः शबलः पृष्ठ एव च । चारुलोचनसंज्ञश्च स्मृतो
 धन्वन्तरौ ध्रुवम् ॥ ७९ ॥ ' द्रव्यरत्नाकरे ' चैव ताम्रवर्णः यकी-
 र्तितः । एणस्य मांसं लघु शीतवृष्यं त्रिदोषहृत्पट्टसदं च रुच्यम् ॥ ८० ॥
 कुरङ्गमांसं मधुरं च तद्वत्कफापहं मांसदापित्तनाशि । चित्तळ ।
 ककुवा ग्रन्थसारंगः शाखी शृङ्गश्च चित्रलः ॥ ८१ ॥ मोको ' राज-
 निघण्टे ' तु कविभिः शास्त्रविद्यमेः । चित्रांयाश्चित्तलः स्विन्ने वरसकर्णश्च
 पीतकः ॥ ८२ ॥ ' धन्वन्तरिनिघण्टे तु संप्रोक्तो विदुषांवरैः । विपांगो
 वातलः कश्चिन्मधुरो बलवर्द्धनः ॥ ८३ ॥ रोहिस । रुरुस्तु रोहिषो रोही
 दश्यशम्बरनीलर्कः । पृष्ठतो रंकुसश्चैव बलपृष्ठश्च ' राजके ' ॥ ८४ ॥
 न्यंकुश्च रोहिरोहीशो ' धन्वन्तरिनिघण्टके ' किञ्चिद्भि वातलो
 जेषो मधुरः फान्तिकारकः ॥ ८५ ॥ सांवर । भारशृंगो
 महाशृंगो नृपे वनप्रियः स्मृतः । शाबरो बहुविषाणी च धन्वन्तरिनिघ-
 ण्टके ॥ ८६ ॥ तद्वच्छम्बरमांसं तु वृष्यं दोषत्रयापहम् । श्रीकारी ।
 शिखायुषः कुरंगश्च श्रीकारी च महाजवः ॥ ८७ ॥ जवनो वेगिहरिणो
 जंघालो जंघिकान्धयः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु पुरातनचिकित्सकैः
 ॥ ८८ ॥ श्रीकारी स भवं मांसं लघु हृद्यं बलप्रदम् ॥ माकट । नानरो

मर्कटः कौशः कपी शास्त्रामृगो हरिः ॥ ८९ ॥ पृवङ्गमो वनौकश्च
 पृवङ्गः पृवनः पृवः । प्रोक्तो राजनिघण्टे तु कविभिःशास्त्रदृष्टिभिः ॥ ९० ॥
 वनेचरो दुर्मुखश्च धन्वे च वनमोचरः । वानरः पवनः श्वासमेदःपाण्डु-
 कृमिञ्जयेत् ॥ ९१ ॥ वानर ॥ गोलागूलस्तु गौरास्यः कपिः कृष्णमुख-
 स्तथा । मन्दुरो भूषणाख्यश्च नृपोक्तः कृष्णवानरः ॥ ९२ ॥ बिलेशया
 दत्तमृगाः सप्रोक्ताः कविभिः 'नृपे' । गुणस्तु पूर्ववत् ॥ खवल्लोमांजर । शल्पः
 शल्पमृगश्चैव वज्रशुक्तिर्विलेशयः ॥ ९३ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु धन्वे
 चाल्पमृगः स्मृतः । साल्ई । शल्पः शली विदित्युक्तः शलालो राज-
 नामके ॥ ९४ ॥ सारसल । शल्पलोम्री तु शलली शललं शलमेघ
 च ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' च सम्यक्शास्त्रार्थदृष्टिभिः ॥ ९५ ॥ शलकं तु
 शलिकश्चैव सूचिनाऽविस्तथा तथा । खरा 'धन्वनिघण्टे' च 'द्रव्ये' तु
 शुचिना स्मृतः ॥ ९६ ॥ शलूकः श्वासकासास्रशोषदोषत्रयापहः । सेधा
 तथैव विज्ञेया विशेषाद्दलवर्धनी ॥ ९७ ॥ खोकड । कौकडो जवनः
 कौको दावो बिलशयः स्मृतः । 'नृपे' चमरपुच्छश्च लोमशो धूम्रवर्णकः
 ॥ ९८ ॥ ज्ञेयो मधुरवृत्तश्च श्वासानिलपित्तहरं तन्मासं पिचदाहकरम् ॥
 मुंगस ॥ नकुलः शुचिवक्त्रश्च सर्पारिलोहिताननः ॥ ९९ ॥ 'सर्पदर्वीकर-
 श्चैव ततो द्विरसनस्तथा । पातालनिलयश्चैव बली 'राजनिघण्टके' ॥ १०० ॥
 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च पिङ्गलो बभ्रुहस्यते । कृशताश्वातकासप्रो
 नकुलः श्लेष्मवातजित् ॥ १ ॥ नाग ॥ नागस्तु काद्रवेयश्च वक्रांगो
 इन्द्रशूककः ॥ चक्षुःश्रवा विषधरो गूढाघिः कुण्डली फणी ॥ २ ॥
 पञ्चगो वायुमस्रश्च मोगी सर्पो द्विजिह्वकः ॥ दष्ट्री मुजंगोऽहिश्चैव
 कंचुकी च सरीसृपः ॥ ३ ॥ उरणो दीर्घपुच्छश्च मुजगो 'राजनामके' ॥
 भाशीविषस्तु व्यालश्च जिह्वको 'धन्वनामके' ॥ ४ ॥ सर्पभेदः ॥ गो-
 नासो मण्डली चैव चित्राङ्गो व्यंतरी तथा ॥ कुलको हरितश्चैव राजिलं
 इण्डुभ 'नृपे' ॥ ५ ॥ श्वेतनागोऽरुणः सर्पस्तथैव चित्रनामकः ॥ योनस-
 श्चैव पीतश्च कुलङ्गः कृष्णइण्डुभः ॥ ६ ॥ राजिलो जलसर्पश्च विरुळो

'धन्वनामके' ॥ श्वासानिलकासहरं तन्मांस पिचदाहकरम् ॥ ७ ॥ घृसा॥
 महामूषकसज्ञस्तु मूषी विघ्नेशवाहनः ॥ महागः सस्यमारी च मूफलो
 भित्तिपातनः ॥ ८ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु मुखीमूषस्तु 'धन्वके' ॥
 चुचुंचरी ॥ चुचुचरी राजपुत्री तथैव प्रतिमूर्षिका ॥ ९ ॥ सुगन्धमूषिका
 गन्धा शुण्डी निशुण्डी मूषिका । प्रोक्ता राजनिघण्टे तु कविमिः
 शास्त्रवेत्तृभिः ॥ १० ॥ चंदीर ॥ पिगोखर्मूषकश्चैव नखी खनक उदिर ॥
 बिलकारी च धाम्यारिन्नेपे बहुप्रजः स्मृतः ॥ ११ ॥ धन्वतरिनिघण्टे च
 खननः परिकीर्तितः ॥ श्वासानिलकासहरं तन्मांस पिचदाहकरम् ॥ १२ ॥
 घोरपट्ट ॥ गोधा तु गोषिका दारुमुख्या 'राजनिघण्टके' ॥ 'धन्वन्तरिनि-
 घण्टे' च दारुमत्स्या प्रकीर्तिता ॥ १३ ॥ गोधानिलहरा बल्या वृष्पा मेघ्या च
 कीर्तिता ॥ सरडा ॥ सरटः कृकलासस्य प्रतिसूर्यः शयानक ॥ १४ ॥
 वृत्तिस्थः कण्टकागारो दुरारोहो द्रुमाश्रयः ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च स्मृतः
 सूर्यः शयानकः ॥ १५ ॥ घृशरा सरड । जाहाको गानसकोची म-
 ण्डली बहुरूपकः । कामरूपी विरूपी च पेलुवासो 'नृपे' स्मृतः ॥ १६ ॥
 पाल । पल्ली तु मुसली चैव गृहगोधा विषमरा । ज्येष्ठा च कुड्यपुच्छा
 च पल्लिका तु 'नृपे' स्मृता ॥ १७ ॥ तन्तुवायः । कांतीण । तन्तु-
 वायस्तूर्णनामो लूता फर्कटकः कुमिः । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च सप्रोक्ता
 मर्कटकमिः ॥ १८ ॥ विपकिडा । हलाहलस्त्वञ्जलिका 'नृपे'
 कुदिलकीटिका ॥ विंचू । वृश्चिकः शूककीटश्च दलीद्रेणस्तु वृश्चिकः ॥ १९ ॥
 'द्रव्ये' शतपदी चैव चित्रागः परिकीर्तिता । गोम । 'नृपे' कर्ण-
 जलूका च चित्रागी शतपादिका ॥ २० ॥ काळी मुंगी । पिप्पली स्त्री-
 सज्जिका च 'नृपे' प्रोक्ता पिपीलिका । तेलमुंगी । उदपा फविज-
 घीका 'नृपे' तेलपिपीलिका ॥ २१ ॥ मुंगळा । कृष्णा तु पीपिली
 स्थूला 'नृपे' वृक्षरुहा स्मृता ॥ देरूण । मत्कुणो रक्तपायी च रत्नागो
 मन्त्रकाश्रयः ॥ २२ ॥ बिलेशयः कविश्रेष्ठः सप्रोक्तो नैव सजयः ।
 अथ जलेशयप्राणिमांसगुणाः । तत्र जलेशयप्राणी । जलजन्तुर्जल-

प्राणी क्रूरकर्मा जलेशयः ॥ २३ ॥ जलजालः कविश्रेष्ठैः प्रोक्तो ' राज-
निघण्टके ' । मासा । मत्स्यो वैसारिणो मीनः पृथुगेमो क्षपोण्डजः
॥ २४ ॥ विमारः शकुली शङ्खोऽपाठानो ' राजनामके ' । मत्स्यभेदः ।
राजीवः शकुलो शृगी वागुसः शलपल्लवः ॥ २५ ॥ पाठानः कुलरश्चैव
नद्यावर्तश्च मुद्गरः ॥ तिमिरो विदुषाश्रेष्ठैः प्रोक्तो ' राजनिघण्टके '
॥ २६ ॥ विस्मृतौ यौ पुनः प्रोक्तौ तत्रैवानिमिषस्तिमिः ॥ ' धन्वन्तरिनि-
घण्टे ' च कलिशः जल्पचुल्लकः ॥ २७ ॥ कुशली चैव कटी च रोहि-
नस्तिमिराण्डजः ॥ मकराख्यमहामत्स्यभेदः ॥ मकराख्यस्तु मातगो
मकरस्तु चिलीचिमः ॥ २८ ॥ तिमितिमिगिलश्चैव तिमिगिलगिलस्तथा ।
महामत्स्यः कविश्रेष्ठैः सप्रोक्तो ' राजनामके ' ॥ २९ ॥ ' धन्वन्तरि-
निघण्टे ' च चिरिलः परिकीर्तितः ॥ मत्स्या बलकरा वृष्या गुरव-
फफपित्तलाः ॥ ३० ॥ उष्णाभिष्यदिनः स्निग्धा बृहणाः पवनापहाः ।
नावेया बृंहणा वृष्या गुरवोनिलनाशनाः ॥ ३१ ॥ कौष्या वृष्याः कफा-
ष्ठीलामूत्रकुच्छूनिबधदाः । तडागा गुरवो वृष्याः शीतला बलमूत्रदाः
॥ ३२ ॥ तडागवन्निर्झरजा बलायुर्मतिहकराः ॥ सरोजा मधुराः स्निग्धा
बल्या वातनिवर्हणाः ॥ ३३ ॥ सामुद्रगुरवो नातिपित्तलाः पवनापहाः ॥
तत्रापि लवण भोज्या ग्राहिणो दृष्टिनाशनाः ॥ ३४ ॥ इन्द्रोद्भवा बल-
करा न तु स्वच्छजलोद्भवाः । हेमन्ते कृपजा मत्स्याः शिशिरे सारसा
हिताः ॥ ३५ ॥ मधुग्रीष्मान्बुक्तालेषु नदीचोद्भूतडागजाः । शरस्तु नेक्ष-
राः सर्वे वर्षेत्थाः सर्वदोषदाः ॥ ३६ ॥ कपायानुरसः स्वादुचातघ्नो
नातिपित्तकृत् । रोद्धितः सर्वमत्स्याना वरा वृष्वोर्दितातिजित् ॥ ३७ ॥
कपायमबुरा रुक्षो निशदो रोजनो लघुः । ग्राही तु नदकावर्तस्तस्यानु-
सकलः स्मृतः ॥ ३८ ॥ इतिसर्वमत्स्यभेदगुणः ॥ अथ सुसर ॥
शिशुकः शिशुमारश्च ग्राहो राजी वराहकः ॥ मगर ॥ नक्रन्तु
' कुमिरश्चैव गिलग्राहमहाबलो ॥ ३९ ॥ प्रोक्तो ' राजनिघण्ट '
तु कविभिर्विदुषावरैः । ' धन्वन्तरिनिघण्टे ' तु मकरस्तुपिदृष्टकः

॥ ४० ॥ शिशुमारो गुरुवृष्यः कफकृद्वातनाशनः । बृहणो बलदः स्निग्ध-
 स्तद्वन्द्यकरमाविशेत् ॥ ४१ ॥ कांसव ॥ कच्छपः कमठः कूर्मो गूढागो
 धरणीधरः । कच्छेष्टः पललावासस्तथा कठिनपृष्ठकः ॥ ४२ ॥ वासो
 वृत्तश्च कविभिः समोक्तो 'राजनामके' । वृत्तस्तु पल्लवावासो 'धन्वन्तरि-
 निघण्टके' ॥ ४३ ॥ कच्छपो बलदः स्निग्धो वातघ्नः पुस्तकारकः ॥
 ॥ खेकडा ॥ कर्कटस्तु कर्कटकः कुलीरश्च कुलीरकः ॥ ४४ ॥ मवशकः
 पैकवासार्तास्तर्पणाम्पूर्यदको 'नृपे' । ककेटो बृहणो वृष्यः शीतलोत्तुगदा-
 यहः ॥ ४५ ॥ वेङ्क । मङ्कको ददुरो मङ्को हरिर्मेकश्च लूलुकः । शालु-
 कश्चैव वर्षाभूः एव । कटुग्वो 'नृपे' ॥ ४६ ॥ राजमङ्क थोरला वेङ्क ॥
 ततस्तु राजमण्डूको महामण्डूक एव च । पीतायः पीतमङ्कको वर्षाघोषो
 महारवः ॥ ४७ ॥ 'प्रोक्ता राजनिघटे' तु कविश्रेष्ठेर्न सजयः । मण्डूक
 श्लेष्मलो नातिपिच्छलो बलकारकः ॥ ४८ ॥ जलवा ॥ जलका तु जली-
 का च रक्तपा रक्तपायिनी । रक्ते सदशिका तीक्ष्णा वमनी जलजीवनी
 ॥ ४९ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु वसुसख्या भिषग्वरैः ॥ पाणीकावळा ॥
 जलकाक उवात्यूहः कालकटश्च 'राजके' ॥ ५० ॥ जलपारवा । जल-
 पारावतश्चैव तथा जलरूपोतकः । पीतकाकश्च कविभिः प्रोक्तो 'राजनि-
 घटके' ॥ इतिभलेशयाः ॥ ५१ ॥ अथसाधारणपक्षी । खगस्तु विह-
 गश्चैव विहगोथ विहगम । पिपतिश्चैव पत्री च पतत्री
 पत्रवाहनः ॥ ५२ ॥ शकुनिः शकुनश्चैव तथैव विक्रि-
 राट्ठज । विः पतगो खगश्चैव नगीकश्च पतन्नभः ॥ ५३ ॥ वाजि-
 पत्रोडजश्चैव द्विजः पक्षी निडोद्भवः । युगः शकुतः पतगः पिच्छिनी
 पतगस्तथा ॥ ५४ ॥ विकिरो विडुपाश्रेष्ठः समोक्तो 'राजनामके' । विप-
 त्रश्चैव तिर्यगो वयाविः खेचरौ वनौ ॥ ५५ ॥ गीघ ॥ गृधस्तार्क्ष्यः शात्म-
 लिम्बः खग्रेद्रो भुग्नतकः । वज्रतुडस्तु दाक्षायो मरुत्मान्दूरदर्शन ५६
 प्रोक्तो 'राजनिघटे' च दाक्षिण्याधन्वनामके ॥ रणगीघ ॥ करगो नील-
 पिच्छश्च लवकर्णो रणमियः ॥ ५७ ॥ रणपक्षी पिच्छवाणः स्थूलनीलो

मयंकरः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' च 'धन्वे' तु करकः स्मृतः ॥५८॥ गृध्रस्य
 काकवन्मांसं विशेषाज्ञेयोरोगजित् ॥ बहिरीससाणा ॥ श्येनः शशादः
 क्रव्यादः कामांगश्च खगांतकः ॥ ५९ ॥ तरस्वी तीव्रसंतापो नृपेस्मि-
 स्ताक्ष्यनायकः । 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु क्रव्यादः परिकीर्तितः ॥ ६० ॥
 श्येनचरिर्भव मांसं प्रायो दोषकरं गुरु ॥ कंकपक्षी ॥ कंकस्तु लोहपृ-
 ष्ठश्च सदंशवदनः खरः ॥ ६१ ॥ रणालंकरणः क्रूरः सद्यः स्यादामिष-
 पिषः ॥ कावळा ॥ काकस्तु वायसो ध्वांशः कोनोरिष्टः सकृत्पन्नः ॥ ६२ ॥
 बलिभुग्बालिपुष्टश्च धूलिजंघो निमित्तकृत् । कौशिकारिश्चिरायुश्च करदो
 मुखरस्वरः ॥ ६३ ॥ आत्मघोपो महालोभश्चिरंजीवी तथैव च । चललो-
 चनसंज्ञस्तु प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' ॥ ६४ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' तु प्रोक्तश्चो-
 लूकजित् तथा ॥ रानकावळा ॥ द्रोणस्तु द्रोणकाकश्च काकोलोऽरण्यवायसः
 ॥ ६५ ॥ वनवासी महामाणः कररावी पलप्रियः । प्रोक्तो 'राजनिघण्टे' तु
 महाविद्याविशारदैः ॥ ६६ ॥ काकमांसं मांसमांसं चक्षुष्यं दीपनं लघु
 आयुष्यं दीपनं बल्यं क्षतदोषक्षयापहम् ॥ ६७ ॥ घुबड ॥ उलूकस्तामसे
 घूको दिवांधः 'कौशिकः' कुविः । नक्तंचरो निशाटश्च काकारिघोरि-
 दर्शनः ॥ ६८ ॥ कविरर्धसहाभीरुर्धन्वन्तरिनिघण्टके । उलूकपल्लवं प्रांति-
 प्रदं वातप्रकोपदम् ॥ ६९ ॥ बडवाघूळ । बल्लूली वक्त्रविद्योज्ञा दिवांधा
 च निशाचरी । स्वैरिणी च दिवास्वापा मांसेष्टा मातृवादिनी ॥ ७० ॥
 प्रोक्ता 'राजनिघण्टे' तु शास्त्रविद्याविशारदैः । बल्लुनी नक्तंचारी च
 वक्त्रविद्याविनिर्गमा ॥ ७१ ॥ 'धन्वन्तरिनिघण्टे' च क्रव्यादी परिकीर्तिता ।
 ॥ मयूर ॥ मयूरश्चंद्रिका बहिर्नीलकंठः शिखी ध्वजी ॥ ७२ ॥ मेघानंदी
 कलापी च शिखंडी चित्रपिच्छकः । बार्हेणः प्रचलाकी च शुक्लापांगः
 शिखाबलः ॥ ७३ ॥ केकी भुजंगभोजी च मेघनाद उलासकः । बहि-
 मारः कपालश्च बहिर्नेत्रः प्रचालकः ॥ ७४ ॥ शिखाज्ञेयो घनिः
 कालः प्रोक्तो 'राजनिघण्टके' । नर्तको घनरावश्च धन्वन्तरिनिघण्टके ॥ ७५ ॥
 मयूरमांसं सुस्निग्धं वातघ्नं शुक्रवर्धनम् । बल्यं मेघाकरं प्रोक्तं चक्षुरोग-

विनाशनम् ॥ ७६ ॥ कर्कोची ॥ कुर्कुरः स्वरशब्दश्च कौचः पाक्तधरः
 खरः ॥ नीलकर्कोची ॥ नीलकौचस्तु नीलांगो दीर्घप्रीवोतिजागरः ॥ ७७ ॥
 प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु कविभिः शास्त्रवेत्तुभिः । कौचः पिचानिलहरो
 पंचकः कफवातजित् ॥ ७८ ॥ वगळा ॥ कंको बको बकोटश्च तीर्थसेवी
 च तापसः । मीनघाती मृपाध्यायी निश्चलांगश्च शंभिकः ॥ ७९ ॥
 ॥ बलाका ॥ बलाका बिलकंठी च शृङ्गांगी दीर्घकधरा । धर्मातः कामुकी श्वेता
 मेघनादा जलाश्रया ॥ ८० ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु शास्त्रविद्याविशारदैः ।
 सतो वक्त्रवाकाद्या गुरवो मांसभक्षणात् ॥ ८१ ॥ चक्रवाक ॥ चक्रः कोक-
 श्चक्रवाको रधांगो भूमिभेमकः । द्वद्वचारी सहायश्च कातेकामी तदुत्तरम्
 ॥ ८२ ॥ रात्रिविश्लेषगामी च वसोजः कामुको 'नृपे' । रात्रौ विपोगी
 'धन्वे' च द्वद्वगस्तु स्तनोपमः ॥ ८३ ॥ कव्यं च चक्रवाकस्य लघु स्निग्धं
 बलप्रदम् । बन्धिकृत्सर्वशूलघ्नमुष्णवातामयापहम् ॥ ८४ ॥ सारस ॥
 सारसो रक्षिकः कामी नीलांगो मणितारवः । नीलकंठो रक्तनेत्रः काकुवा
 कामिवल्लभः ॥ ८५ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु शास्त्रज्ञकुशलैर्नरैः । सार-
 सस्य तु मांसं च मधुराम्लकपायकम् ॥ ८६ ॥ मेहातिसारपित्तघ्नं ग्रह-
 ण्यशीरुत्पापहम् ॥ हंस ॥ हंसो धवलपक्षी च चक्रांगो मानसालयः ॥ ८७ ॥
 कलहंसः कलवांश्च कलनावो मरालकः । हंसी तु वरटा चैव वरलाधार-
 ला तथा ॥ ८८ ॥ मराली मंजुगमना चक्रांगी मृदुगामिनी । प्रोक्ता
 'राजनिघटे' तु शास्त्रार्थकुशलैर्नरैः ॥ ८९ ॥ हतः स्निग्धो गुरुर्वृष्यो
 वीर्योष्णः स्वरवर्णकृत् । वातास्रपित्तशमनो बृंहणो बलवर्धनः ॥ ९० ॥
 ॥ कौयडा ॥ कुक्कुटस्ताम्रचूडश्च कालज्ञश्चरणायुधः । नियोद्धः कुक्कुवाकुश्च
 बिष्किरो नखरायुधः ॥ ९१ ॥ कुक्कुटः स्निग्धरुक्षोष्णः स्वराग्नीन्द्रियदा-
 दर्थकृत् । बृंहणो वातहा वृष्यो लघुर्वलकृतः स्मृतः ॥ ९२ ॥ होला ।
 कपोतः कोकदेकश्च धूसरो घृमलोचनः । दहनोमिसहायश्च भीषणो गृह-
 नाशनः ॥ ९३ ॥ प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु भस्मांगो घृष्टृद्धनो । स्वादुः
 कपायश्च लघुः कपोतः कफपित्तहा ॥ ९४ ॥ पारवा ॥ पारावतः

कलरवस्तथैवारुणलोचनः । रकेक्षणः कुररवः कामी मदनक-
 स्तथा ॥ ९५ ॥ कंडीरवो वाग्विलासी तथा मदनमोहनः ।
 गृहकपोतकः प्रोक्तो ' राजनामनिघंटके ' ॥ ९६ ॥ खटूतर ॥
 पारावतस्तु श्रग्देशी कामुको घुघुलारवः । अंधिचिच्छो गलरवः
 प्रोक्तो ' राजनिघंटके ' ॥ ९७ ॥ पारावतो गुरुः स्वादुः कपायो रक्तपित्तहा
 ॥ कोकील ॥ कोकिलः परपुष्टश्च कालः परमृतः पिकः ॥ ९८ ॥ वसतद्वृ-
 तस्ताम्राक्षो गंधर्वो मधुगायनः । वासतः कालकंडश्च कामांधः काकली-
 रवः ॥ ९९ ॥ कुहूस्वाऽन्यपुष्टश्च मत्तो मदनपाठकः । सुकडी मधुरा-
 लापः कालकंडी मधून्मदः ॥ ७१०० ॥ कामगो वनभूषश्च प्रोक्तो
 ' राजनिघंटके ' । फोको वसंतार्तवश्च ' धन्वंतरिनिघंटके ' ॥ १ ॥ कांकिलो
 वृहणः प्रोक्तो मधुरो बलवर्धनः । कफमेः स्वरकुद्ग्राही चक्षुष्यः कफका-
 सजित् ॥ २ ॥ रात्रा ॥ शुक्रः कीरो रक्ततुडो मेघावी मनुपाठकः । राजशू-
 कस्तु प्राज्ञश्च शतपत्रो नृपप्रियः ॥ ३ ॥ प्रोक्तो ' राजनिघंटे ' तु धन्वे
 च प्रियदर्शनः । महाराजशुकश्चैव वक्रतुडः प्रकीर्तितः ४ शक्रो बल्योथ
 वृष्यश्च वीर्यवृद्धिकरः परः । वातलो बृंहणो ज्ञेयस्तथा राजशुकः ' स्मृतः '
 ॥ ५ ॥ सांलुंखा ॥ सारिका मधुरालापा दूती मेघावनी तथा । गोर-
 टीका गोकिराटी गोरिका कलहप्रिया ॥ ६ ॥ प्रोक्ता ' राजनिघंटे ' तु ' धन्वे '
 गोरटिका तथा । कलहाकुला गोविराटी संप्रोक्ता प्रियवादिनी ॥ ७ ॥
 सारिका च भवेस्त्रिधा वातला श्लेष्मला स्मृता । वीर्यसंजननी वृष्या
 मेष्पा चैव रगायनी ॥ ८ ॥ चकोर ॥ चकोरश्चद्रिकापार्या कौमुदी-
 जीवनो ' नृपे ' ॥ चकोरो बृंहणो बन्धुः क्षिप्रगोष्णो वातनाशनः ॥ ९ ॥
 ॥ चातक ॥ चातकस्तोकश्चैव सारंगो मेघजीवनः । ' नृपे ' प्राक्तः कविव-
 रैर्वैशाल्यार्थकोविदैः ॥ १० ॥ कौञ्ज ॥ हरितस्तेजलश्चैव प्रोक्तो
 ' राजनिघंटके ' ॥ पेंचापने ॥ तैलपास्तु पयोष्णी च जंनना जीनयत्रिका
 ॥ ११ ॥ शृंगी ॥ शृंगः कलिमो भूमाटो वीर्यपटः कलिमकः ॥ भरद्वाज ॥
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजो खंजनः खंजरीटकः ॥ १२ ॥ चातको नीलपित्तमा

भारद्वाजः कफास्रजित् ॥ चास ॥ चापः किकटिर्षीश्चैव नीलांगः प्रिय-
 दर्शनः ॥ १३ ॥ वर्तिका ॥ वर्तिको वार्तिकश्चैव वर्ती तु गानिकायकः ॥
 वार्तिकः कटुकः पाके कपायो वातकृलघुः ॥ १४ ॥ मेधामिवर्धनो वृष्यो
 ग्राही वर्णप्रसादनः ॥ रानचिडी ॥ चटकः कलर्विकश्च कामुको नील-
 कण्ठकः ॥ १५ ॥ गृहचिडी ॥ चटका कलर्विकी च चटकैस्तु तन्मृतः ॥
 धूरचिडी ॥ धूरराऽऽरुण्यचटका कुब्जा भूमिशया नृपे ॥ १६ ॥
 भोरडी ॥ भारिटः श्यामचटका शैशिरः कणमक्षकः ॥ अथ जिगजिगा
 गृहकृत्योऽक्षमो मीरुर्वपिद्विटः कणप्रियः ॥ १७ ॥ चटकः शीतलः
 स्निग्धः स्वादुः शुक्ररुक्मयः ॥ सन्निपातहरो वेश्मचटकः शुक्लः परः
 ॥ १८ ॥ लावा ॥ लावस्तु लावकश्चैव लवो लावो नृपे स्मृतः ॥ ला-
 वा तु लावको लावश्चित्रदेहश्चतुर्विधः ॥ १९ ॥ पाशुलो गौरकश्चान्यो
 पौंड्रको धर्मरास्तथा ॥ लावो हृद्यो हिमास्निग्धो ग्राहिणो वह्निदीपनः
 ॥ २० ॥ पाशुलो श्लेष्मलस्तेषा वीर्याग्नोनिलनाशनः ॥ गौरकः कक्र-
 वातघ्नो रुक्षो बन्धिप्रदः परः ॥ २१ ॥ पौंड्रकः पित्तदः किंचिल्लघुः श्ले-
 ष्मा निलापहा । धर्मरो रक्तपित्तघ्नो हृदामयहरो हिमः ॥ २२ ॥
 तथा विपाके कटुकः सन्निपातेन पूजितः ॥ लावा सन्निपातहरः ॥
 पक्षिणा लावकश्रेष्ठो लावको जागलात्मकः ॥ २३ ॥ सम्राही दीपनः
 श्रेष्ठः कपायो मधुरो लघुः ॥ तित्तिर ॥ तिमिरिस्तित्तिरश्चैव याजुषो
 'राजनामके' ॥ २४ ॥ तित्तिरश्चित्रपक्षी स्यात्कृष्णो गौरः कर्पिजलः ।
 तित्तिरः सर्वदोषघ्नो ग्राहिवर्णप्रसादनः ॥ २५ ॥ हिकाश्वासानिलहरो
 विशेषाद्गौरितित्तिरः । पिंगला । क्षुद्रालूकः शकुन्तेयः पिंगलो दुडुल-
 स्तथा ॥ २६ ॥ वृक्षाश्रयो वृहद्रावी विशालाक्षो मयंकरः ॥ काळीचिडी ॥
 श्यामा वराही शक्रनी कुमारी चटका तथा ॥ २७ ॥ दुर्गा देवी
 पोतकी च रामा कृष्णा च पाण्डवी । कालिका शिबिका च पोतका
 'राजनिघंटके' ॥ २८ ॥ काजवा ॥ प्रमाहीटस्तु खद्योतः खद्योतिरुपसृ-
 र्यकः ॥ तेलिन ॥ तेलिनी तैलहीटश्च पञ्चविंश दद्रुनाशिनी ॥ २९ ॥

॥ विरवोहटी ॥ शक्रगोपस्तु वर्षाम् रक्तवर्णस्तथैव च । इद्रगोपकसज्ञस्तु
सप्रोक्तो 'राजनामके' ॥ ३० ॥ भ्रमर ॥ भ्रमर. पट्पदो भृगः कलालापः
शिलीमुखः । पुण्यवयो द्विरेफोली मधुकृन्मधुपो द्विपः ॥ ३१ ॥ भस-
रुश्चचली केली शकारी मधुलोलुप । इदीवरश्च मधुलिट् रामतो मधु-
मारकः ॥ ३२ ॥ 'प्रोक्ता राजनिघटे' तु शास्त्रविद्याविशारदैः ॥ मोहोळमाशी
॥ चर्वाणा माक्षिका नीला शरमा मधुमाक्षिका ॥ ३३ ॥ गांधीणि ॥ गवारी
वरटी क्षुद्रा क्षारा च क्षुद्रचर्वणा ॥ डांस ॥ दशादुटमुखः क्रूरः क्षुद्रिका
वनमाक्षिका ॥ ३४ ॥ माक्षिका चामृतोत्पन्ना वमनी चपला 'नृपे'
॥ घुंगुई ॥ मश्यको वज्रतडश्च सूच्यास्यः सूदममाक्षिका ॥ ३५ ॥ ॥ त्रि-
जाग्रदा धूम्रो नलिबाह्यान्यजा तथा ॥ उवा ॥ युका तु केशकीटश्च
स्वेदज. पट्पदा नृपे ॥ ३६ ॥ लिरवा ॥ पक्षमयूका पट्चरणा श्वेतधू-
फागवस्त्रका । लीकायुकाडसज्ञश्च वस्त्रकाः परिकीर्तिताः ॥ ३७ ॥

इति सिंहादिवर्ग समाप्तः ॥ ६ ॥

अथ मनुष्यवर्गः ॥ मनुष्य ॥ मनुष्यो भूमिजो मर्त्यो मनुजो मानवो
नरः । द्विपदश्चतनश्चैव सप्रोक्तो 'राजनामके' ॥ ३८ ॥ भूस्पशो मानुष-
श्चैव भूस्थस्तत्रैव कीर्तितः । पुरुषः । पुरुषो ना नरश्चैव पुमान्पचजन-
स्तथा ॥ ३९ ॥ अर्थाश्रयोऽधिकारी च कर्महिस्तु पुमर्थवान् । प्रोक्तो
'राजनिघटे' तु वैद्यविद्याविशारदैः ॥ ४० ॥ स्त्री ॥ स्त्री योषा वनिता
चैव सुनया स्त्रबला तथा । नारी संमतिनी गमा वामागा ललनागना
॥ ४१ ॥ काता बधूः पुष्पी च सुभ्रुवा चरवर्णिनी । सुतनुश्चैव तन्वी
च तनुगु कामिनी जनी ॥ ४२ ॥ सनेत्री चैव तन्वगी रमणी तदनन्त-
रम् । भीरुः कुरमनयना प्रिया च मामिनी तथा ॥ ४३ ॥ योषिञ्च
महिला चैव महेला च विलासिनी । तितविनी तु प्रमदा सुदरी मत्तका-
मिनी ४४ ॥ अचितभ्रूवैललिता वामिता मामिनी तथा । वरारोहा
नतामी च विनता तु वरा तथा ॥ ४५ ॥ श्यामा तु दर्शिनी चैव
भार्या जाया स्मृता भुवम् । भार्या तु नयरी प्रोक्ता नायको पाटुते

एतन्ना ॥ ४६ ॥ कटुविनी पुरी च मृगमित्रा विद्या तथा । माघी
 पाणिना प्रोक्ता व्युष्टा च तदनाम ॥ ४७ ॥ कृत्तमाग्निका चैव
 त्वनिनिष्ठा स्वयंवरा । पतिरा तु यथा च कुलरी कुलपतिना ॥ ४८
 यनी च मृगिणी च । प्रोक्ता 'राजनिघटे' । उत्तमा चैव माया च
 विष्णुती तदनाम ॥ ४९ ॥ मेधावी चैव बटाशी तथैव द्वि-
 सूत्रिका ॥ मायावी चैव कृत्तमा च पृथग्भागीति 'द्रव्यके' ॥ ५० ॥ वागा
 तु कामुका चैव गौरी कमललोचना । युवकी चैव यागा च प्रोक्ता
 धन्यवरी ध्रुवम् ॥ ५१ ॥ नयरा ॥ भारी पतिर्वरः पातः परिणेतु प्रिये
 मृती । प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु वेद्यविद्याविशारदः ॥ ५२ ॥ नपुंसक ॥
 नपुंसकस्तु श्रीमश्च तृतीयाप्रवृत्तिस्तथा । पंडः पंडो नारी पोटा स्त्रीपुंगु
 'राजनामक ॥ ५३ ॥ पट्टारणी ॥ यटादेवी तु राक्षी च पट्टार्हा मलिनी
 तथा । प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु भिषग्विद्यापरायणः ॥ ५४ ॥ विलासिनी ॥
 भोगिन्या तु विलासिन्या संभुक्ते या च पार्थिवा । राजभोग्या सुमुख्या
 च भद्रिन्या 'राजनामके' ॥ ५५ ॥ वेद्या ॥ वेद्या तु गणिका भोग्या
 वारस्ती स्मरवीथिका । समाश्रुया जनी वच्चा चिरटी च सुवासिनी
 ॥ ५६ ॥ इच्छावती कामुका च वृषस्यंती च कामुकी । पृथ्वी चर्पणी
 चैव वधकी ह्यवती तथा ॥ ५७ ॥ इतरी कुलटा चैव रेशिणी पांशुला
 तथा । अशिखी त्ववरा चैव निषती त्वसुता ध्रुवम् ॥ ५८ ॥ आवि-
 श्वस्या च विधवा समा चालिः मग्नी तथा । वयस्या पतिपत्नी च तथैव
 च सभर्तुका ॥ ५९ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु चतुस्त्रिंशथ गण्यका ॥
 द्वात्तण ॥ ब्रह्मा तु ब्राह्मणो विप्रः पट्कर्मा द्विज उत्तमः ॥ ६० ॥
 प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु कविभिः शास्त्रकोविदः ॥ क्षत्रियः ॥ राजा तु सार्व-
 भौमश्च पार्थिवः क्षत्रियो नृपः ॥ ६१ ॥ प्रोक्ता राजनिघटे तु कविभिः
 शास्त्रवित्तमैः ॥ वैश्य ॥ वैश्यस्तु व्यवहर्ता च विद्वच्च वार्तिक एव च ॥ ६२ ॥
 वणिजस्तु वणिक्चैव प्रोक्ता 'राजनिघटे' ॥ शूद्र ॥ शूद्रश्चतुर्थः पञ्जातो
 द्विजदार उपासकः ॥ ६३ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' रिपनुरातन-

महाजनैः ॥ वाळ ॥ बालः पाकोऽर्भको गर्भः पोतकः पृथुकः शिशुः
 ॥ ६४ ॥ शवोर्भो बालिशश्चैव डिभोथ बटुरुचमः । सुज्ञैर्माणवकः 'प्रोक्तो
 'राजनामनिघटके' ॥ ६५ ॥ तरुणे ॥ युवा वयस्थस्तरुणो 'राजनामनि-
 घटके' । लैकरुं । बाल उत्तानशायी च डिमस्तु स्तनपास्तथा ॥ ६६ ॥
 स्तनधयी च कविभिः प्रोक्तो 'राजनिघटके' ॥ कुमारी । कन्या
 कुमारी गौरी च नम्रिकानागतार्तवा ॥ ६७ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु
 कविभिः शास्त्रकोविदैः ॥ मध्यमा ॥ मध्यमा तु वयस्था च युवती तरुणी
 'नृपे' ॥ ६८ ॥ तरुणी । चिरदी सुपमा इयामा प्रौढा दृष्टरजा 'नृपे' ।
 गरोदर । गुर्वीण्यापन्नसत्त्वा च ह्यंतर्वत्नी 'नृपे' स्मृता ॥ ६९ ॥ निष्क-
 ला ह्यातागी ॥ निष्कला जरती वृद्धा स्थविरा च गतार्तवा । प्रोक्ता 'राज-
 निघटके' तु शास्त्रविद्याविचक्षणैः ॥ ७० ॥ देह ॥ तनुस्तनूः सहनन
 शरीर च फलेवरम् । क्षेत्र पुराणी गात्रं च मूर्तिस्तु यत्तत्कामकः ॥ ७१ ॥
 देहोऽवर्णस्तगमिति पिंडविग्रह एव च । वरश्च कविभिः प्रोक्तो 'राजनाम-
 निघटे' ॥ ७२ ॥ अवयव । अगमकः प्रतीकश्च जघनोऽवयवो 'नृपे' ।
 ॥ मस्तकम् ॥ शिरः शीर्षं तु मुढ च मूर्द्धा मौलिश्च मस्तकम् ॥ ७३ ॥ वरा-
 गमुत्तमार्गं च कपाले केशम् 'नृपे' ॥ डोळे ॥ दृग्दोष्टेर्लोचन नेत्र चक्षर्न-
 यनमीक्षणम् ॥ ७४ ॥ अवक ग्रहण चाक्षीर्दर्शनम् च विलोचनम् । प्रोक्तं
 महाजनैः सद्मी 'राजनामनिघटके' ॥ ७५ ॥ केशः । केशः शिरमिजं
 बालः कुंतला मूर्धना कचा । चिकुरा चिह्नराश्चैतद्वेष्टा । कवरीमुखाः ॥ ७६ ॥
 'राजनामनिघटे' तु विद्वद्भिः कविभिः स्मृतः । अपांगं ढोळ्याच्या
 कोच्या ॥ अपांगो नेत्रपर्यंतो नयनोपाग 'राजके' ॥ ७७ ॥ घुवुळें ॥ तारा
 तु बिंबिनी चैव 'नृपे' प्रोक्ता कनीनिका ॥ कपाळ ॥ मातं ललाटमलिङ्ग गा-
 ध 'धन्वंतरी' स्मृतम् ॥ ७८ ॥ भोवई ॥ भिल्लिका नयनोर्ध्वः सू वल्ली
 नयनोर्ध्वगा । रोमराजीति विज्ञेया सप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ ७९ ॥ कान ॥
 श्रुतिः श्रोत्रं श्रवः कर्णं श्रवणं च वचोग्रहम् । शास्त्रज्ञैः कविभिः प्रोक्तं
 'राजनामनिघटके' ॥ ८० ॥ ओष्ठ ॥ ओष्ठोऽधरो दंतवासो दंतवस्त्र रद-

च्छदः । 'राजनामनिघटे' तु सप्रोक्तो विदुषावरैः ॥८१॥ ओष्ठकोपरे ॥
 ओष्ठभातोसृकिर्णाति प्राकृते कोपरे स्मृतः ॥ नाक ॥ घ्राण गधवहो
 घोणो सिधिणी नासिका 'नृपे' ॥ ८२ ॥ कानसूल ॥ शसकः कर्ण-
 सामीप्य सिधाण नासिकामलम् प्रोक्तो 'राजनिघटे' तु कविभिः शास्त्रको-
 विवैः ॥ ८३ ॥ तोड ॥ तुंडमास्य मुख वक्त्र वदन पवनाननम् । प्रोक्त
 'राजनिघटे' तु कविभिर्विदुषावरैः ॥ ८४ ॥ हनवटी ॥ ओष्ठाधश्चिद्रुक्
 गड प्रोक्तो 'राजनिघटके' ॥ गाल ॥ गलः कपोलरुः प्रोक्तो 'राजनाम-
 निघटके' ॥ ८५ ॥ दांत ॥ हनूर्ध्वं दशन दता रदा रदनका द्विजाः ॥ प्रोक्तो
 'राजनिघटे' तु कविभिः शास्त्रविचमैः ॥ ८६ ॥ जीभ ॥ जिह्वा रसज्ञा
 रसना प्रोक्ता 'राजनिघटके' ॥ टाळ ॥ काकुद तालुक तालु प्रोक्ता
 'राजनिघटके' ॥ ८७ ॥ पडजीभ ॥ सूक्ष्मा जिह्वा घटिका च लविका
 'राजनामके' ॥ गळ्यांतील जीभ ॥ प्रतिजिह्वोपजिह्वा च जिह्विका
 मूलजिह्विका ८८ अधोभागे स्थिता नून प्रोक्ता 'राजनिघटके' ॥ अर्ध-
 डा मानेचे आंतील सधी ॥ अवडस्तु शिरःपश्चात्सधिधाट, कृष्ण-
 छिका ॥ ८९ ॥ प्रोक्ता 'राजनिघटे' तु कविभिः शास्त्रविचमैः ॥ गळा ॥
 कदूभीवा कधरा च प्रोक्ता 'राजनिघटके' ॥ ९० ॥ विद्वद्भिः कवि-
 मिर्नून शिरोधा च शिरोधरः ॥ गळ्यांदी ॥ कठो गळो निगालश्च
 'नृपे' तु गलशुठिका ॥ ९१ ॥ धमनी ॥ गळ्याच्या शिरा खाद्यापासून
 कानापर्यंत ॥ धमनी चैव सेतुश्च प्रोक्ता 'राजनिघटके' ॥ जराची
 खांस, ॥ जत्रुरित्येव विख्याता सप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ ९२ ॥ काख ॥
 कक्षा दार्मूलमित्युक्त कविभिः 'राजनामनि' । पार्श्व काम्बेखालील वरगड्या ॥
 पार्श्वमित्येव सप्रोक्त, विद्वद्भिः 'राजनामके' ॥ ९३ ॥ पाठ ॥ पृष्ठपा-
 ठमिति प्रोक्त प्राकृते 'राजनामके' ॥ भुजा ॥ दोर्दोपश्च प्रवेष्टश्च मुजो
 बाहु, 'नृपे' स्मृतः ॥ ९४ ॥ हात ॥ पचशाखस्तु पाणिश्च करो हस्तो-
 ऽशयो 'नृपे' ॥ मणगट ॥ करमूलस्तु सप्रोक्तो मणिबधश्च 'राजके'
 ॥ ९५ ॥ कोपरे ॥ इलाकपोणिसप्रोक्ता कूर्परो 'राजनामके' ॥ मकोष्ठ ॥

मण्योऽप्यसूत्रं चार चोदं ॥ प्रकोष्ठो मणिबंधादिः स्वादिगुलिचतुष्टयम्
 ॥ १६ ॥ प्रकांड कोषरापासून प्रकोष्ठपावेतो ॥ प्रकांडः कूर्परामोक्तः
 प्रकोष्ठोतो 'नृपे' नृपैः ॥ अंगुली ॥ अंगुली करशाखा स्वालोके बांटे
 इति स्मृतः ॥ १७ ॥ तर्जनी ॥ प्रादेशिनी तर्जनीति प्रोक्ता 'राजनि-
 घटके' ॥ अंगुली ॥ अंगुष्ठः प्रथमो ज्ञेयस्तर्जनीति द्वितीयका ॥ १८ ॥
 तृतीया मध्यमा प्रोक्ता चतुर्थी च ह्यनामिका । कनिष्ठिका पंचमीति प्रोक्ता
 'राजनिघटके' १९ नखे ॥ कामाकुशः कररुदः करजा नखरास्तथा ॥
 नखेस्तु पाणिजोश्चैव तदग्रगुलिसंभवः ॥ ७२०० ॥ पुनर्नवा पुनर्भूता
 संप्रोक्ता 'राजनामके' ॥ तलहाताची पाठ ॥ तलपृष्ठ करस्योर्ध्वः प्रपा
 णीति 'नृपे' स्मृतः ॥ १ ॥ तलहात ॥ करस्योर्ध्वं करतल संप्रोक्त 'राज
 नामके' ॥ तलहाताच्या रेखा ॥ रेखा सामुद्रिका प्रोक्ता शुभाशुमनिवे-
 दकः ॥ २ ॥ धाने ॥ स्तनश्चोरसिंजश्चैव बक्षोजस्तु पयोधरः । कुचश्च
 कविभिः प्रोक्तो 'राजनामानिघटके' ॥ ३ ॥ धानाच्या बोंड्या ॥ स्तनाग्र
 बंधुस्तु वृत्त शिखा स्तनमुख स्मृतम् ॥ ऊर ॥ वक्ता वक्तामुरश्चैव कोढो
 हृदयमेव च ॥ ४ ॥ भुजातर तु ह्यप्रोक्त 'राजनामानिघटके' ॥ घेंवी ॥
 नामिस्तु ह्युधरावती बेबीति प्राकृते स्मृता ॥ ५ ॥ घस्ति ॥ नामीखालील-
 पोड ॥ वस्तिनाभिरघोदशः कविभिः परिकीर्तिता ॥ पोड ॥ कुक्षिः पिचढो
 जठरं तुव स्यादुदरं च तत् ॥ ६ ॥ प्रोक्त 'राजनिघटे' तु कविभिः शास्त्र-
 वित्तमैः ॥ त्रिक टिंच ॥ जीवस्थानं च गर्भं च कटिपात त्रिक 'नृपे' ॥ ७ ॥
 गर्भाशय ॥ वस्तिस्तु वातशीर्षं च गर्भस्थानं जरायुतम् । गर्भागारं तु
 विज्ञेय 'नृपे' गर्भाशयः स्मृतः ॥ ८ ॥ आवर्धे स्थान । नाभिस्थानातर
 प्रोक्तमानाशय 'नृपे' स्मृतः । नामी आमाशयाचे मध्यं पक्वाशय ॥ आमाश-
 यश्च पक्वाशो नामरूपं स्मृतो नृपेः ॥ ९ ॥ नामीचे खाली ॥ वस्ति-
 म्त्राशयः प्रोक्तो नाभेभापो मनीषिभिः ॥ कटि कंरर ॥ कटि ककुक्षनी
 शोणी नितवश्च कटिरक्षम् ॥ १० ॥ आरोह येव शोणी च फलफरम-
 नापदम् ॥ फलत्र चेति विज्ञेय नमोऽयं 'राजनामके' ॥ ११ ॥ नितं य ।

नितंबश्चरमः श्रोणो जघन बागृतो 'नृपे' ॥ कंठरेच्या खालील जागा ॥
 कुकुंदरस्तु जघनकूपको 'राजनामके' ॥ १२ ॥ टिरी ॥ कटिप्रांथौ स्फिजौ
 पायुः प्रोक्तो 'राजनिघंटके' ॥ गुद ॥ अपानमासनं चैव गुदं प्रोक्तं 'नृपे'
 बुधैः ॥ १३ ॥ गुदअंडमध्ये भगंदर ॥ गुदादयोर्मध्यभागे भगंदरं
 प्रकीर्तितम् ॥ अंड ॥ मुष्कमंडं त्वडकोशो वृषण बीजपेशिका ॥ १४ ॥
 शिश्र ॥ शिश्र शेषस्तु लिंगं च मेढू साधनमेहनम् ॥ प्रोक्तं 'राज-
 निघटे' च मुष्कं शस्त द्वयं ध्रुवम् ॥ १५ ॥ योनि ॥ योनिर्मगो
 वरांगं च ह्युपस्थं स्मरमांदिरम् ॥ प्रोक्तं राजनिघटे तु बुद्धिमद्भिर्न
 संशयः ॥ १६ ॥ मांड्या ॥ ऊरु तु सक्थिनी श्रोणी सक्था
 'राजनिघंटके' ॥ मांड्याची संधि ॥ सक्थसंधिर्वक्षणाश्च प्रोक्तो 'राज-
 निघटे' ॥ १७ ॥ गुड्ये ॥ आटावच्चक्रिका जानुः प्रोक्ता 'राजनिघंटके' ॥
 पोट्या ॥ जंघा तु प्रसृता चैव पिडिका 'राजनामके' ॥ १८ ॥ पायांचे
 घोटे टांचा ॥ घंटिका गुल्फ इति च पाष्णी टांच इति स्मृता ॥ पायांचा
 चवडा । पादाग्रं प्रपदं प्रोक्तं प्राकृते चवडा स्मृतः ॥ १९ ॥
 पाऊल ॥ विक्रमश्चरणः पादो पदंघ्रिस्तु पदक्रमः ॥ असन-
 मांडी ॥ उत्संगोक्तपूर्वभागः क्रोड 'राजनिघण्टके' ॥ २० ॥ चापट ॥
 तलश्चपेटः प्रतलः संहतांगुलिर्विस्तृता ॥ मूठ ॥ मुष्टिः सहस्रमाख्यानां-
 ऽकुचितो 'राजनामके' ॥ २१ ॥ पसा ॥ प्रोक्तो राजनिघण्टे तु प्रसृतो
 विस्तृतांगुली ॥ प्रादेश ॥ अंगुष्ठात्तर्जनीप्रातः प्रादेशार्द्धे च उच्यते ॥ २२ ॥
 ताल ॥ अंगुष्ठमध्यमाशङ्खस्ताल इत्यभिधीयते ॥ गोशृव ॥ अंगुष्ठानामि-
 कायोगो गोशृवः परिकीर्तितः ॥ २३ ॥ वीत ॥ लंबांगुष्ठकनिष्ठाभ्यां
 वितस्तिः प्रोच्यते बुधैः ॥ हात ॥ कूर्परान्मध्यमांतश्च हस्त इत्युच्यते
 बुधैः ॥ २४ ॥ अरत्नी ॥ अरत्नी प्राकृते प्रोक्तो मृडा हस्त इति ध्रुवम् ॥
 कनिष्ठिकांतः संप्रोक्तो हस्तोऽरत्नीति पंडितैः ॥ २५ ॥ घाव ॥ लंबप्र-
 सृतहस्तद्विर्वाच इत्यभिधीयते ॥ मर्म ॥ जीवागारं तु मर्मोति जीवस्थानं
 तदुच्यते ॥ २६ ॥ मर्मस्थानं ॥ अमृत्ये चैव कठे च गले शखे कुचद्वये ।

ओष्ठयोश्चैव वृष्टे च ग्रीवायां च शृङ्खलयोः ॥ २७ ॥ पदे पाणौ बस्ति-
संधौ मर्मस्थानं निगद्यते ॥ लाळ ॥ लाला तु मुखसावश्च शुणिका
स्यंदिनी 'नृपे' ॥ २८ ॥ घाम ॥ स्वेदो घर्मस्तु घर्माबु शोको 'राजानिघ-
ण्टके' ॥ चिपडी ॥ ततो नेत्रमलं शोक्तं दुषिकेति महाजनैः ॥ २९ ॥
विष्टा ॥ विष्टा मलं तु पुरीष विट्टविट्टं पूतिकं 'नृपे' ॥ मूत्र ॥ मूत्रं तु गृह-
निषंदः प्रस्रावः सवर्णं स्रवः ॥ ३० ॥ झुरळ्या ॥ बली चर्मतरंगं च
त्वग्मर्मस्तु तरंगकः ॥ पिकले कॅस ॥ पलितं तु जराळुर्म केशशौक्यं
तदुच्यते ॥ ३१ ॥ चर्म ॥ त्वक्चर्मसुग्धरा कृत्तरिजिनं देहचर्म च ॥ रक्तधारा
रोमभूमिः शरीरावरणं 'नृपे' ॥ ३२ ॥ अंगाचे कॅसा रोमलोमांगजं त्वगं चर्मजं
तनुरुद्भूतम् ॥ दाढीमिश्रा ॥ इमं दाढी मिश्रा शोकां पक्षं तु पापण्या स्मृता
॥ ३३ ॥ रसधातु ॥ रसस्तु रसकश्चैव स्वेदमात्ता वपुः स्रवः ॥ चर्माधश्चर्मसा-
रश्च रक्तस्तु रक्तगातृका ॥ ३४ ॥ रक्तधातु ॥ रक्तोत्पुष्टिरं त्वग्मं
कीलालं क्षतज तथा ॥ शोणितं लोहितं शोणमंशुलोहं च चर्मजम् ।
॥ ३५ ॥ मांस ॥ मांसं तु विशितं कृष्णं बलं सारं तथैव च ॥ असृजं
पललं कीरं जागलं त्वमिष 'नृपे' ॥ ३६ ॥ मेद ॥ मेदस्तु मांससारश्च
मांसलोहो वसा वषा ॥ हाटें ॥ मेदोजमास्थिधातुश्च कुत्सं कीकसकं
'नृपे' ॥ ३७ ॥ मज्जा ॥ अस्थिसारश्च मज्जा च तेजोबीजं च जीवनम् ।
अस्थिजं देहभारोस्थिसंहः शोको 'नृपे' भुवम् ॥ ३८ ॥ रेत ॥ शुक्र
पुंस्त्वं तु रेतश्च बीजं वीर्यं च तेजसम् ॥ इन्द्रिये वीर्यं चैव तथैवाजधिका-
रकम् ॥ ३९ ॥ रोमहर्षणकं चैव बलं शुक्रं 'नृपे' स्मृतम् ॥ मुखधारील
तेल ॥ स्नेहस्तु तिलकं क्लोम मस्तिष्कं मस्तकोद्भवम् ॥ ४० ॥ आंतील ।
अंत्रं घ्रीहं तु गुग्मं च पुस्तिद्राजनिषंदके ॥ शिरा ॥ आंतील चर्म ॥
वत्सा तु वत्सरा स्नायुर्वत्सा देहस्य बल्वलम् ॥ ४१ ॥ नाडी ॥ शिरोधा
सात्विकीति धमनी धारणी धरा ॥ तंतुर्का जीवितज्ञा च नाडी सिंहा
च कंडरा ॥ ४२ ॥ महासायुर्महानाडी सपीका 'राजनामके' ॥ स्रोत-
धमनीची छिद्रं ॥ स्रोतं सुपीरं छिद्राणि कालपंडं शिखानि च ॥ ४३ ॥

यकृत्तु कविभिः प्रोक्तं 'राजनामानिघंटके' ॥ डोईची कंवटी ॥ शिरोस्थि
 तु करोटि स्थाच्छिरसाणं च शीर्षकम् ॥ ४४ ॥ खर्वर च कपालं च
 प्रोक्तं 'राजनिघंटके' ॥ पाठीचें हाड ॥ पृष्ठास्थि तु कसेरुश्च शंखास्थि
 नलकं तथा ॥ ४५ ॥ बलिकं चैव पार्श्वास्थि पार्श्वकं 'राजनामके' ॥ हाडांचा
 सांपळा ॥ शरीरास्थि च कंकालकरं कत्वस्थिपंजरः ॥ ४६ ॥ आत्मा प्राण ॥
 आत्मा शरीरी क्षेत्रज्ञो पुद्गलः प्राण ईश्वरः ॥ जीव ॥ जीवो विभुः
 पुमानीशः सर्वज्ञः शंभुरन्ययः ॥ ४७ ॥ प्रधानप्रकृति । प्रधानं प्रकृ-
 तिमया चैतन्यं शक्तिरेव च । प्रोक्तं 'राजनिघंटु' च कविभिः शास्त्र-
 विज्ञैः ॥ ४८ ॥ अहंकार । अहंकारोभिमानश्च त्वहंता तदनन्तरम् ।
 अहंममीति कविभिः प्रोक्तो 'राजनिघंटके' ॥ ४९ ॥ मन ॥ मानसं
 हृदयं स्वातं चित्तं चेतो मनस्तथा । हृत्प्रोक्तं विदुषांश्रेष्ठैः 'राज-
 नागनिघंटके' ॥ ५० ॥ त्रिगुणः ॥ सत्त्वं रजस्तम इति
 गुणाः प्रोक्ता मनीषिभिः ॥ ज्ञानेन्द्रिय ॥ श्रोत्रं स्वयंसना नेत्रं नासा
 चैवाक्षिपंचकम् ॥ ५१ ॥ कर्मेन्द्रिये ॥ वाक्पाणिपादपायुश्च गुह्यं कर्मे-
 द्रियाणि च ॥ इन्द्रिये ॥ अक्षरां हृषीकं करणं ग्रहणं विषयेन्द्रि-
 यम् ॥ ५२ ॥ पंचभूतं ॥ आकाशस्त्वनिलस्तोषं तेजःपृथ्वीति पंचकम् ।
 पंचभूतविषय ॥ शब्दः स्पर्शो रसो रूपा गन्धश्च विषयाः
 स्मृताः ॥ ५३ ॥ इति मनुष्यादिवर्गः ॥

अथ गदादिवर्गः ॥ रोगनाम ॥ गदोरुजोस्तु व्याधिश्च रोगोऽपा-
 दवनमिकः । उपधातोमयोरुक्चमापमगोऽमयोऽतकः ॥ ५४ ॥ अतिस्त-
 मोविकारश्च क्षयोऽग्लानिस्तथैव च । निर्जीवो मृत्युभृत्यश्च प्रोक्तो 'राज-
 निघंटके' ॥ ५५ ॥ राजयक्ष्मा ॥ राजयक्ष्मा क्षयश्चैव रोगराजो गदा-
 ग्रणी । ऊष्मा शोषातिरोगश्च रोगाधीशो नृपामयः ॥ ५६ ॥ यक्ष्मा तु
 विदुषां श्रेष्ठैः प्रोक्तो 'राजनिघंटके' ॥ पांडुरोग ॥ पांडुरोगस्तु
 पांडुरश्च विमर्षः सचिवामयः ॥ ५७ ॥ सूज ॥ शोफः, श्वेयधु शोषश्च
 प्रोक्तो 'राजनिघंटके' । कास खोकला ॥ कासः कवधुमंशश्च प्रोक्तो

‘ राजनिघटके ’ ॥ ५८ ॥ क्षुतं शिक ॥ क्षुतं तु क्षवधुः क्षुच ‘ नृपे ’
 प्रोक्ता भिषग्वरैः ॥ पटसं ॥ प्रतिश्यायः पीनसश्च प्रोक्तो ‘ राजनिघटके ’ ५९ ॥
 मुखरोग ॥ मुखामयस्तु विज्ञेयो मुखरोगो मनीषिभिः ॥ नेत्ररोग ॥ नेत्रा-
 मयो नेत्ररोगो लोके प्रोक्ता भिषग्वरैः ॥ ६० ॥ शिरीम । दुश्चर्मा मडल
 कोठस्त्वग्दोषश्चर्मदूषकः । श्वेतकोट । कुष्ठ तु पुडरीक च विन्न च चर्मचि-
 द्रकम् ॥ ६१ ॥ खरुज । किलास सिध्मक पामा स्वस चैव दिचर्चिका
 ॥ खाज ॥ कडू कडूती कडूवा खर्जु कडूपना स्मृता ॥ ६२ ॥ नायटे ॥
 सचारी क्षुटिका स्फोटा सूक्ष्मस्फोटा विचर्चिका । पीतफोड । पीत-
 स्फोटा तु पामा या क्षुद्रस्फोटा च कचिका ॥ ६३ ॥ वारीक फोड ॥
 पिटका पिटिका चैव मसूरामा मसूरिका । विस्फोटः फोड । विस्फोटः
 स्फोटकः स्फोटः प्रोक्तो ‘ नृपे ’ भिषग्वरैः ॥ ६४ ॥ चार्ड ॥ केशघ्नश्चेद्बलु-
 वस्तु लोके चार्ड प्रकीर्तिता ॥ दंतरोग ॥ दतार्बुदो दतमूलं दतशोफो
 द्विजव्रणः ॥ ६५ ॥ गुल्म ॥ गुल्मो जाठरग्रथिश्च पृष्ठग्रथिगडुर्मटः ॥ पक्ति-
 शूल ॥ पक्तिशूल तु शूल च पाकज परिणामजम् ॥ ६६ ॥ नाडीव्रण ॥
 लूता मर्मव्रणो वृक्क नाडीव्रणमितीरितम् । श्लीपद चारुल ॥ श्लीपदं पाद-
 बल्मीक श्लीपद कविभिः स्मृतम् ॥ ६७ ॥ फुटलेपाय ॥ विपादिका तु
 लोकोस्मिन्यादस्फोटोभिधीयते ॥ चिष्टं ॥ विष्टमस्तु विबन्धश्च क्षनाहो मल-
 रोधनम् ॥ ६८ ॥ मृळव्याध । अर्शस्त गुदकीलः स्यादुन्मा च गुदा-
 कुरः ॥ अतिमार, संग्रहणी ॥ मलवेगोऽतिसारश्च ग्रहणी रुक्मवाहिका
 ॥ ६९ ॥ वांति ॥ वमपूर्वातिरुद्धारो छर्दिका वमिरुच्यते । हृदयरोग ।
 हृद्रोगो हृद्बदहर्दा हृत्पाणः श्वास ईरितः ॥ ७० ॥ ज्वर ॥ ज्वरस्तु
 सज्वगतको रोगश्रेष्ठो महान्वरः ॥ द्वेद्वज ॥ द्वेद्वचा द्वेद्वशोऽन्त्याः
 शीताद्या विषमज्वरा ॥ ७१ ॥ अतीत्यागतयस्तेद्वच कृदिकन्याहिकादयः ॥
 गलरोग ॥ गलकील तु शुडी च गलमडो गलस्तनः ॥ ७२ ॥ रक्त-
 पित्त ॥ रक्तपित्त पिचरक्त पित्तास्र पिचशोणितम् ॥ वातरक्त ॥ रक्त-
 वात वातरक्त वातास्र वातशोणितम् ॥ ७३ ॥ तृष्णा ॥ तृष्णा दैन्यपि-

पासा च तृट् तृपा परिकीर्तिता ॥ मद् ॥ मदातंकस्तु कविभिर्मदात्यय इति
स्मृतः ॥ ७४ ॥ पानात्यय ॥ पानात्ययो मद्ग्याधिर्मद् उद्विक्तचि-
त्ता ॥ मूर्च्छा । मूर्च्छा मोहो मुमूर्षश्च लोके प्रोक्ता भिषग्वरैः ॥ ७५ ॥
स्वरक्षय ॥ स्वरसादस्तु लोकेस्मिन्स्वरक्षय इति स्मृतः । अरुचि ।
अभ्रच्चोऽनभिलापश्च ह्यरुचिश्च त्वरोचकः ॥ ७६ ॥ प्रमेह ॥ मूत्रदोषः
प्रमेहश्च मेह इत्यभिधीयते । कुच्छं तु मूत्रकुच्छं स्याद्वैद्यैः प्रोक्तं न
संशयः ॥ ७७ ॥ मूत्रखडा ॥ मूत्ररोधोऽश्मरी प्रोक्तः पुरातनचिकित्सकैः ॥
वातव्याधि ॥ चलांतको वातव्याधिर्वातरोगोऽनिलामयः ॥ ७८ ॥ कंप् ॥
कंपस्तु वपनो वेपः कंपनो वेपथुः स्मृतः ॥ जांभई ॥ जृम्भा तु जृम्भिका
चैव जृम्भणं परिकीर्तितम् ॥ आलस ॥ आलस्यं मंदता मांथं फायद्वेष-
मिति स्मृतम् । उदररोग । तुदस्थां विटभश्चैव जाठरश्च जलोदरः ॥ ७९ ॥
आंव । आमो मलश्च वेपथ्यो भिषग्भिः परिकीर्तितः ॥ रक्तदोष ॥
रक्तार्तिश्चैव कविभिः संप्रोक्तः शोणितामयः ॥ ८० ॥ ज्वालागर्दभ ।
ज्वालागर्दभकश्चैव ज्वालरासभ एव च । ज्वालाखरगदश्चैव संप्रोक्तो भिष-
जांवरैः ॥ ८१ ॥ विद्रधि ॥ विद्रधिर्विद्रणं चैव हृद्ग्रंथिर्हृद्ग्रणस्मृतः ॥
ग्रणभगंदर ॥ ग्रणो भगप्रदेशे यो भगंदर इति स्मृतः ॥ ८२ ॥ संताप ॥
संतापस्तु ज्वरस्तापः शोष ऊष्मा प्रकीर्तितः ॥ अंतर्दाह ॥ पश्चापि
कोष्ठसंतापः सौतर्दाह इति स्मृतः ॥ ८३ ॥ सदाहो मुखतात्वोष्ठे देव-
युश्चक्षुरादिषु । पाणिपादांसमूलेषु शाखापित्तं स उच्यते ॥ ८४ ॥ तंद्रा ॥
तंद्रा तु विषयाज्ञानं प्रमीला तंद्रिका तथा ॥ प्रलयसिंहद्विषस्वापश्चेटा-
नाशः प्रलीतता ॥ ८५ ॥ उन्माद ॥ उन्मादः स्यात्तु विभ्रंश उन्मना-
यीति गीयते ॥ भूतोन्माद ॥ अवंशो भूतसंचारो भूतक्रांतिर्ग्रहागमः
॥ ८६ ॥ अपस्मार घुरे ॥ अपस्मारोगविकृतिलोलांगो भूतविक्रिया ॥
स्तैमित्यं जडता ॥ स्तैमित्यं जडता गाड्यं शीतलत्वमपाटवम् ॥ ८७ ॥
रोगी ॥ व्याधिता बिब्हलो ग्लाण्णुर्लानो मंदस्तथातुरः । अभ्यांतो
भ्रामितो रुग्णोमयोऽप्यपटुरुच्यते ॥ ८८ ॥ उपचार ॥ उपचारस्तूप-

चार्थश्चिकित्सारूपप्रतिक्रिया । निग्रहो वेदनानिष्ठः क्रिया चोपक्रमः समः
 ॥ ८९ ॥ औषध ॥ भेषज्य भेषजं जैत्रमगदो जायुरौषधम् । आयुर्योगो
 गदारातिरमृतं कविभिः स्मृतम् ॥ ९० ॥ पथ्यनाम ॥ आत्मनीनं तु
 पथ्यं स्यादात्मानतं हितं तथा । आयुष्य भिषजां नार्थलोकिं प्राक्तं न मंशयः
 ॥ ९१ ॥ आरोग्य ॥ पाटव लाघवं वार्तामारोग्यं स्यादनामयम् ॥ निरोगी ॥
 फण्यस्तु पटुलश्चैव लघुर्वातो निरामयः ॥ ९२ ॥ अगदो निरुजश्चैव
 निरातफ इति स्मृतः ॥ वैद्य ॥ वैद्यश्रेष्ठा गदकारां रोगहारि भिषग्विधिः
 ॥ ९३ ॥ भेषज्यकुशलो विद्वानायुर्वेदी चिकित्सकः । दांपज्ञो जीवदः
 प्रोक्तः पुरातनमहाजनैः ॥ ९४ ॥ इतिगदादिवर्गः समाप्तः ॥

अथ मिश्रवर्गः । यान्यौषधानि मिलितानि परस्परेण संज्ञा-
 न्तरैर्व्यवहृतानि च योगविद्भिः । तेषां स्वरूपकथनाय विभिन्नकारणवर्गं
 महागुणमुदारमुदीरयामः ॥ ९५ ॥ त्रिकटु ॥ मरिच पिप्पली शृङ्गी त्रय-
 भेदद्विमिश्रितम् । त्रिकटु त्र्युषण व्याप त्र्युष खलुकद्वयम् ॥ ९६ ॥
 त्रिफला । हरीतकी चामलक विभीतकमिति त्रयम् ॥ त्रिफला त्रिकली
 चैव फलत्रयफलत्रिकं ॥ ९७ ॥ सुगंधित्रिफला । जातीफलं पूगफलं
 लवणकलिकाफलम् । सुगंधित्रिफला ज्ञेया सुरभि त्रिफला तथा ॥ ९८ ॥
 मधुरत्रिफला ॥ द्राक्षाकाशमर्षखर्जूरीफलानि मिलितानि तु । मधुरात्र-
 फला ज्ञेया मधुरादिफलत्रयम् ॥ ९९ ॥ वाट्यगुण्यम् ॥ चंदनं कुंकुमं
 वारि त्रयं मतद्वयार्थकम् । त्रिभागकुकुमोर्षत तदुक्तं वाट्यपुण्यम् ॥ १०० ॥
 लवणत्रयम् ॥ सैधव च बिड चैव रूचक चेति मिश्रकम् । लवणत्रयपा-
 र्ख्यातं तच्च त्रिलवणं स्मृतम् ॥ १ ॥ क्षारत्रयम् ॥ सर्जिका च पयक्षार
 टड्ढुण क्षारमेव च । क्षारत्रयं च त्रिक्षार क्षारत्रयमेव च ॥ २ ॥
 समत्रयम् ॥ हरीतकी नागरं च गुडं चेति समत्रयम् । समत्रितयमि-
 न्युक्तं त्रिसमं च समत्रयम् ॥ ३ ॥ मधुरत्रयम् ॥ सितामाक्षिकारपीपि
 मिलितानि यदा तदा । मधुरत्रयमाख्यानं त्रिमधुस्यान्मधुत्रयम् ॥ ४ ॥
 सितात्रयम् ॥ गूडोत्पला हिमोन्था च मधुरा चेति मिश्रितम् । त्रिश-

कैरा च निसिता सितात्रयसितात्रिकम् ॥ ५ ॥ अर्थाजनत्रयम् ॥
 कालाजनसमायुक्ते पुष्पाजनरसाजन । अजनत्रितय माहुर्ज्यजन चाजन-
 त्रयम् ॥ ६ ॥ समत्रिदोष ॥ वातः पित्त कफश्चेति त्रयमेतद्विमिश्रि-
 तम् । दोषत्रय त्रिदोष स्यादोषत्रितयमित्यपि ॥ ७ ॥ दोषत्रयम् ॥ वात-
 पित्तकफा यत्र समता यान्ति नित्यशः । त्रिदोषसममित्येतत्सम-
 दोषत्रय तथा ॥ ८ ॥ कंटकत्रय ॥ बृहती चामिधमनी
 दुःस्पर्शा चेति च त्रयम् । कटकाग्नित्रय प्रोक्त त्रिकण्ट कण्टकत्रयम् ॥ ९ ॥
 त्रिकार्पिकं चतुर्भद्रम् ॥ नामरातिविषा मुस्ता त्रयमेक त्रिकार्पिकम् गुडु-
 च्या मिश्रित तच्च चातुर्भद्रकमुच्यते ॥ १० ॥ देवकर्दम । अग्निदागरु-
 कर्पूरकाश्मरिश्च समाशकः । मृगागमुकुटाहोव मिलितैर्देवकर्दम ॥ ११ ॥
 यक्षकर्दम ॥ कुकुमागरुकुङ्गनाभिका चद्रचदनसमाशसभृतम् । व्यक्षपूजन-
 परैकगोचर यक्षकर्ममिदं पचक्षते ॥ १२ ॥ पंचसुगंधी । कर्पूरकको-
 ललगुग्गुप्पगुह्यकजातीफलचपकेन । समाशमागेन च योजितेन मनो-
 हर पचसुगन्धिक स्यात् ॥ १३ ॥ पंचकोल ॥ पिप्पली पिप्पलीमूल
 चव्यचित्रकनागैः । सर्वैरेकत्र समुक्त पचकोलकमुच्यते ॥ १४ ॥
 पंचवलकल । न्यग्रोधोद्वाराश्वत्थप्लक्षवेतसवलकलैः । सर्वैरेकत्र मिलितैः
 पचवलकलमुच्यते ॥ १५ ॥ लघुपंचमूल ॥ शालिपर्णी पृश्निपर्णी बृहती
 कटकारिका । तथा गोक्षुरकश्चेति लघ्विदं पंचमूलक ॥ १६ ॥ मदा-
 पंचमूलम् ॥ त्रिवोद्विषथः स्थोनाकः काश्मर्य पाटली तथा । सर्वैस्तु मिलि-
 तैरेतैः स्यान्महापचमूलम् ॥ १७ ॥ मध्यमपंचमूलम् ॥ पचमूलकयोरेत-
 द्द्वयं च मिलितं यदा । तदा भिषग्भिराख्यात गुणाढ्यं दशमलकम् ॥ १८ ॥
 पंचामृतयोग । गुडूचिगोक्षुरश्चैव मुसली गुडिका च सा । शतावरी
 च पचानां योगः पंचामृताभिधः ॥ १९ ॥ दिव्यपंचामृतम् । गव्यमा-
 ज्य दधि क्षीर माक्षिक शर्करान्वितम् । एकत्र मिलितं त्रयं दिव्यं पचा-
 मृतं स्मृतम् ॥ २० ॥ पचगव्य । गोमूत्र गोमय क्षीरं गव्यमाज्य
 च त्रीणि । पुक्तमेतद्यथायोग्यं पचगव्यमुदाहृतम् ॥ २१ ॥ निवपंच-

कम् । निवस्य पत्रत्वक्पुष्पफलमूलैर्विमिश्रितः । पंचनिवसमा-
 ख्यातं तदुक्तं निवपंचकम् ॥ २२ ॥ अम्लपंचकम् । कोलदाडि-
 मवृक्षाम्लचक्रिका चाम्लवेतसः ॥ फलपंचाम्लमुद्दिष्टमम्लपंचकलस्मृतम् ॥
 २३ ॥ फलाम्लपंचकम् ॥ जंबीरनागरंगसहाम्लवेतसैः सतिचिडीकैश्च
 सबीजपूरकैः ॥ समांशमागेन तु मेलितैरिवं द्वितीयमुक्तं च फलाम्लपंचकम्
 ॥ २४ ॥ आम्लवर्गः ॥ चांगेरीलकुचाम्लवेतसयुतं जंबीरकं पूरकं नारं-
 गं फलशाडवोपि च कपित्थाम्लं च बीजाम्लकम् ॥ अंबठासहितं द्विरे-
 तदुदितं पंचाम्लकं तद्वयं विज्ञेयं कश्मर्दनिबुकयुतं स्यादाम्लवर्गान्ध्यम्
 ॥ २५ ॥ सिध्यौषधपंचकम् ॥ तैलकंदं सुधाकंदं क्रोडकंदं रुदतिका ॥
 सर्पनेत्रयुताः पंचसिध्यौषधिकसंज्ञकः ॥ २६ ॥ पंचशिरीषः ॥ शैरीषकु-
 सुमं मूलं फलं पत्रं त्वगित्ययम् ॥ कीटारि कथितो योगः पंचशैरीषकं
 स्मृतम् ॥ २७ ॥ पंचागम् ॥ त्वक्पत्रं कुसुमं मूलं फलमेकत्र शाखिनः ॥
 एकत्र मिलितं चैतत्पंचांगमिति संज्ञितम् ॥ २८ ॥ पंचगणयोगः ॥ वि-
 वारिगंधा बृहती पृश्निपर्णी निदिग्धिका ॥ श्वदष्टा चेति संप्रोक्तो योगः
 पंचगणाभिधः ॥ २९ ॥ पंचोषधिपम् ॥ स्तुहार्ककरवीराणि लागली
 विषमुष्टिका ॥ एतान्युषविषाण्याहुः पंचपांडित्यशालिनः ॥ ३० ॥ महा-
 पंचविषम् ॥ अत्यम्लपर्णी काडीरमालाकंदद्विसूरणैः ॥ प्रोक्तो भवति
 'योगोयं' महापंचविषाभिधः ॥ ३१ ॥ पंचमूत्रम् ॥ गवामजानां मेषाणां
 महिषीणां च मिश्रितम् ॥ मूत्रेण गर्दभीनां यत्तन्मूत्रं मूत्रपंचकम् ॥ ३२
 लोहपंचकम् ॥ सुवर्णं रजतं ताम्रं ॥ त्रयमेतत्त्रिलोहकम् ॥
 बंगनागसमायुक्तं तयोक्तं पंचलोहकम् ॥ ३३ ॥ द्वितीयपंचलोहम् ।
 सुवर्णं रजतं ताम्रं त्रयं कृष्णायसं समम् ॥ ग्रहांगमिति बोद्धव्यं द्वितीयं
 पंचलोहकम् ॥ ३४ ॥ क्षारपंचकम् ॥ यवमुष्ककसर्जानां पलाशतिलयो-
 स्तथा ॥ क्षारैस्तु पंचभिः प्रोक्तः पंचक्षारभिधो गणः ॥ ३५ ॥ पंचलव-
 णम् ॥ काचसैधवसामुद्रविडसौवर्चलैः समैः ॥ स्यात्पंचलवणं तच्च मृजो-
 पतं षडान्ध्यम् ॥ ३६ ॥ इति पंचवर्गः ॥ क्षारपट्टकम् ॥ धवाफमार्गः

कुटजलांगलीतिलमुष्कैः ॥ क्षारैरैतैस्तु मिलितैः क्षारपट्कान्हयो गणः
 ॥ ३७ ॥ सप्तधातवः ॥ रसासृङ्गांसमेवोस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ॥
 शरीरस्थैर्बदेरैः सप्तधातुगणो मतः ॥ ३८ ॥ महारसाष्टकम् ॥ दरदः
 पारदोसस्यो वक्रांत कांतमग्नकम् ॥ माक्षिकं विमलाश्चेति स्युरेतेष्टौ महा-
 रसः ॥ ३९ ॥ उपरसः । खेचरांजनकंकुष्ठ गधारी गेरिकाक्षितिः । शैले-
 पाजनसंमिश्रा शंसंत्युपरसान्नुधाः ॥ ४० ॥ सामान्यरसः ॥ कपिल-
 गौराचपलाकपर्द सशैलसिंदूरकवन्निजारान् ॥ पापाणिनोद्योदरशृंगयुक्ता
 नित्यष्टसामान्यरसानिचाहुः ॥ ४१ ॥ अपटलोह ॥ पचलोहसमायुक्तैः
 कांतमुण्डकतीक्ष्णकैः ॥ कल्पितः कथितो धारैरटलोहाभिधो गणः ॥ ४२ ॥
 क्षारदशकम् ॥ शिग्रमूलकपलाशचुक्रिका चित्रकार्द्रकसनिवसम्भवैः ॥
 इक्षुशैखरिकमोचिकोद्भवैः क्षारपूर्वदशक प्रकीर्तितम् ॥ ४३ ॥
 मूत्रदशकम् ॥ मूत्राणि हस्ति महिषांशूगवाजकानां मेपा-
 श्वरासमक्रमानुपमानुषीणाम् । यत्नेन यत्र मिलितानि दशेति
 तानि शास्त्रेषु मूत्रदशकान्हयमांजि भान्ति ॥ ४४ ॥ जीवकादिः ॥
 स्याज्जीवकर्पभवयुग्मयुगद्विमेदाकाकोलिकाद्वयपुनर्द्विकशूर्पपुष्पः । जीव्या
 मधुकयुतया मधुराह्वयोयं योगो महानिह विराजति जीवकादिः ॥ ४५ ॥
 अपटवर्गः ॥ जीवकर्पमर्कामेदे फाकोल्यौ ऋद्धिवाद्धिकौ । एकत्र मिलि-
 तैरैरष्टवर्ग उदाहृतः ॥ ४६ ॥ सर्वौषधिबर्गः ॥ कुष्ठमांसीहारिद्रामि-
 र्वचाशैलेयचंदनैः । मुराचंपककर्पूरमुस्तैः सर्वौषधि स्मृतः ॥ ४७ ॥ सुगं-
 धामलकम् ॥ सर्वौषधिसमायुक्ताः शुष्काश्रामलकत्वचः । यदा तदायं योगः-
 स्यात्सुगन्धामलकः स्मृतः ॥ ४८ ॥ संतर्पणम् । द्राक्षादाडिमखर्जूरीक-
 दलीशर्करान्वितम् । लाजचूर्णं समध्वान्यं संतर्पणमुदाहृतम् ॥ ४९ ॥
 मंथः ॥ सक्तुभिः सर्षिषाम्यक्तैः शीतवारिपरिप्लुतैः । नात्यच्छो नाति-
 सांद्रस्य मंथ इत्यभिधीयते ॥ ५० ॥ रक्तवर्गः ॥ दाडिमं किंशुकं
 लाक्षा बंधूकं च निशाद्वयम् । कुसुमपुष्पं मंजिष्ठा इत्येते रक्तवर्गकः ॥ ५१ ॥
 शुक्रवर्गः ॥ खटिनी श्वेतसंयुक्ता शंखशुक्तिवरादिका । मृष्टाश्मशर्करा

चेति शुक्लवर्म उदाहृतः ॥ ५२ ॥ द्विधाष्टादशांगः ॥ भार्गसिटीपृष्कर-
वत्सजीज.दुरालभाभृंगिपटोलतिकाः । किरातविश्वेन्द्रकणेंद्रजीजधान्यानि
तिकं सुरदारुकं च ॥ ५३ ॥ अष्टादशांगाभिध एषयोगः समागतः स्याद्-
शमूलकेन । द्विधा च भार्ग्यादिक एक एष ज्ञेयो द्वितीयस्तु
किरातकादिः ॥ ५४ ॥ अथशिखरिणी ॥ द्वात्रिंशत्पलममितं
दधिपलान्यष्टौ च खडं पलस्यार्धं चेन्मरिचस्य तेन तुलितं युक्तं त्व-
गेलान्द्वयम् ॥ मध्वाज्यं च युतं तदर्धमिलितैः संशोधिते योजितो माडे
स्याद्धिमवासिता शिखरिणी श्रीकठमोग्यागुणैः ॥ ५५ ॥ पचभृंग ॥
वेवदाली शमी भृंगा निर्गुंडी सज्जिकेस्तथा ॥ रोगार्तस्नानमानार्हं पच-
भृंग इति स्मृतं ॥ ५६ ॥ जीवपंचमूल ॥ अभरिवीरा जीवती जीवकर्ष-
भकौस्मृतौ ॥ जीवनाख्यं च चक्षुष्यं कफपित्तानिलापहम् ॥ ५७ ॥
तृणपंचमूल ॥ तृणाख्यं पित्तजिह्वर्षशरकाशंशुशालाभिः ॥ एतैरेकीकृतं
पंचमूलं तु तृणसंज्ञकम् ॥ ५८ ॥ वेसवार ॥ शंठीमरीचपिप्पल्या
धान्यकाजाजिदाडिमम् ॥ पिप्पलीमूलसंयुक्तवेसवार इति स्मृतः ॥ ५९ ॥
संभार ॥ कासमर्दकपत्राणां कृतं चूर्णमूलखले ॥ वेसवारसमायुक्तं
समाहं भाजने स्थितम् ॥ ६० ॥ ततो.हिं गुरसाक्तेन मिश्रितास्तेन ते
तथा । दिवाकरकरैः शोष्या वटकाः कासमर्दकाः ॥ ६१ ॥ शाकवर्षजन-
मांसानां संगार इति ते मताः । अनेन संयुताः पाका बन्धिर्वीर्यबलप्रदाः
॥ ६२ ॥ विदारिगंधः ॥ विदारिगंधा बृहतीपृश्निपर्णीनिदिग्धिका ॥
ज्ञेयो विदारिगंधाद्वयो यणः पित्तानिलापहः ॥ ६३ ॥ पंचकपायः ॥
पथ्यामलकर्मजिष्ठा लोघातिदुकवाश्रवा ॥ एते पंचकपायाश्च कर्णपक्षालने
वराः ॥ ६४ ॥ इति सिद्धेश्वरकृतराघवविरचिते मिश्रकाध्यायः
समाप्तः ॥

विशेष सूचना--

पुढील सर्व पुस्तकें व या-
शिवाय औषधीगुणदोष
किंमत एक रुपया आठ आणे व आयुर्वेदरहस्य अथवा वाग्भ-
टार्थविस्तार भाग १ ला किंमत १ रु. ही पुस्तकें रोखीनें अथवा व्ही.
पी. नें आमचेकडे विकत मिळतील

शंकर दाजी शास्त्री पट्टे



‘सार्धेप्रीचरकमे
हिता’ किंवा ‘आ
र्यभियक्’ यापै-
की एक घेणारास

वैद्यक पुस्तकें.

(आर्यभियक् कार्यालय)

{आमची पुस्तकें पा-
ऊण किमतीस
व दोन्ही घेणारास
निम्मे किमतीस.

राजेरजवाडे व विद्वन्मान्य लोकांनी यांस पूर्ण आश्रय दिला असून,
प्रसिद्ध प्रसिद्ध डाक्टर व वैद्यांना ही मान्य शाली आहेत.

‘आर्यभियक्’ मासिक पुस्तकातून प्रसिद्ध होऊन, निरनिराळीं
विषयधार बांधलेली स्वतः पुस्तकें विक्रीस तयार

वृहन्निघंटु.

बायीस तेवीस भाषेतील मि
ळाली तीं निरनिराळ्या भाषेतील हजा-
राजवळ औपधींनी नांवें, व सजवित
आणि अप्रसिद्ध वनस्पतींची माहिती
यात आहे किं० १॥ रुपया, टपाल ८-
सार्धे वैद्यकसूत्र-२ सह किं० ४॥ आ

वनप्री-गुणादर्श.

‘प्रत्येक वनस्पतीची स्पष्ट ओ-
ळख होण्यास, तिचें एकदर वर्णन व
उत्पत्तीची ठिकाणें, तिची संस्कृत, मरा-
ठी, गुजराती, हिंदुस्थानी चोरे भाषे-
तील नावें, शास्त्रत गुणदोष काय आ-
हेत व त्याचे रोगावर किंवा इतर वा-
तीतही कसकस उपयोग होतात यावि-
षयी समग्र माहिती-याप्रमाणें सुमारे
सहाशेंघर वनस्पती यात आहेत
ग्राहकांच्या सोयीसाठी याचे एकापासून
सहापर्यंत भाग पाडून, त्यात ही सर्व
माहिती संपविली आहे पाहल्या (दु-
सरी आवृत्ति) भागाचा किंमत १२ आ-
णे, दहाभागा १ रुपया, तामरा व पा-
चवा या प्रलेवाची ११, ११ रुपया,
बवथा १४ रु० आणि महाग्याची १२
आणे टपालसह प्रत्येक भागास १ आणा
॥ भारपण व वाळतपण.
कारच एलम पुस्तक किं० सह १४-

रसवैद्य.

आवृत्ति दुसरी, किं० ट. सह १३ आणे.

वृहत्पाक-संग्रह.

१६५ घर पाक योग्यांच्या सं-
ग्रह-किं० १॥ रु०, ट० ख० १ आणा.

महर्षि भाषेयांनी सांगितलेली
सार्धे हारीत संहिता.

चार प्रतीवरून प्रथमतः मूळ संस्कृत
प्रथ सुधारून कायम केल्या देऊन, त्या-
खालीं त्याचें सरळ मराठी भाषांतर दिलें
आहे आणि त्या प्रत्येक विषयावर नि-
रनिराळ्या प्रयकाराची मतमततारें व
शकासमाधानें देण्यासाठी, विशेष बार-
कादेंनें जितका स्पष्ट, मुद्देसूद व सविस्तर
खुलासा करण्यासारखा आहे तितका
त्या त्या प्रयकर्त्याच्या आधारासहित,
मराठीत, टीपामधून केला आहे याचा
पहिला भाग छापून तयार आहे व पु-
ढील काम चालू आहे पहिल्या भागाची
किंमत ११ रुपया टपालसह १ आणा.

सार्धे योगशतक.

फक्त ४ आणच ट ख अर्धी आणा.
हल्लींच्या वीर्यनाश व त्यावर उपाय.
किंमत फक्त ३ आणे टपाल ८॥.
गोवैद्यक-किंमत २ आणे. ट ८॥
प्राणेश औपधी [आवृत्ति दुसरी]
किंमत २ आण, ट ख अर्धी आणा
गोपरीक्षा १८ रु स २॥ आणे

● नपुंसकमीमांसा

आणि

कामसंजीवन.

नपुंसक होण्याची निरनिराळी कारणे, प्रकार, त्याची लक्षणे, तसे न होण्यास कसे वागले पाहिजे व निरनिराळ्या नपुंसकत्वावर कसकसे उपचार करावे, ही माहिती भरपूर दिलेली आहे. निरनिराळ्या अनेक प्रथकारांचे संस्कृत मूळ धरती देऊन, त्याखाली त्यांचे सरळ मराठी भाषांतर दिले आहे. बाजीकरण औषधाचा अत्यंत मोठा संग्रह या पुस्तकात आहे. 'रसायने' झणून जो भाग, या विषयावर आर्यवैद्यशास्त्रात तूर्त सांपडू शकेल, त्यातील बहुतेक सर्व निवडक संग्रह या पुस्तकात केला असल्याने, हे पुस्तक फारच मोठे झाले आहे. तथापि किं० १॥ रु. ट. १ आणा.

निघंटुशिरोमणि,

भाग १ ला. किंमत ट. सह १३ आणे.

राजवैद्य, संग्रह १ ला.

द्रव्यगुणशतश्लोकी, औषधी-फलपलता, मूत्रपरीक्षा, नाडीपरीक्षा (रावण व आश्विनकृत), वैद्यकीस्तुभप्रथमरत्न, हे ग्रंथ संस्कृतात असून, मराठीत प्रमेह, मधुमेह, नेत्ररोग, गर्भधारण, फटु, मदामारी, शिथिलपद्धति, इत्यादि निबध; तसेच निरनिराळ्या अनेक रोगावर चमत्कारिक औषधे, धनस्पतींची अप्राप्य वर्णने, इत्यादिकांचा संग्रह यात केला आहे. किंमत ११ आणे. ट. १ आणा.

'आर्यभिरक्षु' मासिकपुस्तकाची टपालसहित वर्गणी २६. स्कूमास्तर, लायमरी व प्रपाचपोस्टमास्तरास भाग १॥ रु०

'सार्ध धीचरकसंहिता' मासिकपुस्तकाची वर्गणी फक्त २ रुपये.

मुंबई, नवानागवाडा,
आर्यभिरक्षुवायल.

सुबोध वैद्यक.●

घर्णानुक्रमाने एकदर सर्व रोगांची कारणे, लक्षणे वगैरे देऊन, नंतर त्यावर खात्रीचे व अगदी सुलभ असे उपचार यात सांगितले आहेत. स्त्रीरोग, बालरोग, घातरोग, प्रमेह, नेत्ररोग, इत्यादि प्रकरणे अत्यंत उपयुक्त व विस्तृत असून, सर्वरोगोक्त अनुपाने, औषधी प्रतिनिधि, वैद्यकाची परिभाषा, अष्टविधपरीक्षा, चूर्णे, गुटिका, पाक इत्यादि प्रकरणांनी हा ग्रंथ ओतप्रोत भरला आहे. पूर्वार्ध व उत्तरार्ध असे याचे निरनिराळे भाग केले आहेत व त्याची अनुक्रमे किंमत आठ आणे व एक रुपया, मिळून दीड रुपया आहे. टपाल ६०

स्वतंत्र छापलेली वैद्यक पुस्तके

विक्रीस तयार

औषधी-वाड.

हस्तलिखित बाबातील औषधे यांत छापली आहेत. शिवाम औषधाच्या उपयुक्तेवरून अनुभविक टिपणे, अनुक्रमणिकेत दिली आहेत. कापडी पुढ्यास २॥ रु., कागदी २ रु., ट. १॥ आणा.

नाडीपरीक्षेचे महस्य.

मुंबई-वैद्यसभेने बक्षीस लावून आलेल्या निबधांत पर्यंत ठरलेला निबंध. किंमत ३ आणे, ट. २२. ६ पे.

शंकर दाजी शास्त्री पदे.